AGINISHIKHA 1978 G.K.V.

Arya Samaj Foundation Chennai

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Stock Verification-2014

Stock Verification-2014

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079509

078509

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

मंत्र-वचन (२)

जनवरी १९७८

वर्ष ८, अंक ६, पूर्णांक ९०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

वार्षिक चंदा ६.०० आजीवन सदस्यता १००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीके मंत्र-वचन

१२७. मृत्यु मृत्यु वह बिलकुल नहीं है जो तुम उसे समझते हो। तुम मृत्युसे निश्चेतन विश्रामकी उदासीन शांतिकी आशा करते हो। लेकिन वह विश्राम पानेके लिये तुम्हें तैयारी करनी होगी।

जब तुम मरते हो तो केवल अपना शरीर ही खोते हो और साथ ही भौतिक जगत्के साथ संबंध और उसपर क्रिया करनेकी संभावना भी खो देते हो। जो कुछ प्राणिक जगत्का है वह भौतिक द्रव्यके साथ गायब नहीं हो जाता। तुम्हारी इच्छाएं, आसक्तियां, लालसाएं कुंठा और निराशाकी भावनाके साथ बनी रहती हैं और यह सब तुम्हें प्रत्याशित शांति पानेसे रोकता है। शांत और घटनाशून्य मृत्युका आनंद पानेके लिये तुम्हें तैयारी करनी होती है। और प्रभावकारी तैयारी एक ही है — इच्छाओंका उन्मूलन।

जबतक हमारा शरीर है हमें क्रिया करनी पड़ती है, कुछ करना होता है, कुछ काम करना पड़ता है। लेकिन अगर हम परिणामकी चाहके बिना या इस तरह या उस तरह करनेकी इच्छाके बिना सिर्फ करनेके लिये करें तो हम उत्तरोत्तर अनासक्त होते जाते हैं और इस तरह अपने-आपको विश्रामपूर्ण मृत्यके लिये तैयार कर लेते हैं।

१२८. ज्ञान कभी यह न मानो कि तुम जानते हो,
हमेशा अधिक जाननेकी कोशिश करो — आशीर्वाद।

१२९. सामान्य मानसिक क्रिया-कलापसे ऊपर उठनेका तरीका क्या है?

मेरा उत्तर: "मौन रहो।"

१३०. २४ अगस्त, १९६४ — ऐथलेटिक प्रतियोगिता

हम यहां एक नये जगत्का आधार रखनेके लिये हैं।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐथलेटिक्समें सफल होनेके लिये जिन-जिन गुणों और कौशलोंकी जरूरत हैं वे ठीक वही हैं जो भौतिक मनुष्यमें होने चाहिये ताकि वह नयी शक्तिको ग्रहण और अभिव्यक्त कर सके।

मैं यह आशा करती हूं कि इस ज्ञान और इस भावनाके साथ तुम ऐथलेटिक प्रतियोगितामें उतरोगे और उसे सफलताके साथ पूरा करोगे।

मेरे आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

१३१. श्रीअरविंद सोसायटीके प्रथम विश्व सम्मेलनके अवसरपर

धरतीका भविष्य चेतनाके रूपांतरपर निर्भर है।

भविष्यकी एकमात्र आशा मनुष्यकी चेतनाके रूपांतरपर निर्भर है और यह रूपांतर होकर रहेगा।

लेकिन यह निश्चय करना मनुष्योंपर छोड़ा गया है कि वे इस रूपांतरके लिये सहयोग देंगे या इसे उनपर ध्वंसात्मक परिस्थितियोंके द्वारा आरोपित करना पड़ेगा।

१३२. श्रीअरविंद सोसायटी विश्व सम्मेलनके लिये (प्रश्न और उत्तर दोनों माताजीके हैं)

प्र० — मानव जाति एक कैसे हो सकती है?

उ० — अपने मूलके बारेमें सचेतन होकर।

प्र० — मनुष्यमें मानव एकताकी चेतना बढ़ानेका क्या उपाय है?

उ० — आध्यात्मिक शिक्षा, अर्थात्, एक ऐसी शिक्षा जो किसी धार्मिक या नैतिक शिक्षा या तथाकथित भौतिक ज्ञानकी अपेक्षा आत्माके विकासको अधिक महत्त्व देती है।

प्र० — चेतनाका रूपांतर क्या है?

उ० — चेतनाका रूपांतर एक नये जन्मके समान है — सत्ताके उच्चतर लोकमें जन्म।

प्र० — चेतनाका रूपांतर धरतीके जीवनको कैसे बदल सकता है?

उ० — मानव चेतनाका रूपांतर धरतीपर उच्चतर शक्ति, अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र ज्योति और अधिक संपूर्ण सत्यकी अभिव्यक्तिको संभव बनाता है।

१३३. श्रीअरविंद सोसायटी विश्व सम्मेलनके लिये एकता किसी बाहरी व्यवस्थासे नहीं आती, बल्कि नित्य ऐक्यके बारेमें सचेतन होनेसे आती है।

१३४. सत्य-ज्योति जो अंधकार और मिथ्यात्वपर ज्योतिके सत्यकी विजयमें सहायक होना चाहते हैं वे अपनी गतिविधि और क्रियाओंको आरंभ करनेवाले आवेगोंका सावधानीसे अध्ययन करके और उनमें सत्यसे आनेवालों और असत्यसे आनेवालोंमें विवेक करना सीखें ताकि सत्यसे आनेवालोंके अनुसार चलें और दूसरोंको अस्वीकार करें, त्याग दें।

यह विवेकशक्ति धरतीके वातावरणमें सत्यकी ज्योतिके आगमनके पहले प्रभावोंमेंसे है।

वास्तवमें सत्यकी प्रेरणाओं और असत्यकी प्रेरणाओंमें फर्क करना बहुत कठिन है जबतक कि व्यक्तिको सत्यकी ज्योतिका लाया हुआ यह विवेकका उपहार न मिला हो।

फिर भी शुरूमें सहायता करनेके लिये हम यह नियम बना सकते हैं कि जो भी प्रेरणा अपने साथ शांति, श्रद्धा, आनंद, सामंजस्य, विस्तार, एकता और ऊपर उठती हुई वृद्धिका भाव लाती है या इन चीजोंको पैदा करती है वह सत्यसे आती है और जो कुछ अपने साथ बेचैनी, संदेह, अविश्वास, दुःख, अनबन, स्वार्थभरी संकीर्णता, जड़ता, अनुत्साह और निराशा लाती है वह सीधी मिथ्यात्वसे आती है।

१३५. सीखना जब तुम यह अनुभव करो कि तुम्हें कुछ नहीं आता तब तुम सीखनेके लिये तैयार होते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३६. जिम्नास्टिक प्रतियोगिता १९६४ १८ अक्तूबर एक अच्छा दिन है।

जिम्नास्टिक एक अच्छी कला है और तुम अच्छे जिम्नास्ट बनोगे। आशीर्वाद।

१३७. बड़े दिनपर अगर तुम धरतीपर शांति चाहते हो तो पहले अपने हृदयमें शांति स्थापित करो।

अगर तुम संसारमें एकता चाहते हो तो पहले अपनी सत्ताके विभिन्न भागोंमें एकता लाओ।

१३८. सत्य सत्यके आगमनको नमस्कार।

१३९. विनाश सब तरहके विनाशके पीछे — प्रकृतिके महान् विनाश —भूचाल, ज्वालामुखी, तूफान, बाढ़ आदि ... या मानव विध्वंस – युद्ध, क्रांति, दंगे ... सबके पीछे कालीकी शक्ति काम करती है और काली धरतीपर पार्थिव विकासको जल्दी लानेके लिये काम करती है।

जो कुछ केवल अपने तत्त्वमें ही नहीं, अपनी उपलब्धिमें भी भगवान्का है, वह इन विनाशोंसे ऊपर रहता है, वे उसे छू भी नहीं सकते।

सभी घटनाओंमें क्षतिका परिमाण अपूर्णताकी मात्रा दिखाता है और उसे प्रगतिके अनिवार्य पाठ या चेतावनीके रूपमें लेना चाहिये।

१४०. उच्चतर सत्ताएं मानव जाति उच्चतर सत्ताओंको इसी शर्तपर सह सकती या स्वीकार कर सकती है कि वे उसकी सेवामें हों।

१४१. धन इस भौतिक जगत्में मनुष्योंके लिये धन भगवान्की इच्छासे अधिक पवित्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४२. दिव्य जीवन प्र० — दिव्य जीवनके लिये अभीप्सामें स्थिर और सच्चे कैसे बनें?

उ० — जो चीजें प्राप्त करनी हैं उनमें दिव्य जीवनको सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझो।

१४३. आश्रम कुछ लोग चीजोंको ऊपरी दृष्टिसे देखते हुए यह पूछ सकते हैं कि यह कैसी बात है कि इस नगरमें आश्रम इतने वर्षोंसे है फिर भी यहांकी जनताको पसंद नहीं है।

इसका पहला और तात्कालिक उत्तर तो यह है कि यहांकी जनतामें वे सब लोग जो संस्कृति, समझदारी, सद्भावना और शिक्षामें उच्चतर स्तरके हैं उन्होंने न केवल आश्रमका स्वागत किया है, बल्कि सहानुभूति, सराहना और सद्भावना भी प्रकट की है। पांडिचेरीमें श्रीअरविन्दाश्रमके बहुत-से सच्चे और निष्ठावान अनुयायी और मित्र हैं।

यह कहनेके बाद हमारी स्थिति स्पष्ट है:

हम किसी मत या धर्मके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम शासनकी किसी पद्धतिके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम किसी जाति या सामाजिक वर्गके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम किसी राष्ट्र या किसी सभ्यताके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम विभाजन, निश्चेतना, अविद्या, जड़ता और मिथ्यात्वके विरुद्ध लड़ते हैं।

हम धरतीपर ऐक्य, ज्ञान, चेतना, सत्यको स्थापित करनेकी कोशिश कर रहे हैं और जो कोई प्रकाशकी, शांति, सत्य और प्रेमकी इस नयी सृष्टिके आगमनका विरोध करता है, हम उसके विरुद्ध लड़ते हैं।

१४४. प्रेम प्र० — मैं प्रभुसे प्रेम कैसे कर सकता हूं? मैंने उन्हें कभी नहीं देखा और वे मेरे साथ कभी नहीं बोलते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ० — ऐसी बात नहीं है कि आदमी जिसे देख या सुन सके उससे प्यार करता है। हम रूपों और ध्वनियोंके द्वारा प्रेमसे ही प्रेम करते हैं।

और सभी प्रेमोंमें सबसे पूर्ण प्रेम, सबसे प्रीतिकर प्रेम है भगवान्‌का प्रेम।

१४५. सत्यकी सेवा १९६६

आओ, हम सत्यकी सेवा करें।

जो सच्चाईके साथ सत्यकी सेवा करना चाहता है वह सत्यको जान लेगा।

१४६. भगवान्‌की इच्छा हम भगवान्‌के आगे अपने सुझाव रखनेके लिये हमेशा आजाद हैं, लेकिन अंतमें उन्हींका संकल्प सिद्ध होता है।

१४७. अकेलापन तुम्हें अकेलापन लगता है क्योंकि तुम चाहते हो कि तुमसे प्रेम किया जाय। विना कोई मांग किये प्रेम करनेका आनंद सीखो, वह प्रेमके आनंदके लिये प्रेम (संसारमें यह सबसे अद्‌भुत आनंद है) और तुम्हें कभी अकेलापन न लगेगा।

१४८. प्रेमकी सीढ़ियां पहले आदमी तभी प्रेम करता है जब उससे प्रेम किया जाय।

फिर आदमी सहज रूपमें प्रेम करता है, परंतु बदलेमें प्रेम चाहता है।

और आगे आदमी, अगर उसे प्रेम न मिले तो भी प्रेम करता है, परंतु यह चाहता है कि उसका प्रेम स्वीकार किया जाय।

और अंतमें आदमी शुद्ध और सरल रूपमें प्रेम करता है, प्रेम करनेके अतिरिक्त और कोई आवश्यकता या आनंद नहीं रहता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४९. देशोंकी समानता सभी देश समान और तात्त्विक रूपसे एक हैं। उनमेंसे हर एक एकमेव परम सत्ताके एक पक्षका प्रतिनिधित्व करता है। पार्थिव अभिव्यक्तिमें उन सबको अपने-आपको खुले तौरपर प्रकट करनेका समान अधिकार है।

आध्यात्मिक दृष्टिसे किसी देशका महत्त्व उसके आकार, उसकी शक्ति या दूसरे देशोंपर उसके अधिकारपर निर्भर नहीं है। वह निर्भर है सत्यके प्रति उसकी प्रतिक्रियापर और इस बातपर कि वह किस स्तरके सत्यको अभिव्यक्त कर सकता है।

१५०. प्रतियोगितामें भाग लेनेवालोंसे शायद तुम्हें फिरसे याद दिलाना अच्छा हो कि हम यहां एक विशेष कामके लिये हैं, ऐसे कामके लिये जो और कहीं नहीं होता।

हम परम चेतनाके साथ, वैश्व चेतनाके साथ संपर्कमें आना चाहते हैं, हम उसे अपने अंदर उतारना और अभिव्यक्त करना चाहते हैं। लेकिन उसके लिये एक बहुत ठोस नींवकी जरूरत है। हमारी भौतिक सत्ता, हमारी देह ही हमारी नींव है। इसलिये हमें एक ठोस, स्वस्थ, सहनशील, कुशल, फुरतीला, मजबूत और हर चीजके लिये तैयार शरीर बनाना चाहिये। उसके लिये शारीरिक शिक्षणसे अच्छा कोई और साधन नहीं है : खेल-कूद, ऐथलेटिक्स, जिमनास्टिक्स और सब प्रकारके खेल शरीरको विकसित करने और मजबूत बनानेके सबसे अच्छे साधन हैं।

इसलिये मैं तुम्हें आजसे शुरू होनेवाली प्रतियोगितामें पूरे दिल, पूरी शक्ति और पूरे संकल्पके साथ भाग लेनेका निमंत्रण देती हूं।

१५१. 'होम आफ प्रोग्रेस' के उद्घाटनपर अगर मनुष्यमें अभीप्साका बीज सच्ची आध्यात्मिकतासे सींचा जाय तो वह दिव्य भावमें विकसित होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५२. विश्वास बोलते समय विश्वास पैदा करनेके लिये तुम्हें विचारोंमें नहीं अनुभूतियोंमें सोचना चाहिये।

१५३. सत्य सत्यको शब्दोंका रूप नहीं दिया जा सकता। वह जिया जा सकता है, बशर्ते कि व्यक्ति शुद्ध और काफी नमनीय हो।

१५४. अग्नि-परीक्षा सभी अग्नि-परीक्षाओंके लिये कृतज्ञ होओ। वे भगवान्तक पहुंचनेका सबसे छोटा रास्ता हैं।

१५५. सत्य मनुष्यो, देशो और महाद्वीपो!
चुनाव अनिवार्य है: सत्य या फिर रसातल।

१५६. मानव और दैवी विधान मनुष्यके विधानके अनुसार अपराधीको दंड मिलना चाहिये।

लेकिन मानव विधानसे बढ़कर एक और विधान है। वह है दैवी विधान, करुणा और दयाका विधान।

इस विधानके कारण ही जगत् टिका हुआ है और सत्य तथा प्रेमकी ओर प्रगति कर रहा है।

१५७. एक वर्ष और एक और वर्ष बीत गया और अपने पीछे पाठोंका एक बोझ छोड़ता गया, कुछ कठोर हैं, कुछ कष्टप्रद भी।

अब एक नया वर्ष शुरू हो रहा है, वह अपनी प्रगति और उपलब्धिकी संभावनाएं ला रहा है। लेकिन इन संभावनाओंका पूरा लाभ उठानेके लिये हमें पिछले पाठोंको समझना चाहिये।

यह जानना अधिक आवश्यक है कि सभी दुर्घटनाएं निश्चेतनाका प्रभाव होती हैं। फिर भी बाहरी रूपसे उनका एक मुख्य कारण है अनुशासनहीनताकी भावना, अनुशासनके लिये एक प्रकारका तिरस्कार।

अविच्छिन्न अनुशासनयुक्त प्रयत्नद्वारा यह प्रमाणित करना हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मे है कि हम अधिक सचेतन और अधिक सत्य जीवनकी अभीप्सा-में सच्चे हैं।

१५८. पूरी ईमानदारी साहसी, सहनशील, जागरूक और इनसे भी बढ़कर पूरी ईमानदारीके साथ सच्चे बनो।

तब तुम सब कठिनाइयोंका सामना कर सकोगे और विजय तुम्हारी होगी।

१५९. चुनाव प्र० — चुनाव अनिवार्य क्यों है?

उ० — क्योंकि हम श्रीअरविन्दके शब्दोंमें भागवत मुहूर्तमें हैं — और जगत्के रूपांतरकारी विकासने एक तेज और तीव्र गति अपनायी है।

१६०. 'सावित्री' के चित्रोंकी प्रदर्शनीके लिये संदेश : 'सावित्री'का महत्त्व बहुत अधिक है। उसका विषय सार्वभौम है। उसका अंतः-प्रकाश भविष्यसूचक है। उसके वातावरणमें लगाया गया समय व्यर्थ नहीं जाता। इस प्रदर्शनीको देखनेमें जितना समय लगे उतना लगाओ। मनुष्य जो चीजें करते हैं उनमें जल्दबाजीका ज्वर होता है। यह उसकी एक अच्छी क्षतिपूर्ति होगी।

१६१. ४.५.६७ के संदेशके बारेमें यहां श्रीअरविन्द जिस 'देवत्व'का उल्लेख करते हैं वह व्यक्ति नहीं, एक स्थिति है जिसमें वे सब भाग ले सकते और निवास कर सकते हैं जो अपने-आपको उसके लिये तैयार कर लें।

संदेश

पार्थिव जीवन एक महान् देवत्वका स्वनिर्वाचित निवास स्थल है और उन देवताका शाश्वत संकल्प यह है कि पार्थिव जीवन अंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारागार बने रहनेकी जगह उनके परम मनोहर प्रासाद तथा उच्च स्वर्ग-स्पर्शी मंदिरमें परिवर्तित हो जाय।

१६२. रूपांतरका काम किसीने मुझसे पूछा, "रूपांतरके कार्यमें अपनी भूमिका निभानेमें कौन अधिक धीमा है — मनुष्य या भगवान् ?"

मैंने कहा :

"मनुष्यको लगता है कि भगवान् उसकी प्रार्थना सुननेमें बहुत अधिक धीमे हैं।

"भगवान्को लगता है कि मनुष्य उनका प्रभाव ग्रहण करनेमें बहुत धीमा है।"

"लेकिन सत्य-चेतनाके लिये सब कुछ उसी तरह चलता है जैसे चलना चाहिये।"

१६३. धर्म एक-दूसरेको अलग करनेकी जगह धर्मोंको चाहिये कि सभीको अपने आलिंगनमें लेनेवाले 'पूर्ण'के अंदर एक हो जायं।

१६४. सत्य-दृष्टि सत्यकी दृष्टिमें हम सब भगवान् हैं, लेकिन इसे हम मुश्किलसे जानते हैं। और अपनी सत्तामें हम उसी चीजको "हम" कहते हैं जो इसे नहीं "जानती"।

१६५. परम पुरुष परम पुरुषके सिवा सब कुछ सापेक्ष है, केवल परम पुरुष ही निरपेक्ष हैं। लेकिन परम पुरुष हर सत्ताके केंद्रमें हैं इसलिये हर सत्ता अपने अंदर निरपेक्षको लिये रहती है।

१६६. समयकी मांग क्या है ?

भगवान्को धोखा देनेकी कोशिश न करो।

१६७. श्रीअरविंद श्रीअरविन्द भूतकालके नहीं हैं और न इतिहासके हैं।

श्रीअरविन्द अपनी उपलब्धिकी ओर बढ़ते हुए भविष्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः हमें शाश्वत यौवनकी रक्षा करनी चाहिये जो द्रुत प्रगतिके लिये आवश्यक है ताकि हम मार्गपर फिसड्डी न बन जायं।

१६८. भौतिक द्रव्यका तिरस्कार नहीं (१.४.६७) शारीरिक शिक्षण और खेल-कूदके कार्यक्रमके इस अवसरपर :

मैं फिरसे दोहराती हूं कि हमारे लिये आध्यात्मिक जीवनका अर्थ भौतिक द्रव्यका तिरस्कार नहीं, उसे दिव्य बनाना है। हम शरीर-को त्यागना नहीं, रूपांतरित करना चाहते हैं। शारीरिक शिक्षण इसके साधनोंमें सबसे अधिक सीधा और प्रभावकारी है।

इसलिये मैं तुम्हें आजसे शुरू होनेवाले कार्यक्रममें उत्साह और अनुशासनके साथ भाग लेनेके लिये निमंत्रण देती हूं। अनुशासन, क्योंकि वह व्यवस्थाकी अनिवार्य शर्त है; उत्साह, क्योंकि यह सफलताकी आवश्यक शर्त है।

१६९. अमरता हम जिस लक्ष्यके लिये कोशिश कर रहे हैं वह है अमरता।

और सभी आदतोंमें मृत्यु सबसे हठीली आदत है।

१७०. भगवान्‌को पानेके लिये हम यहां जीवनको सरल और सुखद बनानेके लिये नहीं हैं।

हम यहां भगवान्‌को खोजनेके लिये, भगवान् बननेके लिये और भगवान्‌को अभिव्यक्त करनेके लिये हैं।

हमें क्या होता है, यह भगवान् जाने, यह हमारा धंधा नहीं है।

भगवान् हमसे ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि जगत्‌की और हमारी प्रगतिके लिये क्या अच्छा है।

१७१. परिपाटियोंको तोड़ना पुरानी परिपाटियोंसे अलग हो जाना और पुराने नियमोंको न मानना अच्छा है — लेकिन इस शर्तपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आदमी अपने अंदर एक उच्चतर और सत्यतर चेतनाको खोज ले जो सामंजस्य, शांति, सौंदर्य और एक उच्चतर, निश्चल और प्रगतिशील व्यवस्थाको अभिव्यक्त करे।

१७२. मानव एकता मानव एकता मूलमें स्थित और विद्यमान तथ्य है। लेकिन मानव जातिकी बाहरी एकता मनुष्योंके सद्भाव और सचाईपर निर्भर है।

१७३. भारत, जागो हे भारत, ज्योति और आध्यात्मिक ज्ञानके देश !

संसारमें अपने सच्चे लक्ष्यके प्रति जागो, सामंजस्य और एकताका मार्ग दिखाओ।

१७४. कुछ लोग जीते हुए भी मुरदे हैं।
कुछ मरे हुए भी जिंदा हैं।

१७५. भारत और मानव जातिकी कठिनाइयां भारत आधुनिक मानव जातिकी समस्त कठिनाइयोंका प्रतीकात्मक प्रतिरूप बन गया है।

भारत उसके पुनरुत्थानका देश होगा — उच्चतर और सत्यतर जीवनमें पुनरुत्थानका।

१७६. पूर्णता जवान रहो,
कभी पूर्णताकी दिशामें प्रयास करना बंद न करो।

१७७. शरीरके कोषाणुओंकी प्रार्थना अब जब हम तेरी कृपाके प्रभावसे धीरे-धीरे निश्चेतनामेंसे निकलकर सचेतन जीवनमें जाग रहे हैं तो हमारे अंदर अधिक प्रकाश और अधिक चेतनाके लिये प्रार्थना उठती है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हे विश्वके परम प्रभो, हम याचना करते हैं कि हमें वह शक्ति और सुन्दरता, वह सामंजस्यमय पूर्णता दे जो धरतीपर तेरे दिव्य यंत्र बननेके लिये जरूरी है।"

१७८. जवानी और बुढ़ापा तुम कितने वर्ष जीवित रहे हो इसकी संख्या तुम्हें बूढ़ा नहीं बनाती। तुम जब प्रगति करना छोड़ देते हो तब बूढ़े हो जाते हो।

जैसे ही तुम्हें यह अनुभव हो कि तुम्हें जो कुछ करना था कर चुके, जैसे ही तुम्हें यह लगे कि जो कुछ तुम्हें जानना था वह जान चुके, जैसे ही तुम बैठकर अपने प्रयासका फल भोगना चाहो और साथमें यह भावना हो कि तुम जीवनमें काफी काम कर चुके हो तो तुम तुरंत बूढ़े हो जाते हो और तुम्हारा ह्रास शुरू हो जाता है।

इसके विपरीत, जब तुम्हें यह विश्वास हो जाय कि जो जानना बाकी है उसकी तुलनामें तुम जो जानते हो वह कुछ भी नहीं है, जब तुम यह अनुभव करो कि तुमने जो कुछ किया है वह तो जो करना बाकी है उसका आरंभ बिंदु ही है और जब तुम भविष्यको एक आकर्षक, चमकते हुए सूर्यके रूपमें देखो जो सिद्धिकी अनगिनत संभावनाएं लिये हुए है तब धरतीपर भले ही तुमने कितने ही वर्ष क्यों न पूरे कर लिये हों, फिर भी तुम युवा हो, युवा और आनेवाले कलकी सभी उपलब्धियोंके साथ समृद्ध हो।

और अगर तुम यह नहीं चाहते कि तुम्हारा शरीर तुम्हें धोखा दे तो अपनी शक्तियोंको व्यर्थकी हलचलमें नष्ट करनेसे बचो। तुम जो कुछ भी करो शांत, प्रकृतिस्थ, संतुलनके साथ करो। शांति और नीरवतामें ही सबसे बड़ी शक्ति है।

१७९. संस्मरण संस्मरण संक्षिप्त होंगे।

मैं श्रीअरविंदसे मिलनेके लिये भारत आयी, मैं श्रीअरविंदके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहनेके लिये भारतमें रही। जब उन्होंने शरीर त्यागा तो मैं उनका काम करनेके लिये यहीं बनी रही, वह काम है सत्यकी सेवा करके, मनुष्यजातिको आलोकित करके धरतीपर भागवत प्रेमके राज्यको जल्दी लाना।

१८०. **सत्यका राज्य** वर दे कि सत्य ही हमारा स्वामी और हमारा पथ-प्रदर्शक हो।

हम सत्यके लिये और अपनी सत्तामें और अपने कार्य-कलापमें उसकी विजयके लिये अभीप्सा करते हैं।

वर दे कि सत्यके लिये अभीप्सा ही हमारे प्रयासोंका संचालक बल हो।

हे सत्य, हम केवल तेरा मार्ग-दर्शन चाहते हैं। वर दे कि धरती पर तेरा राज्य आये।

१८१. **शिक्षा** शिक्षाके नये आदर्शका निर्देशक सिद्धांत क्या होना चाहिये?

सत्य, सामंजस्य, स्वाधीनता।

१८२. **समारोह** बाहरी समारोहोंकी कठोरताके पीछे एक जीवंत प्रतीक होता है: इसे याद रखना जरूरी है।

सभीके लिये शांति और सद्भावना।

१८३. **क्या रूपांतर एक उच्चकोटिकी अभीप्सा, समर्पण और ग्रहणशीलताकी मांग नहीं करता?**

रूपांतर पूर्ण और समग्र समर्पणकी मांग करता है, परंतु क्या यह सभी सच्चे साधकोंकी अभीप्सा नहीं है?

पूर्णका मतलब है सत्ताके सभी स्तरोंमें खड़े रूपमें अधिक-से-अधिक जड़-तत्त्वसे लेकर अधिक-से-अधिक सूक्ष्मतक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समग्रका मतलब है क्षैतिज या पड़े रूपमें सत्ताके विभिन्न और बहुधा परस्पर-विरोधी भागोंमें, जिनसे बाह्य सत्ता बनती है, अर्थात्, भौतिक, प्राणिक और मानसिक।

१८४. भागवत प्रेम भागवत प्रेमकी अभिव्यक्तिको जल्दी लानेका तरीका है सत्यकी विजयके लिये सहयोग देना।

१८५. सत्य सत्य ही जगत्को भगवान्के प्रेमको पाने और अभिव्यक्त करनेकी शक्ति दे सकता है।

१८६. शक्तिशाली शरीर शक्ति पानेकी पहली शर्त है आज्ञाकारी होना। शक्तिको अभिव्यक्त कर सकनेसे पहले शरीरको आज्ञाकारिता सीखनी चाहिये और शारीरिक शिक्षण शरीरके लिये सबसे अच्छा अनुशासन है।

इसलिये शारीरिक शिक्षणके प्रयासोंमें सच्चे और उत्सुक होओ, तुम शक्तिशाली शरीर पाओगे।

मेरे आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

१८७. आश्रम और ओरोवील आश्रम अग्रगामी, प्रेरक और पथ-प्रदर्शककी सच्ची भूमिका बनाये रखेगा।

ओरोविल सामूहिक उपलब्धिके लिये प्रयास है।

१८८. फिल्म (२९-५-६८)

हम बच्चोंको ऐसे चित्र दिखाना चाहेंगे जिनमें चित्रित किया गया हो कि जीवन कैसा होना चाहिये। लेकिन अभीतक हम वहां नहीं पहुंचे हैं — उससे दूर हैं। ऐसी फिल्में तो अभी बननी बाकी हैं। और अभी तो, अधिकतर, सिनेमा यह दिखाता है कि जीवन क्या नहीं होना चाहिये, वह भी इतने तीव्र रूपमें कि तुम्हें घृणा हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका भी एक प्रारंभिक उपयोग है।

आश्रममें फिल्में मनोरंजनके रूपमें नहीं, शिक्षाके एक भागके रूपमें दिखायी जाती हैं। इसलिये हमारे सामने यह शिक्षाकी समस्या है।

यह माना जाता है बालकको बस वही सीखना और जानना चाहिये, उसीके परिचयमें आना चाहिये जो उसे सब प्रकारकी निम्न, गंवारु, उग्र और गिरानेवाली वृत्तियों और गतियोंसे मुक्त रख सके। इसका मतलब यह होगा कि बाहरके मानव-संबंधोंसे एकदम नाता तोड़ दिया जाय, उदाहरणके लिये, सबसे पहले युद्ध, हत्या और संघर्ष तथा छल-कपटकी वार्ताओंसे — जिन्हें इतिहास कहा जाता है — दूर रखा जाय और वर्तमानमें परिवार, मित्रों और नातेदारोंसे संपर्क समाप्त कर दिया जाय। उनकी सत्ताके प्राणिक आवेगोंके साथ सब प्रकारके संपर्कपर हमेशा नियंत्रण रखा जाय।

यही विचार कॉन्वेंटमें बंद ईसाई साधु-जीवन या गुफाओं और जंगलोंके वैरागी-जीवनका कारण था।

लेकिन यह उपचार बिलकुल निष्फल सिद्ध हुआ है और वह मानवजातिको कीचड़मेंसे नहीं निकाल सका।

श्रीअरविंदके अनुसार उपचार कुछ और ही है।

तुम्हें जीवनका पूरी तरह सामना करना चाहिये। अभीतक उसके अंदर जो कुछ है, कुरूपता, मिथ्यात्व, क्रूरता, सबका सामना करो, लेकिन साथ ही अपने अंदर समस्त शुभ, समस्त सुन्दर, समस्त ज्योति और समस्त सत्यके स्रोतको भी खोज निकालो ताकि तुम सचेतन रूपसे इस स्रोतका संसारके साथ उसका रूपांतर करनेके लिये नाता जोड़ सको।

यह भाग जाने या आंखें मूंदकर न देखनेकी अपेक्षा बहुत अधिक कठिन है — लेकिन यह एकमात्र सच्चा प्रभावकारी साधन है, उन लोगोंके लिये साधन है जो वास्तवमें बलवान्, शुद्ध और सत्यको अभिव्यक्त करनेके लिये सक्षम हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८९. **दृष्टि** मन जितना शांत होगा, दृष्टि उतनी ही अच्छी होगी।

१९०. **प्रकृति** बहुमुखी चिकित्सक है।

१९१. **सत्य** सत्यसे प्रेम करो और अपनी चेतनामें ज्योतिका उदय होने दो।

सबको मेरे आशीर्वाद।

१९२. जब हम सत्यमें निवास करते हैं तो सब प्रकारके विरोधोंके ऊपर रहते हैं।

१९३. **नैतिकता** ऊपरके दिखावेके आधारपर फैसला न करो, गप्पोंके आधारपर तो और भी नहीं।

एक देशकी नैतिकता दूसरे देशकी अनैतिकता होती है।

भगवान्‌की सेवा समर्पणमें ऐसी सच्चाईकी मांग करती है जो सब प्रकारकी नैतिकताके लिये अपरिचित है।

१९४. **शांति** केवल निर्विकार शांति ही सत्ताकी नित्यताको संभव बना सकती है।

१९५. **स्वतंत्रता** केवल भगवान्‌के साथ संयोगमें ही स्वतंत्रता संभव है और भगवान्‌के साथ संयोगके लिये अपने अंदर कामनाकी संभावनाको जीत लेना जरूरी है।

१९६. **नयी चेतना** नयी चेतनाको बिना विकृत किये ग्रहण कर सकनेके लिये :

व्यक्तिको परम चेतनाकी ज्योतिमें छाया डाले बिना खड़ा हो सकना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९७. धर्म (धर्मोंकी ओर अभिवृत्ति)

सभी पुजारियोंकी ओर हितैषी सद्भावना।

सभी धर्मोंकी ओर आलोकित उदासीनता।

सभी धर्म उस एक सरल सत्यके आंशिक मार्ग हैं जो उनसे बहुत ऊंचा है।

१९८. नयी चेतना इस वर्षके आरंभसे एक नयी चेतना धरतीपर मनुष्योंको एक नयी सृष्टि, अतिमानव, के लिये तैयार करनेमें लगी है। इस सृष्टिके संभव होनेके लिये मानव शरीरको बनानेवाले पदार्थमें एक बड़ा परिवर्तन आना चाहिये। उसे चेतनाके प्रति अधिक ग्रहणशील और उसकी क्रियाके लिये अधिक नमनीय होना चाहिये।

ये ऐसे गुण हैं जिन्हें आदमी शारीरिक शिक्षणद्वारा पा सकता है।

इसलिये यदि हम इस प्रकारके लक्ष्यको नजरमें रखते हुए इस अनुशासनमें चलें तो निश्चय ही हमें बहुत मजेदार परिणाम मिलेंगे।

सबको मेरे आशीर्वाद, प्रगति और उपलब्धि।

१९९. सचाई हमेशा पूरी सचाईके साथ अपना अच्छे-से-अच्छा करना।

हमेशा पूरी सचाईके साथ अपना अच्छे-से-अच्छा होना।

२००. सहिष्णुता सहिष्णुता बुद्धिमत्ताकी ओर पहला कदम है।

सहिष्णुताकी आवश्यकता पसंदकी उपस्थितिका सूचक है।

जिसकी चेतना परम चेतनाके साथ एक है वह हर चीजको पूर्ण समबुद्धिसे देखता है।

२०१. भविष्यके लिये कार्य

भारतकी प्रधान मंत्रीको संदेश (६ अक्तूबर, १९६९)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत भविष्यके लिये कार्य करे और नेतृत्व हाथमें ले। इस तरह वह जगत्में अपना सच्चा स्थान फिरसे पा सकेगा।

२०२. एकताके द्वारा शासन

भारतकी प्रधान मंत्रीको

बहुत जमानेसे विभाजन और विरोधके द्वारा शासन करनेकी आदत चली आ रही है।

समय आ गया है कि ऐक्य, परस्पर समझौते और सहयोगके द्वारा शासन किया जाय।

२०३. दलका नहीं मनुष्यका मूल्य

भारतकी प्रधान मंत्रीको

सहयोगी चुननेके लिये मनुष्यका मूल्य ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, इस बातका नहीं कि वह किस दलका है।

२०४. किसी देशकी महानता

भारतकी प्रधान मंत्रीके नाम

किसी देशकी महानता एक दलकी विजयपर नहीं, सब दलोंके ऐक्यपर निर्भर होती है।

२०५. बहुमूल्य चीजें जीवनमें सबसे अधिक बहुमूल्य वस्तुएं उन वस्तुओंमें होती हैं जिन्हें तुम आंखसे नहीं देख सकते।

२०६ सच्ची समझ भगवान्के साथ पूर्ण तादात्म्यकी नीरवतामें ही सच्ची समझदारी प्राप्त होती है।

२०७. श्रीअरविंदके बारेमें

उनके बिना मेरा अस्तित्व नहीं; मेरे बिना उनकी अभिव्यक्ति नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०८. आत्म-दान सब शब्दोंके ऊपर, सब विचारोंके ऊपर, अभीप्सा करती हुई श्रद्धाकी आलोकमय नीरवतामें अपने-आपको, बिना कुछ बचाये, पूरी तरह नितांत भावसे सभी सत्ताओंके परम प्रभुको दे दो और वे तुमसे जो करवाना चाहते हैं करवा लेंगे।

२०९. श्रद्धा (र्नासग होमको संदेश)
आखिर, श्रद्धा ही रोगमुक्त करती है।

२१०. भारतके लिये (भारतके राष्ट्रपति गिरिके नाम)
आओ, हम सब भारतकी महानताके लिये काम करें।

२११. सच्ची स्वाधीनता स्वाधीनता
है, केवल वही करना
जो परम चेतना
हमसे करवाये।

बाकी सब उदाहरणोंमें आदमी गुलाम होता है, या तो औरोंकी इच्छाका या रूढ़ियोंका या नैतिक विधानोंका या प्राणिक आवेशोंका या मानसिक सनकोंका और सबसे बढ़कर, **अहंकार**की इच्छाओंका।

२१२. अंतरात्माको पाना अगर तुम अपनी अंतरात्माको खोजना चाहते हो, उसे जानना और उसकी आज्ञा मानना चाहते हो तो हर हालतमें यहीं रहो।

अगर तुम्हारे जीवनका लक्ष्य यह नहीं है और तुम अधिकतर मनुष्योंकी तरह साधारण जीवन जीना चाहते हो तो तुम निश्चय ही अपने परिवारमें वापिस जा सकते हो।

२१३. सुनना, समझना और करना सुनना अच्छा है पर काफी नहीं है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0795.0.9

तुम्हें समझना चाहिये।
समझना अच्छा है पर काफी नहीं,
तुम्हें कार्य करना चाहिये।

२१४. भागवत कृपापर श्रद्धा जब ऐसा लगता है कि सब कुछ खो गया तभी सब कुछ बचाया जा सकता है। जब तुम अपनी निजी शक्तिपर विश्वास खो बैठो तब तुम्हें भगवान्‌की कृपापर श्रद्धा होनी चाहिये।

२१५. धन धन धन कमानेके लिये नहीं है, धन है धरतीको नयी सृष्टिके लिये तैयार करनेके लिये।

२१६. धनाढ्य और व्यापारी धनाढ्य और व्यापारियोंको यह संभावना दी गयी है कि वे भविष्यके साथ सहयोग करें, लेकिन उनमेंसे अधिकतर लोग इंकार करते हैं। उन्हें विश्वास है कि धन भविष्यकी अपेक्षा अधिक बलवान है।

अतः भविष्य उन्हें दुर्धर्ष शक्तिके साथ कुचल देगा।

२१७. पूजा लोग पूजा क्यों करना चाहते हैं?

होना पूजा करनेकी अपेक्षा कहीं अच्छा है।
बदलनेका आलस्य ही मनुष्यसे पूजा करवाता है।

(बादमें माताजीने यह टिप्पणी और जोड़ दी:) केवल बदलनेकी शर्तपर ही आदमी पूजा छोड़ सकता है। ऐसे बहुत-से हैं जो न तो बदलना चाहते हैं और न पूजा करना।

२१८. दुर्भावना दुर्भावनावालोंसे : तुमने जान-बूझकर जो अशुभ किया है वह हमेशा एक-न-एक रूपमें तुमपर वापिस आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१९. **परिवर्तन** संसार एक बड़े परिवर्तनके लिये तैयारी कर रहा है। मदद करोगे?

२२०. **नयी चेतना** तुम जो सिखाना चाहते हो उसे पहले अपने जीवनमें उतारना चाहिये।

नयी चेतनाके बारेमें बोलनेके लिये पहले तुम्हें उसे अपने अंदर प्रवेश करने देना होगा और वह तुम्हें अपना रहस्य बताये तभी तुम उसके बारेमें बोलने योग्य होगे।

नयी चेतनामें उठनेके लिये पहली शर्त है पर्याप्त मानसिक ईमानदारी जिसके साथ यह विश्वास हो कि तुम जितना सोचते हो, जितना जानते हो वह जितना जाननेके लिये बाकी है उसकी तुलनामें कुछ भी नहीं है। तुमने बाहरी रूपमें जो कुछ सीखा है वह अपने-आपको उच्चतर ज्ञानमें उठानेके लिये एक कदम ही है।

१६. १२. ६९

२२१. **बड़े दिनका संदेश** नव प्रकाशका स्वागत है।
वह सबके हृदयोंमें बढ़े!

२२२. **जीवनका लक्ष्य** प्र० — क्या सुखी होना जीवनका लक्ष्य है?

उ० — यह चीजोंको ऊटपटांग ढंगसे रखना है।

मानव जीवनका लक्ष्य है भगवान्‌को खोजना और उन्हें अभिव्यक्त करना। स्वभावतः, इस खोजसे सुख मिलता है, पर यह सुख एक परिणाम है, अपने-आपमें लक्ष्य नहीं। एक सामान्य परिणामको जीवनका लक्ष्य मान लेनेकी यह भूल ही मानव जीवनको कष्ट पहुंचानेवाली अधिकतर मुसीबतोंका कारण रही है।

२२३. **परम प्रभु** केवल प्रभुकी रायका ही महत्त्व है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्रभु
ही हमारे सारे प्रेमके अधिकारी हैं।
और वे उसे सैकड़ों गुना करके लौटाते हैं।

२२४. **सत्य, कठिन विजय** सत्यको जीतना बहुत कठिन और दुःसाध्य है। इस जीतके लिये मनुष्यको सच्चा योद्धा होना होगा — ऐसा योद्धा जो किसी चीजसे नहीं डरता, न तो शत्रुओंसे और न मृत्युसे ही; क्योंकि, यह संघर्ष सबके साथ और सबके विरुद्ध, शरीर सहित या उसके बिना भी चल रहा है और इसका अंत परम विजयमें होगा।

२२५. **बड़ा परिवर्तन** प्र० — वह बड़ा परिवर्तन कौन-सा है जिसके लिये जगत् तैयारी कर रहा है, हम उसमें किस तरह सहायता कर सकते हैं?

उ० — क) चेतनाका परिवर्तन। और जब हमारी चेतना बदल जायगी तब हम जान पायेंगे कि यह परिवर्तन क्या है।

ख) परिवर्तनके आनेके लिये हमारी सहायताकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन हमें अपने-आपको उस चेतनाके प्रति खोलना चाहिये ताकि उसका आना हमारे लिये व्यर्थ न हो।

२२६. **भगवान् और दंड** प्र०—माताजी, क्या भगवान् अन्याय करनेवालोंको दंड देते हैं? क्या उनके लिये किसीको दंड देना संभव भी है?

उ० — भगवान् चीजोंको उस तरह नहीं देखते जैसे मनुष्य देखते हैं। उन्हें दंड या पुरस्कार देनेकी जरूरत नहीं। प्रत्येक क्रिया अपने अंदर अपना फल और अपना परिणाम लिये रहती है।

क्रियाकी जैसी प्रकृति होगी उसके अनुसार वह तुम्हें भगवान्के नजदीक लायेगी या उनसे दूर ले जायेगी और वही परम परिणाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२७. **भगवान्‌के अर्पण** प्र०—हम अपने विकसित होते हुए शरीरोंके कौशलसे बढ़कर और कौन-सा नैवेद्य भगवान्‌के अर्पण कर सकते हैं ?

उ०—आओ, हम पूर्णताके लिये अपने प्रयास उन्हें अर्पित करें, तब हमारे लिये शारीरिक शिक्षण एक नया अर्थ और अधिक मूल्य ले लेगा।

२२८. संसार एक नयी सृष्टिकी तैयारी कर रहा है। आओ, हम अपने शरीरोंको शारीरिक शिक्षणद्वारा अधिक सबल, अधिक ग्रहण-शील और अधिक नमनीय बनाकर भौतिक रूपांतरके मार्गपर सहायता करें।

२२९. **प्रेमका शासन** हम ज्योति और सत्यके संदेशवाहक होना चाहते हैं। सामंजस्यमय भविष्य, तुरंत, दुनियाके सामने अपनी घोषणा करनेके लिये अपने-आपको प्रस्तुत करता है।

समय आ गया है कि भयके द्वारा शासन करनेकी पुरानी आदतका स्थान प्रेमद्वारा शासन ले ले।

२३०. **भारतकी समस्या** इस समय भारतकी पहले नंबरकी समस्या है अपनी अंतरात्माको फिरसे खोजना और उसे अभिव्यक्त करना।

प्र० — भारतकी अंतरात्माको फिरसे कैसे खोजा जाय ?

उ० — अपने चैत्य पुरुषके बारेमें सचेतन होओ। ऐसा करो कि तुम्हारा चैत्य पुरुष भारतकी अंतरात्मामें तीव्र रूपसे रस ले और सेवा-भावके साथ उसके लिये अभीप्सा करे। अगर तुम सच्चे हो तो सफल होओगे।

२३१. **कार्य और शब्द** अच्छा बोलना अच्छा है, अच्छा करना और भी अच्छा है।

ऐसा कभी न होने दो कि तुम्हारे कर्म तुम्हारे शब्दोंसे नीचे रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३२. **भविष्यमें छलांग** भाग्यशाली हैं वे जो भविष्यमें छलांग मारते हैं।

२३३. **संसारकी समस्याओंका समाधान** संसारकी समस्याओंका समाधान चेतनाके परिवर्तनमें है।

इस परिवर्तनके बारेमें तुम्हारी क्या कल्पना है और इसे कैसे लाया जाय? जिस चेतनाको अभिव्यक्त करना है वह धरतीके वातावरणमें आ चुकी है। अब केवल ग्रहणशीलताका प्रश्न है।

२३४. **ओरोवील विद्यालय** ओरोवीलमें नये विद्यालयके उद्घाटनके समय दिया गया संदेश:

जानने और प्रगति करनेका सच्चा संकल्प — आशीर्वाद।

इसी अवसरपर एक और ऐसा संदेश:

२३५. ओरोवीलमें पढ़ायी जानेवाली भाषाएं:

१. तमिल

२. फरासीसी

३. सरल संस्कृत — जो भारतकी भाषाके रूपमें हिंदीका स्थान लेगी

४. अंग्रेजी — अंतर्राष्ट्रीय भाषाके रूपमें।

२३६. **भगवान्‌के साथ एक होना:** एकमात्र वही जीवन जीने योग्य है जो भगवान्‌के साथ एक होनेके लिये निवेदित हो।

२३७. **मातृमंदिर** मातृमंदिर भगवान्‌के लिये ओरोवीलकी अभीप्साका जीता-जागता प्रतीक हो।

(फ्रेंचमें) मातृमंदिर भगवान्‌के प्रति ओरोवीलकी अभीप्साका जीता-जागता प्रतीक होना चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३८. स्वाधीनता सच्ची स्वाधीनता एक ऊपर उठती हुई गति है जो निम्न वृत्तियोंके आगे नहीं झुकती।

सच्ची स्वाधीनता एक भागवत अभिव्यक्ति है।

हम भारतके लिये सच्ची स्वाधीनता चाहते हैं ताकि वह संसारके लिये प्रदर्शनद्वारा एक उचित उदाहरण बन सके कि मानवताको क्या बनना चाहिये।

२३९. छलांग और चुनाव प्र०—पिछले किसी वर्षके एक संदेशमें आपने कहा था कि चुनाव अनिवार्य है। इस वर्ष आप छलांग मारनेके लिये कहती हैं। उस चुनाव और इस छलांगमें क्या फर्क है?

उ०—चुनाव मानसिक है और छलांग पूरी सत्ता लेती है।

प्र०—यह छलांग कैसे लगायी जाय?

उ०—हर एक अपने तरीकेसे।

प्र०—आपने बाइबलके शब्द "ब्लेसेड" (भाग्यशाली) का उपयोग क्यों किया है? क्या इसका कोई विशेष अर्थ है?

उ०—"ब्लेसेड" शब्दपर बाइबलका एकाधिकार नहीं है।

२४०. श्रीअरविंद शताब्दी १५ अगस्त १९७१

आज श्रीअरविंदके शताब्दी वर्षका पहला दिन है। यद्यपि उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया है, परंतु वे अब भी हमारे साथ जीवित और सक्रिय हैं।

श्रीअरविन्द भविष्यके हैं, वे भविष्यके संदेशवाहक हैं। वे अब भी हमें भागवत संकल्पद्वारा निर्धारित भव्य भविष्यकी उपलब्धिको जल्दी लानेका मार्ग दिखाते हैं।

वे सब लोग जो मानवताकी प्रगति और भारतकी ज्योतिर्मय नियतिके लिये सहयोग देना चाहते हैं उन सबको एक सूक्ष्मदर्शी अभीप्सा और ज्योतिर्मय कार्यमें मिल जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४१. भागवत प्रेम भागवत प्रेम, सच्चा प्रेम
अपने-आपमें आनंद और संतोष पाता है।
उसे ग्रहण किये जानेकी या सराहनाकी जरूरत नहीं होती।
उसे बांटनेकी भी जरूरत नहीं होती, वह प्रेम करनेके लिये प्रेम करता है। जैसे फूल खिलता है।
इस प्रेमको अपने अंदर अनुभव करना
निर्विकार सुखसे संपन्न होनेके समान है।

२४२. मानव सामान्यता मानव सामान्यता असह्य है।
हम अभीप्सा करते हैं सचमुच जाननेवाले ज्ञानके लिये, सचमुच शक्तिशाली शक्तिके लिये और सचमुच प्रेम करनेवाले प्रेमके लिये।

२४३. सत्य यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि जो सत्यके लिये अभीप्सा करते हैं उन्हें झूठ बोलनेसे बचना चाहिये।

२४४. यंत्र परम प्रभो, शाश्वत सत्य !
हम केवल तेरी ही आज्ञाका पालन करें
और सत्यके अनुसार जियें।

२४५. सत्य जबतक वे सत्यके अनुसार चलनेका निश्चय नहीं कर लेते तबतक मैं उनके लिये बाहरी रूपसे कुछ नहीं कर सकती।
वह सत्य नहीं जिसे वे देखते हैं, बल्कि वास्तविक सत्य।
सत्यको जान सकनेके लिये तुम्हें पसंदों और कामनाओंसे दूर होना चाहिये और जब तुम सत्यके लिये अभीप्सा करो तो तुम्हारा मन नीरव होना चाहिये।

२४६. सत्य ही एकमात्र रास्ता चूंकि सारा संसार मिथ्यात्वमें डूबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है इसलिये जो भी क्रियाएं होंगी वे मिथ्या होंगी और यह स्थिति लंबे समयतक चल सकती है। यह देश और देशवासियोंके लिये बहुत कष्ट लायेगी।

करनेलायक एक ही चीज है। भगवान्के हस्तक्षेपके लिये हृदयसे प्रार्थना करो। यही एक चीज है जो हमें बचा सकती है। और जो लोग इसके बारेमें सचेतन हो जायं उन सबको यह निश्चय करना चाहिये कि वे दृढ़तासे केवल सत्यपर स्थित रहेंगे और केवल सत्यमें ही कार्य करेंगे। **इसमें कोई समझौता नहीं हो सकता।** यही एकमात्र रास्ता है।

अगर चीजें हमारे लिये गलत और बुरी होती जायं — और वास्तवमें इस समय फैले हुए मिथ्यात्वके कारण ऐसा होगा — तब भी हमें सत्यपर स्थित रहनेके निश्चयसे न डिगना चाहिये।

यही एकमात्र रास्ता है।

२४७. **प्रगति और शारीरिक शिक्षण** हम उन भागवत मुहूर्तोंमेंसे एकमें हैं जब पुरानी नींवें हिल जाती हैं और बहुत अस्तव्यस्तता होती है। लेकिन जो आगे कूदना चाहते हैं उनके लिये अद्भुत अवसर है। प्रगतिके लिये असाधारण संभावना है।

क्या तुम उनमेंसे न होगे जो इसका लाभ उठायेंगे?

शारीरिक शिक्षणके द्वारा अपने शरीरको इस महान् परिवर्तनके लिये तैयार करो।

सबको मेरे आशीर्वाद।

१.४.७१

२४८. **समग्र पूर्णता** प्र० — समग्र पूर्णताका हमारा आदर्श क्या है?

उ० — भगवान्के साथ सचेतन ऐक्य।

२४९. **श्रीअरविंद शताब्दी** प्र० — श्रीअरविन्दकी शताब्दीके अवसरपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रममें बहुत लोग आयेंगे। हम उन्हें आश्रमकी वास्तविकता दिखानेके लिये क्या कर सकते हैं?

उ० — उसे जियो, उस वास्तविकताको जियो। बाकी सब — बातें करना आदि... सब बेकार है।

प्र० — इसके लिये अपने-आपको कैसे तैयार करें?

उ० — चैत्य पुरुषके साथ, अवतरित भगवान्‌के साथ सायुज्यके द्वारा, हमारी गहराईमें

एक तीव्र अभीप्सा,
पूर्ण एकाग्रता
नित्य समर्पण।

२५०. मिथ्यात्व और सत्य जब मनुष्य उस मिथ्यात्वसे ऊब जायेंगे जिसमें वे निवास करते हैं, तब संसार सत्यके राज्यके लिये तैयार होगा।

२५१. श्रद्धा श्रद्धा रखो और सच्चे बनो।

२५२. सत्यके लिये प्रेम हमारा जीवन सत्यके प्रेम और ज्योतिकी प्याससे शासित होना चाहिये।

२५३. श्रीअरविंदकी शताब्दी

श्रीअरविन्द जगत्‌को भावी सौंदर्यके बारेमें बतानेके लिये आये थे, जिसे उपलब्ध करना जरूरी है।

वे हमें उस वैभवकी आशा नहीं, निश्चिति देने आये थे जिसकी ओर जगत् बढ़ रहा है। जगत् एक दुर्भाग्यपूर्ण संयोग नहीं है, वह एक अद्‌भुत चमत्कार है जो अपनी अभिव्यक्तिकी ओर बढ़ रहा है।

जगत्‌को भविष्यके सौंदर्यकी निश्चितिकी जरूरत है। श्रीअरविन्द-ने उसका आश्वासन दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५४. श्रीअरविंद कहने आये थे श्रीअरविन्द हमसे यह कहने आये थे कि तुझे कैसे पाया जाय और तेरी सेवा कैसे की जाय।

वर दे कि उनकी शताब्दीके इस वर्षमें हमें उन्होंने जो कुछ सिखाया है उसे हम अच्छी तरह समझ सकें और सचाईके साथ क्रियामें ला सकें।

२५५. नील कमल लाल कमल श्रीअरविन्दका फूल है; लेकिन उनकी शताब्दीके लिये हम विशेष रूपसे नीला कमल चुनेंगे जो उनके भौतिक प्रभा-मंडलका रंग है। यह परम प्रभुकी धरतीपर अभिव्यक्तिकी शताब्दीका प्रतीक है।

२५६. श्रीअरविन्दने अपना जीवन दिया श्रीअरविन्दने अपना जीवन उत्सर्ग किया ताकि हम दिव्य चेतनामें जन्म ले सकें।

२५७. श्रीअरविंदके प्रति कृतज्ञता प्रकाशन

१९७२

शुभ वर्ष

यह वर्ष श्रीअरविन्दको निवेदित है।

उनकी शिक्षाको ज्यादा अच्छी तरह समझना और उसे जीवनमें उतारनेकी कोशिश करना निश्चित रूपसे, वे जो ज्योति, ज्ञान, शक्ति इतनी उदारतासे धरतीपर लाये हैं उस सबके लिये कृतज्ञता प्रकाशित करनेका सबसे अच्छा उपाय है।

प्रभु करे कि उनकी शिक्षा हमें आलोकित करे और हमें रास्ता दिखाये और हम आज जो नहीं कर सकते, उसे कल कर सकें।

आओ, हम पूरी सचाईके साथ ठीक वृत्ति अपनाएं, तभी यह वर्ष सचमुच शुभ वर्ष होगा।

२५८. शताब्दी वर्षकी सहायता भगवान्‌के बिना हम सीमित, अक्षम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और असहाय प्राणी हैं। भगवान्‌के साथ, अगर हम अपने-आपको पूरी तरह उन्हें दे दें, तो सब कुछ संभव है और हमारी प्रगति असीम होगी।

श्रीअरविन्दके शताब्दी वर्षके लिये एक विशेष सहायता धरतीपर आयी है। प्रभो, वर दे कि हम अहंकारपर विजय पाने और ज्योति-में प्रवेश करनेके लिये इससे लाभ उठायें।

नया वर्ष शुभ हो।

२५९. श्रीअरविंदने हमें छोड़ा नहीं है जब श्रीअरविन्दने अपना शरीर त्यागा तो उन्होंने कहा था कि वे हमें छोड़ न जायंगे। और, सचमुच, इन इक्कीस वर्षोंमें वे हमेशा हमारे साथ रहे हैं, उन सबको राह दिखाते और मदद देते रहे हैं जो उनके प्रभावके प्रति ग्रहणशील और खुले हैं।

उनके इस शताब्दी वर्षमें उनकी सहायता और भी ज्यादा बलवती रहेगी। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम ज्यादा खुलें और उससे फायदा उठाना जानें। भविष्य उनके हाथोंमें है जिनमें वीरकी आत्मा हो। हमारी श्रद्धा जितनी अधिक दृढ़ और सच्ची होगी, सहायता भी उतनी ही अधिक सशक्त और प्रभावशाली होगी।

२६०. भागवत प्रेम, सबके लिये समान भगवान्‌को सभी मनुष्योंके लिये समान प्रेम है, लेकिन मनुष्योंकी चेतनाका अंधकार उन्हें यह प्रेम प्राप्त करनेसे रोकता है।

सत्य अद्‌भुत है। वह हमारी दृष्टिमें विकृत हो जाता है।

२६१. शिक्षा केंद्रको हम यहांपर और जगहोंसे ज्यादा अच्छा करनेके लिये और अतिमानसिक भविष्यके लिये अपनेको तैयार करनेके लिये हैं — इस बातको कभी न भूलना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सबके सच्चे सद्भावका आह्वान करती हूं ताकि हमारा यह आदर्श चरितार्थ हो सके।

आशीर्वाद।

२६२. **सत्य** समय आ गया है कि मिथ्यात्वका राज्य समाप्त हो जाय। केवल सत्यमें ही निस्तार है।

२६३. **श्रीअरविंद शताब्दी** आओ, हम श्रीअरविन्दकी शताब्दीके योग्य बननेकी कोशिश करें।

२६४. **जिस भगवान्को हम खोजते हैं** जिस भगवान्को हम खोजते हैं वे कहीं दूर और पहुंचके बाहर नहीं हैं। वे सृष्टिके केंद्रमें मौजूद हैं और वे हमसे यह चाहते हैं कि हम उन्हें खोजें और अपना रूपांतर करके व्यक्तिगत रूपसे उन्हें जानने योग्य बनें, उनके साथ एक हों और अंतमें उन्हें सचेतन रूपसे अभिव्यक्त करें। हमें अपने-आपको इस कामके लिये अर्पित करना चाहिये। यही हमारे जीवनका सच्चा हेतु है। और इस महान् उपलब्धिके लिये सबसे पहला कदम है अतिमानस चेतनाकी अभिव्यक्ति।

२६५. **शारीरिक शिक्षण** इस वर्ष हम अपने शरीरके सभी क्रिया-कलाप श्रीअरविन्दको निवेदन करें।

२६६. **पूर्ण सचाई** सारी सत्ताका चैत्य केंद्रके चारों ओर पूरी तरहसे एकीकरण, पूरी सचाई प्राप्त करनेकी अनिवार्य शर्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१७ नवम्बरको माताजीकी महासमाधिको चार साल हुए। सुबह माताजीके कक्षके दर्शनके लिये लंबी पंक्ति लगी थी। फिर दस बजे समाधिके पास ध्यान हुआ। शामको सात बजकर पच्चीस मिनटपर क्रीड़ांगणमें फिरसे ध्यान हुआ।

२० नवम्बर (जिस दिन उनका शरीर समाधिस्थ किया गया था) को भी सुबह और शामको ध्यान हुआ।

२४ नवम्बरको सिद्धि दिवसकी वर्षगांठ मनायी गयी। सुबह श्रीअरविंद कक्षके दर्शन हुए। सुबह दस बजे आश्रममें, फिर शामको क्रीड़ांगणमें ध्यान हुआ। शामको क्रीड़ांगणमें सलामी भी दी गयी।

१ दिसम्बरको आश्रम स्कूलकी चौंतीसवीं वर्षगांठ थी। इसलिये आश्रमके अभिनय विभागके छात्र-छात्राओंने "भगवती मां और सृष्टि" नामक एक नृत्य-नाटक किया।

२ दिसम्बरको शारीरिक शिक्षा-विभागने अपना वार्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। माताजीके शब्दोंमें: "आधारभूत कार्यक्रम होगा एक ऐसा शरीर विकसित करना जो रूपमें सुन्दर हो, भंगिमामें सामंजस्य-पूर्ण, अपनी गतिविधियोंमें सुनम्य और फुर्तीला, अपने क्रिया-कलापोंमें बलशाली और स्वास्थ्यमें प्रतिरोध कर सकने योग्य।"

५ और ९ दिसम्बर श्रीअरविंदकी महासमाधिके दिन हैं। इसलिये ५ को उनके कक्षके दर्शन करनेके बाद समाधिके पास ध्यान हुआ। शामको भी पौने आठ बजे ध्यान था। ९ को भी सुबह और शामको ध्यान हुआ।

१६ दिसम्बर भोर-ध्यान करके श्रीअरविंद आश्रम स्कूलने अपना नया सत्र आरंभ किया। १ नवम्बरसे छुट्टियां शुरू हुई थीं। अक्तूबरके अन्तमें प्रदर्शनियों, नाटक, नृत्य, संगीत आदिके कई कार्य-क्रम विद्यार्थियोंने प्रस्तुत किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे भारत और विदेशमें भी १७, २० २४ नवम्बर को तथा ५ और ९ दिसम्बरको ध्यान हुआ।

नवम्बरमें अहमदाबादमें श्री रोहित मेहताने "श्रीमां और व्यक्तिगत रूपान्तर" के बारेमें कई भाषण दिये।

श्री मनोजदास बंगलौर गये थे और २९ अक्तूबरको उन्होंने भाषण दिया। विषय था: "क्या हमारे दैनिक जीवनके साथ आध्यात्मिकताका कोई सम्बन्ध है?"

श्री हीरालाल अमिन गुजरातमें स्थित कई केन्द्र देखने गये और वहां उन्होंने भाषण दिये।

डा० माहेश्वरीने गुलबर्गा (कर्नाटक) में चार भाषण दिये। विषय थे: "आगामी कलके जगत्में भारत", "श्रीमां", "सच्ची शिक्षा", "निराश आज — आगामी कलकी आशा"।

पुणेके केन्द्रमें २४ और २५ अक्तूबरको दो दिनकी विचार-गोष्ठी रखी गयी। विषय था श्रीअरविंदकी रचनाएं।

चरथावल (उत्तर प्रदेश) में श्रीअरविंद सोसायटी केन्द्रोंका सातवां वार्षिक अधिवेशन २३ से २५ अक्तूबर तक हुआ।

प्रकाश नगर गणदेवीके पास (गुजरात) में सरपंच श्री मोरार भाई पटेलने ग्रामकी उन्नतिके लिये कई योजनाएं बनायी हैं।

नरसापुर (आन्ध्र प्रदेश) में सोसायटी केन्द्रकी तरफसे १६ पृष्ठकी एक पुस्तिका छापी गयी है। नाम है "जीवनके प्रकाश"। उसमें "श्रीमांके वचन" पुस्तकसे १०१ उद्धरण लिये हैं। जो लोग उसकी प्रति चाहते हैं वे निम्नलिखित पतेपर लिखें:

सचिव, श्रीअरविंद सोसायटी केन्द्र, नरसापुर — ५३४२७५।

कृपया डाक खर्चके लिये २० पैसेका टिकट भी भेजें।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनका प्रयोजन धन कमाना नहीं है। धनका प्रयोजन नये सृजन-के आगमनके लिये पृथिवीको तैयार करना है।

-- श्रीमां

राहुल ट्रान्सपोर्ट प्रा. लिमिटेड

मुख्यालय

तखतमल इस्टेट,
अमरावती ४४४६०१
दूरभाष : २२३६

थाना बुकिंग

एम. श्री. भाटिया कम्पाऊण्ड,
सवानी ट्रान्सपोर्टके निकट,
पूर्वी राष्ट्रपथ
दूरभाष : ५९६००७

बंबई कार्यालय

१३२, परसेपोलिस
प्लाट क्रं. १००
कफ परेड,
बंबई–४००००५
दूरभाष : २१६१०८ व ५२२१६५

'अभीप्सा' अखिल भारत पत्रिका मराठी भाषामें पढ़िये।
संपर्क सूत्र — श्रीअरविन्द सोसायटी, २५-३०२ मोर्शी मार्ग,
अमरावती–४४४६०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवत्कृपापर पूर्ण विश्वास और निर्भरता बनाये रखना ही, अंतिम विश्लेषणमें, सर्वोत्तम बुद्धिमानी सिद्ध होता है।

— श्रीमाताजी

स्टार आटोमोबाईल सर्विसेज

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर (उ. प्र.)

एवं

भारत आयल कैरियर्स

लक्ष्मणझूला मार्ग

ऋशिकेश-२४९२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्रधरपुरमें ६ और ७ नवम्बरको जिला-सम्मेलन हुआ। इस अवसरपर डा० पी. आर. चन्द्र, श्री समर बसु और कुछ अन्य लोगोंने भाषण दिये।

२४ नवम्बरको "प्रार्थना और ध्यान" पुस्तकका तेलुगु अनुवाद प्रकाशित हुआ। अनुवादक हैं श्री कमलाकर वेंकटराव।

घोषणाएं — स्वाध्याय शिविर :

पांडिचेरीमें २२ फरवरी १९७८ से ४ मार्च तक ११ दिनका शिविर होगा। रोज श्रीअरविंदकी रचनाओंका अध्ययन होगा, फिर उनपर वाद-विवाद, भाषण और प्रश्नोत्तर होंगे। सदस्योंके लिये पुस्तकालयमें पढ़नेकी सुविधा रहेगी। जिनको इसमें रस है वे कृपया २५ जनवरी १९७८ से पहले-पहले इस पतेपर लिखें : डा० माहेश्वरी, श्रीअरविंद आश्रम, पांडिचेरी–६०५००२

माताजीकी जन्म-शताब्दीके अवसरपर उपराष्ट्रपति श्री. बी. डी. जट्टीके सभापतित्वमें एक राष्ट्रीय समिति बनायी गयी — इसने शताब्दी मनानेके लिये अबतक निम्नलिखित कार्यक्रमोंकी योजना बनायी है : (१) विभिन्न भारतीय तथा विदेशी भाषाओंमें माताजीकी रचनाओंका प्रकाशन; (२) पांडिचेरी व दिल्लीमें विश्व सम्मेलन; (३) माताजीकी शिक्षाओंके प्रकाशमें विभिन्न क्षेत्रोंमें कार्यकर्ताओंको प्रशिक्षण; (४) राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी तैयारी करनेके लिये मृत्यु, दीर्घायु और अमरताके विषयमें अध्ययन-गोष्ठियोंका आयोजन।

निवेदन :

शताब्दी सालमें हम २५०० डोनर मेम्बर्जके नाम लिखना चाहते हैं (यानी, २५१ रु. देकर आजीवन सदस्य बन सकते हैं), इसलिये हम सभी सदस्यों और मित्रोंसे निवेदन करते हैं कि वे इस प्रयासमें हमारी सहायता करें। निवेदन-पत्र निम्नलिखित पतेसे प्राप्त कर सकते हैं : श्री ए० एच० महादेविया, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन

अवर मदर : लेखक — डा० प्रेमा नन्दकुमार, प्र० — श्रीअरविंद सोसायटी, वितरक — शब्द, पांडिचेरी-६०५००२; मूल्य २.५० ।

फ्लावर ऐंड फ्रेगरेंस : माताजीने बहुत-से फूलों और पौधोंको आध्यात्मिक नाम दिये हैं। कई बार आध्यात्मिक नाम देते हुए माताजी छोटी-छोटी टिप्पणियां करती थीं या कभी-कभी व्याख्या भी करती थीं। ये टिप्पणियां और व्याख्याएं भी इस पुस्तकमें शामिल हैं।

माताजी कहती हैं: "जब तुम अपने चैत्य पुरुषके साथ सचेतन संपर्कमें आते हो तब तुम संपूर्ण सृष्टिके पीछे स्थित निर्वैयक्तिक चैत्य पुरुषके प्रति सचेतन हो जाते हो और फिर इसके द्वारा तुम फूलोंके साथ संपर्क स्थापित कर सकते हो और वे जिस चैत्य प्रार्थनाके प्रतीक हैं उसे जान सकते हो।" और माताजी यह भी कहती हैं: "चैत्य पुरुषको पाने और उसके साथ एक हो जानेके लिये फूलोंसे प्रेम करना बहुमूल्य सहायता है। चूंकि फूल वनस्पति जगत्‌में चैत्य पुरुषकी अभिव्यक्ति हैं इसलिये फूलोंसे प्रेम करनेका अर्थ होगा कि तुम चैत्य स्पन्दनसे आकर्षित हो रहे हो और फलस्वरूप अपने अन्दर स्थित चैत्यसे भी।"

प्रकाशक—श्रीअरविंद सोसायटी, वितरक—शब्द, पांडिचेरी ६०५००२, मूल्य ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

फरवरी १९७८

वर्ष ८, अंक ७, पूर्णांक ९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५२ से माताजी हर दर्शनपर कोई विशेष संदेश दिया करती थीं। इस अंकमें हम फरवरी दर्शनोंपर दिये गये संदेशोंको एक साथ प्रकाशित कर रहे हैं।

—संपादक

सोसायटी समाचार

राष्ट्रीय सभाका विवरण :

२० नवंबर, १९७७ को उपराष्ट्रपति भवन, दिल्लीमें, माताजीकी जन्म शताब्दीके लिये राष्ट्रीय समितिकी सभा हुई। उसका आरंभ पांच बजे हुआ।

चूंकि समितिके सभापति श्री बी. डी. जट्टी अस्वस्थ थे इसलिये श्री नवजातजीसे उनका स्थान लेनेके लिये कहा गया। सभाके अंतमें यह निश्चय किया गया कि एक सचिवालयकी स्थापना की जायगी और शताब्दी महोत्सवके लिये राष्ट्रीय समिति बनायी जायगी।

श्री दयानंद (शताब्दी समितिके सचिव) ने अनेक कार्यक्रम तथा परियोजनाएं प्रस्तुत कीं, उनमेंसे कुछ हैं :

(१) अनेक भारतीय तथा विदेशी भाषाओंमें माताजीकी रचनाएं प्रकाशित करना। साहित्य केवल श्रेष्ठ वर्गके लोगोंके लिये ही नहीं, बल्कि ग्रामवासियोंके लिये भी हो।

(२) विभिन्न भाषाओंमें शताब्दीके उपलक्ष्यमें ऐसे छोटे-छोटे कार्यक्रम तैयार किए जाएं जिनमें भाषण, ध्यान इत्यादिद्वारा श्रीअरविन्द शिक्षा, उनके आश्रम तथा आदर्शका थोड़ा-बहुत परिचय प्राप्त हो।

(३) मद्रासमें जुलाई १९७८ में मानव एकताके लिये विश्व समिति रखना।

(४) माताजीकी रचनाओंके प्रकाशमें नेताओंको विभिन्न क्षेत्रोंमें

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी संदेश

21.2.1952

Make of us the hero warriors we aspire to become. May we fight successfully the great battle of the future that is to be born against the past that seeks to endure; so that the new things may manifest and we be ready to receive them.

6.1.1952 The Mother

हमें वीर योद्धा बना, बस यही हमारी अभीप्सा है। अतीत ज्यों-का-त्यों बना रहना चाहता है और उसके विरुद्ध भविष्य उत्पन्न होकर ही रहेगा — उसी भविष्यके महान् युद्धको हम सफलताके साथ चलायें ताकि नवीन चीजें अभिव्यक्त हो सकें और हम उन्हें ग्रहण करनेके लिये तैयार हो जायें।

६-१-१९५२ —माताजी

21.2.1953

Everyone who is turned to the Mother is doing my Yoga. It is a great mistake to suppose that one can "do" the Purna Yoga — i.e. carry out and fulfil all the sides of the Yoga by one's own effort. No human being can do that. What one has to do is to put oneself in the Mother's

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

hands and open oneself to her by service, by bhakti, by aspiration; then the Mother by her light and force works in him so that the sadhana is done. It is a mistake also to have the ambition to be a big Purna Yogi or a supramental being and ask oneself how far I got towards that. The right attitude is to be devoted and given to the Mother and to wish to be whatever she wants you to be. The rest is for the Mother to decide and do in you.

April 1935 Sri Aurobindo

प्रत्येक व्यक्ति जो श्रीमांकी ओर मुड़ा हुआ है, मेरा योग कर रहा है। यह मानना एक बहुत बड़ी भूल है कि कोई व्यक्ति पूर्णयोग "कर" सकता है — अर्थात्, केवल अपने निजी प्रयासके द्वारा ही इस योगके सभी पहलुओंको कार्यान्वित और सिद्ध कर सकता है। कोई भी मनुष्य यह नहीं कर सकता। मनुष्यको जो कुछ करना है वह है श्रीमांके हाथोंमें अपने-आपको रख देना और सेवाके द्वारा, भक्तिके द्वारा, अभीप्साके द्वारा अपने-आपको उनकी ओर खोलना; तब श्रीमां अपनी ज्योति और शक्तिके द्वारा उसमें कार्य करती हैं ताकि साधना पूरी हो। फिर एक बड़ा पूर्णयोगी या अतिमानसिक पुरुष बननेकी महत्त्वाकांक्षा रखना तथा अपने-आपसे यह प्रश्न करना कि मैं उस दिशामें कितनी दूर आगे बढ़ा हूं, यह भी एक भूल है। समुचित मनोभाव यही है कि श्रीमांके प्रति भक्ति और आत्म-समर्पण किया जाय और वही बननेकी इच्छा की जाय जो श्रीमां बनाना चाहती हैं। उसके बाद तुम्हारे अंदर जो कुछ निर्णय करना और सिद्ध करना है उसे स्वयं श्रीमां करेंगी।

अप्रैल १९३५ —श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

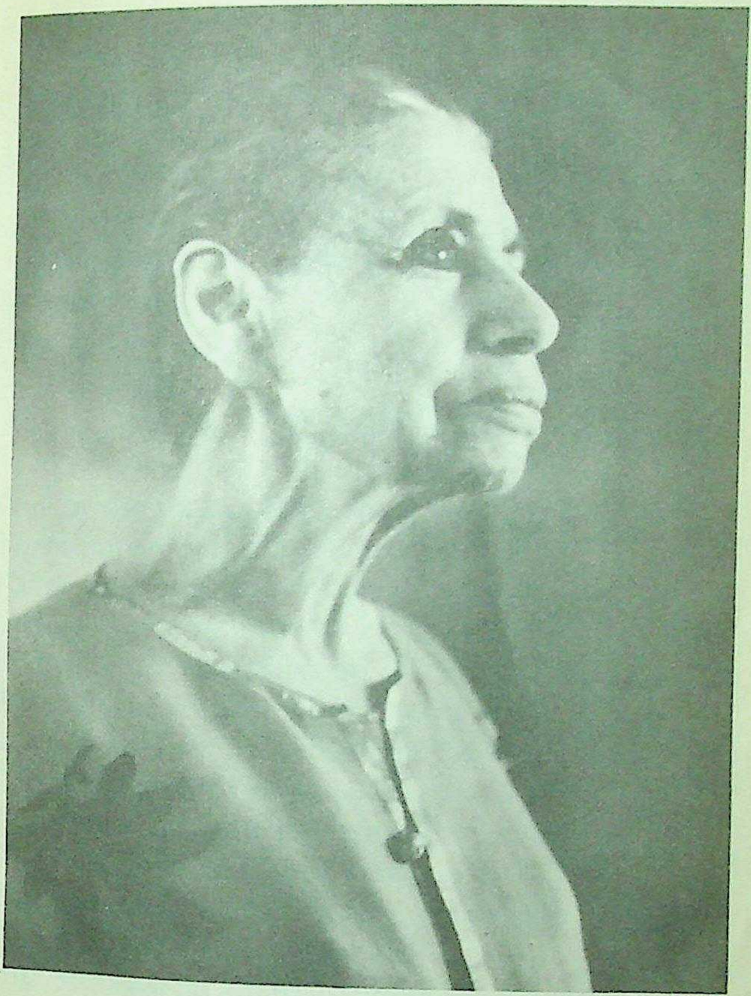

certitude

निश्चिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.2.1954

When you fear death it has already defeated you.

The Mother

यदि तुम मृत्युसे डरते हो तो समझ लो कि उसने तुम्हें परास्त कर दिया।

—माताजी

21.2.1955

Out of the paths of the morning star they came,
Forerunners of a divine multitude,
Faces that were the immortal's glory still,
Voices that communed with the thoughts of God,
Bodies made beautiful by the Spirit's light:
The sun-eyed children of a marvellous Dawn,
The great creators with wide brows of calm,
The massive barrier-breakers of the world
And wrestlers with destiny in her lists of will,
The labourers in the quarries of the Gods,
The messengers of the Incommunicable,
The architects of Immortality.
Into the mortal's fallen sphere they came
Carrying the magic word, the mystic Fire,
Carrying the cup of Dionysian Joy,
Approaching eyes of a diviner Man,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Lips chanting an unknown anthem of the soul,
Feet echoing in the corridors of Time.
Even as man once came behind the beast,
After us there shall come a greater race,
High priests of wisdom, sweetness, might and bliss
And runners upon beauty's sunlit ways,
And Swimmers of Love's laughing fiery floods
And dancers within rapture's golden doors,
Whose tread one day shall change the suffering earth
And justify the light on Nature's face.

Savitri, Book III, Canto 4 — Sri Aurobindo
An early version

21.2.1956

For one was there supreme behind the God.
A Mother Might brooded upon the world;
A Consciousness revealed its marvellous front
Transcending all that is, denying none:
Imperishable above our fallen heads
He felt a rapturous and unstumbling Force.
The undying Truth appeared, the enduring Power
Of all that here is made and then destroyed,
The Mother of all godheads and all strengths
Who, mediatrix, binds earth to the Supreme.

Savitri — Sri Aurobindo

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.2.1957

Who art thou that camest
Bearing the occult Name,
Wings of regal darkness
Eyes of an unborn flame.

Like the august uprising
Of a forgotten sun
Out of the caverned midnight
Fire-trails of wonder run.

Captured the heart renouncing
Tautness of passion-worn strings
Allows the wide-wayed sweetness
Of free supernal things.

Sri Aurobindo

21.2.1958

To celebrate the birth of a transitory body can satisfy some faithful feelings.

To celebrate the manifestation of the eternal Consciousness can be done at every moment of the universal history.

But to celebrate the advent of a new world, the supramental world, is a marvellous and exceptional privilege.

The Mother

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्यपरिवर्तनशील शरीरका जन्मोत्सव मनाना हृदयकी कुछ श्रद्धा-पूर्ण भावनाओंको संतुष्ट कर सकता है।

शाश्वत चेतनाकी अभिव्यक्तिका उत्सव विश्व इतिहासके प्रत्येक मुहूर्तमें मनाया जा सकता है।

परंतु एक नवीन जगत्के, अतिमानसिक जगत्के आविर्भावका उत्सव मनाना एक असाधारण और अद्भुत सौभाग्यकी बात है।

—माताजी

SRI AUROBINDO ON THE MOTHER

The Mother's consciousness is the divine consciousness and the Light that comes from it is the light of the Divine Truth. One who receives and accepts and lives in the Mother's light, will begin to see the truth on all planes, the mental, the vital, the physical. He will reject all that is undivine, — the undivine is the falsehood, the ignorance, the error of the dark forces; the undivine is all that is obscure and unwilling to accept the Divine Truth and its light and force. The undivine, therefore, is all that is unwilling to accept the light and force of the Mother. That is why I am always telling you to keep in contact with the Mother and her Light and Force, because it is only so that you can come out of this confusion and obscurity and receive the Truth that comes from above.

When we speak of the Mother's Light or my

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Light in a special sense, we are speaking of a special occult action — we are speaking of certain lights that come from the Supermind. In this action the Mother's is the White Light that purifies, illumines, brings down the whole essence and power of the Truth and makes the transformation possible. But, in fact, all light that comes from above, from the highest divine Truth is the Mother's.

There is no difference between the Mother's path and mine; we have and always had the same path that leads to the supramental change and the divine realisation; not only at the end, but from the beginning they have been the same.

Sri Aurobindo

श्रीअरविंद — माताजीके विषयमें

श्रीमांकी चेतना भागवत चेतना है और उससे जो 'ज्योति' आती है वह 'भागवत सत्य'की ज्योति है। जो मनुष्य श्रीमांकी ज्योतिको ग्रहण करता, स्वीकार करता और उसमें निवास करता है वह मनोमय, प्राणमय और अन्नमय आदि सभी स्तरोंपर सत्यको देखना आरंभ कर देता है। वह उन सबका त्याग करता है जो अदिव्य है — और अदिव्य है मिथ्यापन, अज्ञान, अंधकारकी शक्तियोंकी भूल-भ्रांति; वह सब अदिव्य है जो अंधकारपूर्ण है और 'दिव्य सत्य' और उसकी ज्योति और शक्तिको स्वीकार करनेके लिये इच्छुक नहीं है। अतएव, वह सब कुछ अदिव्य है जो श्रीमांकी ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शक्तिको स्वीकार करना नहीं चाहता। यही कारण है कि मैं हमेशा तुम लोगोंसे कहता रहता हूं कि तुम श्रीमांके साथ और उनकी ज्योति और शक्तिके साथ संपर्क बनाये रखो। क्योंकि केवल तभी तुम इस भ्रम, भ्रांति और अंधकारसे बाहर निकल सकते हो और ऊपरसे आनेवाले सत्यको ग्रहण कर सकते हो।

जब हम एक विशेष अर्थमें श्रीमांकी ज्योति या मेरी ज्योतिकी बात कहते हैं तो वह एक विशिष्ट गुह्य क्रियाकी बात होती है—किन्हीं ऐसी ज्योतियोंकी बात होती हैं जो अतिमानससे आती हैं। इस क्रियामें श्रीमांकी ज्योति श्वेत होती है जो पवित्र बनाती, आलोकित करती, सत्यके समस्त सारतत्त्व और शक्तिको नीचे लाती और रूपांतरको संभव बनाती है। परंतु सच पूछा जाय तो जो ज्योतियां ऊपरसे, उच्चतम दिव्य सत्यसे आती हैं वे सब-की-सब श्रीमांकी ही हैं।

श्रीमांके और मेरे पथमें कोई अंतर नहीं है; हमारा पथ एक ही है और सदा एक ही रहा है — यह वह पथ है जो अतिमानसिक परिवर्तन और दिव्य सिद्धितक ले जाता है; हमारा पथ केवल अंतमें ही एक नहीं है, बल्कि आरंभसे ही एक रहा है।

—श्रीअरविंद

21.2.1959

In the mind which is a creator of differential contradictions there is supposed to be a perpetual incompatibility between the transcendent and the cosmic states of the Divine — as also between the Personal and Impersonal, the One and the Many. The supramental consciousness, on the other hand, does not raise these problems,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

for there the way of experience of the mental Ignorance is abolished and the basis of all things is an indefeasible unity — whatever expression is there cannot diminish or contradict this unity (which is essential and not numerical) but lives in it and by it, never losing the hold on the supracosmic Reality which it expresses. This difference between Supermind and mind is difficult to explain fully to the mind, for it contradicts the logic of the mind and substitutes a way of knowing which is *swayamprakasha* (self-revealing) and rooted in a knowledge by identity of which the mind at its best can only grasp a thin reflection or a shadow. But it makes an immense difference in the possibilities of consciousness, a difference which one can only realise, not by thought, but by experience.

Sri Aurobindo

मन भेदमूलक विरोधोंका स्रष्टा है और ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें भगवान्‌की परा-स्थिति तथा वैश्व स्थितिके बीच — और उसी तरह साकार और निराकार, एक और बहुके बीच — एक शाश्वत वैषम्य विद्यमान है। परंतु, दूसरी ओर, अतिमानसिक चेतना इन समस्याओंको खड़ा नहीं करती, क्योंकि वहां मानसिक अज्ञानकी अनुभव-पद्धति लुप्त हो जाती है और समस्त वस्तुओंका आधार हो जाता है एक अच्छेद्य एकत्व — वहां चाहे कोई भी अभिव्यक्ति क्यों न हो, वह इस एकत्वका (जो मूलगत होता है, संख्यागत नहीं) ह्रास या खण्डन नहीं कर सकती, बल्कि वह उसीमें तथा उसीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायतासे बनी रहती है, वह जिस विश्वातीत सद्वस्तुको व्यक्त करती है उसे पकड़े रखती है, उसे कभी खोती नहीं। अतिमानस और मनका यह विभेद मनको पूर्ण रूपसे समझाना कठिन है, क्योंकि यह मनके युक्ति-तर्कका विरोधी है और उसके स्थानपर यह ज्ञानकी उस पद्धतिको ला बैठाता है जो स्वयंप्रकाश होती है तथा जिसकी जड़ एक ऐसे तादात्म्यद्वारा प्राप्त ज्ञानमें जमी होती है जिसका मन अधिक-से-अधिक एक क्षीण प्रतिबिंब या परछाई ही पकड़ सकता है। परंतु इसके कारण चेतनाकी संभावनाओंमें एक महान् अंतर आ जाता है, एक ऐसा अंतर आ जाता है जिसे मनुष्य चिंतनके द्वारा नहीं, केवल अनुभवके द्वारा ही जान सकता है।

—श्रीअरविंद

21.2.1960

LES ANNONCIATEURS DU MONDE SUPRAMENTAL

अतिमानसिक जगत्की घोषणा करनेवाले। (चित्र)

21.2.1961

Once the connection between the supramental and the human consciousness is made, it is the psychic being that gives THE READIEST RESPONSE — more ready than the mind, the vital or the physical. It may be added that it is also purer response; the mind, vital and physical can allow other things to mix with

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

their reception of the supramental influence and spoil its truth. The psychic is pure in its response and allows no such mixture.

The supramental change can take place only if the psychic is awake and is made the chief support of the descending supramental power.

Sri Aurobindo

अतिमानस और मानव चेतनाके बीच जब एक बार संपर्क स्थापित हो जाता है तब चैत्य पुरुष ही **सबसे अधिक तत्परताके साथ उसका उत्तर** देता है, मन, प्राण या शरीरसे भी ज्यादा तत्परताके साथ। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि वही उत्तर अधिक शुद्ध होता है; मन, प्राण और शरीर जब अतिमानसिक प्रभावको ग्रहण करते हैं तो वे और चीजोंको भी उसके साथ मिल जाने और उसके सत्यको विनष्ट कर देनेका अवसर दे सकते हैं। परंतु चैत्य पुरुषका जवाब शुद्ध होता है और वह ऐसा कोई मिश्रण नहीं होने देता।

अतिमानसिक रूपांतर केवल तभी हो सकता है जब कि चैत्य पुरुष जाग्रत हो जाय और ऊपरसे उतरनेवाली अतिमानसिक शक्तिका प्रमुख आधार बन जाय।

—श्रीअरविंद

21.2.1962

Our object is the supramental realisation and we have to do whatever is necessary for that or towards that under the conditions of each stage. At present the necessity is to prepare the physical consciousness; for that a complete equality and

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

peace and a complete dedication free from personal demand or desire in the physical and the lower vital parts is the thing to be established. Other things can come in their proper time. What is the need now is not insistence on physical nearness, which is one of these other things, but the psychic opening in the physical consciousness and the constant presence and guidance there.

Sri Aurobindo

हमारा लक्ष्य है अतिमानसिक सिद्धि और उसके लिये या उस ओर जानेके लिये जो कुछ आवश्यक है वह हमें प्रत्येक अवस्थाकी शर्तोंके अनुसार करना होगा। अभी भौतिक चेतनाको तैयार करनेकी आवश्यकता है और उसके लिये स्थूल शरीर तथा निम्न प्राणके भागोंमें पूर्ण समता, शांति और व्यक्तिगत मांग एवं कामनासे रहित पूर्ण आत्म-निवेदनकी स्थापना करनी होगी। अन्यान्य चीजें समुचित समयपर आयेंगी। अभी आवश्यकता इस बातकी है कि शारीरिक सामीप्यके लिये आग्रह न किया जाय — वह अन्य चीजोंमेंसे एक है — बल्कि शारीरिक चेतनाको चैत्य पुरुषकी ओर उद्घाटित किया जाय और कोशिश की जाय कि उसकी सतत उपस्थिति बनी रहे और उसका पथप्रदर्शन मिलता रहे।

—श्रीअरविंद

21.2.1963

The boon that we have asked from the Supreme is the greatest that the Earth can ask from the Highest, the change that is most difficult to

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

realise, the most exacting in its conditions. It is nothing less than the descent of the supreme Truth and Power into Matter, the supramental established in the material plane and consciousness and the material world and an integral transformation down to the very principle of Matter. Only a supreme Grace can effect this miracle.

The supreme Power has descended into the most material consciousness but it has stood there behind the density of the physical veil, demanding before manifestation, before its great open workings can begin, that the conditions of the supreme Grace shall be there, real and effective.

A total surrender, an exclusive self-opening to the divine influence, a constant and integral choice of the Truth and rejection of the falsehood, these are the only conditions made. But these must be fulfilled entirely, without reserve, without any evasion or pretence, simply and sincerely down to the most physical consciousness and its workings.

Sri Aurobindo

परम प्रभुसे हमने जो वरदान मांगा है वह, पृथ्वी परमात्मासे जिन वरदानोंको मांग सकती है, उनमें सबसे बड़ा है। हमने वह परिवर्तन मांगा है जिसे साधित करना अत्यंत कठिन है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी शर्तें अत्यंत कठोर हैं। वह यह है — इससे जरा भी कम नहीं — कि जड़-तत्त्वमें परात्पर दिव्य सत्य और शक्तिका अवतरण हो, भौतिक स्तर और चेतनामें तथा पार्थिव जगत्में अतिमानसिक सत्य स्थापित हो, एवं नीचे जड़-तत्त्वतक पूरी सत्ता संपूर्ण रूपांतरित हो जाय, इस चमत्कारको एकमात्र परम कृपा ही संसिद्ध कर सकती है।

परात्परा शक्ति अत्यंत जड़ चेतनामें अवतरित हो गयी है पर वह सघन भौतिक पर्देके पीछे खड़ी है; वह मांग करती है कि उसकी अभिव्यक्तिसे पहले, उसकी महान् उन्मुक्त क्रियावलीके आरंभ होनेसे पहले परम कृपाकी शर्त्तें यथार्थ और प्रभावकारी रूपमें की जायं।

सर्वांगपूर्ण आत्म-समर्पण, भागवत प्रभावके प्रति ऐकांतिक आत्मोद्घाटन, सतत और संपूर्ण रूपसे दिव्य सत्यका वरण तथा मिथ्यात्वका परित्याग — बस, ये ही शर्त्तें रखी गयी हैं। परंतु इन शर्त्तोंको एकदम पूर्ण रूपसे अत्यंत भौतिक चेतना और उसकी क्रियाओंतकमें सहज और सच्चे रूपमें पूरा करना होगा, कतराये और बहाने बनाये बिना निःशेष भावसे पूरा करना होगा।

—श्रीअरविंद

21.2.1964

Her single will opposed the cosmic rule.
To stay the wheels of Doom this greatness rose.
Savitri Sri Aurobindo

21.2.1965

Above all the complications of the so-called

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

human wisdom stands the luminous simplicity of the Divine's Grace, ready to act if we allow It to do so.

The Mother

तथाकथित मानवीय बुद्धिमत्ताकी समस्त जटिलताओंसे ऊपर भागवत कृपाकी ज्योतिर्मयी सरलता विद्यमान है और वह कार्य करनेके लिये, यदि हम उसे करने दें, तो, तैयार है।

—माताजी

21.2.1966

There can be only one "solution" for this kind of struggle, — to recognise these feelings for what they are, unregenerated movements of the old vital nature, and to reject these vital suggestions as suggestions of adverse forces that want to push you out of the straight path. If the mind of the *sadhak* supports these vital movements, if any part of his nature accepts and cherishes them, then, so long as he allows them to do so, he cannot get rid of the struggle.

All these suggestions are very familiar, and they are always the same, both in expression and substance. The reactions too are always the same and their very nature is sufficient to show the source from which they come, — disappointment of unsatisfied desire, despondency, dis-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

content, unhappiness, the sense of grievance and injustice, revolt, a fall to tamas and inertia (because the vital being refuses participation in the spiritual effort unless its egoistic demands are conceded), dryness, dullness, cessation of the sadhana. The same phrases even are repeated, — "no life in this existence", "suffocation", "limitation", "air-tight compartments"; and all this simply means that the lower vital nature — or some part of it — is in revolt and wants something else than the divine Truth and the tapasya that leads to the supramental change. It refuses to give up ego and desire and claim and demand or to accept a true self-giving and surrender, while yet it feels the pressure on it to transform itself into an instrument of the divine life. It is this pressure that it calls suffocation. The refusal to let it expand in desires and make a big place for itself it calls limitation of the being. The calm, purity, collected silence which are the basis of the tapasya for the supramental change, — this is what it stigmatises as "no life". Right rule and insistence on self-denial and self-mastery and restraint from claim and demand are what it calls "air-tight compartments". And the worst suggestions and most dangerous deception come when this spirit of demand and desire is dissimilated in a spiritual garb and

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

takes a form which makes it seem to the *sadhak* a part of the Yoga.

There is only one way of escape from this siege of the lower vital nature. It is the entire rejection of all egoistic vital demand, claim and desire and the replacement of the dissatisfied vital urge by the purity of psychic aspiration. Not the satisfaction of these vital clamours nor, either, an ascetic retirement is the true solution, but the surrender of the vital being to the Divine and a single-minded consecration to the supreme Truth into which desire and demand cannot enter. For the nature of the supreme Truth is Light and Ananda, and where desire and demand are there can be no Ananda.

It is not the vital demand but the psychic urge that alone can bring the nature towards the supramental transformation; for it alone can change the mental and vital and show them their own true movement. But constantly the vital demand is being taken for the psychic aspiration; and yet the difference is clear. In the psychic aspiration there are none of these reactions, there is no revolt, no justification of revolt : for the psychic aspires through inner union with the Divine and surrender. It does not question and challenge, but seeks to understand through unity with the Divine Will. It does not ask for small

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

personal satisfactions, but finds its satisfaction in the growth of the Truth within the being; what it seeks and finds is not any indulgence of a vital and physical claim, but the true nearness which consists in the constant presence of the Divine in the heart and the rule of the Divine in all the Nature. The cry of the psychic is always : "Let the Truth prevail, let Thy will be done and not mine." But the clamour of the vital is the very opposite : it calls to the Divine: "Let my will be Thine; obey my insistences, satisfy my desires, then only will I seek and accept Thee, for then only will I consent to see the Divine in Thee." It is hardly necessary to say which is the way to the Truth or which the right solution of any struggle in the nature.

The only creation for which there is any place here is the supramental, the bringing of the divine Truth down on the earth, not only into the mind and vital but into the body and into Matter. Its object is not to remove all "limitations" on the expansion of the ego or to give a free field and make unlimited room for the fulfilment of the ideas of the human mind or the desires of the ego-centred life-force. None of us are here to "do as we like", or to create a world in which we shall at last be able to do as we like; we are here to do what the Divine wills and to create a world in

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

which the Divine Will can manifest its truth no longer deformed by human ignorance or perverted and mistranslated by vital desire. The work which the sadhak of the supramental Yoga has to do is not his own work, for which he can lay down his own conditions, but the work of the Divine which he has to do according to the conditions laid down by the Divine. Our Yoga is not for our own sake but for the sake of the Divine. It is not our own personal manifestation that we are to seek, the manifestation of the individual ego freed from all bounds and from all bonds, but the manifestation of the Divine. Of that manifestation our own spiritual liberation, perfection, fullness is to be a result and a part but not in any egoistic sense or for any ego-centred or self-seeking purpose. This liberation, perfection, fullness too are not to be for our own sake, but for the sake of the Divine. I emphasise this character of the creation because a constant forgetfulness of this simple and central truth, a conscious, half-conscious or wholly ignorant confusion about it has been at the root of most of the vital revolts that have spoiled many an individual sadhana here and disturbed the progress of the general inner work and the spiritual atmosphere.

The supramental creation, since it is to be a creation upon earth, must be not only an inner

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

change but a physical and external manifestation also. And it is precisely for this part of the work, the most difficult of all, that surrender is most needful; for this reason, that it is the actual descent of the supramental Divine into Matter and the working of the Divine Presence and Power there that can alone make the physical and external change possible. Even the most powerful self-assertion of human will and endeavour is impotent to bring it about; as for egoistic insistence and vital revolt, they are, so long as they last, insuperable obstacles to the descent. Only a calm, pure and surrendered physical consciousness, full of the psychic aspiration, can be its field; this alone can make an effective opening of the material being to the Light and Power and the supramental change a thing actual and practicable. It is for this that we are here in the body and it is for this that you and other sadhaks are in the Ashram near us. But it is not by insistence on petty demands and satisfactions in the external field or on an outer nearness pleasing to the vital nature and its pride or desire that you can get the true relation with the Divine in this province. If you want the realisation there, it is the true nearness that you must seek, the descent and presence of the Mother in your physical consciousness, her constant inner

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

touch in the physical being and its activities, her will and knowledge behind all its work and thought and movement and the ever present Ananda of that presence expelling all vital and physical separateness, craving and desire. If you have that, then you have all the nearness you can ask for, and the rest you will gladly leave to the Mother's knowledge and will to decide. For with this in you there can be no feeling of being kept away, no sense of a gulf and distance, no complaint of a unity that is lacking or an empty dryness and denial of nearness.

A time comes when after a long preparation of the mind and vital being, it becomes necessary to open also the physical nature. But when that happens very often the vital exaltation which can be very great when the experience is on its own plane, falls away and the obscure obstructive physical and gross material consciousness appears in its unrelieved inertia. Inertia, tamas, stupidity, narrowness and limitation, an inability to progress, doubt, dullness, dryness, a constant forgetfulness of the spiritual experiences received are the characteristics of the unregenerated physical nature, when that is not pushed by the vital and is not supported either by the higher mental will and intelligence. This seems to be in part what has temporarily happened to you; but

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

the way out is not to excite the physical by any vital revolt and outcry, or to blame for your condition either circumstances or the Mother, — for that will only make things worse and increase the tamas, dryness, dullness, inertia, — but to recognise that there is here an element of the universal Nature reflected in yours, which you must eliminate. And this can only be done by more and more surrender and aspiration and by so bringing in from beyond the vital and the mind the divine peace, light, power and presence. This is the only way towards the transformation and fulfilment of the physical nature.

Sri Aurobindo

इस प्रकारके संघर्षका केवल एक ही हल हो सकता है। इस प्रकारकी भावनाओंको पुरानी प्राणमय प्रकृतिकी अपरिवर्तित गति-विधि मानो; सचमुच यह वही है। इन प्राणमय सुझावों और संकेतोंको विरोधी शक्तियोंसे आनेवाले ऐसे सुझाव मानो जो तुम्हें सीधे मार्गसे धकेल देना चाहते हैं। अगर साधकका मन इस प्रकारकी प्राणिक गतिविधियोंको सहारा देता है, या अपनी प्रकृतिके किसी भागमें उन्हें स्वीकार करता या उनमें मजा लेता है तो जबतक वह इस प्रकारका मजा लेता रहेगा तबतक उसका संघर्षसे छुटकारा पाना संभव नहीं है।

ये सभी बहुत परिचित सुझाव हैं, उनके भाव और अभिव्यक्तिके तरीके भी एक जैसे ही होते हैं। उनकी प्रतिक्रियाएं भी सदा एक जैसी होती हैं। उनकी प्रकृतिसे ही पता लग जाता है कि वे किस स्रोतसे आये हैं। असंतुष्ट इच्छाओंसे होनेवाली निराशा, अवसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंतोष, दुःख, शिकायतें और अन्यायकी भावना, विद्रोह, अकर्मण्यता और तमस् (क्योंकि प्राणमय सत्ता आध्यात्मिक प्रयासमें तबतक भाग लेनेसे इंकार करती है जबतक उसकी अहंकारभरी मांगोंको पूरा न किया जाय), शुष्कता, उदासी और साधनाकी समाप्ति या विराम। वह-के-वही वाक्यांश दुहराये जाते हैं। "इस जीवनमें कोई सार नहीं," "दम घुटता है," "सीमाएं", "वायुरुद्ध विभाजन" — इन सबका मतलब बस यही होता है कि निम्न प्राणमय चेतना या उसका कोई भाग विद्रोह कर रहा है और भागवत सत्य तथा अतिमानसिक रूपांतरके लिये तपस्याकी जगह कोई और चीज चाहता है। वह भाग एक दबावका अनुभव तो करता है जिसके कारण उसे बदलकर भागवत जीवनका यंत्र बनना होगा, लेकिन वह अपने अहंकार, अपनी इच्छा-वासना, अपनी मांग या अपने दावोंको छोड़कर आत्मोत्सर्ग और समर्पण करनेके लिये तैयार नहीं होता। वह इस दबावको ही घुटनका नाम देता है। जब उसे अपनी इच्छाओंको बढ़ानेकी और अपने लिये एक बड़ा स्थान बना लेनेकी स्वीकृति नहीं मिलती तो वह इसे सत्ताका नियंत्रण या सीमा-बंधन कहता है। शांति, पवित्रता, नीरवता अतिमानसिक रूपांतरके लिये की जानेवाली तपस्याके आधार हैं, लेकिन इन्हें वह "निर्जीव" होनेका लांछन लगाता है। समुचित व्यवस्था, आत्मत्याग और आत्म-संयमके लिये आग्रह, मांग और अधिकारके निग्रहको वह "वायुरुद्ध विभाजन" का नाम देता है। जब इच्छा और मांगकी यह भावना कपट-भरा आध्यात्मिक बाना पहनकर आती है और साधकको लगता है कि यह भी योगका एक अंश है, तो जीवनमें सबसे अधिक बुरे सुझाव और भयंकर छल आते हैं।

निम्न प्राणमय प्रकृतिके घेरावसे बचनेका एक ही तरीका है, सभी अहंकारपूर्ण इच्छाओं, मांगों और दावोंका पूरी तरहसे त्याग कर दिया जाय और असंतुष्ट प्राणिक प्रेरणाओं और लालसाओंकी जगह, चैत्य अभीप्साकी प्रतिष्ठा की जाय। सच्चा समाधान न तो इन प्राणिक मांगोंके कोलाहलको संतुष्ट करनेमें है और न वैरागीकी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हें छोड़कर अलग हो जानेमें। सच्चा इलाज यह है कि प्राणम सत्ताको भगवान्‌की सेवामें उत्सर्ग कर दिया जाय और उस पर सत्यके प्रति एकनिष्ठ समर्पण किया जाय जिसमें मांगों और दावों प्रवेश तक नहीं हो सकता। क्योंकि परम सत्यकी प्रकृति है ज्योतिर्म और आनन्दमय, और जहां इच्छा या दावेकी उपस्थिति हो वह आनन्द नहीं रह सकता।

प्राणमय मांग नहीं, चैत्य प्रेरणा ही प्रकृतिको अतिमानसिक रूपांतर की ओर ला सकती है। चैत्य प्रेरणा ही मन और प्राणको बद सकती है और उन्हें अपनी सच्ची गतिविधि बता सकती है। लेकि सदा ही प्राणिक मांगको चैत्य अभीप्सा मान लिया जाता है यद्यपि दोनोंमें स्पष्ट अंतर है। चैत्य अभीप्सामें प्रतिक्रियाएं नहीं होतीं विद्रोह नहीं होता और विद्रोहको न्यायसंगत बनानेकी कोशिश नहीं होती। चैत्य पुरुष भगवान्‌के साथ आंतरिक ऐक्य और समर्पणके साथ अभीप्सा करता है। वह प्रश्न नहीं करता, आपत्ति नहीं करता वह छोटी-छोटी वैयक्तिक तुष्टियोंकी मांग नहीं करता, अपितु अपनी सत्तामें सत्यके विकासमें ही संतोष मानता है। वह जिस चीजकी तलाश करता है और जिसे पाता है वह प्राण या शरीरकी मांगोंके पूरा होनेका आनन्द नहीं है, वह सच्चे सामीप्यकी खोज करता है जिससे हृदयके अंदर भगवान्‌की उपस्थिति हमेशा बनी रहे और सारी प्रकृतिमें भगवान्‌का राज्य हो। चैत्य पुरुषकी हमेशा यही पुकार होती है: "सत्यकी जय हो, भगवन्, मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।" लेकिन प्राणकी इच्छा इससे ठीक उल्टी होती है। वह भगवान्‌से कहता है : "मेरी इच्छा ही तेरी इच्छा हो, मेरे आग्रहोंको मानो, मेरी इच्छाएं पूरी करो। तभी मैं तुझे खोजूंगा और तुझे स्वीकार करूंगा और तभी मैं तेरे अंदर भगवान्‌को देखनेके लिए राजी होऊंगा।" यह कहनेकी तो शायद ही जरूरत हो कि सत्यका मार्ग कौन-सा है और प्रकृतिमें होनेवाले संघर्षका कौन-सा सच्चा समाधान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां केवल एक ही सर्जनके लिये स्थान है और वह है अतिमानसिक सर्जन — दिव्य सत्यको यहां धरतीपर उतारना, केवल मन और प्राणमें ही नहीं, ठोस भौतिक द्रव्यतकमें उसे उतारना। उसका उद्देश्य अहंकारके विस्तारकी सब "सीमाओं"को हटाना नहीं है और न मानव मनके सभी विचारोंके खुल खेलनेके लिये खुला मैदान तैयार करना है, अहंकार-केंद्रित प्राण-शक्तिकी इच्छाओंको पूरा करना भी इसका उद्देश्य नहीं है। हममेंसे कोई भी यहां "अपनी मनमानी करनेके लिये" या एक ऐसी दुनिया बनानेके लिये नहीं है जिसमें अन्ततः हम अपनी इच्छाओंके अनुसार कर सकेंगे। यहां हम इसलिये हैं ताकि हम भगवान्‌की इच्छाको पूरा कर सकें और एक ऐसा जगत् बनायें जिसमें मानव अविद्यासे विकृत हुए बिना या प्राणिक इच्छाओं-से विकृत या गलत रूपमें परिवर्तित हुए बिना भगवान्‌की इच्छा अभिव्यक्त हो सके। अतिमानस योगके साधकको जो काम करना है वह उसका अपना काम नहीं है जिसके लिये वह अपनी परि-स्थितियां पैदा कर सके या शर्त्तें लगा सके। उसे भगवान्‌का काम करना है और उन अवस्थाओंमें करना है जो भगवान्‌ने ठीक कर दी हों। हमारा योग हमारे लिये नहीं, बल्कि भगवान्‌के लिये है। हमें अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्तिके लिये, सब बंधन काटकर, सीमाएं हटाकर अपने वैयक्तिक अहंकारकी अभिव्यक्तिके लिये प्रयत्न नहीं करना है। हमें भगवान्‌की अभिव्यक्तिके लिये प्रयास करना है। हमारी आध्यात्मिक मुक्ति, पूर्णता, समृद्धि भी भागवत अभिव्यक्तिके भागके रूपमें आ सकती है, लेकिन यह किसी अहंकारपूर्ण अर्थमें, किसी अहंकार-भरे या स्वार्थपूर्ण उद्देश्यसे नहीं होगी। यह मुक्ति, पूर्णता, समृद्धि भी हमारे अपने लिये नहीं, भगवान्‌के लिये होगी। मैं नयी सृष्टिकी इस विशेषतापर इस कारण अधिक बल दे रहा हूं क्योंकि इस सरल-से केंद्रीय सत्यको सतत भुलानेके कारणने, सचेतन, अर्धचेतन या निश्चेतन रूपसे इसकी अवज्ञासे उत्पन्न अस्त-व्यस्तताने यहांपर बहुतोंकी वैयक्तिक धसानाको बिगाड़ा है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य आंतरिक कार्य तथा आध्यात्मिक वातावरणमें गड़बड़ पैदा की है।

चूंकि अतिमानसिक सृष्टि धरतीपर होगी और इस कारण उसमें केवल आंतरिक परिवर्तन ही नहीं, भौतिक और बाह्य अभिव्यक्ति भी जरूरी है। और ठीक इसी कामके लिये जो सबसे कठिन है, समर्पणकी सबसे अधिक आवश्यकता है क्योंकि जड़-तत्त्वमें अतिमानस भगवान्‌का वास्तविक अवतरण और भागवत सत्ताकी उपस्थिति और शक्ति ही भौतिक और बाह्य रूपांतरको संभव बना सकती है। मनुष्यके संकल्प-बलका अधिक-से-अधिक सबल प्रयोग और प्रयास भी यह काम करनेमें असमर्थ है। अहंकारमय आग्रह, प्राणिक विद्रोह - वे जबतक रहें — भागवत अवतरणमें दुस्तर बाधाएं हैं। केवल शांत, पवित्र और समर्पित भौतिक चेतना ही, जिसमें चैत्य अभीप्सा भरी हो, उसका क्षेत्र हो सकती है। वही भौतिक सत्ताका भागवत ज्योति और शक्तिकी ओर प्रभावशाली रूपसे उद्घाटन कर सकती है और अतिमानसिक रूपांतरको वास्तविक और क्रियात्मक रूपमें साध्य बना सकती है। हमने इसीके लिये शरीर धारण किया है और इसी उद्देश्यसे तुम तथा और साधक हमारे पास आश्रममें रहते हैं। लेकिन इस क्षेत्रमें भगवान्‌के साथ सच्चा संबंध अपनी छोटी-मोटी मांगोंपर आग्रह करके या बाह्य जीवनमें संतोष प्राप्त करके या प्राणिक प्रवृत्ति को बाह्य सामीप्यसे प्राप्त प्रसन्नता या गर्व या इच्छापूर्तिसे नहीं पैदा हो सकता। अगर तुम्हें सचमुच सिद्धिकी खोज है तो तुम्हें सच्चे सामीप्यके लिये प्रयास करना चाहिये। तुम्हें अपनी भौतिक चेतना-में माताजीके अवतरण और उपस्थितिके लिये प्रयास करना चाहिये। तुम्हारी शारीरिक चेतनामें और उसकी गतिविधिमें उनका सतत स्पर्श बना रहे और उसके कार्यकलापमें, विचारों और क्रियाओंके पीछे उनकी इच्छा-शक्ति और उनका ज्ञान रहे और उनकी उपस्थितिके साथ हमेशा रहनेवाला आनंद सब प्रकारकी प्राणिक और भौतिक पृथक्ता, इच्छा, लालसा वगैराको दूर भगा दे। अगर तुम्हें यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो तो तुम जितने सामीप्यकी चाह कर सकते हो उतना पाओगे और बाकी चीजोंको खुशीसे माताजीकी इच्छा और ज्ञानके फैसलेपर छोड़ सकते हो। क्योंकि अगर तुम्हारे अंदर यह उपस्थिति हो तो तुम दूर रखे जानेकी शिकायत नहीं कर सकते, फिर खाई और दूरीकी शिकायत नहीं हो सकती, ऐक्यके अभावकी या रिक्त शुष्कता या सामीप्यके अभावकी शिकायत नहीं हो सकती।

एक समय आता है जब मन और प्राणकी लंबी तैयारीके बाद भौतिक प्रकृतिका उद्‌घाटन भी जरूरी हो जाता है। परंतु ऐसी अवस्थामें प्राणके क्षेत्रमें क्रिया होते समय जो उल्लास होता है वह बहुत बार झड़ जाता है और भौतिक सत्ताकी एकरस जड़ता, अंध-कारमय बाधाओं सहित स्थूल भौतिक चेतना प्रकट होती है। यदि प्राण, बुद्धि या उच्चतर मनकी प्रेरणा या उत्तेजना न हो तो साधारण अपरिष्कृत भौतिक चेतनाकी विशेषताएं होती हैं जड़ता, तमस, मूर्खता संकीर्णता, सीमा, प्रगतिके लिये अक्षमता, संदेह, अवसाद, शुष्कता और आध्यात्मिक अनुभूतियोंकी विस्मृति। तुम्हें सामयिक तौरपर जो कुछ हुआ है वह कुछ इसी तरहकी चीज है, लेकिन इससे बाहर निकलनेका रास्ता यह नहीं है कि प्राणिक विद्रोह या चिल्ल-पोंके द्वारा भौतिक सत्ताको जगाया जाय या इस अपनी दशाके लिये परि-स्थितियोंको या माताजीको दोषी ठहराया जाय। क्योंकि इससे तो स्थिति और भी बिगड़ेगी। तमस, शुष्कता, अवसाद, जड़तामें वृद्धि होगी। तुम्हें यह मानना चाहिये कि तुम्हारे अंदर सार्वभौम प्रकृति-का कोई तत्त्व प्रतिष्ठित हो रहा है जिसे निकाल बाहर करना चाहिये। और इसका एक ही उपाय है — अधिक-से-अधिक समर्पण और अभीप्सा और इस तरह मन और प्राणके परेसे भागवत शांति, ज्योति, शक्ति और उपस्थितिको अपने अंदर लाया जाय। रूपांतर और भौतिक प्रकृतिकी परिपूर्णताका यही एक उपाय है।

— श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.2.1967

When darkness deepens strangling the earth's breast
And man's corporeal mind is the only lamp,
As a thief's in the night shall be the covert tread
Of one who steps unseen into his house.
A voice ill-heard shall speak, the soul obey,
A power into mind's inner chamber steal,
A charm and sweetness open life's closed doors
And beauty conquer the resisting world,
The truth-light capture Nature by surprise,
A stealth of God compel the heart to bliss
And earth grow unexpectedly divine.

Savitri I. IV. p. 63 Sri Aurobindo

21.2.1968

The best way to hasten the manifestation of the Divine's Love is to collaborate for the triumph of the Truth.

The Mother

भागवत प्रेमकी अभिव्यक्तिको शीघ्रतासे आगे बढ़ानेका सबसे उत्तम पथ है दिव्य सत्यकी विजयमें सहयोग देना।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.2.1969

It is only immutable peace that can make possible eternity of existence.

The Mother

अक्षर शांति ही जीवनकी अमरताको संभव बना सकती है।

——माताजी

21.2.1970

Truth is a difficult and strenuous conquest. One must be a real warrior to make this conquest, a warrior who fears nothing, neither enemies nor death, for with or against everybody, with or without a body, the struggle continues and will end by Victory.

The Mother

सत्यको जीतना बड़ा कठिन और दुःसाध्य है। इस जीतके लिये मनुष्यको सच्चा योद्धा होना होगा — ऐसा योद्धा जो किसी चीजसे भय नहीं करता, न तो शत्रुओंसे और न मृत्युसे ही; क्योंकि, यह संघर्ष सबके साथ और सबके विरुद्ध, शरीरके सहित और शरीरके विना चल रहा है और इसका अंत परम विजयमें होगा।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21.2.1971

A life consecrated to union with the Divine is the only life worth living.

The Mother

एकमात्र वही जीवन जीने योग्य है जो भगवान्‌के साथ एकात्मताके लिये निवेदित हो।

—माताजी

21.2.1972

The complete unification of the whole being around the psychic centre is the essential condition to realise a perfect sincerity.

The Mother

समस्त सत्ताका चैत्य केंद्रके चारों ओर पूर्णतः एकरूप हो जाना ही पूर्ण सचाई प्राप्त करनेकी आवश्यक शर्त है।

—माताजी

29.2.1960

(During the common meditation on Wednesday the 29th February 1956)

This evening the Divine Presence, concrete and material, was there present amongst you.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I had a form of living gold, bigger than the universe, and I was facing a huge and massive golden door which separated the world from the Divine.

As I looked at the door, I knew and willed, in a single movement of consciousness, that "*the time has come*", and lifting with both hands a mighty golden hammer I struck one blow, one single blow on the door and the door was shattered to pieces.

Then the supramental Light and Force and Consciousness rushed down upon earth in an uninterrupted flow.

The Mother

(बुधवार, सामूहिक ध्यानके समय)

उस दिन शामको भगवान्‌की सत्ता ठोस और भौतिक रूपमें तुम लोगोंके बीच विद्यमान थी। मेरा आकार जीवंत स्वर्णसे गठित था और समचे विश्वसे भी बड़ा था। मैं सोनेके एक बहुत बड़े और भारी-भरकम फाटकके सामने उपस्थित थी जो जगत्‌को भगवान्‌से पृथक् कर रहा था।

ज्यों ही मेरी दृष्टि उस फाटकपर पड़ी त्यों ही, चेतनाकी एक ही क्रियाके द्वारा, मैंने जान लिया और मनमें ठान लिया कि "**समय आ गया है**"। मैंने दोनों हाथोंसे सोनेका एक बहुत बड़ा हथौड़ा उठाकर फाटकके ऊपर एक चोट की, केवल एक ही चोट, और फाटक चूर-चूर हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर तो अतिमानसिक ज्योति और शक्ति और चेतना एक अविरत धारामें पृथ्वीपर जोरोंसे उतरने लगीं।

—माताजी

29.2.1964

And earth shall be the Spirit's manifest home.
Sri Aurobindo

29.2.1968

Truth alone can give to the world the power of receiving and manifesting the Divine Love.
The Mother

एकमात्र परम सत्य ही भागवत प्रेमको ग्रहण करने और अभिव्यक्त करनेकी शक्ति संसारको दे सकता है।

—माताजी

29.2.1972

It is only when the Supramental manifests in the body-mind that its presence can be permanent.

The Mother

जब अतिमानस दैहिक मनमें अभिव्यक्त होगा केवल तभी उसकी स्थिति स्थायी हो सकती है।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donted by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनका प्रयोजन धन कमाना नहीं है। धनका प्रयोजन नये सृजन-के आगमनके लिये पृथिवीको तैयार करना है।

— श्रीमां

राहुल ट्रान्सपोर्ट प्रा. लिमिटेड

मुख्यालय

तखतमल इस्टेट,
अमरावती ४४४६०१
दूरभाष : २२३६

थाना बुकिंग
एम. श्री. भाटिया कम्पाऊण्ड,
सवानी ट्रान्सपोर्टके निकट,
पूर्वी राष्ट्रपथ
दूरभाष : ५९६००७

बंबई कार्यालय
१३२, परसेपोलिस
प्लाट क्रं. १००
कफ परेड,
बंबई–४००००५
दूरभाष : २१६१०८ व ५२२१६५

'अभीप्सा' अखिल भारत पत्रिका मराठी भाषामें पढ़िये।
संपर्क सूत्र — श्रीअरविन्द सोसायटी, २५-३०२ मोर्शी मार्ग,
अमरावती–४४४६०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

INDIAN TEA
STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Wanted Agents

(Male/Female)

Candidates do this work at own Area.

Salary:

Rs. 300/-, Commission and T. A. extra.

Qualification :

Candidate should be minimum Matric or Higher Secondary.

Age:

18 to 40 yrs.

Send applications only in Hindi or in English. Registered Letter to the following address :

Gwalior Textiles

38-B, Majlis Park,
DELHI-110033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रशिक्षित करनेके लिये पांडिचेरी और दिल्लीमें 'एकेडमी आफ द फ्यूचर' स्थापित करना।

(५) मृत्यु, दीर्घायु और अमरतापर एक सेमिनार रखना।

(६) माताजीकी शिक्षाके आधारपर राष्ट्रीय पुर्ननिर्माणकी योजना तैयार की जाय।

(७) श्रीअरविन्द सोसायटीके ६०० केंद्र हर जिलेमें खोले जायं ताकि व्यक्तिगत और सामाजिक सर्वांगीण शिक्षा दी जा सके। और इस उद्देश्यसे पांडिचेरी और अन्य स्थानोंपर सेमिनारोंकी व्यवस्था की जाय।

डा० रामचन्द्रने कहा कि शताब्दी समितियोंके संयोजक केवल सरकारी सेवक नहीं, बल्कि ऐसे लोग होने चाहिये जिनका श्रीअरविन्दकी शिक्षा तथा सोसायटी तथा आश्रमके साथ अच्छा परिचय हो।

फिर समितिके सदस्य और अध्यक्ष चुने गये और अध्यक्षोंको अपनी समितिमें और सदस्योंको निमंत्रण देनेका अधिकार सौंपा गया।

कार्यक्रम और परियोजनाएं :

(१) इस उपसमितिका काम है सभी कार्यक्रमों तथा परियोजनाओंके सुझावोंको स्वीकार करना, उन्हें व्यवस्थित करके कार्यान्वयनके लिये तैयार रखना।

(२) संगठन — इस उपसमितिका काम है विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओंमें समितियोंकी व्यवस्था करना और विभिन्न तरीकोंसे सुझावोंको महोत्सवके लिये कार्यान्वित करना।

(३) सार्वजनिक संबंध — इस उपसमितिका काम होगा रेडियो, प्रेस तथा दूरदर्शनके लिये लेख तथा विषय तैयार करना और शताब्दी-कामके लिये साहित्य तैयार करना।

(४) अर्थ-व्यवस्था — इस समितिका काम होगा खर्चको आंकना इत्यादि और बैंक-हिसाबकी देख-रेख करना।

(५) अंतर्राष्ट्रीय संबंध — इस समितिका काम होगा विदेशी भाषाओंमें साहित्य तैयार करनेके लिये यूनेस्को तथा अन्य दूतावासोंके साथ संपर्क रखना। और भारतसे बाहर महोत्सव मनानेके लिये हर प्रकारका प्रयास करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for Indi
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 873

सकल भारत शताब्दी महोत्सवके अंशके रूपमें ये कुछ क्रिया कलाप हाथमें लिये जायंगे :

(१) संस्कृतके बारेमें एक अधिवेशन जिसमें यह दिखानेकी कोशि की जायगी कि संस्कृत भाषा एक सांस्कृतिक कड़ी है जो भारती संस्कृतिकी विभिन्न रेखाओंको जोड़नेमें समर्थ है। संस्कृत भाषाव भारतमें पुन: स्थापित करनेके लिये आधुनिक तौर-तरीकोंका इस्तेमा करना होगा। सभाका खर्च चुकानेके लिये राज्यमंत्री, शिक्ष विभाग, श्रीमती आर. डी. बरकतकीसे ग्रांटकी मांग की जा सकती है

(२) १९७८-७९ अंतर्राष्ट्रीय बच्चोंका वर्ष माना जा रहा है। इस बारेमें सभा होगी, निवेदन पत्र श्रीमती शरण सिंहको भेजना होगा

(३) विश्वविद्यालयोंमें शताब्दी महोत्सवकी व्यवस्था की जाय औ उनसे यह विनती की जाय कि अपने पुस्तकालयोंमें वे माताजी त श्रीअरविन्दकी किताबें रखें।

समितिके मुख्य कार्यकर्ता : सभापति : श्री बी. डी. जट्टी; उपसभ पति : लाला हंसराज गुप्त, श्री वाई. बी. चव्वान, श्री के. आर. श्री वास आय्यंगार, श्री दत्तोपति ठेंगड़े; संयोजक : श्री नवजात; सचिव श्री जे. दयानंद, श्री ए. राम राव; संगठन सचिव : श्री देवदत्त कोषाध्यक्ष : श्री प्रदीप नरंग, श्रीमती पुष्पा मित्तल, श्री ओ. पी. गुप्त

वार्षिक चंदा ६.००   आजीवन सदस्यता १००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी
3/3/78

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

मार्च १९७८ वर्ष ८, अंक ८, पूर्णांक ९२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संपादकीय १
भूत और भविष्यकी उपलब्धियां ३
कुंडलाकार विश्व ६
विस्तृत होता हुआ विश्व ८
विश्व-सर्प ११
सत्ताका रहस्य १२
विश्व इतिहासका आलेख १४
स्वाधीनता और नियति १६
भागवत सत्य — उसका नाम और रूप १९
प्रतीकात्मक अज्ञान २२
अशुभकी समस्या २३
जगत्की यह कुरूपता २८
सोसायटी समाचार ३१

वार्षिक चंदा ६.००   आजीवन सदस्यता १००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

श्रीमाताजीकी जन्म शताब्दीके इस वर्षमें हमें माताजीकी शिक्षा-को पढ़ने, समझने और जीवनमें उतारनेका अधिक-से-अधिक प्रयास करना चाहिये। इस दिशामें 'अग्निशिखा' आपकी अधिक-से-अधिक सहायता करना चाहती है। माताजीने १९५२ से लेकर १९७२ तक फरवरीके महीनेमें जितने संदेश दिये थे वे सब आप हमारे फरवरी अंकमें पा चुके हैं, अप्रैल दर्शनके संदेश अप्रैलमें आ रहे हैं।

माताजी शुष्क सिद्धांतों या मान्यताओंके पचड़ेमें नहीं पड़ा करती थीं। उनसे जीवन-संबंधी कोई प्रश्न किया जाता तो वे एक बार नहीं, अनेक बार समझानेके लिये तैयार रहती थीं। इस अंकमें जो वार्ताएं दी जा रही हैं वे ऐसे ही प्रश्नोंके उत्तरस्वरूप दी गयी थीं। माताजी बहुत ही सरल और बोलचालकी भाषामें बोला करती थीं इसलिये उनकी चीजका अनुवाद करना बहुत अधिक कठिन है। इस बातको वही लोग अच्छी तरह समझ सकेंगे जिन्हें इस तरहके कामका अनुभव है। खैर, जो कुछ बन पड़ा है आपके सामने है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदका योग (भाग ७) : श्री नलिनीकांत गुप्त

१.

भूत और भविष्यकी उपलब्धियां

सारा भौतिक जगत्, सारी धरती —— मैं धरतीका उल्लेख इसलिये कर रही हूं क्योंकि और क्षेत्रोंकी अपेक्षा हमारा संबंध इसीके साथ ज्यादा है —— अभीतक चेतनाके उस स्तरकी शक्तियोंसे शासित है जिसे श्रीअरविंद 'अधिमानस' कहते हैं। वह चीज जिसे मनुष्य भगवान् कहता है वह भी अधिमानसकी ही शक्ति है। कहा जा सकता है कि सारी सृष्टि चेतनाके इस स्तरके अधीन रही है। फिर भी अधिमानसतक पहुंचनेके लिये तुम्हें बहुत-से बीचके स्तरोंमेंसे गुजरना पड़ता है। और जब तुम वहां पहुंचो तो पहला प्रभाव एक चौंधियानेवाले प्रकाशका होता है जो तुम्हें लगभग अंधा कर देता है। लेकिन व्यक्ति उससे आगे बढ़ सकता है और बढ़ना भी चाहिये। श्रीअरविंदका कहना है कि अधिमानसका राज खतम होनेको है और उसकी जगह अतिमानस लेगा। पिछली सभी आध्यात्मिक अनुभूतियां अधिमानससे संबंध रखती थीं, इसलिये वे सब लोग जिन्होंने भगवान्को पाया है या उनके साथ एकात्म हुए इससे परिचित हैं। श्रीअरविंदका कहना है कि अधिमानसके ऊपर कुछ और है, कुछ ऐसी चीज है जो इससे एक कदम ऊपर है। और अब इसके नीचे उतरने और शासन करनेकी बारी है। हमें अधिमानसके बारेमें ज्यादा कहनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि सभी संत-महात्मा, सभी धर्म, आध्यात्मिक मार्ग, शास्त्र, दर्शन वगैरा इसके बारेमें बहुत कह चुके हैं। मनुष्यके सभी देवी-देवता वहांके देव-कुलमें निवास करते हैं। हम जो चीज चाहते हैं, जिसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है, वह है एक नया अंतःप्रकाश, एक नये ढंगकी अभिव्यक्ति जिसके बारेमें भूतकालमें बहुत कम लोग सचेतन थे। हम यहां केवल भूतकालको दोहरानेके लिये नहीं हैं।

लेकिन यह बहुत कठिन है। आदमी जो अनुभूति प्राप्त कर चुका है, जिसके बारेमें उसने हर जगह पढ़ा-सुना है, उसमेंसे निकलना बहुत कठिन है। लोगोंके लिये अतिमानसके बारेमें अधिमानसकी भाषामें न सोचना और अतिमानस तथा अधिमानसकी बातोंको एक-दूसरेके साथ उलझा न देना बहुत कठिन है। वे इसके परे या इससे भिन्न किसी चीजकी कल्पना ही नहीं कर सकते। श्रीअरविंद कहा करते थे कि उनका योग वहांसे शुरू होता है जहां और योग समाप्त होते हैं। उनके योगमें सिद्धि पानेके लिये प्राचीन योगोंने जो कुछ प्राप्त किया था उसकी सीमातक पहुंच जाना जरूरी है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो, उससे पहले भगवान्‌का साक्षात् और उनके साथ तादात्म्यका अनुभव होना चाहिये। श्रीअरविंदका कहना है कि यह भगवान् अधिमानसके हैं और वे अपने-आपमें मानव चेतनाके लिये अचिंत्य हैं, वहांतक पहुंचनेके लिये भी चेतनाके बहुत-से स्तरोंसे होकर बढ़ना पड़ता है, और, जैसा कि मैंने कहा, वहां पहुंचते-पहुंचते ही आदमी चौंधिया और चकरा जाता है।

प्राण जगत्‌में ऐसी सत्ताएं हैं जो, जब भी मनुष्यके सामने प्रकट होती हैं, मनुष्य उन्हें भगवान् मान लेता है, परमेश्वर मान लेता है। तुम इसे छद्मवेश कह सकते हो, पर यह बहुत सफल छद्मवेश होता है। जो लोग बहुत बार देखते हैं उन्हें विश्वास हो जाता है कि वे साक्षात् भगवान्‌को ही देख रहे हैं। और यह भगवान् कोई प्राणिक सत्ता ही होता है। अधिमानसकी सत्ता हम मनुष्योंकी तुलनामें बहुत विशाल होती है और जब मनुष्य उसके संपर्कमें आता है तो चकरा जाता है। और फिर अतिमन और अतिमानव तो इससे भी परेकी चीजें हैं। इससे तुम समझ सकते हो कि अभी कितना फासिला तय करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन एक प्रकारकी भागवत कृपा है जो तुम्हारी सहायता करने आती है। अगर एक वैज्ञानिकको उस सबको जाननेके लिये, जो उसके पूर्वजोंने खोजा था, फिरसे वे सब परीक्षण करने पड़ें जो पहले किये जा चुके हैं, नयी खोज करने या आगे बढ़नेके लिये फिरसे सारा मार्ग तय करना पड़े तो उसका सारा जीवन पिछली चीजें दोहरानेमें लग जायगा और कुछ करनेके लिये समय ही न बचेगा। यह सब करनेकी जगह वैज्ञानिक पुस्तक खोल लेता है या किसी जानकारसे सलाह करके वह आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लेता है जिसकी उसे जरूरत हो। श्रीअरविंद आध्यात्मिक क्षेत्रमें ऐसा ही कुछ करना चाहते थे। वे तुमसे भूतकालका अनुभव इकट्ठा करनेके लिये कहते हैं। वह धरतीके इतिहासमें अभिलिखित है; बस, उसे लो और आगे बढ़ो, उसे नींव बनाकर ऊंचे, और ऊंचे क्षेत्रोंमें उठते चलो।

तुम्हारा यह कहना न्याय-संगत होगा कि तब हमें अधिमानसकी सत्ताओंसे ही काम शुरू करना चाहिये था। उदाहरणके लिये, हमें यहां विवेकानंदको ही रखना चाहिये था, इन दुर्बल प्राणियोंको नहीं।

क्या तुम समझते हो कि तब काम ज्यादा आसान होता? इसके विपरीत, ऐसी सत्ताओंसे काम लेना ज्यादा कठिन होता, वे ज्यादा कठोर धातुके बने होते हैं। जिसे पहले ही कोई उपलब्धि हो चुकी हो उसे किसी और चीजके बारेमें विश्वास दिलाना बहुत कठिन होता है। वह समझता है कि उसने लक्ष्यको पा लिया है और उसके लिये और अधिक प्रगतिकी जरूरत नहीं। साधारणतः, यह ऐसे लोगोंके साथ होता है जो समझते हैं उन्हें अपनी साधनाका फल मिल गया है और वे अंतिम लक्ष्यपर जा पहुंचे हैं। वे वहीं टिक जाते हैं, यह उनका निजी लक्ष्य था और वह उन्हें मिल ही गया। उनका मस्तिष्क ठोस बन जाता है और उनकी चेतना पथरा जाती है। वे सारे जीवन वहीं टिके रहेंगे और उन्हें वहांसे हिलना कभी न आयेगा। इसीलिये मैं कहती हूं कि जिन्हें कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूति या सिद्धि मिल चुकी है, यह जरूरी नहीं कि वे सबसे अधिक विकसित हों। ऐसे व्यक्तिमें सरलता, ऋजुता, विनय, नमनीयता आदि नहीं होतीं। जब कि ये चीजें उस आदमीमें स्वाभाविक होती हैं जो यह अनुभव करता है कि वह अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है, उसे अभी और आगे जाना है।

अगर जरा सजीव और कुछ सख्त भाषामें कहा जाय तो हम कह सकते हैं कि सिद्ध पुरुष ऐसा तैयार माल है जिसे किसी अजायब-घरकी कांचकी अलमारीमें रखा जा सकता है। वह एक नमूना है जिससे यह पता चल सकता है कि क्या किया जा सकता है और क्या किया जा चुका है। लेकिन उसमें और कुछ करनेकी गुंजाइश नहीं है। मैं अपने कामके लिये ऐसे आदमीको ज्यादा पसंद करूंगी जिसमें ज्ञान भले थोड़ा हो, पर सद्भावना अधिक हो, जिसमें अभीप्सा अधिक हो, जो अपने अंदर इस ज्वालाको अनुभव करता हो, आगे बढ़नेकी जरूरत अनुभव करता हो। मैं कहती हूं, वह भले कम जानता हो, उसकी उपलब्धि और भी कम हो, फिर भी काम करनेके लिये यह एक अच्छा द्रव्य है जिसे लेकर आगे, बहुत आगे बढ़ा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, एक और बात ध्यान देने लायक हैं। जैसे पहाड़की चढ़ाईमें मार्ग-दर्शक बहुत जरूरी है, केवल उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य होता है, जो तुम्हें ठीक रास्ता दिखा सके और ऊंची-ऊंची चढ़ाइयोंको आसान बना दे, उसी तरह आध्यात्मिक चढ़ाईमें यदि सौभाग्यवश तुम्हें मार्ग-दर्शक मिल जाय तो वह तुम्हें उससे बहुत ऊंचा ले जायगा जितना कि तुम अपने निजी प्रयास और लक्ष्य-संबंधी अपनी दृष्टिसे जा सकते थे। तुम्हें अपनी खोजपर गर्व नहीं होता और तुम बेकारकी पूछ-ताछ और खोजसे बच जाते हो।

इसीलिये मैं बच्चोंको पसंद करती हूं, ऐसोंको जो आत्मा या शरीरसे बच्चे हों, उन बड़ोंसे डरती हूं जो विद्वत्ता और उपलब्धिसे भरे हुए हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.
कुंडलाकार विश्व

विकास सीधी लकीरमें नहीं चलता। उसकी गति सर्पिल या कुंडलाकार होती है। यानी, हमेशा एक दिशामें प्रगति नहीं होती रहती, कभी गति आगेकी ओर होती है, कभी पीछेकी ओर, फिरसे आगेकी ओर। सर्पिल गतिका मतलब ही यह है कि सभी चीजें विकास-क्रममें आयें ताकि ऐसा न हो कि एक चीज तो आगे बढ़ जाय और दूसरी पीछे ही रह जाय —— सभीको आगे बढ़ना है, पर हर एक अपनी-अपनी गति-से और अपने-अपने आरंभ-बिंदुसे चलेगा। और वे कौएकी तरह सीधी उड़ान नहीं लेते, मंडराते हुए गरुड़की तरह ऊंची उड़ान लेते हैं। जब तुम चक्रके किसी एक बिंदुपर एकाग्र होकर देखो तो लगता है कि उसकी तुलनामें बहुत-से दूसरे बिंदु आगे नहीं बढ़ रहे, बल्कि पीछे हटते-से प्रतीत होते हैं। कभी यह भी लगता है कि तुम फिरसे उसी ओर जा रहे हो जहांसे चले थे। पहले चक्करमें कुछ तत्त्व पीछे छूट गये थे, उन्हें लेनेके लिये वापस जाना भी पड़ता है। साधारणतः, यह तब होता है जब तुम एक चीजमें प्रगति करते हो और दूसरी चीजको भूल जाते हो, तब तुम्हें पीछे दौड़कर भूली हुई चीजको उठाना पड़ता है। और इस तरह तुम्हें बार-बार चक्कर लगाने पड़ते हैं, जबतक कि तुम अपनी समग्रताको अपनेमें नहीं भर लेते, बल्कि यूं कहें, सारे विश्वकी समग्रताको अपने अंकमें नहीं ले लेते। लेकिन जब तुम इन तत्त्वोंको इकट्ठा कर लो और अपने पुराने स्थानपर वापस आओ तो देखोगे कि जिसे तुम अधो-गति समझ रहे थे वह अधोगति न थी। तुम ठीक उसी स्थानपर ही वापस आये हो जहांसे चले थे, बल्कि उसके अनुरूप ऊंचे स्थान-पर आये हो। इससे चक्र नहीं, कुंडल बनता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वमें अनगिनत बिंदु चक्कर लगा रहे हैं। और हर एक अपना अलग कुंडल बना रहा है। इनमेंसे हर एक कुंडलाकार एक-दूसरेके ऊपर यूं ही रखा नहीं है। ये एक-दूसरेके ऊपरसे चक्कर लगाते हुए निकलते हैं, एक-दूसरेको काटते जाते हैं जिससे इनमें विरोध, असंगति और प्रतिवाद दिखायी देता है। इसलिये यदि तुम वैश्व प्रगतिका समग्र चित्र देखना चाहो तो चकरा जाओगे। बहुत-सी रेखाएं आगे बढ़ती और बहुत-सी पीछे हटती दीखती हैं, कुछ प्रकाश-में आती हैं और कुछ पीछे हट जाती हैं। कोई भी अपने-आपमें पूरी या आत्म-निर्भर नहीं है। ये बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं, इनमें एक तरहका सहयोग होता है।

हम यह मान सकते हैं कि विश्व एक प्रकारका गोला है जिसमें एक-दूसरेको काटते हुए चक्कर हैं। हम यह मान सकते हैं कि हर चक्कर प्रकृतिके एक पहलूका प्रतिनिधित्व करता है और उसका अपना अलग रंग है। शायद ऐसे नमूनेका एक गोला बनाया जा सकता है। कुंडलाकार रेखाका एक बाहरी हिस्सा ही हमें दिखायी देता है, बाकी गोलेके अंदर ही रहता है और अपने विशेष रंगके कारण तभी दिखायी दे सकता है जब गोला पारदर्शक हो। गोलेकी बाहरी सतह इन बहुविध चक्करोंके भागोंसे ही बनी है। गोलेका भीतरी भाग इन चक्करोंसे ही बना होता है, लेकिन एक-दूसरेको काटते हुए, एक-दूसरेपरसे गुजरते हुए चक्कर गोलेको अपार-दर्शक नहीं बनाते। हम उसके आर-पार देख सकते हैं और चमक-दार रेखाओंका अनुसरण कर सकते हैं। मैं इसे इसी रूपमें देखती हूं, तुम चाहो तो ज्यामितिके अनुसार इसका एक आकार बना सकते हो।

प्रकृतिकी अपनी ही योजना होती है; वह मनुष्यकी सुसंगत, तर्क-संगत योजना जैसी नहीं होती। प्रकृतिकी योजना अभीप्सा, निर्णय और लक्ष्यसे बनी होती है, लेकिन उसका मार्ग बहुत ही अनोखा या ऊट-पटांग होता है, मनुष्योंको तो ऐसा लगता है। प्रकृति परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थितियोंके दबावके नीचे, एक क्षणसे दूसरे क्षणकी ओर चलती है। वह कभी आगे बढ़ती है, कभी पीछे हटती है, परीक्षण होते हैं, विरोध होते हैं, तोड़-फोड़ होती है और नये निर्माण होते हैं, और फिर सब कुछ फेंक दिया जाता है। वहां पूर्ण अस्तव्यस्तता होती है। वह एक चीज शुरू करती और आधा करके छोड़ देती है और किसी और चीज-को हाथमें ले लेती है, बनाती-बिगाड़ती, तोड़ती-फोड़ती, अलग-अलग करती और फिरसे मिला देती है। वह प्रगतिकी लाखों रेखाओंपर एक साथ अलग-अलग गति और अलग-अलग लयमें चलती है, पर आरंभ-बिंदु सबके अलग होते हैं। उसमें इतनी उलझनें होती हैं कि कहीं कोई अर्थ ही नहीं समझमें आता। फिर भी उसमें एक योजना होती है। वह एक लक्ष्यकी ओर चलती है जो उसके लिये तो बिलकुल स्पष्ट होता है पर मनुष्यकी आंखोंसे बिलकुल ओझल। मैंने जिस सर्पिल गोलेकी बात की थी वह प्रकृतिकी इस जटिल योजनाका एक चित्र देनेके लिये थी।

तुम एक ज्यादा अच्छी व्यवस्था ला सकते हो जिसमें अपव्यय कम होगा, क्षमता बढ़ेगी और ज्यादा चेतन संगठन होगा, पर इसके लिये पहले मनुष्यको अपना आंतरिक संगठन बदलना होगा, उसे पहले अपनी चेतना और सत्तामें नयी व्यवस्था और नया जगत् लाना होगा।

३.
विस्तृत होता हुआ विश्व

विश्व एक अभिव्यक्ति है, यानी, अनंत संभावनाओंका उन्मीलन है। उन्मीलन समाप्त नहीं हुआ है, वह जारी है और जारी रहेगा; वह पीछे पड़ी हुई या गुप्त चीजोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर निकालता या भौतिक रूपमें प्रकट करता है। विश्वको एक गोला माना जा सकता है। वह एक समग्रता या समुच्चय है जिसमें यहां प्रकट होनेवाली और मौजूद सभी चीजोंका संग्रह है; कह सकते हैं कि इसके बाहर, इस सृष्टिके परे, परात्पर भगवान्, परम प्रभु-का निज धाम है। परात्परका अर्थ है अव्यक्त। लेकिन इसका अर्थ शून्य नहीं है, क्योंकि उसमें व्यक्त होनेवाली हर एक चीज, अपनी संभाव्यतामें, रस स्वरूप या बीज रूपमें विद्यमान होती है। वहां सब कुछ एक गुप्त संभावना, सत्ताके मौलिक रूपमें, केवल एक सामान्य विचारके रूपमें नहीं, बल्कि पूरे विस्तार और ब्योरेके साथ है मानों जीव-द्रव्यमें गुणसूत्र हो। परात्पर देश और कालके परे है। सृष्टिका आरंभ होता है देश और कालकी रचनाके साथ, यह वह चौखटा है जिसमें अव्यक्त तत्त्वोंको व्यक्त किया जाता है और धीरे-धीरे प्रकट किया जाता है। परात्पर ऐसी चेतना है जो अपने ही अंदर आत्मसात् है, जिसका अपने साथ तादात्म्य है। अभि-व्यक्ति ऐसी जाग्रत चेतना है जो अपने-आपको विषय या दृश्यके रूप-में देख रही है।

व्यक्ति अभिव्यक्तकी अवस्थामें स्थित हो सकता है। ऐसे व्यक्तिके लिये अनंत और शाश्वत सर्वदा वर्तमान वास्तविकताके रूपमें होता है। वहां भूत और भविष्यके जैसी कोई चीज नहीं होती, सदा वर्तमान होता है। व्यक्ति जानता है, हर समय एक निश्चित तथ्य उसके सामने होता है। हमारी दृष्टिसे जो कुछ हो चुका है और होनेवाला है — वह सब वहां एक ही काल और एक ही स्तरपर होता है, यद्यपि वहां स्तर और समयके शब्द ठीक नहीं बैठते। वह पूरी तरह सुनिश्चितका जगत् या स्तर है। वहां चुनाव या अनिश्चितता, अप्रत्याशित या अदृष्टका कोई स्थान नहीं है। इसके विपरीत, अभिव्यक्तिका क्षेत्र संयोग और अनिश्चितता, अर्थात्, स्वतंत्र इच्छाका क्षेत्र है; यहां ऐसी चीजें प्रकट होती हैं जो पहले न थीं, ऐसी शक्तियोंकी लीला होती है जिनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा या कल्पना भी न थी। ये चीजें ऐसी रेखाओंपर चलती हैं जो सदा बदलती रहती हैं। यह उपनिषद्की भाषामें संभूतिका क्षेत्र है जिसे यूनानी दार्शनिक हिरेक्लिटस "पेंटा री" कहता है, यानी, बहते रहो। यहां एक सुनिश्चित दीखनेवाली अवस्था अचानक किसी नये, अजाने तथ्यके आ जानेसे एकदम बदल जाती है।

इन दोनोंके बीच या यूं कहें, दोनोंके बीचकी सीमापर चेतनाका एक ऐसा संतुलन है जो दोनोंको एक सर्वांगीण बोधमें मिला देता है। वह सत् और संभूति दोनोंकी एक क्रिया है। यह है अतिमानस। यह ठीक वह बिंदु है जहां सत्ता अनभिव्यक्त सत्में से निकलकर संभूतिका रूप लेती है, जहां निश्चल, गतिहीन सत् अपने-आपको संभावनाओंकी लीलामें डालता है। यह एक सिनेमाकी फिल्मकी तरह है जिसमें सब कुछ तैयार तो होता है परंतु स्पूलपर लिपटा रहता है और प्रोजेक्टरपर लगाकर परदेपर प्रक्षिप्त किया जाता है।

तो परात्पर एक समग्र इकाई है, उसमें सब कुछ संपूर्ण रूपसे विद्यमान है, लेकिन वह है अव्यय, अर्थात्, उसमें कुछ भी घटता-बढ़ता नहीं है। वह स्थाणु और अचल है। इसके विपरीत, विश्व न केवल गतिशील और परिवर्तनशील है, वह हमेशा बढ़ता भी रहता है। यहां नयी-नयी संभावनाएं वास्तविकताएं बनती जाती हैं और समग्र तथ्योंको बढ़ाती जाती हैं। अव्यक्त परात्परमेंसे हमेशा नयी-नयी संभाव्यताएं निकलती और गतिशील बनती रहती हैं, और विश्वको अधिकाधिक समृद्ध बनाती रहती हैं।

और यह जैसे-तैसे बढ़ते जाना नहीं है, यह नियमित वृद्धि है। इसकी दिशा, उद्देश्य और लक्ष्य होता है। वास्तवमें, जो भी संभावनाएं लीलाके लिये आती हैं, जो तत्त्व नीचे उतरते हैं वे लीलाकी पूर्तिके लिये जरूरी होते हैं और उसे अधिक सार्थक बनाते हैं। हम फिर सिनेमाका दृष्टांत लेकर कह सकते हैं कि फिल्मका खुलते जाना उसे ज्यादा मजेदार बना देता है, क्योंकि तब उसमें आदि, मध्य और अंत होता है। इसी भांति सृष्टि भी एक लगा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार बढ़ती हुई सुसंगत कहानी कहती है। इसका भी एक लक्ष्य है, किसी जीवित सत्ताकी तरह इसका भी विकास होता है; नयी छिपी हुई संभावनाएं प्रकट होती हैं और वह अपनी अभीप्सा और नियतिकी सिद्धिकी ओर आगे बढ़ती रहती है।

इस अर्थमें अव्यक्तकी अपेक्षा व्यक्त अधिक पूर्ण सद्वस्तु है। अव्यक्त परात्पर एक सर्वांगीण सद्वस्तु है, लेकिन व्यक्त उससे अधिक पूर्ण सद्वस्तु है, क्योंकि वह उसमें अपना अभिव्यक्तिका सत्य भी जोड़ देता है।

४.
विश्व-सर्प

प्रायः विश्वकी कल्पना कुछ इस भांति की जाती है कि एक सांप कुंडली मारे हुए अपने-आपको खा रहा है, सिर पूंछको निगल रहा है। इसमें एक गोलाकार बिंब दिखायी देता है जो संसृतिको अपनेमें समाये हुए है जिसका कहीं कोई अंत नहीं। इसमें एक सतत विस्तारका भाव भी है, अर्थात्, सतत सर्जन हो रहा है जो पीछेकी ओर मुड़ता भी रहता है, हम यूं कह सकते हैं कि विश्व एक सीधी लकीरमें नहीं, बल्कि गोलाकारमें फैल रहा है।

लेकिन विश्व एक जटिल सत्ता है। वह केवल एक लोक या स्तरसे नहीं बना है, उसमें एक-पर-एक बहुत सारे स्तर हैं। इसकी तलीमें, नींवके रूपमें भौतिक जड़-तत्त्व है और सिरपर सबसे सूक्ष्म अध्यात्म तत्त्व है: इन दोनोंके बीच बहुत सारे स्तर हैं जिनकी गिनती देखनेकी विधिपर निर्भर है।

हम फिर सांपके बिंबकी ओर लौटें तो कह सकते हैं कि सिर

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोच्च चेतना है, पूंछ उसका दूसरा छोर, जड़-तत्त्व या परम निश्चेतना है। यह बिंब हमें ज्यादा ऊंचे सत्यका एक चित्र देता है कि अंत आपसमें मिले हैं, सिर पीछे घूमकर पूंछको पकड़ता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे इसका यह अर्थ हुआ कि यदि व्यक्ति चेतनासे ऊंचा, ऊंचा, और ऊंचा उठता जाय, शरीरकी चेतनासे शुरू करके प्राण, मन, अधिमनसे होता हुआ चेतनाके मूल-स्रोत, उसके शीर्ष स्थानतक पहुंचता है तो, आश्चर्य ! वह अपने-आपको अचानक जड़-तत्त्वके हृदयमें पाता है। इसी चीजको गुह्य भाषामें यूं कहा जाता है कि जो चेतना सबसे ऊंचे शिखरपर चमकती है वही मृत जड़-पदार्थके अंदर गयी हुई है। यदि व्यक्ति सीढ़ी-पर-सीढ़ी चढ़ता ही चला जाय, तो घूमकर फिर उसी जगह आ जाता है जहांसे चला था। इसी भांति, यदि व्यक्ति अंदर घुसकर जड़-तत्त्वके अंतिम सिरेतक जानेका प्रयत्न करे तो वह अपने-आपको उसी अनंत सत्ताके जाज्वल्यमान प्रकाशमें पायेगा जो नीचे, ऊपर, चारों ओर, सबको घेरे हुए है।

यहां वैज्ञानिकोंकी एक मजेदार बात याद आती है जिसके अनुसार विश्व गोलाकार है और चूंकि विश्व गोलाकार है इसलिये हो सकता है कि जिस तारेको हम अपने आगे देखते हैं, जिसका प्रकाश सामनेसे आता दीखता है, हो सकता है कि उसकी किरणें सारे गोलेका चक्कर लगानेके बाद हमारे पास पहुंचती हैं।

५.

सत्ताका रहस्य

क्या तुमने कभी अपने-आपसे पूछा है कि आखिर यह विश्व है ही क्यों ? कम-से-कम यह धरती जिसके साथ हमारा इतना संबंध है, जो हमारे लिये इतनी प्रामाणिक है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें वास्तविक लगती है, किसलिये है? अगर तुमने यह नहीं पूछा तो शायद बहुत बुद्धिमानी की। मैंने तुमसे बहुत बार तेओंके बारेमें बात की है। वे अपनी तरहके एक सच्चे संत थे। लोग उनके पास आकर प्रश्न पूछा करते थे। बहुत-से पूछते थे : "यह विश्व क्या है?" उनका उत्तर होता था : "तुम्हें इससे क्या?" कई पूछते थे : "यह विश्व ऐसा क्यों है?" इसके उत्तरमें वे कहते थे : "विश्व जैसा है वैसा है, इससे क्या आता-जाता है?" कुछ और लोग कहते : "हमें यह जगत् संतोषजनक नहीं लगता।" यहां हम मतलबकी बातपर आते हैं। जिन लोगोंको जगत् संतोषजनक नहीं लगता उनसे मैं कहूंगी : बस, कामपर लग जाओ, उसे बदलनेकी कोशिश करो। ऐसा रास्ता ढूंढो जिससे यह और तरहका हो सके, ज्यादा अच्छा हो सके। चीजें जैसी हैं वैसी हैं, उनके बारेमें अनुमान लगानेका क्या लाभ? चिंतित होनेका क्या फायदा? कोई उपाय ढूंढो ताकि चीजें वैसी हो सकें जैसी होनी चाहिये। चीजें जैसी हैं वैसी क्यों हैं? ऐसी बात नहीं है कि कारण जाना ही नहीं जा सकता, लेकिन हम उसके बारेमें हमेशा निश्चित नहीं हो सकते। करने लायक सबसे अच्छी बात है कि जो है, जैसा है वैसा ले लो और जैसा होना चाहिये वैसा बनानेकी कोशिश करो। अब मजेदार बात यह है कि यदि तुम सच्चे हो, यदि सचाई जानना चाहो और ईमानदारीसे काम करो तो तुम जान जाओगे कि चीजें ऐसी क्यों हैं, उनका कारण, उनका मूल, उनकी पद्धति, सब कुछ जान जाओगे, क्योंकि ये सब एक ही हैं। सभी चीजोंके आधारमें एक ही सत्य है और वह न हो तो भी कुछ न होगा। अगर तुम उस सत्यको पकड़ सको तो तुम साथ-ही-साथ सृष्टिके मूल और उसके बदलनेके तरीके जान जाओगे। दूसरे शब्दोंमें कहें तो, यदि भगवान्‌के साथ तुम्हारा संबंध है — भगवान् ही तो वह आधार है — तो तुम्हारे पास सब चीजोंकी चाबी है। तुम 'क्यों' और 'कैसे' का उत्तर जानते हो और बदलनेकी तरकीब भी जानते हो। तब करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लायक काम बस यही है: काममें लग जाओ। शायद तुम कहो: "यह तो बहुत बड़ा काम है, बहुत कठिन है। संसारके लिये या संसारपर क्रिया करना मेरे बसका काम नहीं है।" अच्छा, तो अपने-आपसे शुरू करो। तुम पदार्थका एक लौंदा हो, सारे विश्व-का प्रतीक या प्रतिनिधि हो। बस, तुम्हारा काम यही हो कि इस अंशका सुधार करो, उसपर एकाग्रता रखो, अपने अंदर जाओ, तुम अपने इस छोटे-से व्यक्तिके अंदर ही उस चाबीको पा जाओगे जिसे तुम खोज रहे हो।

६.

विश्व इतिहासका आलेख

धरतीपर जो कुछ हुआ है, सृष्टिके आरंभसे लेकर आज-तक, विना अपवादके, उस सबका अभिलेख किसी विशेष लोकमें या चेतनाके किसी स्तरपर मौजूद है। मनुष्यने जो कुछ सोचा-विचारा है, जो कुछ खोज या गवेषणा की है वह सब बड़ी सावधानीसे संचित है। अगर तुम धरतीके पिछले इतिहासके बारेमें या किसी विशेष समय या स्थानकी घटना जानना चाहो तो बस तुम्हें अपने-आपको उस लोकमें ले जाना होगा और तुम देख सकोगे।

वह एक बड़ी अजीब-सी जगह है, कुछ-कुछ पुस्तकालय जैसी। वहां मानों बहुत सारे कोषाणु हैं, हर एकके अंदर किसी विशेष विषयकी जानकारी भरी है। वे देखनेमें चौखूंटे लगते हैं और प्रायः बंद रहते हैं। अगर तुम किसी विशेष चौकोणको देखना चाहो तो तुम्हें एक बटन दबाना होता है और अंदरसे एक खरीता निकल आता है। तुम उसे खोलकर जो कुछ जानना चाहो जान सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। वहां ऊपर-नीचे, इधर-उधर, इस तरहके लाखों, करोड़ों, अरबों कोषाणु और खरीते हैं। सौभाग्यवश; मानसिक जगत्में तुम जहां चाहो, जैसे चाहो घूम-फिर सकते हो। वहां ऊपर-नीचे जानेके लिये सीढ़ी या लिफ्टकी जरूरत नहीं होती।

लेकिन सवाल यह है कि वहां पहुंचा कैसे जाय? लो! सबसे पहली चीज यह है कि अपने-आपको पूरी तरहसे नीरव बनाओ। मानसिक चिंतन, हलचल वगैराको पीछे छोड़ दो। तुम्हारी चेतनामें कोई विचार न आये। वह शांत पानीकी चादरकी तरह शांत और स्थिर रहे और दर्पणकी तरह चिकनी और परिष्कृत रहे। मैंने पुस्तकालयका जो वर्णन किया है वह तो एक बिंब है, असली चीज इससे कुछ अलग होती है। लेकिन फिर भी इससे तुम्हें कुछ अंदाज तो हो ही जाता है जिससे तुम आगे की ओर चल सकते हो। तुम अपने नीरव मनमें चेतनाका एक बिंदु बनाते हो और उसे अपना ही एलची बनाकर अपनी जानकारी प्राप्त करनेके लिये भेजते हो। इस बिन्दुको पूरी तरह अनासक्त और स्वतंत्र होना चाहिये, ताकि वह जहां चाहे जा सके; क्योंकि अगर वह कहीं किसी तरह तुम्हारे मनके साथ रहेगा तो तुम अपने मनकी साधारण गति-से अलग न हो सकोगे और तुम्हारे दिमागमें जो कुछ है उससे आगे न बढ़ पाओगे। तुम्हारा दिमाग एकदम खाली होना चाहिये, तुम्हारे मनमें अपनी समस्याके बारेमें कोई पहलेसे बनी हुई धारणा न होनी चाहिये कि उसका हल ऐसा या वैसा होना चाहिये। जैसा कि मैंने कहा, तुम्हारा मन कोरे कागज या साफ सिलेटके जैसा होना चाहिये जिसपर कुछ भी न लिखा हो, कहीं कोई निशान-तक न हो, इसके सत्यको जाननेकी सच्ची निष्कपट अभीप्सा हो। पहलेसे ऐसी धारणा न बनाओ कि वह सत्य कैसा होगा वरना तुम अपने दिमागकी रचनाको ही पाओगे। तुम्हें अपनी आंतरिक खोजसे जो सूचनाएं मिलें उन्हें तुम अपनी बाहरसे प्राप्त सूचनाओंके द्वारा दूसरोंके अनुभवों और शास्त्रोंकी रोशनीमें जान सकते हो। आंतरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानको बाहरी ज्ञानका स्थान नहीं लेना चाहिये, दोनों एक-दूसरेकी सहायता करते और एक-दूसरेकी पूर्ति करते हैं। लेकिन एक प्रकारके मिश्रणसे तुम्हें सावधान रहना चाहिये। तुम्हारे नीरव मन और आंतरिक चेतनाको ज्ञान प्राप्त होता है, लेकिन जैसे ही तुम उसे साधारण भाषामें व्यक्त करना चाहो वैसे ही तुम्हारा मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है और हो सकता है, बल्कि साधारणतः होता यह है कि दिमाग अपनी ही सामग्री और अपनी ही रचनाएं देने लग जाता है, जिससे भौतिक ज्ञान विकृत हो जाता है। कभी-कभी तुम ऐसा कर सकते हो, तुम जो कुछ देखो उसे ठीक-ठीक लिखवाते जाओ और दूसरा जो कुछ सुने उसे वैसे-का-वैसा लिखता जाय।

मैंने पुस्तक पढ़नेका रूपक दिया है, पर यह रूपक ही है। वास्तवमें, जो चीज होती है, वह एक प्रकारका बोध है और वह बोध बिंबके रूपमें हो सकता है या वर्णनके रूपमें भी हो सकता है। और कभी वह एक प्रश्न, सीधे-सादे उत्तरके रूपमें भी हो सकता है। तुम जिस चेतनामें प्रवेश करते हो उसके अनुसार, स्तरके अनुसार नाना प्रकारके अभिलेख हो सकते हैं।

स्वभावतः, यह प्रक्रिया बहुत आसान नहीं और हर एकको प्राप्त नहीं हो सकती, एक साधारण किताबकी तरह नहीं मिल सकती। इसके लिये विशेष अभिरुचि और विशेष तपस्याकी जरूरत है।

७.

स्वाधीनता और नियति

एक दृष्टिसे इस भौतिक जगत्में जो कुछ होता है वह सत्ताके किसी और स्तरपर हुई किसी चीजकी अनुकृति या संसिद्धि ही होता है। इसलिये इस जगत्में स्वाधीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनावके जैसी कोई चीज हो ही नहीं सकती, क्योंकि सब कुछ पहले-से ही नियत होता है। एक दूसरी दृष्टिसे उतनी ही सचाईके साथ यह कहा जा सकता है कि सृष्टि हर क्षण नयी बन रही है। यह किसी पुराने खेलकी पुनरावृत्ति नहीं है, भूतकालकी किसी घटनाको फिरसे दोहराना नहीं है, कोई पहलेसे निश्चित घटना नहीं है, बल्कि ऐसी चीज है जो हर समय नयी और ताजा रहती है। उदाहरण-के लिये, किसी भौतिक चीजको ले लो, एक रासायनिक तत्त्वको ले लो। यह निश्चित है कि वह अमुक चीजोंसे बना है। उसपर यदि अमुक क्रिया की जाय तो अमुक प्रकारकी प्रतिक्रिया होगी। यह बात हम प्रकृतिके आधारपर कह सकते हैं। लेकिन अगर उसमें किसी समय कोई नया तत्त्व जोड़ दिया जाय तो सारी चीजके रंग-ढंगमें और उसकी प्रतिक्रियामें फर्क आ जायगा। विश्वमें ऐसा ही कुछ होता है।

विश्व अनगिनत तत्त्वोंकी बनी हुई एक बहुत बड़ी राशि है। और सभी तत्त्व, इस संयोजनके अनुसार सभी चीजें संगठित हैं, परंतु यह व्यवस्था अपने-आपमें कोई लक्ष्य या परिणति नहीं है। यह कोई स्थायी या अचल-अटल व्यवस्था नहीं है। यह हमेशा आगे बढ़ती रहती है और इसमें विकास होता रहता है। किसी भी क्षण, किसी भिन्न प्रकारकी गतिके कारण समस्त राशिमें एक या दो नये तत्त्वोंका प्रवेश हो सकता है जो आवश्यक रूपसे विश्वके सारे आंतरिक संघटनको बदल सकता है। यह विश्व, मेरा मतलब है भौतिक जगत्, भगवान्के किसी एक पहलूके किसी अंशका मूर्त्त रूप है। यह मूर्त्त रूप लेनेकी क्रिया उत्तरोत्तर गति करती है, पर यह गति सतत या नियमित रूपसे नहीं होती, यह किसी विधानके अनुसार एक सूक्ष्म स्वाधीनताके साथ होती है। किसी भी क्षण विश्व संगठनमें नये तत्त्वोंका प्रवेश होता है और सारी व्यवस्था बदल जाती है। जो संघटन पहले अपने-आपमें पूर्ण प्रतीत होता था और एक निश्चित योजना और नमूनेके अनुसार चल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, वह अचानक अपने-आपको बदला हुआ पाता है, आंतरिक संबंधों में भी कुछ फर्क पड़ जाता है और उनका संतुलन बदल जाता है। इससे आदमीकी दृष्टिके अनुसार ऐसा लग सकता है मानों यह असंगत, अयथार्थ या चमत्कारमय चीज है। इस तरह यहां दो युगपत् तथ्य या उपादान हैं: एक निरपेक्ष नियति है जिसके साथ-ही-साथ स्वाधीनताकी गति भी चलती है, एक उपस्थित तथ्यमें कोई अदृष्ट तत्त्व आ मिलता है।

यह अदृष्ट तत्त्व परम चेतनासे आता है। इस तथ्यमें आश्चर्यकी बात कुछ नहीं है। जगत्में एक अभीप्सा काम कर रही है, जो एक लक्ष्य-विशेषकी ओर बढ़ रही है। उसका उद्देश्य है गिरी हुई धुंधली चेतनाको अपनी मूल और साधारण अवस्था — दिव्य चेतना — की ओर वापिस लाना। जब-जब इस अभीप्सा करनेवाली चेतनाका विरोध होता है, किसी नयी बाधाको जीतना या बदलना होता है तो वह एक नयी शक्तिका आवाहन करती है। और यह नयी शक्ति एक प्रकारकी नयी सृष्टि होती है। मानव सत्तामें भी सादृश्यके विधानके अनुसार विभिन्न क्षेत्र हैं। प्रत्येक क्षेत्र अपने-आपमें पूरी तरह स्वतंत्र है और हर एकमें उसके लिये एक अलग ही नियति होती है। लेकिन उसके अंदर यह क्षमता भी होती है कि वह अपनी अभीप्साके द्वारा अपनेसे ऊंचे क्षेत्रके साथ नाता जोड़ ले और अपनी निचली नियतिपर उच्चतर क्षेत्रकी क्रियाको उतार लाये। तो हम कह सकते हैं कि हर क्षेत्रमें एक पड़ी रेखाकी-सी नियति होती है जिसे अपने क्षेत्रमें पूरा प्रभुत्व प्राप्त होता है, लेकिन आड़ी रेखाकी भांति एक किसी उच्चतर क्षेत्रका या उच्चतम क्षेत्रका हस्तक्षेप भी हो सकता है और तब निचली नियति एकदम बदल जाती है। इस प्रकार हर मनुष्य एक ही साथ कई नियतियोंका संग्रह होता है जिनमेंसे हर एक अपने-आपमें पूर्ण और निरपेक्ष होती हैं; लेकिन साथ ही एक परम स्वाधीनता भी होती है जो कठोर दीखनेवाली नियतिमें उच्चतर शक्तियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतारकर निचली नियतिको बदल सकती हैं। इसीसे संसारमें अदृष्ट, गणनातीत और चमत्कारमय चीजें दिखायी देती हैं।

तुम इस हस्तक्षेपको भागवत कृपा कह सकते हो, क्योंकि भागवत कृपाके बिना यह असंभव है। एक ऐसी चेतना है, एक वस्तुओं-का अंतर्दर्शन है जहां सब कुछ अपने एकमात्र मौलिक स्रोतकी ओर वापस जाता है, वहां केवल भागवत कृपाका अस्तित्व है और कुछ नहीं है। वही सब कुछ करती है। लेकिन चूंकि तुम उस ऊंचाई-तक नहीं उठे हो, वह उच्च उपलब्धि नहीं पायी है इसलिये तुम्हें अपने अस्तित्वका व्यक्तिगत अभीप्साका — जो भागवत कृपाको बुलाती है और जिसे भागवत कृपा उत्तर देती है — इन सबका ध्यान रखना पड़ेगा। यहां दोनोंकी जरूरत है; आखिर दोनों ही एक ही चीजको देखनेके दो अलग-अलग तरीके हैं। लेकिन मन दोनों गतियोंको एक साथ देखना बहुत कठिन मानता है। उसके बनाये हुए कठोर विभाजन समग्र अनुभूतिके लचीले, सूक्ष्म और पूर्ण सत्यमेंसे बहुत कुछ ले लेते हैं।

८.

भागवत सत्य – उसका नाम और रूप

भागवत सत्य सब वस्तुओंके हृदयमें निवास करता है। लोगोंने अपनी-अपनी अनुभूतिकी दृष्टिसे उसे अलग-अलग नाम दिये हैं। लेकिन सत्य हमेशा एक ही रहता है। उस-तक ले जानेवाले लाखों रास्ते हैं, तुम चाहे जिस रास्तेको अपनाओ, तुम चाहे जो रूप दे लो, परिणाम हमेशा एक ही आयेगा, अंतिम अनुभूति एक-सी होगी। अगर सबने उस चीजको छुआ है तो उन्होंने उसी चीजको छुआ है, अगर उन्होंने एक ही चीजको नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुआ तो इसका मतलब यह है कि उन्होंने उस वास्तविक चीजको नहीं छुआ। तुम उसे जो नाम देना चाहो दे लो, क्योंकि नाम तो बस एक शब्द है।

आखिर एक शब्दका मूल्य ही क्या है? क्या तुमने देखा है कि तुम चाहे जितनी अच्छी तरह बोलो, फिर भी कुछ लोग तुम्हारी बात नहीं समझ पाते। और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि तुम दो ही शब्द बोलो तो तुम्हारी बात समझ जाते हैं। शब्दके बाहरी रूपमें या यूं कहें, शब्दकी ध्वनिमें एक अर्थ होता है, अगर उसके पीछे विचारकी शक्ति हो तो जितनी अधिक शक्ति हो, वह जितनी सशक्त, यथार्थ और स्पष्ट हो उतनी ही अधिक संभावना इस बातकी रहेगी कि लोग उस शक्तिको ग्रहण कर सकें और उस शक्तिको वहन करनेवाले शब्दको समझ सकें, लेकिन अगर कोई सोचे-समझे बिना बोले तो सामान्यत: उसकी बात समझना असंभव होता है। तुम्हें बस यही लगता है कि वह शोर मचा रहा है। तुमने देखा होगा कि जो लोग एक साथ रहनेके अभ्यस्त हैं वे एक-दूसरेकी भाषा और एक-दूसरेके विचारोंको काफी अच्छी तरह समझ सकते हैं और उन्हें अपने शब्दोंको समझाने और उनकी व्याख्या करनेकी जरूरत नहीं होती। उनमें एक प्रकारका मानसिक सामंजस्य हो जाता है और शब्द आंतरिक संपर्कके लिये निमित्त-मात्र होते हैं। इन शब्दोंके पीछे मस्तिष्कका संपर्क होता है, कभी-कभी यह संपर्क शब्दोंसे भी पहले आ जाता है। लेकिन जब तुम किसी नये आदमीसे मिलते हो तो उसके शब्दोंको ठीक तरह समझने, अपने-आपको उनके अनुकूल बनानेमें समय लगता है।

महत्त्व शब्दोंका नहीं, उनके अर्थ और उनके भावका होता है। जब किसी विचारको शक्तिके साथ सोचा जाता है तो उससे एक स्पंदन पैदा होता है, शब्द उसके वाहक या मध्यस्थ मात्र होते हैं। वास्तवमें, तुम अपनी विचार-शक्तिको इतना विकसित कर सकते हो कि कम-से-कम शब्दोंके साथ या बिना शब्दोंके, सीधा भौतिक संपर्क स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सको। स्वभावतः इसके लिये तुम्हारे अंदर एकाग्रताकी प्रबल शक्ति होनी चाहिये। तुम देखोगे कि इसके लिये शरीरके अवयव केवल यंत्र हैं। इनका उपयोग यंत्र या उपकरणके रूपमें होता है, इनका महत्त्व बहुत अधिक नहीं है, ये अनिवार्य भी नहीं हैं।

जब हम भगवान्‌के बारेमें सचेतन होते हैं तो क्या हम उन्हें चीजोंमें किसी विशेष स्वरूपमें देखते हैं?

क्या तुम हर चीजमें भागवत स्वरूपको देखना चाहते हो? यह हो तो सकता है लेकिन मुझे विश्वास नहीं। मेरा ख्याल है कि ऐसी अनुभूतियों-में अधिक भाग कल्पनाका होता है। उदाहरणके लिये, तुम हर चीजमें कृष्ण, ईसा या बुद्धको देख सकते हो, परंतु मैं कहूंगी कि इसमें बहुत कुछ मानव कल्पना होती है, वरना मैं अभी तुमसे जो बात कह रही थी वह सच्ची न होगी। मैंने तुमसे कहा था कि वे सब लोग जिन्हें दिव्य चेतना प्राप्त हो, जिन्हें भगवान्‌का संपर्क प्राप्त हो, वे चाहे जहां हों, देश और कालमें कहीं भी क्यों न हों, सबको तत्त्वतः एक ही अनुभूति प्राप्त होती है। अगर ऐसा न होता तो हिंदू हमेशा एक तरहके देवता देखते, यूरोपियन अपने ही देवता देखते और जापानी एक तीसरे ही प्रकारके देवता देखते और इसी तरह चलता रहता। यह मनुष्यकी अपनी मानसिक कल्पनाओंका योग हो सकता है, पर रूपों और आकारोंसे परे जो वास्तविक सद्वस्तु है वह इस तरह नहीं मिल पाती। तुम्हें भागवत उपस्थितिका प्रत्यक्ष दर्शन हो सकता है, बहुत मूर्त्त रूपमें दर्शन हो सकता है, भगवान्‌के साथ तुम्हारा व्यक्तिगत संबंध भी हो सकता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह उस रूपमें हो जिसकी तुमने कल्पना कर रखी है। वह एक ऐसी चीज है जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता, जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। वह उन्हींके लिये स्पष्ट होता है जिन्हें उसकी अनुभूति हुई हो। यह हो सकता है कि तुम्हें अचानक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह लगे कि तुम किसी अनोखी अवस्थामें उठा लिये गये हो, तुम अपने-आपको भगवान्की उपस्थितिमें पाते हो और वह उपस्थिति कोई भी ऐसा रूप धारण कर लेती है जिससे तुम सुपरिचित हो, कोई ऐसा रूप जिसे तुम भगवान्का रूप मानते आये हो, अपनी शिक्षाके कारण, अपने परिवेशके कारण या परंपराके कारण, भगवान्के साथ जोड़ते आये हो। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यह अनुभूतिका परम सार-तत्त्व नहीं है। आखिर, रूप अनुभूतिको एक सीमामें बांध देता है, उसकी सार्वभौमिकताको हर लेता है और एक बड़ी मात्रामें उसकी शक्तिको भी कम कर देता है।

९.

प्रतीकात्मक अज्ञान

पूर्ण चेतनाके प्रकाशपर, (माताजीकी चेतनापर) अंधेरे धब्बे कैसे हो सकते हैं? अंधकार सापेक्ष होता है और वह चेतनाके स्तर और उसकी अवस्थापर निर्भर करता है। शुरूमें निचले और संकरे स्तरोंपर प्रकाश धुंधला और सीमित होता है। उसके चारों ओर घने अंधकारका विस्तृत क्षेत्र फैला रहता है। जैसे-जैसे चेतनाका विकास होता है, यानी, वह अभिव्यक्त होती है, ऊपर उठती और विस्तृत होती है, वैसे-वैसे अंधकार भी हटता जाता है और धीरे-धीरे गायब हो जाता है। यह चेतना व्यक्तिगत नहीं, बल्कि निर्वैयक्तिक होती है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो, वह सारे जगत्को, जिसमें धरती भी आ जाती है, अपने अंदर धारण किये रहती है। और धरती एक अंधकारमय वस्तु है जो अज्ञान और निश्चेतनासे बनी है। ज्योति उसे चारों ओरसे लपेटे हुए है, धीरे-धीरे उसे भेदकर उसमें प्रवेश करती और उसका रूपांतर करती है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांति माताजीकी चेतना प्रतिनिधि-चेतना है, वह उन सबका प्रतिनिधित्व करती है जो अभीतक निश्चेतन है और बिना जाने, गुप्त रूपसे चेतनाकी ओर बढ़नेका प्रयास कर रही है और इसके साथ-ही-साथ वह स्वयं कार्य करनेवाली और रूपांतर साधनेवाली ज्योति भी है। इस भांति भागवत चेतना मूर्त्त रूप लेकर कार्य करती है, वह अपने ही उस रूपपर कार्य करती है जो अन्य माना जाता है। अपने ही ऊपर कार्य करती हुई यह चेतना प्रतीकात्मक और मूर्त्त रूप लेती है।

१०.

अशुभकी समस्या

भगवान्ने यह सृष्टि, यह भौतिक सृष्टि बनायी है? इसका उत्तर "हां" भी है और "नहीं" भी, कुछ "हां" और अधिक "नहीं"। क्योंकि उन्होंने इसका सीधा निर्माण नहीं किया है; भगवान् और सृष्टिके बीच बहुत-से सर्जक या यूं कहें, रचयिता, आकार देनेवाले आ गये जिन्होंने सृष्टिके काममें भाग लिया है। वे कौन हैं? उन्हें बहुत सारे नाम दिये गये हैं। सृष्टि साधारणतः एक क्रममें चलती है, काम उत्तरोत्तर बढ़ता है। एक जगत्मेंसे दूसरा जगत् निकलता है। हर एक जगत् सत्ताकी एक विशेष अवस्था है, चेतनाका एक विशेष रूप है। हर स्तर या लोकमें भिन्न-भिन्न प्रकारकी सत्ताएं, व्यक्तित्व और प्राणी हैं। उनमेंसे हर एकने अपने चारों ओर एक अपनी ही दुनिया बना रखी है या इस धरतीपर विशेष प्रकारकी जातियां बनानेमें सहायता दी है। इन रूप देनेवालोंमें या रचयिताओंमें अंतिम हैं प्राणलोकको सत्ताएं। और सबसे ऊपर हैं वे जिन्हें श्रीअरविंद अधिमानसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ताएं कहते हैं। सबसे पहले इन्होंने ही सृजन किया था, अर्थात् सबसे पहले पार्थिव सत्ताओं और वस्तुओंको रूप दिये थे। इन्होंने अपने अंदरसे कुछ अंश प्रकट किये, उन अंशोंने अपने अंश प्रकट किये और यही सिलसिला चलता गया। इससे स्पष्ट है कि जड़ पदार्थपर सीधा भागवत संकल्पने काम नहीं किया है और जगत्का रूप वैसा नहीं जैसा भागवत संकल्प देता या दे सकता था। इसमें बहुत सारे स्तर और लोक हैं, क्रमके अनुसार माध्यम हैं जिनके द्वारा भागवत संकल्पको काम करना पड़ा है। मैंने अधिमानस और प्राणमय लोककी बात की थी, इनके बीच एक मनका लोक भी है, ऐसी मानसिक सत्ताएं भी हैं जिन्होंने ऐसी सत्ताओंको जन्म दिया है जिन्होंने धरतीपर शरीर धारण किया है।

एक परंपराके अनुसार कीड़ोंका जगत् प्राणमय जगत्की सत्ताओंने बनाया है। अगर तुम इन कीड़ोंको सूक्ष्मदर्शी यंत्रके नीचे रखकर देखो तो अत्यंत राक्षसी आकार दिखायी देंगे। अगर उन्हें परदेपर डालकर देखा जाय तो वे इतने भयानक दीखते हैं मानों सचमुच राक्षस हों। इसलिये कहा जाता है कि प्राणमय जगत्की सत्ताएं अपना मनोरंजन करना चाहती थीं इसलिये उन्होंने सब संभव जन्तुओंको जन्म देकर मानव जीवनको कष्टकर बना दिया।

तुम पूछ सकते हो कि ये मध्यवर्ती सत्ताएं कहांसे आयीं? क्या भगवान्से नहीं पैदा हुईं? मध्यवर्ती सत्ताएं और ऊंची मध्यवर्ती सत्ताओंसे निकलीं। यह श्रृंखला इसी तरह ऊपर उठती जाती है, यहांतक कि वह स्वयं परम प्रभुतक जा पहुंचती है। अगर तुम हर चीजके मूल-स्रोतकी खोज करने लगो तब तो हमेशा वहीं, उन्हीं भगवान्के पास जा पहुंचोगे। तब प्रश्न उठता है कि यह विकृति कहांसे आयी? मैंने एक बार तुम्हें बताया था कि यदि तुम भगवान्के साथ एक न रहो, सीधे उनके प्रभावमें न रहो , भगवान् जिस तरह चाहते हैं ठीक उसी तरह सर्जन और विस्तारकी गतिका अनुसरण न करो तो इतनी-सी दरार ही सबसे बड़े दुर्भाग्य, यानी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान्से अलगाव लानेके लिये काफी है। अधिक-से-अधिक ज्योतिर्मय और शक्तिशाली सत्ताएं भी भगवान्की लीकपर चलनेकी जगह अपनी ही राह लेनी पसंद कर सकती हैं। वे अपने-आपमें अद्भुत सत्ताएं हो सकती हैं जिन्हें देखकर मनुष्य साक्षात् भगवान् समझ सकते हैं। फिर भी वे अपनी मनमानी करनेके कारण और समस्त जगत्के साथ सामंजस्य न रखनेके कारण, बड़ी-से-बड़ी गड़बड़ें पैदा कर सकती हैं। ऐसी कोई चीज नहीं है जो दिव्य न हो, बस एक अव्यवस्था आ टपकती है, यानी, हर चीज अपने स्थानपर नहीं रहती। यही समस्या है और इसीका समाधान करना है।

अब रहा प्रश्न यह कि यह विचलन क्यों और यह अशुभ किस-लिये ? सबसे पहले तो मैं यह कहूंगी कि तुम उस चीजको अशुभ कहते हो जो तुम्हारे लिये सुविधाजनक न हो; लेकिन हो सकता है कि विश्वकी व्यवस्थाकी दृष्टिसे वही सबसे अधिक सुविधाजनक हो। दूसरी बात यह कि हो सकता है कि यह चीज प्रारंभमें अकस्मात् हो गयी हो। हमें इसकी विशेष चिंता नहीं है कि यह क्यों और कैसे हुई, हमें तो वर्तमान अशुभको दूर करनेका उपाय ढूंढना है। अगर हम दार्शनिक दृष्टिसे देखें तो ऐसा लगता है कि हम जिस विश्वमें रहते हैं वह स्पष्ट रूपसे नाना प्रकारकी वास्तविक और संभव गतियोंमेंसे एक है और वह अपने निजी विधानके अनुसार चलता है, और वह भी सब जगह एक-सा नहीं है। अगर यह विश्व स्वतंत्र इच्छाके विधानको लेकर बना है तो जबतक ज्ञान अव-तरित होकर हमारे चुनावको ज्योतिर्मय नहीं बना देता तबतक तुम अव्यवस्थाकी गतिविधिको नहीं रोक सकते। अगर किसी को चुनने की खुली छूट है तो वह ठीक चीज चुननेकी जगह गलत चीज भी चुन सकता है, क्योंकि अगर पहले ही से निश्चित हो कि हर बार अच्छा और ठीक दिशाका ही चुनाव होगा तब तो चुनावकी स्वतंत्रता न रहेगी।

परंतु वास्तवमें इन प्रश्नोंका उत्तर इस तरह नहीं दिया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। यह ऐसी समस्या है जिसके मानसिक उत्तर समस्याके आयामको घटा देते हैं, प्रश्न समस्याको एक मामूली-से प्रारंभिक सूत्रमें बदल देता है जो वस्तुओंकी वास्तविकताके साथ बहुत ही धुंधला-सा, अपूर्ण और ऊपरी सादृश्य रखता है।

ठीक समझनेके लिये तुम्हें होना पड़ेगा। अगर तुम विश्वके 'क्यों' और 'कैसे'का उत्तर जानना चाहते हो तो तुम्हें विश्वके साथ तादात्म्य प्राप्त करना होगा, और यह बहुत आसान नहीं है।

असलमें तो प्रश्न ही गलत है, एकदम बचकाना है। वह ऐसी बातोंको पहलेसे ही मान बैठता है जो अपने-आपमें संदिग्ध हैं। सृष्टिके बारेमें कुछ ऐसे विचार हैं, जो प्रायः सब जगह माने जाते हैं, युगोंसे चले आ रहे हैं। ये आश्चर्यजनक रूपसे बचकाने हैं। उदाहरणके लिये, यह मान्यता है कि कहीं ऊपर एक जगत् है जिसमें भगवान् निवास करते हैं। एक दिन इस भगवान्ने एक दृश्य-जगत् बनानेकी ठानी और उसका परिणाम है यह संसार। स्पष्ट ही है कि हम उनके इस काममें बहुत-सी भूलें देखते हैं और परिणाम-स्वरूप यह सोचते हैं कि शायद संसारको बनानेवाला अपने-आप तो भला और सदाशयी है, पर वह सर्वशक्तिमान नहीं है, कोई और सत्ता या चीज आकर उसके काममें विघ्न डालती है; या फिर वह सर्वशक्तिमान तो है, पर है एकदम हृदयहीन, साक्षात् क्रूरताकी मूर्ति — तभी तो उसकी सृष्टि इस तरह दुःख-दारिद्रय और कष्टोंकी लंबी कहानी है। मैं कहती हूं कि ऐसे विचार भोलेपन, बचकाने भोले-पनसे भरे हैं। जब लोग कहते हैं कि भगवान् एक कुम्हार है जो भांडे बना रहा है तो वे उसे एक मनुष्यके रूपमें, हां, बहुत बड़े मनुष्यके रूपमें देखते हैं। सच्ची बात तो यह है कि भगवान्ने मनुष्यको अपने रूपमें नहीं ढाला है, बल्कि स्वयं मनुष्यने भगवान्को अपना प्रतिरूप बनाया है।

जैसा कि मैंने कहा, यह प्रश्न गलत रूपमें रखा गया है। प्रश्न-का रूप पहलेसे भगवान्के बारेमें और सृष्टिके बारेमें अमुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान्यताओंको स्वीकार करके चलता है। तुम्हारी मान्यताएं अपने-आपमें दूषित हैं।

सृष्टि और स्रष्टा वास्तवमें अलग-अलग नहीं हैं। अपने मूलमें दोनों एक ही हैं। सृष्टि स्वयं भगवान्का ही एक रूप है जो काल और देशमें फैला हुआ है। अतः सृष्टि भी एक-न-एक रूपमें भगवान् ही है। तुम इनके भाग नहीं कर सकते, यह नहीं कह सकते कि बनानेवाला बनी हुई चीजसे उसी तरह अलग है जैसे घड़ी घड़ी बनानेवालेसे। तुम भगवान्पर अपना विचार आरोपित करते हो और फिर उनसे जवाब-तलब करते हो कि सृष्टि ऐसी क्यों है? इतनी बुरी क्यों है? भगवान् इसका यह उत्तर भली-भांति दे सकते हैं : "यह मेरी नहीं तुम्हारी करतूत है। फिरसे 'मैं' बन जाओ तो तुम्हें यह सब ऐसा न लगेगा जैसा अब लग रहा है। तुम अपना 'स्व' नहीं हो, इसीलिये यह समस्या उठती है!" वास्तवमें, तुम अपनी चेतनाको भगवान्की चेतनाके साथ एक कर लो तो फिर कोई समस्या ही नहीं रह जायगी। उस स्थितिमें हर चीज सरल, स्वाभाविक और ठीक मालूम होती है, ठीक वैसी ही जैसी होनी चाहिये। जब तुम अपने-आपको अपने मूलसे अलग करके उससे दूर जा खड़े होते हो, उनके सामने या उनके विरुद्ध हो जाते हो तभी सब प्रकारकी मुसीबतें शुरू होती हैं। तुम पूछ सकते हो कि भला भगवान्ने अपने ही एक अंशको इस तरह अपनेसे बाहर जाने, अपना विरोध करने और यह सब गड़बड़ पैदा करनेकी अनुमति ही कैसे दी? मैं भगवान्की ओरसे यह उत्तर दूंगी : "यदि तुम यह सब जानना चाहते हो तो अपने-आपको भगवान्के साथ युक्त कर दो, क्योंकि उन्होंने यह सब क्यों किया यह जाननेका सबसे अच्छा उपाय यही है। बल्कि एक ही उपाय है। अपने मनके द्वारा प्रश्न कर-करके तुम उत्तर न पा सकोगे। मन जान ही नहीं सकता। और मैं दोहराती हूं, जब तुम उस तादात्म्यको प्राप्त कर लेते हो तो सब समस्याएं हल हो जाती हैं। यह एक तथ्य है कि भागवत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प यहांपर अपने-आपको खोल रहा है, निरंतर प्रगति हो रही है; पहले जो चीजें थीं और आज जो चीजें हैं, उन्हें हटकर आने वाली अधिक अच्छी चीजोंको जगह देनी पड़ेगी और हर चीज अधिकाधिक अच्छी होती जायेगी; इस तथ्यके कारण ही हमारे अंदर यह भाव पैदा होता है कि स्थिति ठीक नहीं है, चीजें ठीक नहीं हैं, इनका कुछ और रूप होना चाहिये। पिछले दिन जो चीज अच्छी थी, जो जगत् अच्छा था वह आगामी कल अच्छा न रहेगा। आज जो जगत्' एकदम अस्तव्यस्त और सामंजस्यहीन दीखता है, शायद वही किसी पिछले जमानेमें बहुत सामंजस्यपूर्ण और समस्वर प्रतीत होता। इसका कारण यह है कि आज हमें ज्यादा सामंजस्यपूर्ण जगत्की संभावना दीख रही है। अगर हमें संसार वैसा ही लगता जैसा उसे होना चाहिये तब तो हम उसे ज्यादा अच्छा बनानेका कोई प्रयास ही न करते। फिर भी हम भगवान्को बहुत ज्यादा मानव रूपमें देखते हैं। हम अपने अंदर ही, अपनी छोटी-सी चेतनामें बंद रहते हैं जो अनंत विशालतामें एक कणके समान है। तुम विशालताको समझना चाहते हो? यह संभव नहीं है। यह केवल एक ही स्थितिमें संभव है, तुम स्वयं उस विशालताके साथ एक हो जाओ। पानीकी एक बूंद यह नहीं पूछ सकती कि समुद्र कैसा है: उसे अपने-आपको समुद्रमें खो देना होगा।"

११.

जगत्की कुरूपता

हर चीजके मूलमें एक परम सत्य है, तब फिर जगत् अपनी अभिव्यक्तिमें इतना कुरूप कैसे हो गया? आखिर चीजें कुरूप है ही क्यों? क्योंकि उत्स और अभिव्यक्तिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच और चीजें भी हस्तक्षेप करती हैं। अगर मैं तुमसे पूछूं : "क्या तुम अपनी सच्ची सत्ताको जानते हो ?" तो तुम क्या कहोगे ? यही कि तुम नहीं जानते; अगर तुम जानते हो तो यह एक अद्भुत बात होगी। सभी सत्ताओं और सभी चीजोंकी यही कहानी है। और तुम दीवारपर रेंगती हुई कोई छिपकली नहीं हो, तुम काफी विकसित, चिंतनशील सत्ता हो, परिमार्जन और शुद्धिके बहुत-से स्तर पार कर चुके हो। इतना सब होनेपर भी तुम अपनी सत्ताका सत्य नहीं बता सकते। संसारकी विकृतिका यही रहस्य है। इसका कारण है वह सारी अचेतना — निश्चेतना — जो मूल-स्रोतसे अलग होनेके कारण पैदा हो गयी। यही निश्चेतना मूल-स्रोतको — जो सब जगह मौजूद है — अपनी प्रकृतिमें अभिव्यक्त होनेसे रोकती है। चूंकि वह है इसीलिये सब कुछ है, यह सारा संसार है; लेकिन अपनी अभिव्यक्तिमें वह विकृत हो जाती है, क्योंकि उसे अचेतन, निश्चेतन और अंधकारके द्वारा प्रकट होना पड़ता है। लेकिन यह हुआ कैसे ? सृजनका संकल्प शुरूमें एक-सा संकल्प था जो व्यक्तित्वकी रचना करनेके लिये आगे आया, लेकिन वह जो प्राप्त कर सका वह सच्चा व्यक्ति या व्यक्तित्व न था, एक ठोस ऐक्यके अनगिनत टुकड़े थे। मौलिक अविभाज्य ऐक्य अनगिनत विभाजित इकाइयोंका कुल योग बन गया। ये इकाइयां अलग-अलग चीजोंका व्यक्तित्व बन गयीं और इसी तरह व्यवहार करने लगीं और अनुभव करने लगीं। ठीक यही अलगावका भाव तुम्हें अपने निजी व्यक्तित्वका भान देता है, वरना तुम केवल किसी तरल पदार्थकी एक राशि बने रहते। तुम्हें ऐसा लगता कि तुम्हारे पास वह ठोस रूप तो है ही नहीं जो तुम्हें दूसरोंसे अलग करता है और एक व्यक्ति बनाता है, तुम्हें उन प्राणिक शक्तियोंका भान रहता है जो हर जगह उपस्थित हैं, और घूमती रहती हैं, और सब चीजोंके आधार, निश्चेतनाका भान रहता है, तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम एक चलती-फिरती राशि हो जिसमें सब प्रकारकी परस्पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधी गतियां होती रहती हैं जिन्हें अलग नहीं किया जा सकता तुम्हें यह न लगेगा कि तुम कोई अलग व्यक्ति हो, कि तुम एक बहुत जटिल समग्रके एक स्पंदन या स्वर हो। मूल-स्रोतसे ऐसी पृथक् सत्ताएं बननी थीं जो अलग होते हुए फिरसे अपने भागवत उत्सके बारेमें सचेतन हो सकें। व्यक्ति बनानेकी प्रक्रियाने यह जरूरी कर दिया कि व्यक्ति अपने-आपको अलग अनुभव कर सके इसीलिये व्यक्ति, कम-से-कम ऊपरी रूपमें, अपने मूलसे कट गया और निश्चेतनामें जा गिरा। वास्तवमें मूल-स्रोत ही जीवनका जीवन है। अगर जीवन उस स्रोतसे बिछुड़ जाय तो स्वभावतः चेतना निश्चेतनामें बदल जाती है और तुम अपनी सत्ताके सत्यको खो बैठते हो। संसारकी सृष्टि या रचनाकी यही प्रक्रिया है, इसमें शुद्ध मूल-तत्त्व अपने शुद्ध तत्त्वमें सीधा अभिव्यक्त नहीं होता, बल्कि विकृतिके द्वारा, यानी, निश्चेतना और अविद्याके द्वारा प्रकट होता है। बस, इसी रास्तेसे कुरूपता, जरा-मरण, दुष्टता, दरिद्रता आदि-का प्रवेश हुआ। मैं कहूंगी कि व्यक्तित्वकी रचनाने ही इन चीजों-को, इनमेंसे हर एकको जन्म दिया, वही सब प्रकारके अशुभ और उसके स्पंदनोंके लिये जिम्मेदार है। मैं यह नहीं कहती कि यह अनिवार्य था, पर इस समस्याको हम फिर कभी लेंगे। अभी तो इसका उपाय बतलानेके लिये मैं तुम्हें मूल-स्रोतकी ओर अभिमुख करना चाहती हूं; और फिर यह पूछनेसे कोई लाभ नहीं है कि ऐसा क्यों है। जैसा कि मैंने कहा, संसारकी समस्याको हल करनेका बस एक ही उपाय है, फिरसे सचेतन बन जाओ, अपनी खोयी हुई चेतनाको फिरसे प्राप्त करो। हां, अगर तुम कुछ धर्मोंकी तरह यह कहो कि शुभ शुभ है और अशुभ अशुभ है और हमेशा ऐसे ही बने रहेंगे तब तो कोई समस्या ही नहीं रह जाती। तब तो एक सतत संघर्ष दोनोंको बांधे हुए है और जिस क्षण जिसकी विजय होगी वह अपनी प्रकृतिके अनुसार संसारको जरा ज्यादा अच्छा या जरा ज्यादा खराब बना देगा। लेकिन दोनोंका अस्तित्व रहेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हमेशा रहेगा, वे एक-दूसरेके साथ इस तरह लिपटे हुए हैं कि उन्हें अलग करना असंभव है। लेकिन तुम देख चुके हो कि बात ऐसी नहीं है। आदमी इस जंजालमेंसे निकलकर सत्यके पूर्ण ऐक्यमें आ सकता है, क्योंकि वही एकमात्र और मौलिक सत्य है।

मैं फिरसे कहती हूं कि यह पूर्ण सत्य है जिसने अपने-आपको चारों ओर अनगिनत अणुओं, अगण्य कोषाणुओं, मस्तिष्कके कोषाणुओंके रूपमें बिखेर दिया है जो अपने समस्त अज्ञानके होते हुए चेतनाकी गुप्त गतिसे चालित होते हैं। अंधकारके यह छोटे-छोटे कण प्रकाशकी ओर बढ़ते हैं और उसे पा लेते हैं क्योंकि वह उन्हींके अंदर विद्यमान है। वे जिस चीजको ढूंढ रहे हैं उसे पा लेंगे। इसमें कम या अधिक समय लग सकता है, पर वह मिलेगा अवश्य। तो उपाय यही है। वह स्वयं अशुभके हृदयमें विराज-मान है।

सोसायटी समाचार

श्री एम० पी० पंडित पुणे गये थे और वहांके विश्व-विद्यालयमें उन्होंने तीन भाषण दिये; विषय थे: (१) भारतीय संस्कृतिके मूलभूत सिद्धांत; (२) परंपरागत योग और सर्वांगीण योग; (३) क्रमविकासके बारेमें श्रीअरविंदके विचार। विश्व-विद्यालयके उप-कुलाधिपतिने कार्यक्रममें विशेष रस लिया। फिर एक सार्व-जनिक सभामें श्री पंडितने माताजीकी जीवनी और उनके उद्देश्यके बारेमें बात की। उन्होंने बंबईमें भाषण दिया, फिर जयपुरमें राज-स्थान विश्व-विद्यालयमें भाषण दिया।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्था
उद्देश्य है—भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खाली
चला जायगा।

—श्री

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें :

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donted by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनका प्रयोजन धन कमाना नहीं है। धनका प्रयोजन नये सूज
के आगमनके लिये पृथिवीको तैयार करना है।

— श्री

राहुल ट्रान्सपोर्ट प्रा. लिमिटेड

मुख्यालय

तखतमल इस्टेट,
अमरावती ४४४६०१
दूरभाष : २२३६

थाना बुकिंग

एम. श्री. भाटिया कम्पाऊण्ड,
सवानी ट्रान्सपोर्टके निकट,
पूर्वी राष्ट्रपथ
दूरभाष : ५९६००७

बंबई कार्याल
१३२, परसेपोलि
प्लाट क्रं. १०
कफ परेड
बंबई–४०००५
दूरभाष : २१६१०८ व ५२२१६५

'अभीप्सा' अखिल भारत पत्रिका मराठी भाषामें पढ़िये।
संपर्क सूत्र — श्रीअरविन्द सोसायटी, २५-३०२ मोर्शी मार्ग,
अमरावती–४४४६०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA
STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Wanted Agents

(Male/Female)

Candidates do this work at own Area.

Salary:

Rs. 300/-, Commission and T. A. extra.

Qualification :

Candidate should be minimum Matric or Higher Secondary.

Age:

18 to 40 yrs.

Send applications only in Hindi or in English. Registered Letter to the following address :

Gwalior Textiles

38-B, Majlis Park,
DELHI-110 033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ और २६ नवंबरको डा० माहेश्वरी बंगलौरमें थे। वहां उन्होंने भाषण दिया। विषय था: 'निराश आज, आगामी कलकी आशा।' बंगलौरसे गोआ और अमरावतीका चक्कर लगाया। दिसंबरमें वे पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, कलकत्ता, आसनसोल, मथुरा आदि स्थानोंके श्रीअरविंद सोसायटी केंद्र देखने गये। हर स्थानपर सार्वजनिक सभाकी व्यवस्था की गयी थी जिनमें उन्होंने भाषण दिये। उनके कुछ विषय थे: 'महिमापूर्ण भविष्यकी ओर', 'सच्ची शिक्षा', 'श्रीअरविंदके प्रकाशमें गीता', 'स्वाध्याय', 'कलके संसारमें भारत'।

प्रो० मनोजदास जयपुरके विश्व-विद्यालय गये थे और वहां उन्होंने 'शिक्षाके बारेमें माताजीकी अंतर्दृष्टि' पर भाषण दिया। उन्होंने 'विमेन्स कालेज' की विद्यार्थिनियोंसे बातचीत की। जोधपुरमें उन्होंने श्रीअरविंद सोसायटीकी सार्वजनिक सभामें वार्ता दी। श्रीमती वीणा दास गुप्तने विषय और वक्ताका परिचय दिया। सभाके सभापति थे प्रसिद्ध शिक्षाविद् और लेखक प्रो. वी० वी० जौन।

'आदर्श बालक' एक छोटी-सी पुस्तिका है जिसमें माताजीके कुछ वचन हैं। उसका पहला संस्करण १९५३ में छपा था। उसके बारेमें माताजीने कहा था: "यह किताब हर एक बालकके पास पहुंचनी चाहिये।" शताब्दी वर्षके उपलक्षमें बहुत भक्तों, शिक्षकों और माता-पिताओंका सुझाव है कि माताजीकी इस पुस्तिकाको प्रकाशित करनेके लिये चंदा इकट्ठा किया जाय। यह पुस्तिका मुफ्तमें बांटी जानी चाहिये, इसलिये श्रीअरविंद सोसायटीके विभिन्न केंद्र इस काममें सहयोग देना चाहें तो निम्नलिखित पतेपर चेक, ड्राफ्ट या मनि आर्डर भेजकर जितनी चाहें प्रतियां मंगा सकते हैं: श्री केशवजी, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२। यह पुस्तिका 'शब्द'से भी मिल सकती है। ५०० प्रतियोंका मूल्य है १५० रु०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for In...
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8...

Statement about ownership and other particulars about Newspaper (Agnishikha), to be published in the first issue every year after the last day of February.

FORM IV (See Rule 8)

1.	Place of Publication:	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry
2.	Periodicity of its publication:	Monthly
3.	Printer's Name:	Amiyo Ranjan Ganguli
	Nationality	Indian
	Address	Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry-605002
4.	Publisher's Name:	Secretary, Sri Aurobindo Society
	Nationality	Indian
	Address	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry-605002
5.	Editor's Name:	Ravindra
	Nationality	Indian
	Address	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry-605002
6.	Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one per cent of the total capital:	Sri Aurobindo Society, Pondicherry-605002

I, Guruprasad hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 1st March, 1978

(Sd/) Guruprasad
Signature of Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

अप्रैल १९७८ वर्ष ८, अंक ९, पूर्णांक ९३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

अप्रैल दर्शनके संदेश
रोग और दुर्घटनाएं २
औलम्पिक रिंग्ज २
सोसायटी समाचार ३

वार्षिक चंदा ६.०० आजीवन सदस्यता १००.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1951

A day may come when she must stand unhelped
On a dangerous brink of the world's doom and hers,
Carrying the world's future on her lonely breast,
Carrying the human hope in a heart left sole
To conquer or fail on a last desperate verge.
Alone with death and close to extinction's edge,
Her single greatness in that last dire scene,
She must cross alone a perilous bridge in Time
And reach an apex of world-destiny
Where all is won or all is lost for man.
In that tremendous silence lone and lost
Of a deciding hour in the world's fate,
In her soul's climbing beyond mortal time
When she stands sole with Death or sole with God
Apart upon a silent desperate brink,
Alone with her self and death and destiny
As on some verge between Time and Timelessness
When being must end or life rebuild its base,
Alone she must conquer or alone must fall.
No human aid can reach her in that hour,
No armoured God stand shining at her side.
Cry not to heaven, for she alone can save.
For this the silent Force came missioned down;
In her the conscious Will took human shape:
She only can save herself and save the world.

Savitri, Book VI, Canto 2 — Sri Aurobindo

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1952

At the head she stands of birth and toil and fate,
In their slow round the cycles turn to her call;
Alone her hands can change Time's dragon base....
She is the golden bridge, the wonderful fire....
The magnet of our difficult ascent,
The Sun from which we kindle all our suns,
The Light that leans from the unrealised Vasts,
The joy that beckons from the impossible,
The Might of all that never yet came down.
All Nature dumbly calls to her alone
To heal with her feet the aching throb of life
And break the seals on the dim soul of man
And kindle her fire in the closed heart of things.
All here shall be one day her sweetness' home...

Savitri, Book III, Canto 2 SRI AUROBIND

24-4-1953

Mother Divine, grant that today may bring to us a complete consecration to thy Will, a more integral gift of ourselves to th work, a more total forgetfulness of self, a greater illuminatio a purer love. Grant that in a communion growing ever deepe more constant and entire we may be united always more an more closely to thee and become thy servitors worthy of thee Remove from us all egoism, root out all petty vanity, greed an obscurity. May we be all ablaze with thy divine Love; mak us thy torches in the world.

THE MOTHE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे मां भगवती ! वर दे कि आजका दिन हमारे अंदर तेरे संकल्प-के प्रति और भी पूर्ण आत्म-निवेदन, तेरे कर्ममें और भी सर्वांगीण आत्म-दान, और भी ऐकांतिक आत्म-विस्मृति, एक महत्तर ज्योति, एक शुद्धतर प्रेम ले आये। ऐसी कृपा कर कि तेरे साथ हमारा संयोग सदा-सर्वदा और भी गभीर, और भी सतत तथा संपूर्ण होता जाय और हम अधिकाधिक घनिष्ठताके साथ निरंतर तेरे साथ एक होते जायं और तेरे सुयोग्य सेवक बन जायं। हमारे समस्त अहंकारको दूर कर, समस्त तुच्छ मिथ्याभिमान, लोभ, लालसा और अंधकारको निर्मूल कर। हम सब तेरे दिव्य प्रेमसे प्रज्ज्वलित हो उठें; जगत्में तेरी ज्योतिशिखाएं बन जायं।

—माताजी

24-4-1954

Mother has taken the body because a work of a physical nature (including a change in the physical world) had to be done, she has not come to establish a "physical relation" with people. Some have come with her to share in the work, others she had called, others have come seeking for the light. With each she has a personal relation or a possibility of the personal relation, but each is of its own kind and no one can say that she must do equally the same thing with each person. No one can claim as a right that she must be physically near to him because she is physically near to others. Some have chosen personal relation with her yet she sees little of them — some have a less close personal relation yet for one reason or another may see her much oftener or longer. To apply silly mathematical rules of the physical mind here is absurd. Your physical mind cannot understand what the Mother does, its values and

2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

standards and ideas are not hers. It is still worse to make your personal vital demand or desire the measure of what she ought to do. That way spiritual ruin lies. She acts in each case for different reasons suitable to that case.

Mother and I are one and equal. Also she is supreme here and has the right to arrange the work as she thinks best for the work, no one has any right or claim or proprietorship over any work that may be given him. The Ashram is the Mother's creation and would not have existed but for her, the work she does is her creation and has not been given to her and cannot be taken from her. Try to understand this elementary truth if you want to have any right relation or attitude towards the Mother.

SRI AUROBINDO

माताजीने यह शरीर इसलिये धारण किया है कि उन्हें भौतिक प्रकृतिसे संबंध रखनेवाला एक कार्य करना है (भौतिक जगत्का परिवर्तन भी उसमें शामिल है); वह मनुष्योंके साथ "भौतिक संबंध" स्थापित करनेके लिये नहीं आयी हैं। कुछ लोग उनके कार्यमें भाग लेनेके लिये उनके साथ आये हैं, कुछ लोगोंको उन्होंने स्वयं बुलाया है, और अन्यान्य लोग ज्योतिकी खोजमें आये हैं। इनमेंसे प्रत्येकके साथ उनका एक व्यक्तिगत संबंध है अथवा होनेकी संभावना है; परंतु प्रत्येक संबंध अपने निजी ढंगका है और कोई आदमी यह नहीं कह सकता कि माताजीको प्रत्येक व्यक्तिके साथ ठीक एक जैसा ही व्यवहार करना चाहिये। कोई आदमी अधिकारके रूपमें यह मांग नहीं कर सकता कि उसे माताजीका शारीरिक सान्निध्य प्राप्त होना ही चाहिये क्योंकि दूसरोंको वैसा सान्निध्य प्राप्त है। कुछ लोगोंका उनके साथ विशिष्ट व्यक्तिगत संबंध है, फिर भी वह उनसे बहुत ही कम मिलती हैं — कुछ लोगोंका व्यक्तिगत संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपेक्षाकृत कम घनिष्ठ है, फिर भी किसी-न-किसी कारणवश वे उनके साथ बार-बार या अधिक देरतक मुलाकात कर सकती हैं। इस प्रसंगमें भौतिक मनका कोई मूर्खतापूर्ण गणित-शास्त्रीय नियम लगाना एकदम निरर्थक है — माताजी जो कुछ करती हैं उसे तुम्हारा भौतिक मन नहीं समझ सकता; उसके निर्धारित किये हुए मूल्य, मानदंड और विचार माताजीके मूल्य, मानदंड और विचार नहीं होते। अपने व्यक्तिगत प्राणकी मांग या कामनाको इस बातका मापदंड बनाना कि माताजीको क्या करना चाहिये, यह तो और भी बुरा है। यह आध्यात्मिक सर्वनाशका पथ है। माताजी प्रत्येक व्यक्तिके साथ, नाना कारणोंसे, उसके लिये उपयुक्त ढंगसे ही व्यवहार करती हैं।

माताजी और मैं एक और अभिन्न हैं। फिर वही यहांपर सर्वेसर्वा हैं और कार्यके लिये जो कुछ उत्तम समझें वैसी ही व्यवस्था करनेका उन्हें अधिकार है। किसी व्यक्तिका किसी कार्यपर, जो उसे दिया जाय, कोई अधिकार या दावा या आधिपत्य नहीं हो सकता। यह आश्रम माताजीकी सृष्टि है और उनके बिना इसका कभी अस्तित्व भी न होता; जो कार्य वह करती हैं वह उन्हींकी सृष्टि है और न तो वह उन्हें दिया गया है और न वह उनसे वापिस ही लिया जा सकता है। अगर तुम माताजीके साथ कोई सच्चा संबंध या उनके प्रति समुचित मनोभाव रखना चाहते हो तो इस प्रारंभिक सत्यको समझनेका प्रयत्न करो।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1955

THE FIRE-KING

O soul who comest fire-mantled from the earth
Into the silence of the seven skies,
Art thou an heir of the spiritual birth?
Art thou an ancient guest of Paradise?

THE MESSENGER

I am the Messenger of the human race,
I am the Pioneer, from death and night.
I am the nympholept of Beauty's face,
I am the hunter of the immortal Light.

THE FIRE-KING

What wearest thou that wraps thee with its power
Protecting from the Guardians of the Way?
What wanderer born from the eternal Hour?
What fragment of the inconceivable Ray ?

THE MESSENGER

It is the fire of an awakened soul
Aspiring from death to reach Eternity,
The wings of sacrifice flaming to their goal,
The burning godhead of humanity.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE FIRE-KING

What seekst thou here, child of the transient ways?
Wouldst thou be free and still in deathless peace
Or gaze for ever on the Eternal's face
Hushed in an incommunicable release?

THE MESSENGER

I claim for men the peace that shall not fail,
I claim for earth the unsorrowing timeless bliss,
I seek God-strength for souls that suffer in hell,
God-light to fill the ignorant Abyss.

SRI AUROBINDO

अग्निराज — सात आकाशोंकी नीरवतामें धरतीसे आनेवाले अग्नि-वेष्टित आत्मा, क्या तू आध्यात्मिक जन्मका अधिकारी है ? क्या तू स्वर्गका पुराना अतिथि है ?

संदेशवाहक — मैं मानवजातिका संदेशवाहक हूं । मैं मृत्यु और रात्रिसे आनेवाला हरावल हूं। मैं सौंदर्यके चेहरेका मतवाला और शाश्वत ज्योतिका अन्वेषक हूं।

अग्निराज — यह कौन-सी आग है जो तुझे अपनी शक्तिसे लपेटे है, जो मार्गके संरक्षकोंके भालोंको मोड़ देती है ? शाश्वत घड़ीसे उत्पन्न यह कौन घुमक्कड़ है ? कल्पनातीत किरणका कौन-सा अंश है ?

संदेशवाहक — यह जाग्रत आत्माकी अग्नि है जो मृत्युसे शाश्वतकी अभीप्सा कर रही है। यह यज्ञके पंखोंपर अपने लक्ष्यकी ओर बढ़ रही है। यह मानवताका प्रज्ज्वलित देव है।

अग्निराज — अनित्य, नश्वर मार्गोंके बालक, तू यहां क्या चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? क्या तू स्वाधीन रहते हुए अमर शांति चाहता है ? या अकथ-नीय मोक्षकी नीरवतामें चिरकालतक शाश्वतके मुखकी ओर ताकता रहना चाहता है ?

संदेशवाहक —— मैं मनुष्योंके लिये ऐसी शांतिकी मांग करता हूं जो कभी भंग नहीं हो सकती, मैं धरतीके लिये दुःखविहीन शाश्वत आनंदकी मांग करता हूं, मैं नरकमें यातनाएं भोगनेवाली आत्माओंके लिये भागवत शक्तिकी खोजमें हूं और अज्ञानके रसातलके लिये भागवत ज्योतिकी खोज कर रहा हूं।

——श्रीअरवि

24-4-1956

The manifestation of the Supramental upon earth is no mo a promise but a living fact, a reality.

It is at work here, and one day will come when the mo blind, the most unconscious, even the most unwilling shall obliged to recognise it.

THE MOTH

पृथ्वीपर 'अतिमानस'की अभिव्यक्ति अब कोई आश्वासनकी ब नहीं रही, बल्कि वह जीवंत तथ्य और एक वास्तविक सत्य है।

अतिमानस यहां कार्य कर रहा है, और एक दिन आयेगा अत्यन्त अंधे, अत्यन्त अचेतन और एकदम न चाहनेवाले भी स्वीकार करनेके लिये बाधित होंगे।

——माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1957

In the eternity of becoming each Avatar is only the announcer, the forerunner of a more perfect future realisation.

25-3-1957 THE MOTHER

सृष्टिकी अनन्त धाराके अंदर प्रत्येक अवतार भविष्यकी एक अधिक पूर्ण सिद्धिकी घोषणा करनेवाला, उसका अग्रदूत होता है।

२५-३-१९५७ —माताजी

24-4-1958

There are two complementary aspects of the liberating action of the Divine Grace upon earth among men. These two aspects are equally indispensable, but are not equally appreciated.

The sovereign immutable peace that liberates from anxiety, tension and suffering.

The dynamic all-powerful progress that liberates from fetters, bondages and inertia.

The peace is universally appreciated and recognised as divine, but the progress is welcomed only by those whose aspiration is intense and courageous.

1920-1958 THE MOTHER

पृथ्वीपर मनुष्योंमें होनेवाली भगवत्कृपाकी मुक्तिदायिनी क्रियाके दो रूप हैं जो एक-दूसरेके पूरक हैं। ये दोनों ही रूप हैं तो एक समान आवश्यक, पर एक समान महत्त्व नहीं पाते।

परम अक्षर शांति, जो दुश्चिंता, उद्वेग और दुःख-कष्टसे मुक्त करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्रिय सर्वसंपन्न प्रगति, जो श्रृंखलाओं, बन्धनों और तामसिकतासे छुड़ाती है।

शांति तो विश्व-भरमें समादृत होती तथा दिव्य समझी जाती है पर प्रगतिका स्वागत केवल वे ही लोग करते हैं जिनकी अभीप्सा तीव्र और साहसपूर्ण होती है।

१९२०–१९५८

—माताजी

24-4-1959

The divine perfection is always there above us; but for man to become divine in consciousness and act and to live inwardly and outwardly the divine life is what is meant by spirituality; all lesser meanings given to the word are inadequate fumblings or impostures.

SRI AUROBINDO

दिव्य पूर्णता सर्वदा ही हमारे ऊपर विद्यमान है; परंतु आध्यात्मिकताका अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी चेतना और कर्ममें दिव्य बने और आंतरिक तथा बाह्य रूपसे दिव्य जीवन यापन करे; इस शब्दको इससे कम जो भी अर्थ दिये जाते हैं वे सभी या तो अपर्याप्त और अनाड़ीपन हैं अथवा मिथ्याचार।

—श्रीअरविंद

24-4-1960

Tne Formless and Formed were joined in her.
Immensity was exceeded by a look,
A Face revealed the crowded Infinite.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Incarnating inexpressibly in her limbs
The boundless joy the blind world-forces seek,
Her body of beauty mooned the seas of bliss.
At the head she stands of birth and toil and fate,
In their slow round the cycles turn to her call;
Alone her hands can change Time's dragon base.
Hers is the mystery the Night conceals;
The spirit's alchemist energy is hers;
She is the golden bridge, the wonderful fire.
The luminous heart of the Unknown is she,
A power of silence in the depths of God;
She is the Force, the inevitable Word,
The magnet of our difficult ascent,
The Sun from which we kindle all our suns,
The Light that leans from the unrealised Vasts,
The joy that beckons from the impossible,
The Might of all that never yet came down.
All Nature dumbly calls to her alone
To heal with her feet the aching throb of life
And break the seals on the dim soul of man
And kindle her fire in the closed heart of things.
All here shall be one day her sweetness's home,
All contraries prepare her harmony;
Towards her our knowledge climbs, our passion gropes,
In her miraculous rapture we shall dwell,
Her clasp will turn to ecstasy our pain.

Savitri, Book III, Canto 2 SRI AUROBINDO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1961

Because thou art, the soul draws near to God.

★

An inner relation means that one feels the Mother's presence, is turned to her at all times, is aware of her force moving, guiding, helping, is full of love for her and always feels a great nearness whether one is physically near her or not. This relation takes up the mind, vital and inner physical till one feels one's mind close to the Mother's mind, one's vital in harmony with hers, one's very physical consciousness full of her.

SRI AUROBINDO

तू है, इसीलिये अंतरात्मा भगवान्के नजदीक खिचती है।

★

आंतरिक संबंधका अर्थ यह है कि साधक श्रीमांकी उपस्थितिका अनुभव करे, सदा-सर्वदा उनकी ओर मुड़ा रहे, उसे यह बोध बना रहे कि उनकी शक्ति ही उसे चलाती, पथ दिखाती और उसकी सहायता करती है, वह श्रीमांके लिये प्रेमसे भरपूर हो और निरंतर उन्हें अपने अत्यंत निकट अनुभव करता रहे, चाहे वह शरीरसे उनके समीप हो या न हो। यह संबंध साधकके मन, प्राण और आंतर शरीरको तबतक ऊपर उठाता रहता है जबतक कि साधक अपने मनको श्रीमांके मनके अति निकट, अपने प्राणको उनके प्राणके साथ सुसमंजस अपनी शारीरिक चेतनातकको उन्हींसे ओतप्रोत नहीं अनुभव करने लगता।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1962

Victory is certain if we persevere, and what price of difficulty and endeavour can be too great for such a conquest?

SRI AUROBINDO

यदि हम डटे रहें तो विजय सुनिश्चित है, और भला ऐसी विजयके लिये कठिनाई और प्रयास-रूपी कौन-सा मूल्य अत्यधिक है?

—श्रीअरविंद

24-4-1963

The soul goes to the Mother-Soul in all its desires and trouble, and the Divine Mother wishes that it should be so, so that she may pour out her heart of love. It turns to her too because of the self-existent nature of this love and because that points us to the home towards which we turn from our wanderings in the world and to the bosom in which we find our rest.

SRI AUROBINDO

जीव अपनी सभी कामनाओं और दुःख-कष्टोंके समय भगवती मां-के पास जाता है, और भगवती मां चाहती हैं कि ऐसा ही हो, ताकि वह अपने हृदयका सारा प्रेम उंडेल सकें। वह उनकी ओर इस कारण भी मुड़ता है कि उनका यह प्रेम स्वयंभू होता है और हमारे उस धामको दिखाता है जिसकी ओर हम संसारके चक्करोंसे निकल-कर मुड़ते हैं तथा श्रीमांके उस वक्षस्थलको दिखाता है जिसमें हमें विश्रांति प्राप्त होती है।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-4-1964

Shun all lowness, narrowness and shallowness in religio thought and experience. Be wider than the widest horizo be loftier than the highest Kanchanjungha, profounder th the deepest oceans.

SRI AUROBIN

अपने धार्मिक चिंतन और अनुभवमेंसे निकाल फेंको समस्त नीचत संकीर्णता और स्थूलदर्शिता। विशालतम क्षितिजोंसे भी अधि विशाल बनो, उच्चतम कंचनजंगासे भी अधिक उच्च, गभीरत समुद्रसे भी अधिक गभीर बनो।

—श्रीअरवि

24-4-1965

Strive rightly and thou shalt have; trust and thy trust sha in the end be justified.

SRI AUROBIN

समुचित रूपमें प्रयत्न करो और तुम प्राप्त कर लोगे; विश्वा रखो और तुम्हारा विश्वास अंतमें सत्य सिद्ध होगा।

—श्रीअरवि

24-4-1966

I have already spoken about the bad conditions of the wor the usual idea of the occultists about it is that the worse th are the more is probable the coming of an intervention or a n

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

revelation from above. The ordinary mind cannot know — it has either to believe or disbelieve or wait and see.

As to whether the Divine seriously means something to happen, I believe it is intended. I know with absolute certitude that the Supramental is a truth and its advent is in the very nature of things inevitable. The question is as to the when and the how. That also is decided and predestined from somewhere above; but it is here being fought out amid a rather grim clash of conflicting forces. For in the terrestrial world the predetermined result is hidden and what we see is a whirl of possibilities and forces attempting to achieve something with the destiny of it all concealed from human eyes. This is, however, certain that a number of souls have been sent to see that it shall be now. That is the situation. My faith and will are for the now. I am speaking of course on the level of the human intelligence — mystically — rationally, as one might put it. To say more would be going beyond that line. You don't want me to start prophesying, I suppose? As a rationalist, you can't.

28-12-1934 SRI AUROBINDO

मैं संसारकी बुरी परस्थितियोंके विषयमें पहले ही कह चुका हूं। इस विषयमें गुह्यविदोंकी प्रचलित भावना यह है कि ये परिस्थितियां जितनी ही अधिक बुरी होती हैं, ऊपरसे किसी हस्तक्षेप या किसी नये ईश्वरीय ज्ञानका आना उतना ही अधिक संभव हो जाता है। साधारण मन इस विषयमें कुछ नहीं जान सकता — वह या तो विश्वास कर सकता है या अविश्वास, अथवा प्रतीक्षा कर सकता है।

इस बारेमें कि क्या भगवान् गंभीरतापूर्वक यह चाहते हैं कि कुछ घटित हो, मेरा विश्वास है कि वह चाहते हैं। मैं एकदम निश्चित रूपमें जानता हूं कि अतिमानस एक सत्य है और उसका आविर्भाव वस्तुओंके सहज-स्वभावके कारण अनिवार्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस, प्रश्न यही है कि कब और कैसे। वह भी निश्चित और कहीं ऊपरसे पूर्वनियत है; परंतु यहां (इस पृथ्वीपर) वह संघर्षशील शक्तियोंके घोर संग्रामके बीच कठिनाईके साथ क्रियान्वित हो रहा है। क्योंकि पार्थिव जगत्में पूर्वनिर्धारित परिणाम छिपा होता है और जो कुछ हम देखते हैं वह संभावनाओंका एक भंवर है तथा उन शक्तियोंका एक संघात है जो किसी ऐसी चीजको संपन्न करनेकी चेष्टा करती हैं जिसका सारा विधि-विधान मानवीय आंखोंसे प्रच्छन्न है। परंतु यह निश्चित है कि कुछ आत्माएं इस उद्देश्यसे भेजी गयी हैं कि वह कार्य अभी पूरा हो। यही वर्तमान स्थिति है। मेरा विश्वास और संकल्प इस वर्तमानके साथ है। हां, मैं मानवीय बुद्धिके स्तरपर बोल रहा हूं — या यूं भी कहा जा सकता है कि रहस्यपूर्ण बौद्धिक भाषामें बोल रहा हूं। इससे अधिक कुछ कहनेका अर्थ होगा उस सीमासे परे जाना। मैं समझता हूं कि तुम यह नहीं चाहते कि मैं भविष्यवाणियां करना शुरू कर दूं। एक बुद्धिवादीके नाते तुम ऐसी मांग कर भी नहीं सकते।

२८-१२-१९३४ —श्रीअरविंद

24-4-1967

For after all it is the will in the being that gives to circumstances their value, and often an unexpected value; the hue of apparent actuality is a misleading indicator. If the will in a race or civilisation is towards death, if it clings to the lasssitude of decay and the laissez-faire of the moribund or even in strength insists blindly upon the propensities that lead to destruction or if it cherishes only the powers of dead Time and puts away from it the powers of the future, if it prefers life that will be nothing, not even abundant strength and resources and intelligence, not even many calls to live and constantly offered

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

opportunities will save if from an inevitable disintegration or collapse. But if there comes to it a strong faith in itself and a robust will to live, if it is open to the things that shall come, willing to seize on the future and what it offers and strong to compel it where it seems adverse, it can draw from adversity and defeat a force of invincible victory and rise from apparent helplessness and decay in a mighty flame of renovation to the light of a more splendid life. This is what Indian civilisation is now rearising to do as it has always done in the eternal strength of its spirit.

SRI AUROBINDO

आखिरकार, सत्ताके अंदर विद्यमान संकल्प ही वह चीज है जो परिस्थितियोंको मूल्य प्रदान करती है, और बहुधा आशातीत मूल्य प्रदान करती है; बाह्य परिस्थितिका रूप-रंग तो एक भ्रांति उत्पन्न करनेवाला लक्षण ही होता है। यदि कोई जाति या सभ्यता मृत्युकी ओर जानेकी इच्छा करे, यदि वह पतनकी ओर जानेवाली शिथिलतासे चिपकी रहे और मृत्युके मुखमें जानेके लिये तत्पर हो अथवा शक्ति-सामर्थ्य होनेपर भी विनाशकी ओर ले जानेवाली प्रवृत्तियोंपर अन्ध-भावसे आग्रह करे, अथवा वह केवल मृत युगकी शक्तियोंको ही प्रिय समझे और भविष्यकी शक्तियोंको अपनेसे दूर हटा दे, यदि वह भावी जीवनकी अपेक्षा अतीत जीवनको ही पसंद करे तो फिर कोई भी चीज, यहांतक कि प्रचुर शक्ति, वैभव तथा बुद्धिमत्ता भी, जीते रहनेके बहुत-से अवसर तथा निरंतर प्राप्त होती रहनेवाली सुविधाएं भी उसे अनिवार्य विघटन या संहारसे नहीं बचा सकतीं। परंतु उसमें यदि प्रबल आत्म-विश्वास आ जाय और जीवित रहनेका प्रबल संकल्प उत्पन्न हो जाय, यदि वह आगे आनेवाली वस्तुओंकी ओर खुल जाय, भविष्यको और उससे प्राप्त होनेवाली चीजोंको अधिकृत करनेके लिये इच्छुक हो जाय और जहां भविष्य प्रतिकूल प्रतीत हो वहां उसका दमन करनेकी शक्ति रखती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो वह प्रतिकूलता और पराजयसे भी अदम्य विजय प्राप्त करनेकी शक्ति पा सकती तथा ऊपरसे असहाय दीखनेवाली और पतनसे ऊपर उठकर एक महत्तर जीवनके प्रकाशमें ले जानेवाले नवीन उत्साहकी प्रचंड ज्योति प्राप्त कर सकती है। यही चीज करनेके लिये भारतीय सभ्यता आज पुनः जागृत हो रही है जैसा कि वह अपनी आत्माकी शाश्वत शक्तिके द्वारा सदासे करती आ रही है।

—श्रीअरविंद

24-4-1968

In the spiritual order of things, the higher we project our view and our aspiration, the greater the Truth that seeks to descend upon us, because it is already there within us and calls for its release from the coverng that conceals it in manifested Nature.

SRI AUROBINDO

वस्तुओंकी आध्यात्मिक क्रिया-धारामें हम अपनी दृष्टि और अभीप्साको जितना प्रसारित कर सकें उतना ही महान् 'सत्य' हमारे ऊपर अवतरित होना चाहता है, क्योंकि वह हमारे अंदर पहलेसे ही विद्यमान होता और व्यक्त प्रकृतिमें जिस आवरणने उसे छिपा रखा है उससे मुक्त होना चाहता है।

—श्रीअरविंद

24-4-1969

The best possible way is to allow the Divine Grace to work in you, never to oppose it, never to be ungrateful and turn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

against it — but to follow it always to the goal of Light and Peace and unity and Ananda.

SRI AUROBINDO

सर्वोत्तम संभाव्य पथ है भागवत कृपाको अपने अंदर कार्य करने देना, कभी उसका विरोध न करना, कभी उसके प्रति अकृतज्ञ न होना तथा कभी उससे मुंह न मोड़ना — बल्कि दिव्य ज्योति, शांति, एकत्व तथा आनंदके लक्ष्यतक जानेके लिये सर्वदा उसीका अनुसरण करना।

—श्रीअरविंद

24-4-1970

To know the highest Truth and to be in harmony with it is the condition of right being, to express it all that we are, experience and do is the condition of right living.

SRI AUROBINDO

परम 'सत्य'को जानना और उसके साथ समस्वर होना ही यथार्थ सत्ताकी प्राप्तिकी शर्त्त है, उस सत्यको जो कुछ हम हैं, जो कुछ अनुभव करते और जो कुछ करते हैं; उस सबमें अभिव्यक्त करना ही यथार्थ जीवन यापन करनेकी शर्त्त है।

—श्रीअरविंद

24-4-1971

Needless to say that those who aspire to Truth must abstain from telling lies.

THE MOTHER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहनेकी जरूरत नहीं कि जो 'सत्य'के लिये अभीप्सा करते हैं उन्हें असत्य बोलनेसे बचना चाहिये।

—माताजी

24-4-1972

He comes unseen into our darker parts
And, curtained by the darkness, does his work,
A subtle and all-knowing guest and guide,
Till they too feel the need and will to change.
All here must learn to obey a higher law,
Our body's cells must hold the Immortal's flame.

SRI AUROBINDO

24-4-1973

Beyond man's consciousness
Beyond speech
O Thee, supreme Consciousness
Unique Reality
Divine Truth.

THE MOTHER

मानव चेतनाके पार
वाणीके पार
ओ तू, परम चेतना
एकमात्र सद्वस्तु
दिव्य सत्य।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग और दुर्घटनाएं

क्या जब शरीर अस्वस्थ होता है तो मन भी अस्वस्थ हो जाता है?

निश्चय ही यह जरूरी नहीं है। जैसा मैंने तुम्हें पहले बताया है रोग सत्ताके विभिन्न भागोंके अस्त-व्यस्त होने या एक प्रकारके असामंजस्यका नाम है। यह भी हो सकता है कि जब सत्ताके अन्य भागोंने प्रगति कर ली हो तब शरीर पीछे रह गया हो। उस अवस्थामें एक असंतुलन पैदा हो जाता है, सामंजस्य भंग हो जाता है और उसके परिणामस्वरूप रोग उत्पन्न हो जाते हैं, मेरा मतलब शरीरके रोगोंसे है, क्योंकि इनके होते हुए मन और प्राण स्वस्थ रह सकते हैं। ऐसे लोग हैं जो बरसों बीमार रहे हैं, जिन्हें भयंकर, असाध्य रोग हुए हैं, फिर भी वे अपने मनको अद्भुत रूपसे स्पष्ट और सक्रिय रख सकें हैं और उस क्षेत्रमें प्रगति करते रहे हैं। सुली प्रूदौम नामक एक प्रसिद्ध फरासीसी कवि हुआ है जिसे कोई मारक रोग था, अपनी रुग्णावस्थामें ही उसने अपनी सबसे अच्छी कविताएं लिखी हैं। जब उसका शरीर टूट रहा था तब भी वह बहुत खुशमिजाज रहता था। वह हर एकके साथ मुस्कराते हुए, प्रीतिकर व्यवहार करता था। शायद तुम्हें याद हो कि जब उसके चिकित्सक और जर्राह चौदहवें लुईके शरीरको छेद कर जौंकोंको खिलाया करते थे तब भी वह हंसता और चुहलें करता रहता था। यह व्यक्ति-व्यक्तिकी बात है। दूसरी ओर, ऐसे लोग भी हैं जो शरीरके जरा अस्वस्थ होते ही सिर-से-पांवतक घबरा उठते हैं। हर एकमें तत्त्वोंका अपना-अपना मेल होता है।

हां, मन और शरीरमें एक संबंध, एक निकटस्थ संबंध होता है। अधिकतर मन ही शरीरको बीमार करता है, या कम-से-कम बीमारी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सबसे बड़ा कारण होता है। मैंने कहा है कि ऐसे लोग होते हैं जिनका शरीर भले अस्वस्थ हो, पर मन स्वस्थ रहता है। लेकिन यह बहुत ही कठिन और विरल होता है कि किसीका मन अस्वस्थ या असंतुलित हो पर शरीर स्वस्थ रहे, यह असंभव तो नहीं, पर बहुत ही विरल और अपवाद रूप अवश्य है। मैंने तुम्हें बताया था कि शरीरका स्वामी है मन, शरीर आज्ञाकारी और उपकारी सेवक है। दुर्भाग्यवश, लोग मनका उपयोग करना नहीं जानते; इतना ही नहीं, जितना हो सके उतना दुरुपयोग करते हैं। मनमें काफी मजबूत रचना-शक्ति होती हैं और वह शरीरपर सीधा कार्य कर सकती है। लोग ठीक इसी शक्तिका दुरुपयोग शरीरको बीमार करनेके लिये करते हैं। जैसे ही शरीरमें कुछ जरा-सी गड़बड़ हो कि मन उसके बारेमें चिंता करने लगता है और आ सकनेवाली विपत्तियोंके बारेमें ताने-बाने बुनने लगता हैं और सब प्रकारके संकटोंकी कल्पना करने लगता हैं। पागलकी तरह दौड़-भाग करनेकी जगह यदि मन उसी शक्तिका ज्यादा अच्छे कामके लिये उपयोग करे, भयंकर कल्पनाएं करनेकी जगह अच्छी रचनाएं बनाये जिनसे शरीरमें आत्म-विश्वास पैदा हो, शरीरसे यह कहे कि चिंताकी कोई बात नहीं, एक मामूली-सी बेचैनी है जो जल्दी ही चली जायगी तो शरीरमें ऐसी अवस्था पैदा हो जायगी जिसमें ठीक प्रकारकी ग्रहणशक्ति होगी और बीमारी जैसी आयी थी उलटे पांव चली जायेगी। 'तुम्हें अपने मनको इस तरह सिखाना चाहिये कि शरीरपर कीचड़ उछालनेकी जगह उसे अच्छे सुझाव कैसे दिये जायं। अगर तुम यह भली-भांति करो तो बहुत अद्‌भुत परिणाम आ सकते हैं।

जब कोई दुर्घटना होती है तो उस समय एक नाजुक क्षण आता है। उदाहरणके लिये, तुम फिसलकर गिरते हो। तुम जिस क्षण फिसलते हो और जिस क्षण गिरते हो, इन दोनोंके बीच एक निमिष मात्रका समय आता है जब तुम्हें मानों चुनाव करनेका अवसर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। इससे हो सकता है कि कुछ भी न हो और यह भी हो सकता है कि स्थिति बहुत गंभीर हो जाय। हां, चुनाव कर सकना तभी संभव है जब तुम्हारी चेतना पूरी तरह जाग्रत हो और तुम्हारी सत्ता हमेशा चैत्य पुरुषके साथ संपर्कमें रहे। उस समय संपर्क स्थापित करनेके लिये अवकाश नहीं होता, इसलिये सतत संपर्क रहना चाहिये। यदि फिसलने और गिरनेके बीच तुम्हारी चैत्य और मानसिक रचना ठीक हो तो तुम्हें खेंखतक न लगेगी, तुम पूरी तरह बच जाओगे। और, इसके विपरीत, अपनी आदतके अनुसार यदि शरीर यह सोचे: "आह! मैं गिर पड़ा," और डर जाय तो जरूर दुर्घटना हो जायगी। जैसा कि मैंने कहा, इस सबमें निमिष मात्रसे भी कम लगता है। तुम्हारे अंदर दुर्घटना रोकनेकी क्षमता है, तुम्हें ठीक अवसरपर चुनाव करनेके लिये एक क्षण दिया जाता है। लेकिन उसका उपयोग कर सकनेके लिये तुम्हारा सतत जाग्रत रहना, पूर्णतया सचेतन रहना जरूरी है। जब तुम ऐसी अवस्थामें हो तो तुम दुर्घटनाको रोक सकते हो और रोगको आनेसे मना कर सकते हो। लेकिन सारी चीज निमिष-भरसे भी कम लेती है और तुम्हें उसमें नहीं चूकना चाहिये।

और इसके बाद एक और भी सुअवसर आता है। तुम गिर तो पड़े और चोट भी आ गयी, पर अभी तुम्हें एक और अवसर मिलता है, अब भी मौका है तुम चुन सको कि हालत ठीक होगी या नहीं, चीज वहींपर रुक जायगी या गभीर रूप लेगी या गंभीरसे अधिक गंभीर हो जायगी। मैं नहीं जानती कि तुमने इस ओर ध्यान दिया है या नहीं, कुछ लोग ऐसे होते हैं जो दुर्घटना होनेका एक भी अवसर हाथसे नहीं जाने देते। जब कभी संभावना हो तो उनके साथ दुर्घटना जरूर होती है। और उनकी दुर्घटना कभी साधारण नहीं होती, वह प्रायः गंभीर या अति गंभीर होती है। लोग कहते हैं: "बेचारा अभागा आदमी! संयोग हमेशा उसके विरुद्ध ही जाता है।" लेकिन ये सब बेहूदा बातें हैं, सब कुछ उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनाकी क्रियापर निर्भर है। मैं बहुत सारे उदाहरण, ज्वलंत उदाहरण दे सकती हूं,। ऐसे लोग हैं जिन्हें दुर्घटनाके कारण मर जाना चाहिये था, पर उनका बाल भी बांका नहीं हुआ; दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जिन्हें कोई जरा-सी चीज हुई, शुरूमें तो कुछ न हुआ पर आगे चलकर हाल बिगड़ता गया, बिगड़ता गया, यहांतक कि जरा-सी चीज घातक बन गयी।

लेकिन तुम्हें यह जानना चाहिये कि यह विचार, सामान्य विचार का काम नहीं है। एकका विचार उतना ही अच्छा हो सकता है जितना दूसरेका। सब कुछ चुनावके उस क्षणपर निर्भर है। कुछ ऐसे लोग हैं जो उचित समयपर उचित प्रतिक्रिया करना जानते हैं। यह सब कुछ स्वभावपर निर्भर है। ऐसे लोगोंकी चेतना जाग्रत और सतर्क रहती है, वे कभी सोये नहीं रहते, वे हमेशा अंदरसे सतर्क और सजग रहते हैं। वे हमेशा ठीक समयपर बिलकुल उचित अवसरपर सहायता मांगते हैं, भागवत शक्तिका ठीक अवसर-पर आवाहन करते हैं, हां, बिलकुल ठीक अवसरपर। और संकट टल जाता है। इसके विपरीत, जब कभी कोई चीज गलत हो जाय, कोई चीज अस्त-व्यस्त हो जाय, सत्ताके अंदर कोई गड़बड़ी पैदा हो जाय, उस समय अगर डर बैठ जाय, तुम हार मान लो, बुरी कल्पनाएं करने लगो, तुम्हारी चेतनामें पराजयका भाग छा जाय तो बस, मामला खतम समझो।

जैसा मैंने कहा, मन निश्चय नहीं करता। आंतरिक मनोवृत्ति सत्ताके संतुलन और सत्य-चेतना ही के द्वारा सत्य प्रतिक्रिया हो सकती है। उसका प्रभाव बहुत जोरदार होता है। तुम्हें पता नहीं है कि यह चीज कितनी शक्तिशाली है। वह एक निमिषके बहुत ही छोटे भागके लिये है जो चमत्कार कर दिखाती है। हां यह जरूरी है कि वह पहलेसे मौजूद हो और जाग्रत अवस्थामें हो तुम इसे अपनी मरजीके मुताबिक नहीं बुला सकते। इसके लिये समय नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम फिर यही कह सकते हो कि यह तो भागवत कृपाका काम है, लेकिन क्या तुम मुझे बता सकोगे कि वह काम कैसे करती है? यह जानना रोचक होगा कि किसके अंदर यथार्थ रूपमें जाग्रत चेतना थी, किसमें श्रद्धा और आंतरिक विश्वास था जिसने सहायताके लिये पुकार की और किसके अंदर वह चीज थी जिसने एक प्रकारसे बिना जाने उत्तर दिया, आनेवाली चीजको प्रत्युत्तर दिया। मानव समझ एक सापेक्ष चीज है जिसकी शक्तिके विभिन्न स्तर होते हैं। साधारणतः वह चीजको विपरीतता और वैषम्य देखकर ही पहचान पाती है। साधारणतः वह निरपेक्ष सत्यको पहचान ही नहीं पाती। उदाहरणके लिये, मेरे पास हजारों पत्र आते हैं जिनमें लोग रोग-मुक्त होनेपर या किसी दुर्घटनासे बचनेपर कृतज्ञता प्रकट करते हैं। मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी ऐसे पत्र भी आये हों जिनमें स्वस्थ और सामान्य स्थितिके लिये, कुछ गड़बड़ न होनेके लिये धन्यवाद दिया गया हो। लोग भागवत क्रिया या भगवान्‌की कृपा तभी देखते हैं जब निराशाका वातावरण हो, कोई संकट आया हुआ हो — अर्थात्, दुर्घटनाका आरंभ हो जाय और वे उसमेंसे बच निकलें। जब दुर्घटना होनेपर वे उसमेंसे बच निकलते हैं तभी उनकी आंखें रक्षा करनेवाली भागवत कृपापर जाती है, दुर्घटनाके बिना वे उसके बारेमें सोचतेतक नहीं। अगर वे यात्रा कर रहे हैं और यात्रा निर्विघ्न समाप्त हो जाय तो उसमें उन्हें भागवत कृपाका कोई हाथ नहीं दिखायी देता। वे उसे एक सामान्य, स्वाभाविक बात मान लेते हैं; लेकिन चूंकि कोई दुर्घटना न हुई इसलिये हो सकता है कि वहां ज्यादा ऊंचे स्तरकी भागवत कृपा काम कर रही हो और व्यक्तिकी चेतना और उच्चतर शक्तिमें, जिसे वह उत्तर देती है, पहलेसे ही गहरा सामंजस्य हो। दुर्घटनाकी संभावना अपने-आपमें अव्यवस्थाका आरंभ है जिसके बारेमें मैंने तुमसे कहा था। लेकिन अगर सामूहिक दुर्घटना हो तो मामला ज्यादा पेचीदा हो जाता है। इसका परिणाम दुर्घटना-ग्रस्त लोगोंके वातावरणपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भर होता है। किसी सामूहिक दुर्घटनाका स्वरूप और विस्ता लोगोंके अंदर इन दो चीजोंके अनुपातपर निर्भर होता है।

मैं इस सिलसिलेमें तुम्हें एक कहानी, कहानीसे मेरा मतलब सच्ची घटना सुनाती हूं। पहले महायुद्धके दिनोंमें एक वायुया चालक था जो अपने साथियोंमें बहुत कुशल माना जाता था। व एक असाधारण उड़ाका था जिसने कई विजयोंमें वीरता दिखलायं थी। उसे कभी कुछ नहीं हुआ था — लेकिन जीवनके अंतिम दिनो में कोई घटना हुई, शायद कोई व्यक्तिगत दुर्घटना, और सहस उसे लगा कि उसे कुछ होनेवाला है, शायद कोई दुर्घटना हो, औ बस मामला समाप्त। वह युद्धसे लौट आया था, पर अभी सेना था। वह फ्रांससे सीधा दक्षिण अफ्रीकातक उड़ना चाहता था वह फ्रांससे मेडागास्करकी ओर चला। जहांतक मुझे याद है व फ्रांससे लौटना चाहता था। उन दिनों मेरे भाई कोंगोके गवर्न थे और जल्दी-से-जल्दी वहां पहुंचना चाहते थे। उन्होंने इस वा यान-चालकके जहाजमें जगह मांगी। यह कोई साधारण उड़ा लेनेवाला जहाज न था। यह उन जहाजोंमेंसे था जिनका उपयो परीक्षणोंके लिये होता है, उनपर यह परीक्षण किया जाता है मशीन क्या-क्या कर सकती है, और चालकोंमें कितना कौशल है कई जानकारोंने मेरे भाईसे कहा कि यह जहाज खतरनाक होता है इसपर यात्रा न करो। मेरे भाईको ख़तरेकी परवाह न थी। रास्ते में कोई गंभीर बात नहीं हुई। हां, सहाराके रेगिस्तानपर उड़ समय कुछ थोड़ी-सी गड़बड़ हुई जिसे तुरंत ठीक कर लिया गया जहाज मेरे भाईको सही-सलामत कोंगो पहुंचा गया। इसके बा जहाज फिर मेडागास्करकी ओर चल पड़ा। अभी यात्रा आधी न हुई थी कि जहाजको दुर्घटनाने आ घेरा और वह चालक मार गया। मैं तुम्हें बतलाती हूं कि इसके पीछे क्या बात थी। य तो ठीक है कि हुआ वही जो होना था, यह तो पूर्व-निश्चित बा थी। मेरे भाईको 'अपने भाग्यपर पूरा भरोसा था! उन्हें विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उनका बाल भी बांका नहीं हो सकता। लेकिन उस दूसरे आदमीकी चेतना शंका और भयसे भरी थी! जो कुछ हुआ वह इन्हीं दो के मिश्रणका परिणाम था। पहली बार कुछ गड़बड़ तो हुई, परंतु कोई गंभीर रूप न ले पायी। लेकिन दूसरी बार जब मशीनके साथ मेरे भाईकी नियति जुड़ी न रही तो सुरक्षाकी चादर हट गयी और उस चालकको अपने दुर्भाग्यका पूरा फल भोगना पड़ा। यह ऐसे ही है जैसे सीज़रके नौकामें होनेसे आंधी-तूफानके होते हुए भी नौका आसानीसे नदी पार कर जाती थी। मैं ऐसी ही एक और कहानी सुना सकती हूं। यह एक जहाजके बारेमें है। दो व्यक्ति थे — पति-पत्नी, वे हवाई-जहाजसे इंडो-चाइना गये। वहां एक दुर्घटना घटी, बहुत गंभीर दुर्घटना। इन दो को छोड़कर बाकी सब मर गये। अब उन्हें फ्रांस लौटना था। इस बार हवाई-जहाजका अनुभव काफी अप्रिय रहा था इसलिये उन्होंने समुद्री-जहाजसे लौटनेका निश्चय किया जो उनकी दृष्टिमें ज्यादा सुरक्षित था। लेकिन जो हुआ वह बिलकुल अप्रत्याशित था। दिन दहाड़े जहाज लाल सागरमें एक समुद्री चट्टानसे टकराकर डूब गया। यह एक ऐसी घटना है जो शायद लाखों बारमें एक बार होती हो। सभी यात्री डूब गये और आश्चर्यकी बात यह है कि ये पति-पत्नी फिर भी बच निकले। इस प्रकारके लोग दुर्भाग्य लिये फिरते हैं, लेकिन अपने लिये नहीं, औरोंके लिये। वे अपने-आप बिना खेंखके बच निकलते हैं।

अगर तुम साधारण दृष्टिसे देखो तो तुम्हें कुछ भी न दिखायी देगा, परंतु चीज मौजूद होगी। अपने संगी-साथीके बारेमें तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिये। कोई अभागा संग तुम्हारे लिये बहुत विनाशकारी हो सकता है। तुम्हारे अंदर आंतरिक ज्ञान, दृष्टि और आवश्यक सामर्थ्य न हो तो दूसरोंके कर्म तुमपर आ सकते हैं। अगर तुम्हें कोई ऐसा आदमी मिले जिसके चारों ओर काला घेरा दिखायी दे तो उससे हर कीमतपर बचनेकी कोशिश करो। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबका परिणाम यह निकलता है कि चीजोंको बस ऊपरसे ही देख की जगह जरा गहराईसे देखना ज्यादा जरूरी है।

(श्रीअरविंदका योग–भाग ७)

औलम्पिक रिंग्ज

आज दुनिया-भरमें सामूहिक रूपसे शारीरिक विकास करनेके लि प्रोत्साहित करने वाली संस्था है 'औलम्पिक'। अपनी सब मान दुर्बलताओंके बावजूद वह बड़ा सराहनीय कार्य कर रही है। औल म्पिकका प्रतीक है पांच छल्ले या 'औलम्पिक रिंग्ज'। देखिये माता उनके बारेमें क्या कहती हैं:

"अधिकारिक रूपसे यह घोषित किया गया है कि औलम्पिक पांच कड़ियां (रिंग्ज) संसारके पांच महाद्वीपोंको सूचित करती है परन्तु उसमें न तो उन कड़ियोंके रंगोंका कोई विशेष अर्थ बता गया है और न प्रत्येक महाद्वीपका अपना-अपना विशिष्ट रंग निश्चि करनेका कोई इरादा दिखायी देता है।

"पर, जो हो, इन रंगोंका अध्ययन करना और यह देखना कि इन रंगोंका क्या अर्थ हो सकता है और ये रंग कोई विशेष सन्दे देते हैं या नहीं, बहुत मजेदार होगा।

"यह अच्छी तरह जानी-मानी बात है कि प्रत्येक रंगका एक अ होता है, परन्तु विभिन्न व्याख्याताओंने उन्हें विभिन्न प्रकारका अ दिया है और अधिकांशमें वे अर्थ एक-दूसरेके विरोधी हैं तथा उ देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि ऐसे अर्थोंका कोई सर्वजन स्वीकृ वर्गीकरण नहीं है। इसका कारण यह है कि साधारणतया इन रं को मनुष्य मनकी दृष्टिसे देखता है अथवा, कम-से-कम व्याख्यात की व्याख्यापर उसके मनका प्रभाव पड़ता है। परन्तु मनुष्य य मनके ऊपर जाकर परेके वास्तविक गुह्य क्षेत्रोंमें प्रवेश करे तो प्रत्ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगका सच्चा अर्थ प्रत्येक आदमीके लिये, जो इस तरह सीधा ग्रहण कर सकेगा, एक ही होगा। यह बात केवल इसी क्षेत्रके लिये नहीं, बल्कि सभी आध्यात्मिक और गुह्य अनुभूतियोंके लिये एकदम सही है। विभिन्न कालों और स्थानोंके योगियोंकी आध्यात्मिक अनुभूतियोंमें हम एक बड़ी ही अद्भुत समानता पाते हैं।

"अतएव, इस दृष्टिकोणसे यदि हम औलम्पिक चिह्नकी कड़ियोंके रंगोंको देखें तो हमें उनका सच्चा गूढ़ अर्थ मिल सकता है और फिर संसारके महाद्वीपोंके साथ उनका संबंध जोड़नेकी बातका भी अध्ययन किया जा सकता है।

"हरा रंग एक विशाल और शान्त मनोभावको और प्रकृतिके साथ सीधे संपर्क और अत्यन्त सामंजस्यपूर्ण संबंधको सूचित करता है। यह उस महाद्वीपका प्रतीक हो सकता है जिसमें खुले हुए विस्तृत मैदान हों और जहां के लोग बिलकुल शुद्ध और सरल हों, किसी मिलावटके कारण नष्ट न हो गये हों और प्रकृति और मिट्टीके बहुत समीप हों।

"लाल भौतिक और स्थूल जगत्का रंग है। इसलिये लाल कड़ी उन लोगोंके लिये प्रयुक्त हो सकती है जिन्होंने भौतिक जगत्पर महान् विजय प्राप्त की हो। यह रंग साथ ही यह भी सूचित करता है कि इस भौतिक सफलताने उन्हें दूसरोंके ऊपर प्रभुत्व प्रदान किया है। जो हो, यह उन लोगोंको सूचित करता है जो अत्यन्त भौतिक और स्थूल वस्तुओंपर ही अधिक जोर देते हैं।

"नीला रंग, दूसरी ओर, एक नए महाद्वीपको सूचित करता है जिसके सामने उसका सारा भविष्य पड़ा है और जिसमें बहुत बड़ी-बड़ी संभावनाएं हैं, परन्तु जो अभी कच्चा और पूरी तरह विकासकी प्रक्रियामें है।

"काला रंग वास्तवमें अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण चुनाव है, क्योंकि यह केवल एक ऐसे महाद्वीपको ही सूचित कर सकता है जो तेजीसे गभीर अन्धकारमें गिर रहा हो — यह रंग पतनोन्मुख जातिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली विस्मृतिके अन्दर गिरनेकी अवस्थाको प्रकट करता है।

"इसके विपरीत, पीला रंग सब रंगोंमें सबसे अधिक गौरवपूर्ण है। वह दिव्य ज्योतिका सुनहला रंग है — उस ज्योतिका जो समस्त वस्तुओंके मूलस्रोत और आदि स्थानसे आती है और जो विकसनशील मनुष्य जातिको, अपने दयालु हाथसे, उसके भागवत मूलकी ओर वापस ले जायगी।

"जिस ढंगसे ये कड़ियां व्यवस्थित हैं, उसका भी एक अर्थ है। काला केन्द्रीय और आधाररूप रंग है और यह, निश्चय ही, आज संसारमें फैली हुई वर्तमान अन्धकारपूर्ण अस्तव्यस्तताका तथा अज्ञानके अन्धकारपूर्ण समुद्रके ऊपर मनुष्य जातिकी नौकाको खेनेके लिये संघर्ष करनेवाले लोगोंकी अन्धताका सच्चा परिचायक है।

"हम आशा करते हैं कि भविष्यमें इस काली कड़ीके स्थानमें एक सफेद कड़ी आ जायेगी जब मानव व्यापारोंका ज्वार पलटा खायेगा, जब अज्ञानकी छाया एक नवीन ज्योतिके, एक नई चेतनाकी उज्ज्वल, श्वेत, स्वयंप्रकाशमान ज्योतिके उदय होनेके कारण दूर हो जायेगी और जब मनुष्य जातिकी नौकाके कर्णधार वे लोग होंगे जिनके पास चकाचौंध करने वाली उज्ज्वलताका सामना करनेके लिये और परिश्रुत भूमिके किनारोंकी ओर जानेका सच्चा मार्ग निश्चित करनेके लिये आंखें होंगी।"

सोसायटी समाचार

माताजीकी जन्म-शताब्दीका महोत्सव पूरी फरवरी चला। रोज शामको सामूहिक ध्यान होता था। आश्रमवासी तथा बाहरसे आनेवाले भक्तोंने भी नृत्य, नाटक तथा संगीतके कार्यक्रम प्रस्तुत किये। 'प्रेम और भक्ति' नामकी एक प्रदर्शनी हुई जिसमें माताजी-की तस्वीरें तथा 'सावित्री' से उद्धरण लिये थे। वहां माताजीकी इस्तेमाल की हुई चीजें, उनके रेखा-चित्र और हस्तलिखित कापियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी थीं। आश्रमके दूसरे विभागोंने भी प्रदर्शनी रखी थी।

१२ फरवरीको सरस्वती पूजा मनायी गयी। माताजीकी तस्वीर-वाला कार्ड सबको बांटा गया। १८ और १९ फरवरी को 'द न्यू एज एसोसिएशन' की विशेष सभा थी जिसमें विद्यार्थियोंने भाग लिया था। विषय था: "माताजीसे मैंने क्या सीखा।" १९ को विशेष रूमाल बांटे गये, उनपर माताजीका प्रतीक था। २० तारीखको शारीरिक शिक्षा विभागके सदस्योंने एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

२१ फरवरीके दिन बेहद भीड़ थी। हजारों दर्शनार्थी आये हुए थे। वातावरण अनोखा था। सुबहके पांच बजेसे लोग माताजी तथा श्रीअरविंद-कक्षके दर्शन करने पंक्ति लगाकर जा रहे थे। हर एकको 'श्रीमां' पुस्तक, माताजी तथा श्रीअरविंदका तस्वीर-वाला फोल्डर और उनके वस्त्रके टुकड़े उपहारमें मिले। दस से साढ़े दसतक ध्यान हुआ। शामको साढ़े छः बजे क्रीड़ांगणमें सलामी हुई। पिछली सांझको माताजीकी जीवनीका विवरण करती एक डोक्युमेंटरी फिल्म दिखायी गयी थी।

२० फरवरीको श्रीअरविंद सोसायटीके कार्यकर्ताओंकी बैठक हुई जहां श्री नवजातने भाषण देते हुए माताजीके ये वचन उद्धृत किये: "हम भौतिक जीवनमें इस दिव्य चेतनाको अभिव्यक्त करना चाहते हैं।"

२१ को ही 'आकाशवाणी' ने श्री बी० डी० जट्टीका भाषण प्रसारित किया। विषय था: "श्रीमां"। उस दिन भारत सरकारने माताजीके चित्रवाली टिकटका भी उद्घाटन किया।

पांडिचेरीमें एक सार्वजनिक सभा हुई जिसके सभापति थे पांडिचेरी म्यूनिसिपल कौंसिलके मेयर श्री ई० गुबैर। श्री एन० सेतुरामने स्मृतिस्वरूप एक पत्रिका निकाली जिसका नाम है: "न्यू टाईम्स औब्जर्वर।"

राष्ट्र समितिने २२ और २३ जनवरीको एक अधिवेशन रखा। विषय था: "माताजीके प्रकाशमें भारतकी जगत्‌में सच्ची भूमिका और किस प्रकार वह उसे पूरी कर सकता है।" फिलहाल राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिके दफ्तरका पता है: श्रीअरविंद केंद्र; आधाचीनी, नई दिल्ली ११००१७। फोन नं० ६५१४१२। उसके सभापति हैं श्री बी० डी० जट्टी; संयोजक श्री नवजात।

बंगलौरमें श्री सुन्दरने अनेक भाषण दिये। श्री एम० पी० पंडित भी वहां गये हुए थे और उन्होंने रवीन्द्र कलाक्षेत्र भवनका उद्घाटन किया।

बड़ौदा जिलेके छोटा उदयपुरने ८ जनवरीको अपनी पहली वर्षगांठ मनायी।

१२ जनवरीको बडसू (उत्तर प्रदेश) में केंद्रकी तीसरी वर्षगांठ मनायी गयी। श्री प्रयाग नारायण त्रिपाठीने श्रीअरविंदकी शिक्षा पर भाषण दिया। इसी तरह गुजरातमें भी १ से ३ जनवरीतक शिविरकी व्यवस्था की गयी और श्री अनिरुद्ध स्मार्त और श्री राजेन्द्र पुराणिकने भाषण दिये। बेल्लारी, डाण्डेली, पुरुलिया, जमशेदपुर, गुलबर्ग इत्यादि स्थानोंने भी माताजीकी जन्म-शताब्दीका महोत्सव मनाया। आशा है कि वे श्रद्धामें बढ़ेंगे, प्रकाशमें बढ़ेंगे और चेतनामें बढ़ेंगे।

घोषणाएं :

'मदर्स लाइट', इस शीर्षककी श्रीअरविंद सोसायटीने एक छोटी पुस्तिका छापी है जिसमें माताजीके वचन इकट्ठे किये गये हैं। ४५ रु. में १०० प्रतियां मिल सकती हैं। ९० रु. में २५० १७० रु. में ५०० प्रतियां और ३१० रु. में १००० प्रतियां। जो लोग ये किताबें खरीदना चाहते हों वे इस पतेपर पत्र भेजें: शब्द पांडिचेरी-६०५००२। रकम पेशगी आनी चाहिये। ६० पैसेकी डाक डाक टिकट भेजकर नमूनेकी प्रतियां मिल सकती हैं।

अपनी सदस्यताको नया करवाते समय कृपया सदस्यता-संख्या और पूरा पता साफ-साफ लिखना न भूलियेगा।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवत्कृपापर पूर्ण विश्वास और निर्भरता बनाये रखना ही, अंतिम विश्लेषणमें, सर्वोत्तम बुद्धिमानी सिद्ध होता है।

— श्रीमाताजी

स्टार आटोमोबाईल सर्विसेज

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर (उ. प्र.)

एवं

भारत आयल कैरियर्स

लक्ष्मणझूला मार्ग

ऋशिकेश–२४९२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Wanted Agents

(Male/Female)

Candidates do this work at own Area.

Salary:

Rs. 300/-, Commission and T. A. extra.

Qualification :

Candidate should be minimum Matric or Higher Secondary.

Age:

18 to 40 yrs.

Send applications only in Hindi or in English. Registered Letter to the following address :

Gwalior Textiles

38-B, Majlis Park,
DELHI-110 033

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"WANTED"

Sales Representatives for reputed unit

engaged in manufacturing

Powerloom/Handloom/Coating Shirtings/Suitings

and Printed fabrics,

on handsome commission —

should apply sharply to

Ellora Fabrics India

Ismail Nagar

MEERUT-250002 (U. P.)

Approved persons will be paid advance TA/DA against paid up business.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-शिविर :

अध्यापकों और शिक्षकों तथा शिक्षाके साथ संबंध रखनेवालोंके लिये २९ मईसे ८ जूनतक पांडिचेरीमें शिक्षा-शिविर रहेगा। उसमें माताजी तथा श्रीअरविंदके प्रकाशमें शिक्षाके बारेमें अध्ययन होगा। इसमें भाग लेनेवालोंके लिये कन्सेशन नहीं है। फिर भी अध्यापकों-को जिला शिक्षा अधिकारीसे प्रमाणपत्र प्राप्त करनेपर सेकेंड क्लास-में पचास प्रतिशतका कन्सेशन मिल सकता है। अतिरिक्त व्योरोंके लिये लिखिये : श्री ए० एच० महादेविया, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२।

हालके प्रकाशन :

लैटर्स टु माई लिटल स्माईल (श्रीअरविंद आश्रममें प्रकाशित) १२.००
द मैसेज आफ द गीता (पुनरावृत्ति) १५.००
द नव हूम वी एडोर एज द मदर (श्रीअरविंद आश्रममें प्रकाशित) ५०.०० कपड़ेकी जिल्द; १२५.०० रेशमी जिल्द।

जन्म-शताव्दीके अवसरपर श्री पूजालालने चार किताबें निकालीं। ये इस पतेपर मिल सकती हैं: श्री पूजालाल, पांडिचेरी--६०५००२।

पुस्तकें हैं :

लोटस ग्रोव (अंग्रेजी) १६.००; **स्तोत्र-संहिता** (संस्कृत) १२.०० **महा-भगवती** (गुजराती) १६.००; **सावित्री सारसंहिता** (हिन्दी) २०.००

प्रदर्शनी सेट :

१९७२ की प्रदर्शनी सेट में ६ नये फोटो जोड़े गये हैं। यह सेट माताजीकी जन्म-शताव्दीके लिये ज्यादा उपयुक्त होगा। १५"×२०" के ८० बड़े कागज हैं और इन्हें गत्तेपर लगाकर आसानीसे एक प्रदर्शनी तैयार हो सकती है। उद्धरण तथा स्पष्टी-करण-टिप्पणियां अंग्रेजी सेटके साथ ही आयेंगी। अगर प्रादेशिक भाषामें अनुवाद चाहिये तो लिखनेपर सोसायटी भेज सकती है।

इस नये सेटका मूल्य १००.०० है। डाकखर्च १२.०० रु.। केंद्रों-को २५ प्रतिशत कमीशन मिलेगा। अपना आर्डर शब्द, पांडिचेरी, ६०५००२ को भेजें। रकम पेशगी आनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with the Registrar of Newspapers for Ind[ia]
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 87[...]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए केंद्र :

१. श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
c/o श्री छोटे लाल किसन मेशराय,
गुजरात सौ मिल, भण्डारा रोड,
वारती-४४१९०५ (महाराष्ट्र)

२. श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
c/o श्री अवधूत दत्त,
बरहारा-७३११२२ खैरासोल, जिला बीरभूम (पं० बं०)

३. श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
c/o श्री चिंता वैंक्टेश्वरलु,
३/१२, श्रीअरविंद घोष मार्ग,
मरकापुर-५२३३१६ जिला प्रकाशम् (आं० प्र०)

४. श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
c/o श्री के० शेखरप्पा,
ए० सी० ऑफिस रोड,
होसपेट-५८३२०१ (कर्नाटक)

५. श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
c/o श्री दिलीप कुमार बरुआ,
यू० डी० ए० इंफॉर्मेशन एंड पब्लिक रिलेशन ऑफिस,
पी० ओ० कोकराफर-७८३३७० जिला गोहालपाड़ा (आसा[म])

६. श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
c/o श्री एम० एन० ब्रह्मंकर,
टाईप २, क्वार्टर नं० ३६/५
पी० ओ० जवाहर नगर-४४१९०६ जिला भण्डारा (महारा[ष्ट्र])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

जून १९७८

वर्ष ८, अंक ११, पूर्णांक ९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

रहस्यवाद और गुह्य विद्या
ध्यान और कुछ प्रश्न
ध्यान और ध्यान
प्रार्थना और ध्यान
निवेदन और समर्पण
शरीरकी समता — अंतरात्माकी समता
व्यक्तिगत प्रयास और इच्छा-शक्ति
यह कैसे अनुभव करें कि हम भगवान्‌के हैं
सचाई, निष्कपटता ही विजय है
देवी-देवताओंकी प्रतिमाएं
और यह फुर्तीली तर्क-बुद्धि
सोसायटी समाचार

कृपया श्रीमातृवाणीके मूल्य-परिवर्तनपर ध्यान दें

श्रीमातृवाणी (हिंदी) पहली अगस्त १९७८ तक रु. २५०.००+५०.०० डाक खर्च

पहली अगस्त १९७८ के बाद — रु. ३२५.०० डाकखर्च सहित

श्रीमातृवाणी (अंग्रेजी) पहली अगस्त १९७८ तक रु. ३६०.००+ रु. ५०.०० डाक खर्च

पहली अगस्त १९७८ के बाद — रु. ४२५.०० डाक खर्च सहित

वार्षिक चंदा ६.०० **आजीवन १००.००**

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्यवाद और गुह्य विद्या

न्यूनाधिक रूपसे रहस्यवाद जिसे तुम भागवत शक्ति समझते हो, उसके साथ भावनामय संबंध है — यह बहुत घनिष्ठ, भावनापूर्ण, तीव्र संबंध है, किसी ऐसी अदृश्य सत्ताके साथ जिसे मनुष्य भगवान् मानता है।

गुह्य विद्या अदृश्य शक्तियोंका ज्ञान और उनके साथ व्यवहार करनेकी शक्ति है। यह एक विज्ञान है, बिलकुल विज्ञान। मैं हमेशा गुह्य विद्याकी तुलना रसायन या भौतिकीसे किया करती हूं, क्योंकि गुह्य ज्ञान भौतिक विज्ञानसे बहुत ज्यादा मिलता-जुलता है। फर्क बस यही है कि भौतिक ज्ञान जड़ पदार्थ और शक्तियोंसे संबंध रखता है जब कि गुह्य विद्या अदृश्य सत्ताओं और उनकी शक्तियों, उनके संयोगों और समुदायोंकी संभावनाओंसे व्यवहार करती है। और जैसे अपने भौतिकी या रसायनके ज्ञानद्वारा तुम जड़-तत्त्वोंपर अधिकार कर सकते हो वैसे ही गुह्य ज्ञानद्वारा तुम सूक्ष्म प्रपंचपर अधिकार पा सकते हो, उसे सक्रिय और प्रभावशाली बना सकते हो। प्रक्रिया भी बिलकुल वैज्ञानिक है। इसे ठीक उसी तरह सीखना होता है जैसे तुम विज्ञान सीखते हो। यह संवेदन या भावनाकी चीज नहीं है, इसमें कोई चीज अस्पष्ट या अनिश्चित नहीं होती। तुम्हें उसी तरह काम करना होता है जैसे प्रयोगशालामें काम किया जाता है। तुम्हें क्रिया, प्रतिक्रियाके नियम सीखने होते हैं और उनका उपयोग करना होता है। हां, यह विद्या सिखाने लायक लोग अधिक नहीं हैं। और यह खतरेसे खाली भी नहीं है। इस क्षेत्रमें भी ऐसे ही खतरनाक विस्फोटक संयोग हो सकते हैं जैसे रासायनिक संयोगोंमें होते हैं।

फिर भी यह एक ऐसी चीज है जो सीखी जा सकती है। लेकिन उसके लिये तुम्हारे अंदर अभिरुचि होनी चाहिये। अगर तुम्हारे

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर सुप्त शक्ति है तो तुम उसे अभ्यासद्वारा विकसित कर सक हो, लेकिन अगर वह नहीं है तो भले पचास वर्षतक मेहनत कि करो, कोई लाभ न होगा। हर एक आदमीमें गुह्य शक्ति नहीं सकती। यह तो ऐसी बात होगी जैसा तुम कहो कि हर आदमी, दुनियाका हर व्यक्ति चित्रकार या गायक हो सकता है, हो सकता है। कुछ लोग हो सकते हैं और कुछ नहीं हो सक साधारणतः यदि तुम्हें किसी विषयमें रस हो, यदि वह केवल कुतू मात्र न हो, तो यह इस बातका लक्षण है कि तुम्हारे अंदर प्रति है। तब तुम कोशिश कर सकते हो। लेकिन जैसा कि मैं कह हूं, यह बहुत अधिक सावधानीके साथ करना चाहिये।

इस तरह उदाहरणके लिये जब कोई अपने शरीरसे बाहर जा है, मैं बहुत बार तुमसे इसकी बात कर चुकी हूं — भले जरा-सा भले केवल मानसिक रूपमें — तो, जो चीज बाहर जाती है, वह चेतनाका अंश होती है जो शरीरकी साधारण क्रियाओं और ग विधिका संचालन करती है। जो रह जाता है वह है स्वप्नचारि भाग जो सहज, अनैच्छिक क्रियाओंको चलाता रहता है — उदाहर के लिये, रक्त-संचार, स्राव आदि और इसी प्रकारकी अन्य स्नायवि या यांत्रिक विचार-गतियां। यह क्षेत्र चेतनाके विचारशील भा अधीन नहीं होता। तुम्हारे चारों तरफके वातावरणमें हमेशा ब सारे छोटे-छोटे अस्तित्व भरे रहते हैं, कुछ तो बहुत ही छोटे, साधारणतः मृत मनुष्योंके विघटित होते हुए अवशेषोंसे बनते हैं। कीटाणुओं जैसे होते हैं, मानों प्राणमय लोकके कीटाणु हों। उन अपने आकार होते हैं, वे दिखायी दे सकते हैं। उनकी अपनी इच्छा शक्ति भी होती है। तुम यह भले न कहो कि वे हमेशा दुष्ट हैं हैं, पर वे हमेशा शरारतसे भरे तो होते ही हैं। वे मनुष्योंको करके मजा लेते हैं। जैसे ही वे देखते हैं कि कोई व्यक्ति भ भांति सुरक्षित नहीं है, वे घुस पड़ते हैं और उसकी यांत्रिक मनोवृ पर कब्जा कर लेते हैं और सब प्रकारकी अप्रिय घटनाओंको ले आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—दुःस्वप्न, भांति-भांतिकी भौतिक गड़बड़ें, तुम्हें लगता है कि तुम्हारा गला घुट रहा है, तुमने अपनी जीभ काट या निगल ली है, या इससे भी बढ़कर गंभीर चीजें। जब तुम शरीरसे बाहर होनेका अनुभव पानेके लिये शरीरसे बाहर जाना चाहो तो तुम्हारे पास कोई-न-कोई होना चाहिये जो न केवल तुम्हारे भौतिक शरीरपर निगाह रखे, बल्कि साथ ही प्राणिक सत्ताओंको घुसकर तुम्हारे स्नायविक चक्रोंपर अधिकार जमा लेनेसे रोके। जैसा कि मैंने कहा, इस अवस्थामें ये चक्र सचेतन बुद्धिके वशमें नहीं रहते। जब तुम शरीरसे बाहर जाओ, न्यूनाधिक रूपसे ठोस या भौतिक रूपमें बाहर जाओ तो खतरा और भी ज्यादा होता है, क्योंकि तब शरीरके साथ तुम्हारा संबंध मानों एक बहुत ही कमजोर प्रकाशके धागेके द्वारा रहता है। संपर्कके इस धागेकी रक्षा करनी चाहिये। विरोधी इसपर आक्रमण कर सकते हैं और इस धागेको काट सकते हैं। एक बार यह कट जाय तो व्यक्ति शरीरमें वापिस नहीं आ सकता और इसका अर्थ है मृत्यु।

इस सारेका मतलब यही है कि गुह्य विद्या कोई हंसी-मजाक या खेल नहीं है। तुम केवल दिल बहलानेके लिये इसे नहीं अपना सकते। इसे इसकी ठीक पद्धतिके अनुसार, उचित परिस्थितियोंमें, पूरी सावधानीके साथ करना चाहिये। एक चीज जो सबसे बढ़कर, अनिवार्य रूपसे आवश्यक है वह है, मैं फिर कहती हूं, भयका न होना। अगर तुम अपने सपनोंमें भयानक दृश्य देखो और डर जाओ तो यह ज्यादा अच्छा है कि गुह्य विद्याको हाथ मत लगाओ। इसके विपरीत, यदि तुम अधिक-से-अधिक भयंकर शरारतोंके बावजूद, उन्हें केवल मनोरंजन मानकर, पूरी तरह शांत रह सको, अगर तुम इस प्रकारकी परिस्थितियोंको सुरक्षित रहते हुए शांतिसे सफलतापूर्वक हाथमें ले सको तो इससे पता लगेगा कि तुम्हारे अंदर कुछ क्षमता है। और तुम गंभीरताके साथ कोशिश कर सकते हो। ऐसे लोग भी होते हैं जो नींदमें सच्चे योद्धा होते हैं। अगर कोई दुश्मन मिल जाय तो वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका सामना कर सकते हैं, वे केवल अपना बचाव ही नहीं क सकते, उसपर आक्रमण करके उसे जीत भी सकते हैं।

ध्यान और कुछ प्रश्न

मैं ध्यान क्यों नहीं कर पाता ?

क्योंकि तुमने सीखा नहीं। अचानक सनक सवार होती है औ तुम कहते हो: "अब मैं बैठ जाऊंगा और ध्यान करूंगा।" लेकि पद्मासन लगाकर आंखें बंद कर लेना ही ध्यान करना नहीं है। तुम् सीखना चाहिये कि ध्यान कैसे किया जाय, ठीक उसी तरह सीख होगा जैसे तुम गणित करना या पियानो बजाना सीखते हो। स देशोंमें, सभी कालोंमें गुरुओंने ध्यानके नियमित अभ्यास बतलाये है बहुत प्रकारके आदेश हैं, जैसे मनको शांत रखो, नीरव रहो, कु मत सोचो, अपने सब विचारोंको इकट्ठा करके केंद्रित करो आदि आदि। तुम्हें बैठना, खड़ा होना, चलना, खाना, सब कुछ सिखा गया है। तुम्हें इनके तरीके याद नहीं रहे क्योंकि ये सब चीजें त सिखायी गयी थीं जब तुम बहुत छोटे थे। उसी तरह अगर ब पनमें ही ध्यान करना सिखाया गया होता तो आज तुम्हें वह कठि न लगता, लेकिन दुर्भाग्यवश वह नहीं सिखाया गया। तुम्हें उ तरहकी चीजें नहीं सिखायी जातीं, वह तो क्या, तुम्हें यह भी न सिखाया जाता कि सोया कैसे जाय। तुम सोचते हो कि बस बिस्त पर जाकर किसी तरह पड़ रहना ही सोना है। नहीं, बिलकुल नहीं तुम्हें सोना भी उसी तरह सीखना चाहिये जैसे चलना या खा सीखते हो। तुम बहुत-सी चीजें नहीं सीखते, वे तुम्हें सिखायी न जातीं। जैसे-जैसे तुम वर्षोंमें बड़े हो जाते हो, धीरे-धीरे, कष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ, अप्रिय अनुभवोंके द्वारा, भूलें करते हुए, अंतमें तुम कुछ मौलिक बातें जान पाते हो। और जब तुम बूढ़े हो जाते हो, बाल पक जाते हैं तब तुम देखते हो कि तुम कुछ-कुछ सीखना शुरू कर रहे हो, लेकिन तब बहुत देर हो चुकी होती है। इसकी जगह अगर तुम्हारे मां-बाप या तुम्हारे अभिभावक तुम्हें यह सिखानेका कष्ट करते कि तुम्हें जो कुछ करना है उसे अच्छी तरह करो — अच्छी तरह काम करो, अच्छी तरह सोचो, अच्छी तरह, ठीक ढंगसे अनुभव करो — तो तुम सब भूलोंसे बच सकते थे जिन्हें तुम सारे जीवन करते आये हो। तुम्हें आश्चर्य होता है जब तुम बीमार पड़ जाते हो, थक जाते हो या एकदम कमजोर पड़ जाते हो। क्योंकि तुम कुछ भी नहीं जानते। कुछ सीखनेमें बरसों लग जाते हैं, बिलकुल मामूली चीजें, जैसे साफ रहना सीखनेमें ही बरसों लग जाते हैं।

जैसे रहना चाहिये उस तरह, ठीक तरह रहना बहुत कठिन है। इसके लिये अध्ययनकी जरूरत होती है, इसके लिये अभ्यासकी जरूरत होती है। केवल इतना ही करनेकी कोशिश करो कि शरीर स्वस्थ रहे, मन स्थिर रहे और हृदय सद्भावनासे भरा रहे — ये अच्छे जीवनके अनिवार्य तत्त्वोंमेंसे हैं, तुम देखोगे कि यह आसान नहीं है।

क्या पढ़ाई-लिखाईके सिवा कोई और काम करना भी हमारे लिये जरूरी है ?

यह तुम्हारे ऊपर, तुम्हारे लक्ष्यपर निर्भर है। अगर तुम साधना करना चाहते हो तो स्वभावतः तुम्हें कम-से-कम कुछ समय तो किसी ऐसे कामके लिये देना ही चाहिये जो स्वार्थपूर्ण न हो, अर्थात्, जो स्वयं अपने लिये न किया गया हो। पढ़ाई-लिखाई बहुत अच्छी है, बहुत जरूरी है, बल्कि अनिवार्य है। यह उन चीजोंमेंसे है जिनका मैंने अभी उल्लेख किया था जिन्हें तुम्हें अपनी छोटी अवस्थामें सीखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। बड़े होनेपर यह कठिन हो जाती है। लेकिन एक ऐसी अवस्था हो सकती है जब तुमने आधारभूत अध्ययन कर लिया है और तुम साधना करना चाहते हो। तब तुम्हें कोई ऐसी चीज लेनी चाहिये जो बिलकुल निजी न हो। तुम्हें कुछ निःस्वार्थ काम करना चाहिये जिसका स्वयं तुम्हारे साथ संबंध न हो। अगर तुम अपने साथ ही लगे रहो तो तुम अपने-आपको एक प्रकारके कोषमें बन्द कर लेते हो और वैश्व शक्तियोंकी ओर खुले नहीं रहते। एक निःस्वार्थ क्रिया, एक निःस्वार्थ गति तुम्हारे छोटेसे अपनेपनके सिवा किसी औरके प्रति दरवाजा खोल देती है। सामान्यतः तुम अपने ही कोषमें बन्द रहते हो और तुम्हें दूसरे कोषोंके अस्तित्वका तभी पता लगता है जब तुम उनसे टकराते हो। लेकिन उस शक्तिके बारेमें अवगत होना जो सबमें फैली हुई है, वस्तुओं और सत्ताओंकी पारस्परिक निर्भरताके बारेमें अवगत होना, यह एक और ही चीज है। यही साधनाकी अनिवार्य नींव है।

लेकिन क्या सचमुच भगवान्‌के लिये अध्ययन नहीं किया जा सकता, अपने-आपको भगवान्‌के कामके योग्य बनानेके लिये?

हो सकता है। लेकिन उसके लिये बिलकुल ही अलग मनोवृत्ति की जरूरत है। तुम्हें एक और ही भावके साथ अध्ययन करना चाहिये। सबसे पहले ऐसा कोई विषय न होगा जो तुम्हें खुश या नाखुश करता हो, न कोई ऐसी कक्षा होनी चाहिये जो तुम्हें ऊबा देती हो और न ऐसी जो तुम्हारा दिल बहलाव करती हो। कोई कठिन पाठ न होंगे और कोई सरल पाठ न होंगे। न कोई प्रिय अध्यापक होगा और न कोई अप्रिय अध्यापक। इस प्रकारकी सब पसंदें और नापसंदें, पक्षपात और वरीयताके भाव गायब हो जाते हैं। तुम ऐसी स्थितिमें होते हो जब तुम जिस किसी चीजके संपर्कमें आते हो उसीसे कुछ-न-कुछ सीख सकते हो। हर चीज एक नयी अनुभूति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नये ज्ञानका अवसर होती है, हर चीज तुम्हें भगवान्के कामके लिये तैयार करती है, हर चीज रुचिकर होती है। अगर तुम उस भावसे अध्ययन करो तो ठीक है।

यह कैसी बात है कि आप इतना धन नष्ट करने देती हैं, जिन लोगोंको ऐसे काम सौंपे गये हैं वे अपनी ही मरजीके मुताबिक खुले हाथों खर्च करते हैं ?

धन ही एकमात्र ऐसी चीज नहीं है जिसका अपव्यय होता हो। शक्ति, चेतनाका धनकी अपेक्षा हजारगुना, अनंतगुना अधिक अपव्यय होता है। ऐसा एक क्षण भी नहीं जाता जब अपव्यय न होता हो। एक आदत है, मैं आशा करती हूं यह अवचेतन है, कि अधिक-से-अधिक शक्ति खींची जाय, जितनी बन पड़े उतनी चेतना खींची जाय और फिर इनका उपयोग अपने निजी संतोषके लिये किया जाय। यह ऐसी चीज है जो हर मिनट होती रहती है। अगर यह सारी शक्ति, यह सारी चेतना जो सारे समय तुम्हारे ऊपर उंडेली जा रही है इसका उद्देश्यके लिये उपयोग होता हो, अर्थात्, भगवान्के कामके लिये, उनके कामकी तैयारीके लिये उपयोग होता तो अभीतक हम जहां पहुंचे हैं उससे बहुत आगे निकल गये होते। लेकिन दुर्भाग्यवश हर एक, अगर सचेतन रूपसे नहीं तो कम-से-कम सहज वृत्तिसे, भगवान्की देनको अधिक-से-अधिक खींचता रहता है और फिर स्वार्थमय उद्देश्यके लिये उसका उपयोग करता है।

इसके बारेमें सोचता ही कौन है कि यह शक्ति जो तुम्हारे सारे धनकी अपेक्षा कहीं अधिक महान्, कहीं अधिक मूल्यवान् है, यह शक्ति मौजूद है और सचेतन रूपसे तुम्हें खुले हाथों दी जा रही है, अनंत धैर्य और अध्यवसायके साथ हमेशा दी जाती है, जिसका एकमात्र उद्देश्य है भागवत कार्यको पूरा करना — मैं पूछती हूं, कौन सोचता है कि उसका अपव्यय हो रहा है ? कौन याद करता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति करना हर एकका परम पवित्र कर्तव्य है, अपने-आपको इस तरह तैयार करना कि तुम ज्यादा अच्छी तरह समझ सको, ज्यादा अच्छी तरह जी सको। चूंकि तुम भागवत चेतना और भागवत शक्तिके बलपर जीते हो इसलिये तुम उनके आधारपर जी सकते हो, उन्हें अपने निजी अर्थके लिये खर्च कर सकते हो। लोग कुछ हजार रुपयोंका अपव्यय देखकर चौंक पड़ते हैं, लेकिन वे यह नहीं देखते कि चेतना और शक्तिका पूरा-पूरा सैलाब गलत रास्तेपर मोड़ा जा रहा है।

अगर कोई धरतीपर भगवान्का काम करना चाहता है तो उसे टनों धीरज और अध्यवसायके साथ आना चाहिये, उसे अनंत कालतक प्रतीक्षा करनेके लिये तैयार रहना चाहिये जबतक हर एकमें चेतना सच्ची ईमानदारीकी चेतना न जाग जाय।

ध्यान और ध्यान

कुछ लोग जब ध्यानके लिये बैठते हैं तो एक विलक्षण गतिमें जा पहुंचते हैं और उन्हें इसपर गर्व होता है। परंतु सामान्यतः वे अपने ध्यानमें अपने विचारोंको बेनकेल छोड़ देते हैं। उनके सिरमें एक तरहका बहुमूर्तिदर्शी यंत्र काम करता रहता है। कुछ ऐसे हैं जो थोड़ी देरतक बिना विचारे रह सकते हैं, लेकिन अगर उन्हें किसी कारणवश उस स्थितिमेंसे बाहर निकाला जाय तो वे बौखला उठते हैं और कहते हैं कि तुमने उनका ऐसा अच्छा ध्यान नष्ट कर दिया। वे सारी दुनियाके विरुद्ध कुढ़ते और बरसते रहते हैं। लेकिन फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो ध्यान करना जानते हैं। वे भगवान्के साथ एक प्रकारका ऐक्य पाते हैं। निश्चय ही यह बहुत अच्छी बात है। कुछ और लोग ऐसे होते हैं जो, एक हदतक, कभी-कभी केंद्रीय बिन्दुतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारोंकी पंक्तिको ले जाते हैं। यह भी बहुत अच्छी बात है। लेकिन अधिकतर लोग आधी नींदकी हालतमें, यानी, बहुत तामसिक अवस्थामें चले जाते हैं। वे उस अवस्थामें घंटों बने रह सकते हैं, कोई भी चीज तमससे ज्यादा टिकाऊ नहीं हो सकती। जब वे उस अवस्थामेंसे बाहर आते हैं तो सोचते हैं कि उन्होंने कोई बहुत बड़ा काम कर लिया है, लेकिन सचमुच वे केवल निश्चेतनामें ही जा गिरे थे।

हां, कुछ लोग ध्यान करना जानते हैं। लेकिन मान लो, तुम भागवत चेतनामें प्रवेश करना जानते हो, तो उस अनुभूतिका तुम्हारे बाहरी जीवनपर कुछ तो असर दिखायी देना चाहिये — स्वभावतः वह व्यक्ति-व्यक्तिमें अलग होगा। कुछ लोग अपने-आपको स्पष्ट रूपसे दो भागोंमें बांट लेते हैं। जैसा कि मैंने कहा, जब ये लोग ध्यानमें प्रवेश करते हैं तो उन्हें अच्छी, बहुत अच्छी अनुभूतियां होती हैं, या कम-से-कम वे ऐसा मानते हैं; लेकिन जब वे उसमेंसे बाहर आते हैं और काम-काजमें लगते हैं तो वे बिलकुल साधारण आदमी बन जाते हैं जिनकी प्रतिक्रियाएं एकदम साधारण होती हैं, जो सब प्रकारकी ऐसी चीजें करते हैं जो नहीं की जानी चाहिये। वे केवल अपने बारेमें सोचते हैं, अपने ही जीवनकी व्यवस्था करनेमें लगे रहते हैं, दूसरोंका रत्ती-भर ख्याल नहीं करते, यह भी नहीं सोचते कि वे दुनियाके लिये उपयोगी हो सकते हैं या नहीं। फिर भी ध्यानमें वे किसी गहरी और ऊंची चेतना और सद्वस्तुके संपर्कमें आते हैं। यही कारण है कि जिन लोगोंको प्रकृतिका परिवर्तन बहुत कठिन लगा उन्होंने यह घोषणा कर दी कि इसे बदलना असंभव है। उन्होंने यह सलाह दी कि करने लायक काम बस यही है कि दुनियाको छोड़कर यहांसे भाग निकला जाय। स्वभावतः यदि सभी निकल भागें तो फिर कोई संसार ही न बचेगा, लेकिन सौभाग्यवश या दुर्भाग्यवश दुनियाका रहना न रहना लोगोंकी मरजीपर आश्रित नहीं है। उनका इसकी रचनामें कोई हाथ न था और वे यह नहीं जानते कि यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहांसे कैसे आ गयी। चूंकि कुछ लोग "भव सागर" से बच नि हैं, क्या इतनेसे ही पृथ्वीका अस्तित्व समाप्त हो जायगा? शा उनके लिये हो भी जाय, परंतु दूसरोंके लिये? यद्यपि मुझे इस बा पर भी पूरा विश्वास नहीं है कि इस तरह भागनेवाले अपने-आप छुटकारा पानेमें सफल होते हैं या नहीं। फिर भी, मैं इस बात विश्वास नहीं करती कि तुम केवल ध्यानके द्वारा अपने-आपको ब सकते हो। लेकिन जब कोई काम तुम्हारे सामने है और तुम अपनी ओरसे अच्छे-से-अच्छी तरह करते हो और उसे करते हुए बातका ध्यान रखते हो कि तुम काम करते समय भगवान्‌को न जाओ, तुम अपने-आपको उनके सुपुर्द कर दो ताकि वे तुम्हारी सत्ता को बदल सकें, तुम्हारी प्रतिक्रियाओंको सुन्दर और प्रकाशयुक्त चीज़ बदल दें, तब निश्चय ही भगवान् तुम्हारा रूपांतर कर देंगे।

मैंने कभी नहीं देखा कि जो लोग सब कुछ छोड़छाड़कर ध्यानमें बैठे हों उन्होंने कभी कोई प्रगति की हो, हर हालतमें उन प्रगति बहुत ही कम होती है। इसके विपरीत, मैंने देखा है जो लोग संसारमें रूपांतरके कामके लिये उत्साहसे भरे होते हैं वे कामके लिये अपने-आपको, बिना कुछ बचाये, पूरी तरह दे देते उन्हें निजी मुक्तिका ख्यालतक नहीं होता। हां, मैंने ऐसे लोगों अद्‌भुत प्रगति करते देखा है। इसके विपरीत, मैंने बहुतोंको मठों रहते देखा है, उनके बारेमें कुछ कहना बेकार है। तुम दुनिया भागकर उसका उद्धार नहीं कर सकते। धीरजके साथ, डट काम करनेसे ही तुम परिवर्तन ला सकते हो।

तो क्या इसका यह मतलब है कि ध्यानका कोई लाभ ही नहीं

जितना ध्यान तुम्हारे लिये जरूरी है उतना अपने-आप आ जायगा जब वह आये और तुम्हें पकड़े तो उसका विरोध मत करो। तब जाओ और अपने अंदर पैठो, अंतर्मुख होकर आवश्यक आंतरिक प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो। जब वह हो जाय तो बाहर आ जाओ और अपना काम करो। लेकिन सबसे बढ़कर यह कि गर्व मत करो। जो लोग यह समझते हैं कि वे बहुत ही विशेष या अपवाद-रूप व्यक्ति हैं वे अपनी सारी प्रगतिके आगे एक रुकावट खड़ी कर लेते हैं। मुझे विनयपर बहुत जोर देना चाहिये। लोगोंने इसके बारेमें बहुत कुछ लिखा है, लेकिन समझे बिना ही। विनयी बनो, पर ठीक तरहसे। अगर तुम मिथ्याभिमान-रूपी इस जंगली घासको खींचकर बाहर कर सको। ओह! यह कितना कठिन है, कितना कठिन है! तुम कहीं-न-कहीं अंदरके किसी कोनेमें, गुप्त रूपसे फूले बिना, गुप्त आत्म-संतोष पाये बिना कोई छोटे-से-छोटा काम भी नहीं कर सकते। अहंकारकी इस चट्टानको तोड़नेके लिये तुम्हें उसपर हथौड़ियां बरसानी होंगी। इस विषैली घासको निकालनेके लिये, नष्ट करनेके लिये तुम्हें सारे जीवन काम करना होगा। तुम सोचते हो कि तुमने बाजी मार ली और अंतमें इस बाजी मारनेके विचारसे ही खूब तृप्त हो उठते हो।

प्रार्थना और ध्यान

प्रार्थनाएं बहुत प्रकारकी होती हैं। एक बाहरी और भौतिक होती है, यानी, केवल शब्द जिन्हें रट लिया जाता है और फिर यंत्र-वत् दोहराया जाता है। इस तरहकी प्रार्थनाका कोई विशेष मूल्य नहीं। फिर भी इसका एक लाभ तो होता ही है, यह तुम्हें अचंचल बना देती है। अगर तुम कुछ समयतक कुछ शब्दों या ध्वनियोंको लगातार रटते जाओ तो अंतमें एक स्थिरता तो आ ही जाती है। एक दूसरी प्रार्थना है—किसी इच्छाकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति, तुम कोई वस्तु-विशेष चाहते हो और स्पष्ट रूपसे उसकी मांग करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम किसी वस्तु या परिस्थितिके लिये प्रार्थना कर सकते हो। अपने लिये या किसी औरके लिये प्रार्थना कर सकते हो। एक तरहकी प्रार्थना है जो लगभग अभीप्साकी सीमातक जा पहुंचती और दोनों मिल जाती हैं, यह एक जीवित अनुभूतिकी रचना है है, यह तुम्हारी सत्ताकी गहराइयोंमेंसे उछलती है। यह किसी चीजकी अभिव्यक्ति होती है जो अंदर रह चुकी है। यह अनु लिये कृतज्ञता प्रकाशन करती है, उसे जारी रखनेके लिये या उ व्याख्याके लिये निवेदन करती है। तब यह, जैसा कि मैंने क लगभग अभीप्सा होती है। लेकिन अभीप्साके लिये जरूरी नहीं कि वह अपने-आपको शब्दोंमें प्रकट करे, अगर वह शब्दोंका उप करती भी है तो वह एक प्रकारके आवाहनके रूपमें। उदाहर लिये, तुमने अपने अंदर कोई ऐसी चीज पायी जो तुम्हारे आद साथ मेल नहीं खाती, वह अंधकार, अज्ञान या फिर दुर्भावनाकी होती है। तुम चाहते हो कि वह बदल जाय। तुम अपनी बात इतने शब्दोंमें प्रकट नहीं करते, लेकिन वह तुम्हारे अंदर एक ज्वा की तरह उठती है जो स्वयं अनुभूतिको ही अर्पित करती है चाहती है कि वह बढ़े, विस्तृत हो, ज्यादा स्पष्ट और यथार्थ हो यह तो ठीक है कि ये सब बातें शब्दोंमें भी कही जा सकती हैं, तुम अनुभूतिको वापिस ला सको और अनुभूतिको लिख लो। लेकि अनुभूति, यह अभीप्सा, जैसा कि मैंने कहा, एक उठती हुई ज्वाला तरह है और उसके अंदर वह चीज मौजूद होती है जिसके लि वह मांग करती है। मैंने "मांग करती है" कहा, लेकिन यह मांग या कामनाकी बिलकुल नहीं होती। यह सचमुच ज्वाला है है, पवित्र करनेवाले संकल्पकी ज्वाला जो अपने केंद्रमें उस चीज वहन करती है जिसे वह चरितार्थ करना चाहती है। अपने अं किसी दोषकी खोज तुम्हें प्रेरित करती है कि तुम इसे एक प्रगति अवसर बना लो, अधिक संयम और भगवान्के और अधिक नि जानेका अवसर बना लो। वह खोज तुम्हारे लिये उस भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक द्वार खोल देती है जिसे तुम ज्यादा स्पष्ट, ज्यादा सत्य, ज्यादा तीव्र रूपमें चाहते हो। ये सब चीजें तुम्हारे अंदर सान्द्र शक्तिके रूपमें इकट्ठी होती हैं और फिर आरोहणकी शक्ति बनकर ऊपरकी ओर उठती हैं। उसे शब्दोंमें व्यक्त करनेकी जरूरत नहीं होती। वह वास्तवमें ऊपर लपकनेवाली ज्वाला है। सच्ची अभीप्सा ऐसी होती है। प्रार्थना साधारणत: बहुत ज्यादा बाहरी होती है, वह किसी यथार्थ वस्तुके लिये होती है। वह हमेशा सूत्रबद्ध होती है क्योंकि शब्दोंमें बंधनेपर ही वह प्रार्थना बनती है। तुम्हारे अंदर एक अभीप्सा हो सकती है और तुम उसे प्रार्थनाके रूपमें लिपिबद्ध कर सकते हो, लेकिन अपने-आपमें अभीप्सा प्रार्थनासे परेकी चीज है। वह बहुत ज्यादा घनिष्ठ, बहुत ज्यादा आत्म-विस्मृतिपूर्ण होती है। वह उसी वस्तुमें रहती है जो वह करना या होना चाहती है, वह उसके साथ लगभग एक हो जाती है। प्रार्थना बहुत उच्च कोटिकी हो सकती है। तुम्हारी अमुक कामनाको पूरा करनेकी विनती होनेकी जगह भगवान्ने तुम्हारे लिये जो कुछ दिया है और जो कर रहे हैं उसके लिये कृतज्ञता प्रकाशन हो सकता है। हो सकता है कि तुम अपने निजी, अहंकार-भरे स्वार्थोंमें हीं फंसे रहो, बल्कि भगवान्से यह मांगो कि तुम्हारे अंदर और संसारमें उन्हींकी इच्छाके अनुसार काम हो। यह तुम्हें अभीप्साकी सीमापर ले आती है क्योंकि अभीप्सा-की भी बहुत-सी अवस्थाएं होती हैं और यह बहुत प्रकारसे अभिव्यक्त होती है। परंतु अभीप्साका हृदय चैत्य सत्तामें होता है। वहां वह अधिक-से-अधिक पवित्र रूपमें होती है क्योंकि वही उसका मूल और स्रोत है। प्रार्थना दूसरे, निचले या गौण स्तरोंसे उठती है। यानी, भौतिक और दैहिक प्रार्थनाएं भी होती हैं जो भौतिक या दैहिक चीजोंकी मांग करती हैं। फिर प्राणिक प्रार्थनाएं और मानसिक प्रार्थनाएं होती हैं, चैत्य प्रार्थनाएं और आध्यात्मिक प्रार्थनाएं भी होती हैं। ,हर एककी अपनी विशेषता और अपना मूल्य होता है। मैं फिर कहती हूं कि एक विशेष प्रकार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रार्थना सहज-स्वाभाविक और निःस्वार्थ होती है। वह मानो भगवान्से यह याचना या उनका आवाहन होती है और वह भी साधारणतः अपने लिये नहीं होती, कभी-कभी औरोंकी ओरसे भगवान्से निवेदन होती है। ऐसी प्रार्थना बहुत शक्तिशाली होती है। मैंने ऐसे बहुत-से उदाहरण देखे हैं जहां इस प्रकारकी प्रार्थना तुरंत पूर्ण फलदायी हुई है। इसका अर्थ है बड़ी श्रद्धा, बहुत भक्तिपूर्ण उत्साह, बहुत सचाई और निष्कपटता और हृदयकी सरलता, कोई ऐसी चीज जो हिसाब नहीं करती, जो सौदा या लेन-देन नहीं करती, जो पानेके लिये देनेके विचारसे ही की जाती है। परंतु मैं ज्यादा विशेष प्रकारकी प्रार्थनाकी बात कह रही हूं। इसका भी अस्तित्व है, वह एक प्रकारका कृतज्ञता-प्रकाशन, भजन या मंत्र है।

हम कह सकते हैं कि प्रार्थना हमेशा शब्दोंसे बनती है। शब्दोंका मूल्य हमेशा अलग-अलग होता है। यह उस व्यक्तिपर निर्भर होता है जो उसे बोलता है या उस अवस्थापर जहांसे वह आता है। लेकिन प्रार्थना हमेशा सूत्रबद्ध होती है, लेकिन तुम सूत्र बनाये बिना भी अभीप्सा कर सकते हो और फिर प्रार्थनाके लिये एक ऐसे व्यक्तिकी जरूरत होती है जिससे प्रार्थना की जाय। लोगोंका एक वर्ग ऐसा है जिनकी दृष्टिमें संसार ऐसा बना है कि उसमें भगवान्के लिये जगह ही नहीं है — उदाहरणके लिये, फरासीसी वैज्ञानिक लाप्लास। ऐसे लोग यह स्वीकार करना पसंद नहीं करेंगे कि कोई उनसे श्रेष्ठ है जिससे वे याचना कर सकें या नजर उठाकर जिसकी ओर देख सकें और सहायता या मार्ग-दर्शनकी मांग कर सकें। ऐसोंके लिये प्रार्थना का सवाल ही नहीं उठता। लेकिन ऐसे लोग भी प्रार्थना भले न करें, अभीप्सा कर सकते हैं, वे भगवान्पर भले विश्वास न करें, पर उदाहरणके लिये, प्रगतिपर विश्वास करते हैं। वे जगत्को प्रगतिशील गतिके रूपमें मान सकते हैं जो अधिकाधिक अच्छी होती जा रही है, ज्यादा-ज्यादा ऊंची उठ रही है और सदा अधिक-से-अधिक उदात्त उपलब्धिकी ओर बढ़ रही है। वे इस तरहकी प्रगतिकी ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हैं, उसके लिये इच्छा-शक्ति लगा सकते हैं, अभीप्सा कर सकते हैं। उन्हें भगवान्की ओर देखनेकी जरूरत नहीं। अभीप्साके लिये श्रद्धाकी जरूरत है। इसमें कोई शक नहीं, लेकिन भागवत सत्तामें श्रद्धा रखना जरूरी नहीं है। लेकिन प्रार्थना हमेशा किसी व्यक्तिसे की जाती है, एक ऐसे व्यक्तिसे जो सुनता है और स्वीकार करता है। इन दोनोंमें यही सबसे बड़ा भेद है। बुद्धिवादी अभीप्साको स्वीकार करते हैं, लेकिन वे प्रार्थनाको जरा घटिया चीज मानते हैं जो कम बुद्धिवालोंके लिये ठीक है। रहस्यवादी कहते हैं, अभीप्सा बिलकुल ठीक है, लेकिन अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी अभीप्साकी सुनवायी हो, उसे पूरा किया जाय तो तुम्हें प्रार्थना भी करनी चाहिये। तुम्हें यह भी जानना चाहिये कि प्रार्थना कैसे की जाय और किससे की जाय — भगवान्के सिवाय प्रार्थना किससे की जा सकती है ? अभीप्साके लिये यह जरूरी नहीं है कि वह किसी व्यक्तिके प्रति हो, वह चेतनाकी किसी स्थितिके लिये, ज्ञान या उपलब्धिके लिये हो सकती है। प्रार्थना व्यक्तिकी ओरसे व्यक्तिसे की जाती है, एक ऐसी चीजके लिये की जाती है जिसे बस वही दे सकता है।

निवेदन और समर्पण

ये दोनों चीजें एक नहीं हैं। कह सकते हैं कि ये एक ही चीजके दो पहलू हैं। वे चेतनाके एक ही स्तरकी चीजें नहीं हैं, उदाहरणके लिये, तुमने निश्चय कर लिया है कि अपना जीवन भगवान्को निवेदित करोगे। अचानक कोई बहुत ही अप्रिय घटना घटती है जिसकी संभावना न थी। तुम्हारे अंदर पहली गति होती है प्रतिक्रिया और विरोधकी। तुम आत्म-निवेदन कर चुके हो, फिर कोई चीज उलट-पलट करती है। लेकिन अगर तुम अपने आत्म-निवेदनमें स्थिर रहो तो तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध करनेवाले भागको अपने हाथमें लेकर भगवान्‌के आगे रखो और कहोगे : "तुम्हारी इच्छा पूरी हो।" इसके विपरीत, समर्पणमें सहज-स्वाभाविक, विरोधहीन चिपकाव रहता है, निष्ठा रहती है। अगर कोई अप्रिय या तुम्हारी आशाके विपरीत चीज भी हो जाय तो तुम समान रूपसे शांत और स्थिर रहते हो।

शुरूमें तुम एक सामान्य समर्पण करते हो, मानों सिद्धांत-रूपसे अपने-आपको दे देते हो। यह तुम्हारी आंतरिक सत्ता है। उसे धीरे-धीरे बाहरी सत्तामें लाना चाहिये, जीवनके सभी ब्योरोंमें प्रकट करना चाहिये। इसी तरह कठिनाइयां पैदा होती हैं। तुम कहते हो कि तुमने भगवान्‌के प्रति आत्म-निवेदन कर दिया है, तुमने उसके लिये काफी मेहनत की है, बहुत समय लगाया है, बहुत संकल्प किया है, लेकिन अचानक तुम देखते हो तुम्हारे सारे हिसाबको उलट-पलट कर देनेवाली कोई चीज होती है, कोई और ही चीज होती है, तुम किसी चीजमें सफल नहीं हो पाये। अब एक विद्रोह होता है, पीछे मुड़ जाता है, आदि। लेकिन ऐसे समय तुम्हें जो करना चाहिये वह यह है कि अपने आत्म-निवेदनको फिरसे दोहराओ, अपनी निष्ठाको फिरसे प्रतिष्ठित करो। जब निष्ठा पूर्ण हो जाय, जब तुम सहज रूपसे हर चीजमें भगवान्‌की इच्छाको स्वीकार कर सको तब आता है समर्पण, पूर्ण आज्ञाकारिता जो स्थिर और अचंचल होती है, हर हालतमें शांत रहती है, चाहे चीजें इस तरह हों या उस तरह, वह शांत रहती है।

तुम जानना चाहते हो कि क्या तुम अजानेमें भूल नहीं कर सकते, न चाहते हुए भी कोई गलत चीज नहीं कर सकते? यह बहुत संभव नहीं है। अगर तुम पूरी तरह सच्चे, निष्कपट हो तो तुम हमेशा सचेतन रहते हो, तुम्हें अजानेमें नहीं पकड़ा जा सकता। किसी-न-किसी रूपमें या अवस्थामें कपट ही तुम्हारे विवेकको ढक सकता है, तुम्हें बेहोश-सा बना देता है। तुम चाहते हो कि चीजें यह रूप लें या वह रूप न लें। इससे तुम्हारे विवेकपर परदा पड़ जाता है। दूसरी ओर, यदि तुम सीधे हो, अगर तुम दोनों रूपोंसे उदासीन हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और केवल भगवान्की इच्छा जाननेके लिये ही प्रतीक्षा करते हो तो हमेशा तुम तुरंत पहचान जाओगे कि तुम्हारे अंदर कोई गलत गति है या होने जा रही है। तुम उसे भली भांति, बिलकुल ठीक रूपमें जान सकते हो क्योंकि तुम उसे ठीक कर लेनेके लिये तैयार हो।

पूर्ण निष्कपटता भूल नहीं करना चाहती। वह भ्रांतिमें रहनेकी जगह सब कुछ छोड़ देना ज्यादा पसंद करेगी। वह बहुत यथार्थ क्रिया है, लेकिन साथ ही बहुत नाजुक भी है। क्योंकि जब तुम कोई चीज करते हो, भले ठीक चीज क्यों न हो, मन और प्राण उससे लाभ उठानेके लिये तैयार रहते हैं। और नहीं तो आत्म-संतोषका लाभ ही सही, कम-से-कम अपने बारेमें तो अच्छी राय बना ही सकते हैं। अपनी आंखोंमें धूल न झोंकना आसान नहीं है।

शरीरकी समता — अन्तरात्माकी समता

वाह्य सत्ताकी समताका अर्थ है अच्छा स्वास्थ्य, मजबूत शरीरका स्नायुओंपर अधिकार — जब तुम जरा-जरा-सी बातपर हिल न जाओ, तब तुम अचंचल, स्थिर, संतुलित रहो। ऐसी अवस्थामें तुम अपने अंदर, ऊपरसे एक बहुत बड़ी शक्ति (या अपने चारों ओरकी ऊर्जा)-को अस्तव्यस्त हुए बिना ले सकते हो। अगर तुममेंसे किसीको ऐसी शक्ति पानेका अनुभव है तो उसने देखा होगा कि पूर्णतया स्वस्थ शरीरके बिना उस शक्तिको अपने अंदर रखा नहीं जा सकता। तुम बेचैन हो जाते हो, तुम इधर-उधर घूमते-फिरते हो, बातें करते, रोते-चिल्लाते, कूदते-फांदते या नाच उठते हो और यह सब इसलिये कि तुम शक्तिको धारण नहीं कर सकते और इधर-उधर बिखेरते हो। तुम जिस चीजको इकट्ठा नहीं कर सकते, रख नहीं पाते, उसे ही बिखेरते फिरते हो। शक्तिको सहेजने या बनाये रखनेके लिये शरीर और स्नायुओंको बहुत मजबूत होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरात्माकी समता और चीज है, वह भौतिक नहीं मनोवैज्ञानिक है। यह वस्तुओंके अच्छे-बुरे प्रभावको सह सकनेकी शक्ति है। बिना रोये-धोये या नाचे-कूदे, हतोत्साह हुए बिना या उत्साहमें भरकर किसी प्रकार भी विक्षुब्ध न होनेकी क्षमता है। चाहे कुछ भी क्यों न हो, तुम शांत और गंभीर बने रहो। लेकिन दोनों समताएं जरूरी हैं। वास्तवमें बहुत-सी समताएं हैं: प्राणकी समता, शरीरकी समता, इनके अलावा शुद्ध रूपसे मनकी समता। सभी क्षेत्रोंसे सभी प्रकारके विचार तुम्हारे पास, तुम्हारे सिरमें आते हैं, कुछ तो एकदम परस्पर विरोधी होते हैं। फिर भी तुम स्थिर, अचंचल, अविक्षुब्ध, बल्कि बेपरवाह ही रहते हो। तुम केवल साक्षी हो, तुम उन्हें देखते हो, छांटते हो, ठीक जगहपर रखते हो, हर विचारको उसके अपने स्थानपर बिठाते हो, हर एककी कीमत आंक लेते हो, उनके आपसी संबंध और समग्रके साथ संबंध समझ लेते हो, लेकिन फिर भी तुम किसी एककी ओर नहीं लुढ़क पड़ते।

व्यक्तिगत प्रयास और इच्छा-शक्ति

व्यक्तिगत प्रयासमें प्रयासका, तनावका भाव रहता है, ऐसा लगता है कि प्रयास तुम्हारा अपना है, यानी, तुम स्वयं अपने ऊपर निर्भर हो, तुम्हें लगता है कि हर कदमपर जो किया जाना चाहिये वह न किया तो सब बंटाढार हो जायगा। संकल्प या इच्छा-शक्ति और चीज है। यह तुम जो कुछ कर रहे हो उसपर एकाग्र होनेकी क्षमता है ताकि तुम जो कर रहे हो वह अच्छी तरह किया जाय और ऐसा तबतक किया जाय जबतक काम पूरा न हो जाय।

मान लो, अमुक परिस्थितियोंमें एक काम तुम्हारे जिम्मे आया है। एक कलाकार, चित्रकारको ले लो। उसे एक प्रेरणा आयी है और उसने एक चित्र तैयार करनेका निश्चय किया है। वह जानता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि अगर प्रेरणा न हो तो वह कोई भी अच्छी चीज न कर पायेगा, उसका चित्र चित्र न होकर रंगोंकी पुताई बन जायगा। अगर वह केवल निष्क्रिय हो, तो न प्रयास करे न संकल्प तो वह भगवान्से कहेगा: "लो, यह रहे रंग, पट्टिका, कलम और कैनवस। अब तुम ही चित्र बनाओगे।" लेकिन भगवान इस तरह काम नहीं करते। स्वयं चित्रकारको सारी व्यवस्था करनी होगी, विषयपर एकाग्र होना होगा और पूर्ण रूपसे काम करनेके लिये अपनी सारी इच्छा-शक्ति लगा देनी होगी। दूसरी ओर, यदि उसमें प्रेरणा नहीं है तो वह भले सारे प्रयास कर डाले, फिर भी उसका चित्र हजारों उदाहरणोंमें-से एक होगा, विशेष कुछ भी नहीं। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि तुम्हारा चित्र क्या अभिव्यक्त करना चाहता है और फिर तुम्हें यह जानना चाहिये या पता लगाना चाहिये कि उसे कैसे व्यक्त किया जाय। एक बड़ा चित्रकार जो चित्र बनाना चाहता है उसका ठीक-ठीक अंतर्दर्शन पा लेता है। उसे अंतर्दर्शन प्राप्त होता है और वह अपने-आपको उसे कार्यान्वित करनेपर लगा देता है। वह चेतना और संकल्पके साथ दिन-प्रतिदिन काम किये जाता है, उसकी अंतर्दृष्टिने जो देखा है ठीक उसकी प्रतिकृति करना चाहता है। वह भगवान्के लिये काम करता है, उसका समर्पण सक्रिय और गतिशील होता है। कविके साथ भी यही होता है। जो भी भगवान्के लिये कुछ करना चाहे उसके साथ यही होता है।

यह कैसे अनुभव करें कि हम भगवान्के हैं

हम यह कैसे अनुभव करें कि हम भगवान्के हैं और हमारे द्वारा भगवान् ही काम कर रहे हैं?

दिमागसे नहीं, यद्यपि तुम हमेशा शुरू उसीसे कर सकते हो क्यों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि प्रकाश सबसे पहले सिरको ही छूता है। सबसे पहले तुम्हें उसे संवेदनके द्वारा ही अनुभव करना चाहिये, अर्थात्, एक ऐसी ज्वालाके रूपमें अनुभव करना चाहिये जो उपलब्ध करना चाहती है। उदाहरणके लिये, जैसा कभी-कभी कसरती लोग अनुभव करते हैं, मान लो तुम एक भारी चीज उठानेकी कोशिश कर रहे हो। तुम पूरी तरहसे उसीपर केंद्रित हो, अचानक तुम्हें पता नहीं क्यों और कैसे, कोई और शक्ति आकर उसे उठा लेती है, कोई चीज तुम्हारे हाथोंको पकड़ लेती है और उनसे असंभव काम करवा लेती है। ऐसा लगता है कि उस समय शरीरका अस्तित्व ही नहीं होता। कई लेखकोंका भी ऐसा अनुभव है। उनके अंदर कोई चीज, जो उनका अपना स्व नहीं है, सोचती है, ज्यादा अच्छी तरह देखती है, कहीं अधिक सचेतन है और विचारों और शब्दोंको व्यवस्थित और संगठित करती है। लेखक नहीं लिखता, यह "कोई और चीज" लिखती है। कभी-कभी यह छोटा-सा व्यक्ति जो कोशिश करता है, संघर्ष करता है, वह नहीं रहता। वास्तवमें, इस अनुभूतिकी पूर्तिके लिये, उसमें कोई बाधा न आने पाये इसके लिये भौतिक व्यक्तिको जितना अधिक संभव हो उतना अचंचल रहना चाहिये।

ऐसा अनुभव पानेके लिये सबसे पहले तो तुम्हारे अंदर संकल्प होना चाहिये। तुम्हें संकल्प करना चाहिये, अभीप्सा करनी चाहिये और कोशिश करनी चाहिये कि तुम्हारे अंदर अहंकार कम-से-कम होता जाय। तुम्हारे अंदर जाति-विशेष होनेकी भावना कम-से-कम होती जाय। एक तुम्हारे अंदर यह ज्वाला होनी चाहिये, ऐक्यके लिये उत्कट लालसा। एक प्रकारका ज्योतिर्मय उत्साह तुम्हें पकड़ लेता है। तुम्हारी सत्ताकी एकमात्र आवश्यकता होती है, जिसका प्रतिरोध नहीं किया जा सकता, कि तुम भगवान्से अलग न रहो, उनके साथ एक हो जाओ। यह सच है कि शुरूमें यह अवस्था ज्यादा देर नहीं रहती, तुरंत इससे उल्टा अनुभव होता है। लेकिन अगर तुम जारी रखो, अपने संकल्प और अभीप्सामें दृढ़ रहो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह अवस्था फिरसे आयेगी। कुछ समयतक, जबतक पूर्ण ऐक्य न हो जाय, दोनों अवस्थाएं एकके बाद एक आती रहेंगी। अंतमें तुम्हारी व्यक्तिगत सत्ता और भागवत सत्तामें कोई फर्क नहीं रहता, दोनों एक हो जाती हैं। तब भगवान्‌के लिये उत्कट अभिलाषा समर्पणकी आनन्दमय अवस्था नहीं रहती जिसमें दोनों अलग-अलग हों। मिलन और ऐक्यकी, संपूर्ण तादात्म्यकी यह अवस्था बहुत सरल और पूर्ण रूपसे सहज और स्वाभाविक होती है। मैंने एक बार पैरिसमें एक भारतीय सूफीसे चेतनाकी इस अवस्थाके बारेमें सुना था (फनाफिल्लाह)। वे भी इस विषयमें जानते थे।

तो क्या यही अन्तिम अवस्था है? इसके बाद कोई और प्रगति नहीं होती?

प्रगतिका कहीं अंत नहीं। यह पूर्ण ऐक्य शरीरके रूपांतरसे पहले भी हो सकता है। यह ऐक्य चेतनाका विषय है। भौतिक चेतना और भौतिक द्रव्यमें भी बहुत फर्क है। जो रहस्यवादी बहुत ज्यादा आगे बढ़ चुके हैं वे भौतिक चेतनामें भी ऐक्यका अनुभव कर सकते हैं, लेकिन इसमें भौतिक पदार्थकी गिनती नहीं है। भूतकालमें कभी भौतिक शरीरका रूपांतर नहीं किया गया, शायद इसकी कोशिश भी नहीं हुई। यह तभी हो सकता है जब जीवन काफी लंबा हो। तुम शरीर तबतक न छोड़ो जबतक तुम्हारा अपना संकल्प न हो। तब परिवर्तन लानेके लिये तुम्हारे हाथमें काफी समय होना चाहिये। एक बार श्रीअरविंदने कहा था और जरा भी हिचकिचाये बिना कहा था कि इसमें कम-से-कम तीन सौ वर्ष लगेंगे और मैं अपनी ओरसे इतना और जोड़ दूं कि मैंने जिस ऐक्यका वर्णन किया है उसके चरितार्थ होनेके बाद तीन सौ वर्ष।

मुझे यह भी कह देना चाहिये कि तीन सौ वर्ष तो कम-से-कम हैं। तुम्हें समझ लेना चाहिये कि शरीरके रूपांतरका मतलब क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह शरीर पाशविक योजनाके अनुसार बना है, उसके सभी अवयव और कार्य तुम्हारे चेतनाके हस्तक्षेपके बिना अपने-आप यांत्रिक रूपसे काम करते रहते हैं। अगर तुम्हारा हृदय सेकेंडके सौवें हिस्सेके लिये काम करना बंद कर दे तो बस शरीर चल बसता है। तुम किसी भी अवयवके बिना काम नहीं चला सकते और तुम्हें उनकी समुचित क्रियापर निगाह रखनी चाहिये। रूपांतरका अर्थ होगा इस विशुद्ध भौतिक व्यवस्थाके स्थानपर व्यवस्थित रूपसे शक्तियोंकी एकाग्रताको लाना। तुम्हें शक्तियोंकी एक ऐसी व्यवस्था लानी चाहिये जो अमुक प्रकारके स्पंदनोंके अनुकूल हो, प्रत्येक अवयवके स्थानपर एक सचेतन शक्तिका केंद्र लाना होगा जो उच्चतर शक्तिकी एकाग्रताके द्वारा शासन करती है। तब न पेट होगा न हृदय। इन चीजोंके स्थानपर स्पंदनोंका एक तंत्र होगा और ये स्पंदन अपने सत्य स्वरूपके प्रतिनिधि होंगे। भौतिक अवयव शक्ति-चक्रोंके प्रतीक हैं। वे तत्त्वगत वास्तविकता नहीं हैं। वे उसे किन्हीं परिस्थितियोंमें रूप या आकार देते हैं। रूपांतरित शरीर अपने वास्तविक ऊर्जा-केंद्रोंके द्वारा काम करेगा, पाशविक शरीरमें विकसित केंद्रोंके प्रतिनिधियोंके द्वारा नहीं। लेकिन इसके लिये पहले तो तुम्हें इन केंद्रों और उनकी क्रियाओंसे परिचित होना चाहिये, अचेतन यांत्रिक क्रियाओंकी जगह सचेतन अधिकारकी गतियां होनी चाहिये। यह हो जाय तो तुम्हारे अधिकारमें पाशविक भौतिक अवयव न रहेंगे, बल्कि प्रतीकात्मक स्पंदन और प्रतीकात्मक ऊर्जाएं होंगी। इसका यह अर्थ नहीं है कि कोई निश्चित, पहचाने जा सकनेवाला रूप न होगा। यह रूप ठोस धूलि-कणोंकी जगह गुणोंका बना होगा। हम कह सकते हैं कि वह एक क्रियात्मक या व्यावहारिक रूप होगा। वह आजके बंधे हुए ठोस जड़ आकारका न होकर लचीला और गतिशील रूप होगा। जैसे तुम्हारे संवेदनों और आवेगोंके साथ-साथ तुम्हारे चेहरेके भाव बदलते हैं इसी तरह आंतरिक क्रियाकी आवश्यकताके अनुसार शरीर बदलता रहेगा। तुम्हें स्वप्नमें कभी इस तरहका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव नहीं हुआ ? तुम हवामें ऊपर उठ जाते हो और अपनी दोनों कोहनियोंसे जरा-सा धक्का देते हो और तुम्हारा शरीर उस ओर बढ़ जाता है, तुम अपने पांवसे जरा जोर लगाते हो और अपने-आपको कहीं और पाते हो। तुम अपनी इच्छासे पारदर्शक बन जाते हो और बड़ी आसानीसे ठोस दीवारके आर-पार हो जाते हो। रूपांतरित शरीर कुछ-कुछ इसी तरह काम करेगा। वह हल्का, ज्योतिर्मय और लचीला होगा। हल्कापन, प्रकाश, लचीलापन उस शरीरके आधारभूत गुण होंगे।

ऐसा शरीर तैयार करनेके लिये तीन सौ साल तो कुछ भी नहीं हैं। इसके लिये तो हजार वर्ष भी बहुत न होंगे। स्वभावतः मैं यहां उसी शरीरकी बात कह रही हूं। अगर तुम इस बीच शरीर बदल लो तो फिर वह तो वही शरीर न रहेगा। पचासकी आयुमें शरीर क्षीण होना शुरू कर देता है। इसकी जगह अगर तुम्हारे पास ऐसा शरीर हो जो अपने-आपको पूर्णतर करता जाय, अगर हर बीतनेवाला वर्ष प्रगतिका एक पग हो तब तुम अनंत कालतक जी सकते हो। तब तुम अमर होगे।

रूपांतरके काममें एक और कठिनाईका सामना करना पड़ता है। एक शरीर-विशेष तबतक नहीं बदल सकता जबतक कि उसके आस-पासके शरीरोंमें, उसके सामान्य परिवेशमें भी उसके साथ मेल खाता हुआ परिवर्तन न हो, क्योंकि तुम परस्पर आदान-प्रदानके द्वारा औरोंके बीचमें रहते हो। तो यह फिर एक वैयक्तिक चेतनाका काम ही नहीं, बल्कि सामूहिक चेतनाका काम हो जाता है।

संसार प्रगति करता है। संसारमें होनेके नाते तुम्हें भी प्रगति करनी पड़ती है। लेकिन यह ऐसी प्रगति है जिसे भगवान् तुम्हारे अंदर तुम्हारे जाने बिना, तुम्हारे सहयोगके बिना करवा रहे हैं, इसलिये प्रगति बहुत धीमी है। प्रकृति यह नहीं देखती कि उसे काममें कितना समय लगता है। उसके आगे सारी शाश्वतता पड़ी है, उसे जल्दी नहीं होती। उसकी प्रगतिमें शताब्दियां और सहस्राब्दियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा युग क्षणोंकी भांति हैं। एक दिन वह अपने निर्धारित लक्ष्य जा पहुंचेगी — वह है शरीरका संपूर्ण रूपांतर और अतिमानवका आगमन। लेकिन अगर मनुष्यका सचेतन सहयोग मिले तो यह क्रिया तेज हो सकती है। अधिकतर लोग, वास्तवमें लोगोंकी अधिक-से-अधिक संख्या, अपने अंदर होनेवाली भागवत क्रियाके बारेमें बिलकुल अचेतन होते हैं। सचेतन होनेका मतलब है, जो कुछ किया जा रहा है उसके बारेमें ध्यान देना। उसके प्रभावके प्रति ग्रहणशील और निष्क्रिय होना। तुम अपने-आपको जितना दोगे, तुम जितने अधिक सच्चे और निष्कपट होगे, तुम्हारी उपलब्धि भी उतनी ही निश्चित और तेज होगी। जो चीज सामान्यत: वर्षोंमें होती है उसे तुम कुछ क्षणोंमें कर सकोगे। योगका यही लक्ष्य है।

सचाई, निष्कपटता ही विजय है

सच्चा होना और सरल होना एक ही नहीं है। सरल, सीधापन बहुत हदतक चीजोंके बारेमें अज्ञानपर आधारित होता है। बच्चा सीधा होता है क्योंकि वह स्पष्ट और अनजान होता है, वह कुछ भी नहीं छिपाता। वह धोखा देनेके काबिल नहीं होता और किसीको धोखा देता भी नहीं। लेकिन सचाई और ही चीज है।

पाने योग्य चीजोंमें सचाईको पाना सबसे अधिक कठिन है, लेकिन साथ ही वह सबसे अधिक प्रभावशाली भी है। अगर तुम्हारे अंदर सचाई है तो तुम विजयके बारेमें निश्चित हो सकते हो, लेकिन वह सच्ची सचाई होनी चाहिये। सचाईका अर्थ यह है कि तुम्हारी सत्ताके तत्त्व, उसकी सभी गतियां, अधिक-से-अधिक आध्यात्मिकसे लेकर एकदम भौतिकतक सभी क्रियाएं, अंतरतमसे बाह्यतमतक, सबसे ऊपरसे लेकर सबसे नीचेतक सभी भाग, अलग-अलग और मिलकर सब समान रूपसे भगवान्की ओर मुड़े हों, वे भगवान्के सिवा और किसीको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांग न करते हों, वे भगवान्‌से ही, भगवान्‌के लिये ही जीते हों।

और यह कोई आसान बात नहीं है। कुछ भागोंमें सच्चा होना, सब मिलकर सच्चा होना, अमुक क्षणोंमें सच्चा होना काफी आसान है। हर व्यक्ति इतना तो कर ही सकता है। है तो विरल, फिर भी यह हर एक आदमीकी क्षमताके अंदर है कि वह अपनी चैत्य गतियोंमें सच्चा रहे। लेकिन अपने शरीरके कोषाणुओंतकमें सच्चा होना और भी ज्यादा विरल और कष्टकर उपलब्धि है। शरीरके कोषाणुओंको इतना अधिक संकेंद्रित करना कि वे भी यह अनुभव करें कि वे भगवान्‌के बिना जी ही नहीं सकते, वे जीते हों तो भगवान्‌के लिये और भगवान्‌में। यह है सच्ची सचाई।

पहले तो तुम्हें देखना होगा कि तुम्हारे समस्त जीवनमें एक भी दिन, एक भी घंटा, एक भी मिनट ऐसा नहीं होता जब तुम्हें अपनी सचाईको ज्यादा तीव्र और ज्यादा शुद्ध बनानेकी जरूरत नहीं होती। भगवान्‌को कोई भी धोखा नहीं दे सकता, बड़े-से-बड़ा असुर भी नहीं। जबतक तुम यह न समझ लो तबतक तुम अपने दैनिक जीवनमें ऐसे अवसर पाओगे जब तुम अपने-आपको ठगनेका प्रयास करते हो। तुम जो कुछ करते हो उसके पक्षमें यंत्रवत् कारण देते चलोगे। मैं इस समय स्थूल चीजोंकी बात नहीं कर रही, उदाहरणके लिये, जब तुम किसीसे झगड़ा कर लो और क्रोधमें आकर सारा दोष उसके सिर मढ़ते चलो। मैंने एक बच्चा देखा है जो यह समझकर कि दरवाजेने अपराध किया है उसे पीटता था। भूल हमेशा विपक्षकी ही होती है। लेकिन जब तुम इस बचकानी स्थितिसे निकल भी आओ, जब तुम्हें जरा ज्यादा समझदार माना जाता है तब भी तुम अधिक-से-अधिक मूढ़तापूर्ण चीजें करते हो और उन्हें न्यायसंगत ठहरानेके लिये तर्क प्रस्तुत करते हो। सचाईकी खरी कसौटी, सचाईकी कम-से-कम जांच इसीमें है: परिस्थितियोंमें तुम्हारी प्रतिक्रिया कैसी होती है? क्या तुम अपने-आप ठीक मनोवृत्ति अपना सकते हो और ठीक वही चीज करते हो जो करनी चाहिये? उदाहरणके लिये, जब कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे साथ गुस्सेमें बोलता है तो क्या तुम्हें भी छूत लग जाती है और तुम भी उबल पड़ते हो या तुम अचंचल, धीर और शांत रह सकते हो, दूसरे व्यक्तिकी बात समझ सकते हो या वैसा व्यवहार कर सकते हो जैसा करना चाहिये ?

मैं कहती हूं कि यह सचाईका एकदम आरंभ है, उसका प्रारंभिक ज्ञान है। अगर तुम अपने-आपको जरा तेज आंखोंसे देखो तो अपने अंदर हजारों कपट पाओगे जो अधिक सूक्ष्म भले हों पर कम नहीं हैं। सच्चे होनेकी कोशिश करो, ऐसे अवसर बढ़ते ही जायेंगे जब तुम अपने-आपको कपट करते हुए पकड़ सकोगे। तुम्हें पता लगेगा कि सच्चा होना कितना कठिन है। तुम कहते हो कि तुम भगवानके हो, केवल भगवानके, और किसीके नहीं। "भगवान् ही मुझे चलाते हैं और मेरे अंदर सब कुछ करते हैं।" और तब तुम अपनी मरजीके अनुसार जो इच्छा हो करते रहते हो। तुम अपनी कामनाओं, अपने आवेगोंकी संतुष्टिको ढकनेके लिये भगवान्का उपयोग चोगेके रूपमें करते हो। यह एक बहुत स्थूल कपट है और इसे पकड़ना मुश्किल न होना चाहिये। यद्यपि यह बहुत अधिक सामान्य धोखा है। यह शायद अपने-आपको इतना नहीं, जितना दूसरोंको ठगनेके लिये है। मन एक विचारको पकड़ लेता है : "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" — यह सब ब्रह्म है। "ब्रह्मास्मि" — मैं ब्रह्म हूं — और तुम मान लेते हो या माननेका दिखावा करते हो कि तुमने इसे चरितार्थ कर लिया है और अब तुम कोई भूल नहीं कर सकते। जब तुम अपने दोषोंको छिपानेके लिये भगवान्का चोगा नहीं पहनते तब भी कपटकी, या सचाईके अभावकी सूक्ष्म गतियां होती हैं। उस समय भी जब तुम्हें लगता है कि तुम पूरी तरह निष्कपट हो तुम्हारे अंदर ऐसी गतियां हो सकती हैं जो बिलकुल सीधी न हों। अगर तुम बेधड़क होकर खोज करो तो कहीं-न-कहीं किसी अवांछनीय चीजको छिपा हुआ पाओगे। उन छोटी-छोटी गतिविधियों, विचारों, संवेदनों, आवेगोंकी भीड़पर नजर डालो जो तुम्हारे दैनिक जीवनको घेरे रहती हैं। उनमेंसे कितने हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सचमुच भगवानकी ओर अभिमुख हैं, जिनमें किसी उच्चतर वस्तु-के लिये आग है? अगर तुम्हें इस तरहके थोड़े-से भी मिल जायं तो अपने-आपको भाग्यवान समझो। जब मैं कहती हूं कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम्हारी विजय निश्चित है, तो मेरा मतलब उस प्रकारकी संपूर्ण, अविभक्त सचाईसे होता है, मेरा मतलब उस शुद्ध ज्वालासे होता है जो आत्म-निवेदनके रूपमें जलती रहती है, उस तीव्र आनंदसे जो केवल भगवान्के लिये जीनेसे आता है, जिसमें और किसीका अस्तित्व ही नहीं होता, भगवान्में निवास करनेके सिवाय किसी जीनेका कोई मूल्य या कोई कारण नहीं होता। ऐसी किसी चीजका कोई मूल्य नहीं होता जो भगवान् न हो, उस परम सत्यके लिये आवाहन, अभीप्सा या उसके प्रति उन्मीलन न हो। तुम्हें बस उस एकमात्र हेतुकी ही सेवा करनी चाहिये जिसके कारण विश्वका अस्तित्व है। उसे हटा दो और सब कुछ गायब हो जायगा।

देवी-देवताओंकी प्रतिमाएं

क्या देवी-देवताओंकी सामान्य प्रतिमाएं वास्तविकताके प्रति सच्ची होती हैं?

जब कोई छोटा बच्चा किसी चीजका चित्र बनाता है तो क्या वह उस चीजके साथ जरा भी मिलता-जुलता है? यहां भी वही बात है, बल्कि शायद उससे भी बढ़कर खराब, क्योंकि बच्चा सरल और निष्कपट होता है जब कि प्रतिमा बनानेवाला पसंदों और पहलेसे मानी हुई धारणाओंसे भरा होता है, उन चीजोंसे भरा रहता है जो उसने देखी या सुनी हैं और वह अपनी रचनाके साथ बंधा रहता है। लेकिन कभी-कभी, यहां-वहां, बहुत ही विरल, आंतरिक दृष्टिवाले कलाकार जन्म लेते हैं जिनमें बहुत अभीप्सा होती है, आत्माकी पवि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रता होती है। वे ऐसी चीजें बनाते हैं जिन्हें स्वीकार किया जा सकता है, परंतु ये बिलकुल अपवाद-रूप होते हैं, नियम इससे उलटा ही है।

मैंने इनमेंसे कुछ रूप प्राणिक और मानसिक जगत्में देखे हैं। वास्तवमें वे मनुष्यके बनाये हुए ही होते हैं। परेसे आनेवाली एक शक्ति अभिव्यक्त होती है, लेकिन अज्ञान, अविद्याकी इस त्रिविध सृष्टिमें मनुष्य अपनी ही सूरतके अनुसार भगवान् बना लेता है और उसमें जो सत्ताएं प्रकट होती हैं वे न्यूनाधिक रूपमें मनुष्यके सर्जक विचारसे ही उपजती हैं। इसलिये कभी-कभी हम सचमुच भयावनी चीज़ें देखते हैं। मैंने ऐसी रचनाएं देखी हैं जो बहुत ही अंधकार-मय, दुर्बोध और भावशून्य होती हैं। कुछ दैवी सत्ताएं हैं जिनके साथ औरोंकी अपेक्षा ज्यादा बुरा व्यवहार किया जाता है। उदा-हरणके लिये, बेचारी महाकालीको ले लो। मनुष्यने उसे क्या बना डाला है! जंगली, भयावह, और कल्पनातीत दुःस्वप्न! लेकिन ऐसी सत्ताएं बहुत ही निचले जगत्में रहती हैं, निम्नतर प्राणमें और अगर उनमें वास्तविक सत्ताका कोई अंश है भी तो वह इतनी दूरकी परछाईं-रूपमें कि उसे पहचानना भी लगभग असंभव होगा। फिर भी मानव चेतना ऐसोंको ही खींचती है। उदाहरणके लिये, जब कोई मूर्ति बनाकर प्रतिष्ठित की जाती है और पुरोहित उसमें किसी रूपका, भगवान्के किसी अंशका आवाहन करता है, भीतरी आवाहनके द्वारा — इसके लिये एक पूरा अनुष्ठान होता है — तो अगर पुरो-हित ऐसा है जिसमें आवाहन करनेकी क्षमता हो तो चीज सफल हो जाती है (जैसे रामकृष्णने मंदिरमें किया था)। लेकिन साधारणतः पुरोहित मामूली विचारोंवाले एकदम मामूली आदमी होते हैं जिन्हें केवल परंपरागत शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त होता है। जब देवों-के बारेमें सोचते हैं तो उन्हें ऐसे गुण और रूप पहना देते हैं जो सामान्य परंपरागत धारणा और शिक्षाके अनुकूल हों। ये गुण और रूप प्रायः प्राणिक सत्ताओंके होते हैं जो साधारणतः प्राणिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक-से-अधिक मानसिक सत्ताओंमें पाये जाते हैं, जिनमें उन सच्ची शक्तियोंका कोई अंश भी नहीं होता जिसका वे प्रतिनिधित्व बतायी जाती हैं। मंदिरोंके सभी देवता या घरोंमें जिनकी पूजा होती है ऐसी देवी मूर्तियां सचमुच ऐसी सत्ताओंका आवास होती हैं जो केवल दुःख और विपदाकी ओर ले जाती हैं। वे उस देवतासे बहुत दूर होती हैं जिसकी लोग पूजा करना चाहते हैं। कुछ पारिवारिक कालियां तो अपने-आप भूत होती हैं। मैंने कुछ लोगोंको ऐसी प्रतिमाओंके दुष्परिणामसे बचानेके लिये मूर्तियोंको गंगामें फेंक देनेकी सलाह दी है। लेकिन हां, दोष हमेशा आदमीका होता है। भगवान्का नहीं। मनुष्य अपने भगवान्को ठीक अपने ही रूपमें गढ़नेके लिये इतना उत्सुक रहता है।

और यह फुर्तीली तर्क-बुद्धि

तर्क-बुद्धि फुर्तीली, व्यायामी है : वह सब प्रकारकी दिशाओंमें घूम सकती है, अनेक तरहसे अपने-आपको मोड़-तोड़ सकती है, सरलताके साथ, बड़े कौशलसे सब प्रकारकी ऐंठन, संकुचन आदि ला सकती है। वह सत्यकी खोज नहीं करती यद्यपि उसका दिखावा कर सकती है, सत्य पाना उसके बसका नहीं है। ऐसा लगता है कि आधुनिक विज्ञानमें अनिश्चितता या अनिर्धार्यताका विधान ही सर्वप्रधान है। तर्क-बुद्धिका काम यही है कि वह अपने-आपको जिस किसी स्थितिमें पाये, उसे जो भी काम सौंप दिया जाय वह उसीको न्यायसंगत ठहरानेके लिये, उसीका समर्थन करनेके लिये युक्तियां तलाश करती जाय। उसका काम है "प्रमाण" प्रस्तुत करना। वह यह काम उसी तरह कर सकती है जैसे मकड़ी स्वयं अपने अंदरसे जालेका ताना-बाना निकाल लाती है। ऐसा कोई सत्य या यूं कहें, ऐसा कोई परिणाम् नहीं है जिसे वह समान अकाट्यताके साथ निश्चायक रूपमें सिद्ध न कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस बड़े दार्शनिक कांटकी यह बहुत बड़ी खोज थी जब उसने यह बात तर्क-बुद्धिके विरोधमें रखी। तर्क-बुद्धिको घुमा-फिराकर पेंचदार बातें करनेमें बड़ा मजा आता है। वह उन पेचोंके बीचमें छिपी वास्तविकता या तथ्यकी खोज नहीं करती।

तो क्या यह कहा जा सकता है कि यह क्षमता मिथ्या है और तुम्हें मिथ्यात्वकी ओर ही ले जा सकती है? नहीं, यह जरूरी नहीं है। जब तुम उसके अनुसार, उसकी सनकके विचार या विचारोंके अनुसार जीनेका प्रयास करते हो क्योंकि तब यह तुम्हें विरोधोंमें पटक देगी, अन्यथा यदि व्यावहारिक जीवनकी बात न हो, केवल मानसिक जगत्के खेल-खिलवाड़की बात हो तो यह सब निर्दोष कसरत है जो अपने तरीकेसे कुछ उपयोगी हो सकती हैं। वह तुम्हारे मस्तिष्कको तेज, जाग्रत्, बलवान और लचीला बना सकती है।

तर्क-बुद्धि एक बुरा स्वामी है, स्वेच्छाचारी होनेके कारण वह बहुत बार अपने-आपसे बाहर हो जाती है। लेकिन अगर वह उच्चतर प्रकाशके वशमें, उसके जूए तले, उसकी लगामके अनुसार चले तो वह सहायक और आवश्यक वस्तु भी बन सकती है क्योंकि वह उच्चतर चेतनाकी सत्य गतियोंको बिठाने और रखनेके लिये तात्कालिक रूप देती है।

सोसायटी समाचार

२४ अप्रैल, १९७८: इस दिन ५८ साल पहले माताजी हमेशाके लिये पांडिचेरी आ गयी थीं। दर्शनके चार दिनोंमें इसकी भी गिनती है। इसलिये सुबह श्रीअरविंदके कक्षदर्शनके बाद माताजीकी तस्वीर बांटी गयी और फिर समाधिके इर्द-गिर्द १० से १०.३० तक ध्यान हुआ। शामको क्रीड़ांगणमें सलामी हुई, उसके बाद फिरसे ध्यान।

४ अप्रैल, १९७८: इस दिन १९१० में श्रीअरविंद पांडिचेरी

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donated by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्थायी उद्देश्य है — भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खालीपन चला जायगा।

—श्री

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष: २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये थे, इसलिये श्रीअरविंदकी तस्वीर बांटी गयी और शामको आश्रममें और क्रीड़ांगणमें ध्यान हुआ।

२९ मार्च, १९७८: ६४ साल पहले, १९१४ में, इस दिन माताजी पहली बार भारत आयीं और श्रीअरविंदसे मिलीं। इस विशेष अवसरपर एक कार्ड बांटा गया जिसपर माताजीकी तस्वीर थी। शामको क्रीड़ांगणमें सामूहिक ध्यान हुआ।

रूरकेलाके श्रीअरविंद योग मन्दिरमें प्रो० मनोज दासने "सावित्री" के बारेमें तीन भाषण दिये। फिर वे योग मन्दिरके दूसरे केंद्र देखने गये।

सितम्बर १९७७ में योग मन्दिरने इसी प्रकारके कुछ कार्यक्रम रखे थे। तब श्री मधुसूदन रेड्डी, श्री प्रपत्ति और एम० पी० पण्डितने भाषण दिये थे।

धनबादके शिवपुर केंद्रमें १९ मार्चको एक कार्यक्रम रखा गया। उसमें श्रीअरविंद और माताजीके बारेमें भाषण, भजन और कवितापाठ थे।

मद्रासके "एक्सेल एज्युकेशनल इंस्टीटयूटने" ७ अप्रैलको "आदर्श बालक" की ७५ प्रतियां बांटीं, तमिलनाडुके राज्यपाल, श्री प्रभुदास पटवारी सभाके मुख्य अतिथि थे।

हालके प्रकाशन :

जप: ले० एम० पी० पंडित, मूल्य ५.०० । शब्दसे प्राप्त हो सकती है।

नारियोंके विषयमें : विजयद्वारा किया गया माताजी और श्रीअरविंदके वचनोंका संकलन। मूल्य ८.००। शब्दसे प्राप्य।

घोषणाएं :

जुलाई १९७८ से "आल इण्डिया मैगजीन" का उड़ियामें अनुवाद छपेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for Ind
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 873

जो सदस्य अंग्रेजी पत्रिकाकी अपेक्षा उड़िया अनुवाद चाहेंगे श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२ को तुरंत सूचना दें इसके लिये वार्षिक चन्दा होगा १२.००।

"ईक्वल्स वन" ने माताजीकी जन्म शताब्दीके अवसरपर " Paradigm=1 " नाम का एक सफेद कार्ड निकाला है उसमें १२ फुटका एक फोल्डर है जिसमें ७ काष्टचित्र हैं; मूल्य २९.००। यह "ईक्वल्स वन", पांडिचेरी-६०५००२ से प्राप्त हो सकता है।

रांची (बिहार) में ४ अप्रैलको एक दवाखाना खोला गया। वहां 'राजेन्द्र मेडिकल कालेज' से एक डाक्टरने अपनी सेवा अर्पित की है। उद्घाटनके दिन आश्रमके बारेमें तीन डोक्यूमेंटरी फिल्में दिखायी गयीं और पुस्तकोंकी बिक्रीकी व्यवस्था की गयी।

डा० गोविन्द भाई पटेल गुजरातमें सनोसरा, जिला भावनगर गये और वहां "श्रीअरविंद और उनका आश्रम" पर भाषण दिये।

२४ अप्रैलको सोसायटीके मेहसाणा के "श्री मीरा बाल मन्दिर की पहली वर्षगांठ मनायी गयी। यह माताजी तथा श्रीअरविंदकी शिक्षासंबंधी पद्धतियोंको अपनानेका प्रयास है।

बिहारके चक्रधरपुरने अप्रैलके पहले हफ्तेमें तीन दिनका एक कार्यक्रम रखा। उसमें नाच, गान, नृत्य, शारीरिक कसरतें इत्यादि थे। स्कूलके विद्यार्थियोंने माताजीकी जीवनीपर आधारित वक्तृता प्रतियोगितामें भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

गुरुकुल कांगड़ी

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्यानकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

जुलाई १९७८ वर्ष ८, अंक १२, पूर्णांक ९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

योगके चक्र	१
आंतरिक और बाह्य	
शरीर चेतनाकी शक्ति	
सेवा — मानव और दिव्य	८
भागवत परिवार	११
कलाकी प्रकृति और नियति	१
संगीत — उसका उद्गम और स्वभाव	२
भारतीय और यूरोपीय संगीत	२
विशेषज्ञता	२८
सोसायटी समाचार	३१

छपाईका खर्च बहुत ज्यादा बढ़ता जा रहा है, जहांतक हो सके हम चंदा नहीं बढ़ाना चाहते। आप अधिक ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकेंगे? धन्यवाद।

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक रवींद्र
प्रकाशक श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगके चक्र

मानव शरीरमें सात चक्र प्रसिद्ध हैं। नीचेसे ऊपरकी ओरको उनके नाम इस प्रकार हैं:

(१) मूलाधार, रीढ़की हड्डीके अंतपर (२) स्वाधिष्ठान, पेड़ूमें (३) मणिपूर, नाभिप्रदेशमें (४) अनाहत, हृदयमें (५) विशुद्धि, गलेमें (६) आज्ञा, भौंहोंके बीच और (७) सिरके ऊपर सहस्रार। लेकिन रीढ़की हड्डीके नीचे भी कुछ चक्र हैं जिनके बारेमें लोग इतना नहीं जानते। फिर भी यह सच है कि व्यक्तिगत सत्ताके चक्र मूलाधारके साथ ही समाप्त हो जाते हैं, उससे नीचेके चक्र ज्यादा वैश्व प्रकृतिके चक्र हैं। मस्तकके ऊपर और नीचे चक्र होते हैं: उधर दूसरी ओर पैरोंके नीचे और उनसे हटकर भी चक्र होते हैं। योग-चक्र चेतना और ऊर्जाके स्रोत होते हैं। वे चिच्छक्तिके विभिन्न स्तरोंकी ओर संकेत करते हैं। ऐसे लोग हैं जिन्हें यह अनुभव होता है कि उन्हें नीचेसे शक्ति और बलकी प्राप्ति हो रही है मानों उनके पैरों तले बल और शक्तिका उत्स है। मूलाधारसे नीचे पैरोंतकका क्षेत्र अवचेतन और उससे भी नीचे निश्चेतनाका प्रदेश है। मूलाधारको छोड़कर उससे नीचे हम और चक्रोंका संधान पा सकते हैं: (१) घुटनोंमें (२) टांगोंमें (३) पैरोंमें (४) तलवेमें (५) पैरोंके नीचे। इन्हें मिलाकर, कुल बारह होते हैं, यह रहस्य-वादियोंकी भाषामें पूर्णता या समग्रताकी संख्या है।

रीढ़की हड्डीके नीचे, मूलाधार, व्यक्तिगत चेतनाका आधार है जो सांपकी तरह दिखायी देती है, कुण्डल मारे सोया हुआ सांप, जिसका ऊंघता हुआ सिर कुछ ऊंचा उठा रहता है। यह साधारण मानव चेतनाका प्रतीक है जो मानों बोतलमें बंद, संकीर्ण, अज्ञानी, सोयी हुई रहती है। इस स्तरपर मानव ऊर्जा भी अंधेरी, यांत्रिक और बहुत अधिक सीमित होती है। ऊर्जाकी सारी शक्यता और

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिच्छक्ति शारीरिक चेतनामें बंद रहती है। लेकिन यह सर्प हमेशा के लिये नहीं सोया रहता। उसे जागना पड़ता है, वह जागता है। इसका मतलब यह हुआ कि मनुष्यकी चेतना जागती है, बढ़ती है और ऊपरकी ओर उठती है। एक दिन सर्प अपना फन हिलाता है, जरा और ऊंचा उठाता है, फनको इधर-उधर हिलाता है मानों नींदको उठा फेंकना और इधर-उधर देखना चाहता है। वह धीरे-धीरे कुण्डल खोलता है और ज्यादा-ज्यादा ऊपर उठता है। वह उठकर एक-एक करके सभी चक्रोंमेंसे गुजरता है, ज्यादा-ज्यादा जागता जाता है, हर चक्रमें नया प्रकाश और ज्यादा-ज्यादा क्षमता इकट्ठी करता है। अंतमें पूरी तरह जागकर वह अपनी पूरी ऊंचाईतक उठ जाता है। सीधा शलाकाकी तरह खड़ा होता है, उसकी पूंछ मूलाधारमें होती है और फन सहस्रारको छूता है। तब वह आदमी पूरी तरह जगा हुआ, संपूर्ण आत्म-ज्ञानी होता है। गति यहींपर नहीं अटक जाती। सर्प और आगे बढ़ता है। वह अपने फनसे सहस्रारके निचले भागपर आघात करता है और अंतमें उसे तोड़कर बिजलीकी चमककी तरह बाहर निकल जाता है। लेकिन तुम्हें इस तरह उसके रास्ते बनानेसे डरना न चाहिये क्योंकि वास्तवमें यह कोई भौतिक तोड़ना-फोड़ना नहीं होता और न तुम्हारी खोपड़ी ही खिलती है। यद्यपि कहा यह जाता है कि एक बार तुम पार निकल जाओ, सिरके बाहर चले जाओ तो फिर लौटनेकी संभावना कम ही रहती है। तुम हमेशाके लिये चले जाते हो। दूसरे शब्दोंमें, शरीर बहुत समयतक संगठित नहीं रहता, वह छूट जाता है और मर जाता है। लेकिन ऐसा होना जरूरी नहीं है, यह पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि जब तुम उस पार निकल जाते हो तो तुम उस अतिचेतन प्रकाशको लेकर वापिस भी आ सकते हो। यानी, वह सर्प जो अब ज्योतिर्मय होता है — शुद्ध और स्वतंत्र ऊर्जा — शरीरमें वापिस आ सकता है। इस बार सिर नीचे और पूंछ ऊपर करके। वह चमकता हुआ एक-एक करके सभी चक्रोंको प्रकाशित करता जाता है और मनुष्यको अधिक-से-अधिक समृद्ध चेतना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्जा और जीवन देता है और सत्ताको अधिकाधिक रूपांतरित करता जाता है। ज्योति आसानीसे हृदयके अनाहत चक्रतक आ जाती है। इसके बाद कठिनाई शुरू होती है। निचले प्रदेश ज्यादा-ज्यादा अंधेरे और घने होते जाते हैं और ज्योति जैसे-जैसे नीचे उतरती है उसके लिये इनमें प्रवेश करना ज्यादा-ज्यादा कठिन होता जाता है। अगर वह मूलाधारतक पहुंच जाय तो इसे बड़ा चमत्कार समझो। लेकिन अगर मनुष्य और उसके साथ-ही-साथ संसारको पूर्णतया रूपांतरित जीवन पाना है तो और भी आगे प्रगति जरूरी है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो प्रकाशका केवल हमारे भौतिक स्तरको ही छूना और उसमें प्रवेश करना काफी नहीं है, उससे निचले अवचेतन और निश्चेतन लोकोंमें भी पहुंचना जरूरी है। वह अभीतक मुहरबंद तहखाना रहा है — एक ऐसी चीज जिसके पास फटकना, जिसके बारेमें कुछ भी करना असंभव है।

लेकिन फिर भी यह असंभव नहीं है, केवल यही नहीं कि यह असंभव नहीं है, हमें इसे संभव बनाना होगा। इतना ही नहीं, मानव नियतिकी मांग है कि यह अनिवार्य हो। अगर मनुष्यको रूपांतरित व्यक्ति बनना है, अगर उसे यहां भागवत सद्वस्तुके कुछ अंशको अवतरित करना है, अगर धरतीपर उसके सामाजिक जीवनको आत्माकी चेतनाकी ज्योति और सामंजस्यकी अभिव्यक्ति बनना है तो यह जरूरी है कि वह इन निम्नतम प्रदेशोंमें उतरे और जैसे उसने ऊपरकी बाधाओंको तोड़ा था उसी तरह सबसे निचली बाधाओंको तोड़े और फिर ऊपर और नीचे, दोनोंको जोड़ दे।

मनुष्य और उसकी नियतिकी यह एक अजीब कहानी है। वह है क्या? एक सामान्य मनुष्य क्या है? वह एक दास, बंधक दास है। उसे भले यह भ्रम हो कि उसके अपने विचार होते हैं, अपनी गतियां होती हैं, उसे उन्हें क्रियान्वित करनेकी खुली छूट होती है, लेकिन यह जाननेमें बहुत देर नहीं लगती कि यह एक भ्रांति है, बहुत बड़ा धोखा है। उसकी योजनाएं सफल नहीं होतीं, उसके प्रयास लोहेकी दीवार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर टकराते हैं। वह जितनी अच्छी तरह देखता और अवलोकन करता है उसे पता चलता है कि उसके हाथ-पांव बंधे हैं। उसे ऐसी शक्तियां और ऐसी चीजें चलाती हैं जिनपर उसे कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। वह परिस्थितियोंका दास है, उसे दूसरोंकी इच्छा-शक्ति टोकती रहती है। उसकी अपनी इच्छा-शक्तिके पास न शक्ति है, न क्षेत्र। वह बिलकुल प्रभावहीन है। उसे अधिकाधिक ऐसा लगता है मानों एक बड़ा भार उसके सिरके पिछले भागको दबा रहा है और उसे नीचे झुकाता जा रहा है, उसके कंधोंपर बहुत भारी बोझा रहता है। वह लद्दू जानवरकी तरह किसी-न-किसी तरह घसिटता जाता है। न उसे चुननेका अधिकार है, न उसमें संकल्प-बल है, उसकी इच्छाओं और कामनाओंकी सलाह नहीं ली जाती। उसे असहाय अवस्थामें आगे हांका जाता है।

लेकिन कहानीका अंत यहीं नहीं है। आदमी अगर चाहे तो परिस्थितिको बदल सकता है, सारी चीजको पलट सकता है। उसके अंदर स्वाधीनताका उत्स है — जिसे वह बड़े धुंधले रूपमें अपनी बाहरी चेतनामें अनुभव करता है। पर एक ऐसा केंद्र है जहांसे वह प्रतिक्रिया कर सकता है, अपनी चला सकता है। उस केंद्रमें ही उसका स्वधर्म, उसकी सत्ताका विधान रहता है। यह है उसकी अंतरात्मा। अगर वह एक वार उसके संपर्कमें आ जाय, उसे अपने जीवनका आधार बना ले तो उसी क्षणसे वह स्वतंत्र हो जाता है। वह अपना सिर ऊंचा रख सकता है, वह फिर झुका नहीं रहता, असह्य परिस्थितियोंका बोझ उसे दबा नहीं पाता। वह परिस्थितियों-से पार चला जाता है, वह उनके ऊपर खड़ा होकर उन्हें ऊपरसे देखता है। अब वह उनका प्रभु है, वह उनका हुकुम नहीं मानता, उन्हें उसका हुकुम मानना पड़ता है।

जब दोहरी बाधाएं टूट जाती हैं तो सर्वोत्कृष्ट पूर्णाहुति वह होती है जिसकी मैं बात कर रही थी। पहली चीज है ऊपरके अवगुंठनमें प्रवेश, जब चेतना अतिचेतनामें ऊपर उठ जाती है, मानव सत्ताको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवी सत्तामें ले जाती है। दूसरी चीज है निचले परदेका फाड़ना और भागवत चेतनाका निचले, अत्यंत जड़ भौतिक चेतनाके अवचेतना और निश्चेतनामें अवतरण, यहां धरतीपर भागवत जीवनकी उपलब्धि।

आन्तरिक और बाह्य

सत्ताका बाहरी भाग भगवान्की ओर अभिमुख है। तुम अपने आदर्शके बारेमें सचेतन हो और जहांतक हो सके तुम अपने व्यवहार-को उसके अनुसार रखनेकी कोशिश करते हो। तुम जैसे बनना चाहते हो वैसे लगते हो। लेकिन पंक्तिके ठीक पीछे, तुम्हारी चेतना-के उस पार, जिसे अवचेतना कहते हैं, चित्र और ही तरहका है। वहांतक ज्योति नहीं पहुंची है, वहांकी गतिविधि उलटी ही है। वस्तुएं — विचार, आवेग, संवेदन — छिपी रहती हैं और तुम उन्हें स्वीकारना पसंद न करोगे। ऐसी बात नहीं है कि तुम जान-बूझकर या सचेतन रूपसे उन्हें छिपाते हो। वे आदिम सामान्य चेतनाके भाग हैं। चेतनाका पिछवाड़ा उनसे बना हुआ है, उसमें सब प्रकार-के कोने, आले वगैरा हैं, खुले मैदान भले न हों, जहां अंधकार और धूलका संग्रह है। यह दो तरफापन व्यापक है, बल्कि कह सकते हैं, सार्विक है। तुम्हें एक तरफा होना चाहिये, यानी, एक राशि बनना चाहिये जो पूरी तरह प्रकाशकी ओर अभिमुख हो। तुम्हें इन छिपे तत्त्वोंके बारेमें सचेतन होना चाहिये, उन्हें खींचकर बाहर निकालो, शांतिके साथ, बिना किसी भयके, स्पष्ट रूपसे बाहर निकालो ताकि ज्योतिर्मय शक्ति उनपर काम कर सके। उन्हें बाहर निकालकर त्याग देना चाहिये और अगर संभव हो तो शुद्ध करना और बदलना चाहिये। उनमेंसे कुछ चीजें बदली जा सकती हैं और उचित गति-योंमें बदल जाती हैं। कुछ पूरी तरह गलत और अनुचित रहती हैं। ये घटिया चेतनाकी चीजें हैं जिन्हें निर्दय होकर उखाड़-फेंकना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर-चेतनाकी शक्ति

चेतनाकी एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें तुम देखते हो कि वस्तुओं, परिस्थितियों, गतियों, जीवनके सभी क्रिया-कलाप आदिका तुमपर जो प्रभाव पड़ता है वह पूरी तरह, उनकी ओर तुम्हारी वृत्तिके आधारपर होता है। तब तुम सचेतन हो जाते हो, यहांतक सचेतन हो जाते हो कि यह जान जाते हो कि चीजें अपने-आपमें न बुरी हैं न अच्छी। वे हमारे साथ जो संबंध होता है, उसकी दृष्टिसे अच्छी-बुरी होती हैं। मेरा कहना है कि उनका प्रभाव इसपर निर्भर है कि हम उन्हें किस दृष्टिसे देखते हैं। उदाहरणके लिये अगर हम यह मानें कि परिस्थितियां भगवान्‌की देन हैं, भागवत कृपा हैं, समग्र सामंजस्यका परिणाम हैं तो इससे हमें अधिक सचेतन अधिक सच्चा और अधिक बलवान् बननेमें सहायता मिलेगी। ठीक उन्हीं परिस्थितियोंको अगर हम और तरहसे लें, भाग्यका प्रहार मान लें, हमें हानि पहुंचानेकी इच्छुक शक्ति मान लें तो वही हमारी चेतनाके लिये बाधक बन जाती हैं, हमारी शक्ति घटा देती हैं, अंधेरा लाती हैं और असामंजस्यकी सृष्टि करती हैं। मैं चाहूंगी कि तुम्हें इसका अनुभव हो और परीक्षण कर देखो। तुम्हारा आदर्श है अपना स्वामी आप बनना। लेकिन इतना ही नहीं। तुम्हें केवल अपने-आपका स्वामी नहीं बनना है बल्कि अपने जीवनकी परिस्थितियोंका, अपने निकटस्थ वातावरणकी परिस्थितियोंका, जिसके साथ तुम्हारा संबंध है, स्वामी बनना है। तुम्हें इस बातका ख्याल रखना चाहिये कि यह परीक्षण केवल मनतक ही सीमित नहीं है, यह केवल तुम्हारे मस्तिष्कमें ही सीमित नहीं होना चाहिये। यह तुम्हारे शरीरमें भी जारी रह सकता है और रहना चाहिये। निश्चय ही यह एक ऐसी उपलब्धि है जिसमें बहुत परिश्रम, बहुत एकाग्रता और आत्म-प्रभुत्व होना चाहिये। तुम्हें जबरदस्ती अपने शरीरमें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घन भौतिक द्रव्यमें, चेतनाका प्रवेश कराना होगा। अंतमें शरीरकी वृत्ति सारी चीजका निर्णय करेगी। बाहरी जीवनके संपर्क और धक्के, उन्हें जिस तरह लिया जाता है उसके अनुसार शरीरकी प्रवृत्तिको बदलेंगे। अगर तुम उस दिशामें पूर्णता प्राप्त कर लो तो तुम दुर्घटनाओंके स्वामी भी बन सकते हो। इस प्रकारकी चीज संभव है, केवल संभव ही नहीं, इस तरह होना आवश्यक है क्योंकि यह मनुष्यकी प्रगतिमें अगला कदम है। सबसे पहले तुम्हें अपने मनमें वह शक्ति प्राप्त करनी चाहिये जो परिस्थितियोंको बदल सके, तुम्हारे ऊपर उनके प्रभावको बदल सके। तब वह शक्ति तत्त्वमें उतर सकती है, पदार्थमें आ सकती है, तुम्हारे शरीरके कोषाणुओंमें आ सकती है और तुम्हारे शरीरको वह क्षमता दे सकती है जिससे तुम्हें अपने बाहर, चारों ओरकी परिस्थितियोंपर प्रभुत्वकी क्षमता प्राप्त हो।

संसारमें कोई भी चीज असंभव नहीं है। हम अपने-आप सीमा बना लेते हैं। हम हमेशा कहते हैं: "यह संभव है, यह असंभव है, यह किया जा सकता है, यह नहीं किया जा सकता।" कभी-कभी हम एक चीजको संभव तो मानते हैं पर पूछते हैं: "करेगा कौन इसे? इसलिये यह करना संभव नहीं" आदि, आदि। हम अपने-आपको दासोंकी तरह, बन्दियोंकी तरह बांध लेते हैं। तुम इसे सामान्य बुद्धि कहते हो, मगर यह मूर्खतापूर्ण, संकुचित, अज्ञान-भरा संवेदन है। वह सचमुच जीवन-विधानोंसे अवगत नहीं है। जीवन-विधान वे नहीं हैं जिन्हें हम मान लेते हैं, हमारा मन या हमारी बुद्धि जिनकी कल्पना करते हैं। वे बिलकुल भिन्न हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा - मानव और दिव्य

मानव जातिकी सेवा करनेकी इच्छामें, दूसरोंका भला करनेकी इच्छामें महत्त्वाकांक्षा और अहंकार दिखायी देते हैं? कैसे?

तुम मानवजातिकी सेवा क्यों करना चाहते हो? तुम्हारा उद्देश्य क्या है? इसका हेतु क्या है? क्या तुम जानते हो कि मनुष्यका भला किसमें है? और क्या तुम मानवजातिसे भी ज्यादा अच्छी तरह जानते हो कि उसके लिये क्या अच्छा है? क्या तुम भगवान्‌से भी बढ़कर जानते हो? तुम कहते हो कि भगवान् हर जगह हैं इसलिये अगर तुम मनुष्योंकी सेवा करो तो यह भगवान्‌की सेवा ही है। ठीक है, अगर भगवान् सब जगह हैं तो तुम्हारे अंदर भी हैं, इसलिये सबसे ज्यादा युक्तियुक्त और न्यायसंगत बात तो यह होगी कि स्वयं अपनी सेवासे शुरू करो।

तो क्या मानवजातिकी सेवाकी कोई जरूरत नहीं है? हस्पताल, आतुरालय, परोपकारी संस्थाएं उपयोगी नहीं हुईं? क्या परोपकार-भावनाने मानव-जीवनकी अवस्थाको संवारा-सुधारा नहीं है?

मैं पूछती हूं क्या उसने सचमुच सुधारा है? तुमने यहां-वहां थोड़े-से लोगोंकी सेवा करनेकी कोशिश की है, लेकिन जो कुछ करनेकी जरूरत है उसकी तुलनामें यह क्या है? वही, समुद्रमें एक बूंद, या उससे भी कम। तुम्हें सेंट वैंसां द पालकी कहानी याद है? उसने गरीबोंको दान देना शुरू किया। पहले दिन दस थे, दूसरे दिन बीस आये, तीसरे दिन पचाससे अधिक हो गये और उनकी संख्या गुणोत्तर अनुपातमें बढ़ने लगी। और फिर? राजाके मंत्री कोलबर्टने संतकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह अवस्था देखकर कहा : "ऐसा लगता है हमारे भाई गरीबोंकी अनंत पंक्तिको जन्म देते जाते हैं।"

मुझे नहीं लगता कि परोपकारकी भावनाने मानवजातिकी अवस्था-को जरा भी सुधारा है। मुझे नहीं लगता कि इसके कारण मनुष्य कुछ कम या अधिक रोगी या दरिद्र हुए हों। परोपकार-भावना हमेशा रही है और दुःख-दारिद्र्य उसके साथ रहते आये हैं। मुझे नहीं लगता कि इनका अनुपात कुछ कम हुआ है। तुम्हें याद है किसीने बड़े व्यंग्यके साथ परंतु उचित ही कहा था : "वैज्ञानिक दुःख-दारिद्र्यको कम करनेकी कोशिश तो कर रहे हैं पर इसके कारण बेचारे परोपकारियोंकी बुरी हालत हो जायगी। उनका व्यापार ही बंद हो जायगा।" मनुष्यकी परोपकार-भावनाका सच्चा कारण कहीं और है, वह अपने-आपको प्रसन्न करना चाहता है, यह आत्म-तुष्टिके लिये है। तुम्हें इसमें मजा आता है। तुम्हारे अंदर यह भाव आता है कि तुम कुछ कर रहे हो, तुम मानवजातिके एक महत्त्वपूर्ण अंग हो, तुम औरोंकी तरह नहीं हो, तुम कुछ हो, तुम्हारा भी कोई स्थान है। इसका मतलब इसके सिवा और क्या है कि तुम मिथ्या-अभिमानी हो, अपने महत्त्वसे, अपने-आपसे भरे हो? मेरा मतलब यही था जब मैंने कहा कि तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा या तुम्हारा अहंकार ही तुम्हें परोप-कारी बनाता है। हां, अगर तुम्हें यह काम करनेमें रस आता है, तुम यह करनेसे सुखी होते हो तो तुम यह करनेके लिये या इसे जारी रखनेके लिये पूरी तरह स्वतंत्र हो। लेकिन यह कल्पना न करो कि इसके द्वारा तुम मानवजातिकी कोई सच्ची या प्रभावशाली सेवा कर रहे हो, विशेष रूपसे यह कल्पना बिलकुल न करो कि इसके द्वारा तुम भगवान्‌की सेवा कर रहे हो या आध्यात्मिक जीवन बिता रहे हो या योग कर रहे हो।

परोपकारकी भावनाके पीछे कैसा भाव काम करता है इसका एक यह उदाहरण ले सकते हो। दानी पुण्यात्मा किसी ऐसे कामके लिये खुले हाथों दान देगा जो प्रसिद्ध है, जिसे परोपकारके कामके रूपमें

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान्यता मिलती है, जिसकी सराहना होती है। यदि उस कामके साथ उसका नाम जोड़ दिया जाय, उसकी घोषणा की जाय, उसके कारण उसे ख्याति मिले तो वह जरूर उदार होगा। लेकिन उससे किसी सच्चे, अपेक्षया मामूली या सामान्य पथसे अलग किसी कामके लिये कुछ मांगो, किसी ऐसी चीजके लिये मांगो जो सचमुच आध्यात्मिक या दिव्य है, ऐसी चीजके लिये उसका बटुआ बंद ही रहेगा, उसका हृदय बंद रहता है। साधारण परोपकारीको ऐसे दानमें कोई मजा नहीं आता, उसकी ओर आकर्षण नहीं होता जिससे दाताको कुछ न मिलता हो। दानियोंकी इससे भिन्न एक और श्रेणी भी है जो देती तो है, लेकिन गुमनाम रहकर। अगर उनके नामकी घोषणा कर दी जाय तो वे बिगड़ बैठेंगे। लेकिन यहां भी पीछेका हेतु पहलेसे भिन्न नहीं है। हम कह सकते हैं कि हेतु वही, पर उलटी ओर काम करता है। यहां अपनी महिमाका एक और तत्त्व आ जाता है। कोई देता है और लोगोंको पता भी नहीं चलता कि कौन दे रहा है, यह गर्वके लिये एक और कारण बन जाता है।

तुम्हें अपने अंदर झांकना चाहिये, अपने-आपसे पूछना चाहिये, जब तुम देखो कि तुम कुछ इसलिये करना चाहते हो क्योंकि लोग ऐसा करते हैं, या यह करनेकी प्रथा है। तुम दूसरोंका भला कर सकते हो अगर तुम्हें मालूम हो कि वह भला क्या है और वह स्वयं तुम्हारे अंदर हो। अगर तुम औरोंकी सहायता करना चाहते हो तो तुम्हें उनसे ज्यादा ऊंचे स्तरपर होना चाहिये। अगर तुम औरों जैसे ही हो, प्रकृति और चेतनाके उसी स्तरपर हो तो तुम उसके सिवा कर ही क्या सकते हो कि उनके अज्ञानमें, उनकी अंधी क्रियाओंमें भाग लो और उन्हें स्थायी बनाओ? तो वास्तवमें यह बात ठीक है कि सबसे पहले तुम्हें स्वयं अपनी सेवा करनी चाहिये।

अगर तुम यह जाननेकी कोशिश करो कि तुम क्या हो और कौन हो तो तुम एक बहुत विलक्षण खोज करोगे। तुम्हें शुरू इस तरह करना चाहिये: "मैं मानवजातिकी सेवा करना चाहता हूं। मैं सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे कर सकता हूं? यह "मैं" है कौन जो सेवा करना चाहता है?" तुम कहते हो: "मैं अमुक व्यक्ति हूं, मेरा यह नाम है, यह रूप है।" लेकिन आज तुम्हारा जो रूप है यह तुम्हारे बचपनमें न था: यह हमेशा बदलता रहा है। तुम्हारे शरीरके सभी तत्त्व बराबर बदलते ही रहते हैं। तुम्हारे संवेदन और तुम्हारी भावनाएं भी वह नहीं हैं जो कुछ वर्ष पहले थीं। तुम्हारे भावों और विचारोंमें भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। इस "मैं" के पीछे ऐसी बहुत-सी चीजें हैं जो हमेशा बदलती रहती हैं। ऐसी कोई विशिष्ट वस्तु नहीं है जिसे "मैं" कहा जा सके: वह परिवर्तनोंका केवल एक चक्र ही है। एक खोखला नाम ही "मैं" में स्थायी तत्त्व है। एक समय एक तत्त्व सामने आता है — कोई विचार, कोई संवेदन, कोई भाव — और उस क्षणके लिये वही तुम्हारा "मैं" बन बैठता है। किसी दूसरे समय कोई और चीज आती है और "मैं" बन जाती है। तुम एक "मैं" नहीं हो, बल्कि बहुत सारे, "मैं" ओंका समूह हो। तो इसमेंसे एक "मैं" की इस घोषणाका क्या मूल्य है कि उसने लक्ष्य या सत्य पा लिया है, उसे मालूम हो गया है कि उसे किस कर्तव्यका पालन करना है? अगर तुम इस तरह आगे बढ़ो, प्रश्न करते और अपना विश्लेषण करते चलो, पूरी सचाईके साथ अच्छी तरह देखते चलो, तो तुम वास्तविकतासे जा टकराओगे, तुम्हें पता लगेगा कि "मैं" का अस्तित्व ही नहीं है। जो सचमुच है वह बिलकुल भिन्न, एकमात्र, अविभाज्य वास्तविकता, भगवान् है।

अपने बारेमें यह खोज तुम्हें आधारभूत ज्ञान देगी, जीवनकी नींव देगी कि तुम्हारा "अपनापन" कोई है ही नहीं। तुम सचमुच कुछ भी नहीं हो। तुम्हारी सत्तामें यह कुछ नहीं का भाव फैला रहना चाहिये, तुम्हारी सत्ताके सभी अंशों और तत्त्वोंमें फैला रहना चाहिये; तभी तुम्हारे ऊपर सत्यका उदय हो सकता है और भागवत सत्ताका अनुभव हो सकता है। तुम जो करते आ रहे हो वह इससे ठीक उलटी चीज है; अपने अहं, अपने मिथ्या-अभिमानको अक्षुण्ण बनाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए अपने-आपको यह दिखाते हो कि तुम भी कोई हो और तुम भी कुछ कर सकते हो, कि संसारको तुम्हारी सहायताकी जरूरत है और तुम वह सहायता दे सकते हो। लेकिन ऐसी बात बिलकुल नहीं है। जब तुम इस सत्यको खोज लो और स्वीकार कर लो, जब तुम विनम्र हो जाओ और सच्ची नम्रताके साथ जीवन और वास्तविकताकी ओर अभिमुख होओ, तो तुम अपना वास्तविक जीवन और सच्चा व्यवसाय पा सकोगे।

एक ज्यादा गहरे अर्थमें, वास्तवमें अपनी ही सेवाके द्वारा तुम औरोंकी सेवा सर्वोत्तम रीतिसे कर सकते हो। जब तुम अपने अंदर एक अंधेरा स्थान पाओ, एक चावल-भर अहं, महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थ देखो और तुम उसके आवेगके आगे सिर न झुकाओ, बल्कि उसपर विजय प्राप्त करो, जब तुम अपने अंदर किसी ऐसी गतिको जीत लो जो तुम्हें झटका देती है, तो उस एक ही झटकेमें, उसी चेष्टाके द्वारा तुम दूसरोंके लिये भी वह विजय प्राप्त करते हो, तुम औरोंके लिये वही संभावना पैदा कर देते हो। इस तरह व्यक्तिगत उदाहरण रखनेसे बढ़कर कोई और क्रियाशील, प्रभावशाली चीज नहीं हो सकती। यह बात नहीं है कि दूसरे तुम्हें देखते और तुम्हारा अनुकरण करते हैं; नहीं, इसका प्रभाव ज्यादा सूक्ष्म और शक्तिशाली होता है। तुम एक अवसर पैदा करते हो, एक उद्घाटन करते हो, अपनी उपलब्धिकी शक्तिको क्रियाशील बनाते हो, औरोंके जाने बिना ही उन्हें इस अज्ञात, अदृश्य सहायतासे लाभ होता है। लेकिन यहां भी तुम्हें सावधान रहना चाहिये। तुम्हें यह न कहना चाहिये : "मैं औरोंकी सहायता करूंगा, इसलिये चलो, अपने-आपको सुधारूं।" इस तरहके लेन-देन या सौदाबाजीका कोई भाव नहीं होना चाहिये। अपने-आपको अपने कामतक ही सीमित रखो, तुम्हारे कार्यका दूसरोंपर कैसा प्रभाव होता है या नहीं होता, इससे तुम्हें मतलब नहीं। अगर तुम उस तरहके विचारोंको पोसो तो उसी अहं और महत्त्वाकांक्षाको पिछले दरवाजेसे निमंत्रित करोगे। तुम्हारी प्रगति फूलके खिलनेकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह होनी चाहिये। वह अपने ही हर्षसे, अपने-आपको चरितार्थ करनेके आनंदमें खिलता है और इस प्रक्रियामें, अपने अस्तित्वके द्वारा अपनी सुरभि चारों ओर फैलाता है, अपने इर्द-गिर्द प्रसन्नताके स्पंदन भर देता है, लेकिन यह सब यूं ही हो जाता है। फूल जान-बूझकर, योजना बनाकर यह नहीं करता। इसी तरह जो अंतरात्मा अपने-आपको पूर्ण बनाती है, जब वह अपने लिये विजय प्राप्त करती है तो उसकी पूर्णता और विजयका असर अपने-आप फैलता है।

मैंने कहा कि तुम्हारा अहं एक भ्रांति है। तुम्हारे "मैं" का कोई अस्तित्व ही नहीं है। पृथक्त्व, स्पष्ट व्यक्तित्व और व्यक्तिगत परिपूर्णताके जैसी कोई चीज ही नहीं है। केवल भगवान् और भागवत संकल्पका अस्तित्व है। वही एकमेव, अनन्य, सभीको अपने अंदर लेनेवाली सद्वस्तु है। तब फिर इस विभिन्नता और विविधताका स्रोत कहां है? इन विभिन्न व्यक्तित्वों और अस्तित्वोंका, संसारके मंचपर उनके आने-जाने और लीला करनेका अर्थ क्या है — यदि कोई अर्थ है?

यह एक और ही कहानी है। मैं इसे किसी अगले अवसरके लिये छोड़ती हूं।

भागवत परिवार

जब लोग दूर-दूर फैले हुए, संसारके अलग-अलग भागोंके विभिन्न पेशोंके लोग एक जगह मिलकर एक सर्वसामान्य उद्देश्यके लिये काम करते हैं तो इसका मतलब है कि वे सगोत्र आत्माएं हैं और पहले भी अनेक जीवनोंमें मिल चुकी हैं, मिलकर काम कर चुकी हैं। उन्होंने अनुभव किया कि वे एक ही परिवारकी हैं और उन्होंने एक सामान्य उद्देश्यके लिये मिलकर काम करने और सार्विक आदर्शके लिये सामान्य प्रयासमें एक-दूसरेको सहयोग देनेका निश्चय किया है। वास्तवमें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी चैत्य वास्तविकतामें अंतरात्माएं बड़े-बड़े परिवारोंके रूपमें यूथ बनाकर रहती हैं और वे जिस काममें लगी हैं उसे पूरा करनेके लिये दल-बल बनाकर बार-बार धरतीपर आती रहती हैं, जबतक कि उनका काम पूरा न हो जाय।

निश्चित समयपर, घड़ी आनेपर उन्हें टेर लगायी जाती है। अंतरात्माएं सोते हुए बच्चों जैसी होती हैं और अगले जन्मके लिये प्रेरणा या आदेशकी प्रतीक्षामें चैत्य लोकमें विश्राम करती रहती हैं। जैसे ही आदेश मिलता है वे धरतीकी ओर दौड़ पड़ती हैं। जब वे इस प्रकार धरतीपर टपकती हैं तो सब एक साथ नहीं होतीं। वे सारी धरतीपर इधर-उधर बिखर जाती हैं, किसीको पता नहीं होता कि वह कहां गिर रही हैं और फिर एक बार यहां भौतिक अवस्थामें, भौतिक परिस्थितियोंके कारण सारी चीज ही बदल जाती है। आंतरिक प्रेरणा, या मौलिक उद्देश्यपर परदा पड़ जाता है, चैत्य अपने-आपको भूल जाता है और उसके चारों ओर ऐसी शक्तियों, वस्तुओं और व्यक्तियोंका जमघट लग जाता है जो उसके लिये एकदम पराये और उसकी प्रकृतिके विरुद्ध होते हैं। अब आता है अंतरात्माका श्रम। उसे अपने-आपको खोजना होता है, धागेके उलझे हुए सिरेको ढूंढ़ निकालना होता है। आंतरिक प्रेरणा काफी मजबूत होनी चाहिये, उसका मौलिक संकल्प इतना सुस्पष्ट और निश्चित होना चाहिये कि सत्ता सभी अड़चनोंको पार कर सके, सभी कठिनाइयोंमेंसे निकल सके, भूल-भुलैयाके रास्तोंको पार कर सके और यह सब करके अपने लक्ष्यपर जा पहुंचे। कुछ शायद किसी विशेष जीवनमें वहांतक नहीं पहुंच पाते या पहुंचकर थोड़ी दूरीपर ही रुक जाते हैं; दूसरे सीधे रास्तेसे नहीं आते, बल्कि जैसे मैंने कहा था, टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे भूलते-भटकते आते हैं। दूसरे शब्दोंमें, वे अपने बाह्य मन और आवेगोंमें अन्य वस्तुओंकी ओर देखते हैं, उन्हें ऐसी चीजोंमें रस होता है जिनका अंतरात्माके साथ दूरका रिश्ता भी नहीं होता। उदाहरणके लिये, वह स्त्री जो किसी योगीकी तलाशमें थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि उसे आशा थी कि योगी उसकी खोयी हुई सुन्दरताको वापिस ला देगा। फिरै भी अंतरात्मा ऐसी छोटी-मोटी, ऊट-पटांग बातोंका भी उपयोग कर लेती है और इनके द्वारा मनुष्यको अपने असली रूप-की ओर भेजती है या धीरे-धीरे उस जगह या उस परिवारकी ओर भेजती है जहांका वह वास्तवमें है।

भौतिक जगत् ऐसी चीजोंसे भरा है जो तुम्हें अंतरात्माकी खोजसे भटका देती हैं, तुम्हें अपने असली घरतक नहीं जाने देतीं। साधारणतः अज्ञानमय प्रकृतिकी शक्तियां तुम्हें इधर-उधर उछालती रहती हैं और तुमसे अधिक-से-अधिक मूढ़ता-भरी बातें करवाती हैं। इन सबका बस एक ही समाधान है: अपने चैत्य पुरुषकी खोज करो और एक बार उसे पा लो तो बस उसके साथ बहुत जोरसे चिपक जाओ और कोई भी प्रलोभन तुम्हें वहांसे अलग न करने पाये — चाहे कुछ क्यों न हो।

कलाकी प्रकृति और नियति

सच्ची कला भौतिक जगत्में सौंदर्यकी अभिव्यक्ति है। एक ऐसे जगत्में जो पूरी तरह बदल गया हो, अर्थात्, जो पूर्ण रूपसे दिव्य सद्वस्तुको अभिव्यक्त करता हो, कलाको जीवनमें दिव्य सौंदर्यका शिक्षक, प्रकाशक होना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें, कलाकारको भगवान्के साथ संपर्क स्थापित करके यह प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिये कि दिव्य सौंदर्यकी भौतिक अभिव्यक्तिके लिये कौन-कौन-से रूप होने चाहिये। साथ ही, भौतिकमें सच्चे सौंदर्यको प्रकट करनेके लिये वह एक उदाहरण प्रस्तुत करता है और शिक्षाका माध्यम बन जाता है। कला न केवल सौंदर्यका सर्जन करती है, बल्कि लोगोंमें सच्चे सौंदर्यके लिये रस भी पैदा करती है, उस तात्त्विक सौंदर्यके लिये प्रशिक्षित करती है जो भागवत सत्यको प्रकट करता है। कला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सच्ची भूमिका यही है। लेकिन उसके और आज जो अवस्था है उसके बीच बहुत फर्क है।

विकासके साधारण क्रममें ह्रास आता ही है क्योंकि विकास कुण्डलाकार गति करता है। पिछली शताब्दीके आरंभसे मध्यतक कला बिलकुल ही कुत्सित, व्यापारी, धुंधली, अज्ञानपूर्ण वस्तु बन गयी थी जो अपने सच्चे स्वभाव और कार्यसे बहुत दूर थी। लेकिन कलाकी आत्मा नहीं मर सकती। लेकिन चूंकि यह चीज एक विरोध या विद्रोहके रूपमें उठी थी इसलिये उसने जो रूप चुने वे भी उतने ही बुरे थे। साधारण रसके ह्रासका विरोध करने, उसकी क्रियाको व्यर्थ करनेके प्रयासमें वह दूसरे छोरतक जा पहुंची, प्रकृतिकी सभी गतिओंका यही स्वभाव है। एकके बारेमें कहा जाता था कि वह प्रकृतिकी दासतापूर्ण नकल थी या फिर उससे भी गयी-बीती। उन दिनों उसे फोटोग्राफी कला कहा जाता था। तब यह गाली थी परंतु आज ऐसा नहीं है क्योंकि फोटोग्राफी एक उत्कृष्ट कला बन गयी है! उसे सचमुच वास्तविकतावादी भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ऐसे वास्तविकतावादी चित्र हैं जिन्हें बहुत उच्च कोटिमें रखा जा सकता है। वह कला परंपरावादी, नकली और जीवनरहित थी। इसकी प्रतिक्रियाने कहा : "हम अब भौतिक जीवनके साथ संबंध नहीं रखते, हमने जिस सद्वस्तुको अपनी बाहरी आंखोंसे देखा है उसके साथ हमारा कोई संबंध नहीं है। उसकी जगह हम प्राणिक जीवनको, मानसिक जीवनको अभिव्यक्त करना चाहते हैं। अब बहुत सारे सुधारक और विद्रोही आये — घनवादी (क्यूबिस्ट), अतियथार्थवादी (सूर-रियेलिस्ट), और भविष्यवादी (फ्युचरिस्ट) आदि आदि जिन्होंने अपने मस्तिष्कसे कलाका सृजन करना चाहा। वे यह साधारण-सा सत्य भूल गये कि कलामें मस्तिष्कका आदेश नहीं चलता, वहां मुख्य है हृदयमें सौंदर्यका संवेदन। इसलिये कला एकदम वाहियात, उपहासास्पद और भयंकर लोकोंमें जा गिरी। वास्तवमें, दो महायुद्धोंके कारण हम इस दिशामें और भी आगे बढ़ गये हैं। प्रत्येक युद्ध एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विघटित होते हुए जगत्को उतार लाया है और अब ऐसा लगता है कि हम अव्यवस्थाके हृदयमें बैठे हैं।

शायद हम वक्र पंक्तिके सबसे निचले भागतक जा पहुंचे हैं और अब ऊपर उठनेकी बारी है। शायद विघटन एक आवश्यक प्रस्तावना है। एक दृष्टिसे यह रानी विक्टोरिया और फ्रांसके दूसरे साम्राज्यकी अवस्थासे ज्यादा अच्छी हालत है। वह व्यावहारिक दृष्टिसे सफल मध्यवर्गका, सुखद संतोष और मंद सामान्यता तथा जीवनमें मृत्युका जमाना था। जैसा कि मैंने कहा, प्रगतिकी रेखा वक्र गतिसे चलती है। किसी युगमें सुन्दर चीजें सुन्दर रीतिसे अभिव्यक्त की जाती हैं, फिर एक दूसरा जमाना आता है जब लोग पुरानी चीजोंसे ऊब जाते हैं और नयी चीजोंको नये ढंगसे प्रकट करना चाहते हैं। उदाहरणके लिये, चौदहवें लुईके जमानेमें अमुक प्रकारका कलात्मक सृजन उन्नतिके शिखरपर था, जीवन और कला, दोनोंमें सौंदर्यका बोलबाला था। विकासके क्रममें दूसरे विचार आये, दूसरी आवश्यकताएं प्रकट हुईं और व्यापारिक युग शुरू हुआ और कलाकी वक्र रेखा नीचेकी ओर चल पड़ी। व्यापारसे ज्यादा कला-विरोधी चीज कोई और नहीं है, कला और व्यापारके मेलका अर्थ होता है एक ऐसी चीजको लोकप्रिय बनाना जो विशिष्ट लोगोंके लिये है, उस चीजको सबके, हर ऐरे-गैरेके पास पहुंचाना है जिसे कुछ गिने-चुने, अभिजात लोग ही समझ और सराह सकते हैं। शायद इसीलिये, क्योंकि कला-जगत्में कहीं रास्ता नहीं मिलता इसलिये उसने दूसरे मार्ग अपनाये हैं, मानसिक और प्राणिककी ओर, तथा चेतनाके गली-गलियारोंमें मुड़ गयी है। लेकिन जब स्थिति अच्छी होगी, व्यापार-बुद्धिकी जगह ज्यादा सुन्दर सद्वस्तुकी भावना ले लेगी: तब कलाका नया जन्म होगा और वह फिरसे अपना जीवन पायेगी। लेकिन वह जमाना अभी दूर लगता है।

इस ह्रासोन्मुख कालकी कलाको मैं कुकुरमुत्ता कला कहती हूं। तुम जानते हो न, कुकुरमुत्ते कैसे पैदा होते हैं? वे कहीं भी उग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते हैं, ऐसा लगता है कि वे जहां उगते हैं उसके अंग नहीं बनते। जरा सोचो तो!. दीवारका एक भाग गीला हो जाता है और तुम देखते हो कि वह हिस्सा कुकुरमुत्तोंसे भर गया है। तुम्हारे यहां कोई पेड़ है जिसपर धूप नहीं आती। तुम देखोगे उसकी जड़ें कुकुरमुत्तोंसे ढक गयी हैं। यह एक प्रकारकी जंगली उपज है जिसका उस जगहके साथ कोई नाता नहीं होता जहां यह पैदा होती है। वह अपने परिवेशका अंग नहीं बनता। मैं पराश्रयी जीवोंकी बात भी कह सकती थी। वे भी इसी प्रकारके होते हैं। तुमने पराश्रयी पौधे देखे हैं? वे पेड़ोंपर उगते हैं। वे अपने-आपको पेड़ोंपर जमा लेते हैं। उनका अपना जीवन नहीं होता, अपने अंग नहीं होते। वे सामान्य पौधोंकी तरह धरतीसे पोषण नहीं लेते। वे दूसरोंके जीवनपर जीते हैं, औरोंके परिश्रमका लाभ उठाते हैं। पराश्रयी पशु भी होते हैं जो दूसरे पशुओंपर जीते हैं। दूसरोंके परिश्रमका लाभ उठाकर वृद्धि पाते हैं। पराश्रयी या कुकुरमुत्ते जहां होते हैं उन्हें वहां होनेका कोई अधिकार नहीं होता। वे आक्रामक, घुस-पैठ करनेवाले और असंगत होते हैं।

प्राचीन कालमें, महान् युगोंमें, उदाहरणके लिये, यूनानमें या इटलीके पुनर्जागरणके दिनोंमें, विशेषकर, यूनान और मिस्रमें सार्वजनिक उपयोगके लिये स्मारक या कीर्तिस्तंभ बनाये जाते थे। उनकी इमारतें अधिकतर मंदिरोंके रूपमें काम आनेके लिये होती थीं जहां वे अपने देवी-देवताओंको स्थान देते थे। उनकी दृष्टि हमेशा किसी समग्र, पूर्ण और समस्त दृष्टियोंसे पूर्ण सौंदर्यपर रहती थी। वहां स्थापत्यकी विस्तृत भव्य रेखाओंके सामंजस्यका यही अर्थ होता था। मूर्तिकला, स्थापत्यका एक भाग थी जो अभिव्यक्तिके ब्यौरोंको पूरा करती थी, चित्रकारी भी इस अभिव्यक्तिको पूरा करनेके लिये होती थी और सब चीजें मिलकर एक समन्वित इकाईका निर्माण करती थीं और वह इकाई थी वह समग्र कीर्ति-स्तंभ। मूर्तियां कीर्ति-स्तंभके लिये थीं, चित्रकला कीर्ति-स्तंभके लिये थी। ये चीजें एक-दूसरेसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग अपना अस्तित्व न रखती थीं जिसके बारेमें यह पूछा जा सके कि यह यहां क्यों है। उदाहरणके लिये, भारतके मंदिरोंको लो। जब किसी मंदिरका निर्माण होता था तो वह एक संपूर्ण समग्र रचना होती थी। उसके सभी भाग मिलकर एक निश्चित प्रभाव डालते थे। सब मिलकर उनके एकमात्र पूजनीय इष्टदेवका आवास बनाते थे। कलाके सभी महान् युगोंमें यही बात रही है। लेकिन आधुनिक कालमें, पिछली शताब्दीके अंतिम चरणमें कला व्यापारका विषय बन गयी। चित्र बनाया जाता था बेचनेके लिये। तुम अपने चित्र बनाओ। उनपर फ्रेम लगाकर बिना किसी सूझ-बूझके एक साथ रख दो। मूर्तिकलाके बारेमें भी यही बात है। तुम एक मूर्ति बनाकर, यह देखे बिना कि आस-पासकी चीजोंके साथ उसका कोई संबंध है या नहीं, उसे कहीं भी रख देते हो। वह हमेशा कोई विजातीय, पास-पड़ोसके लिये परायी चीज रहती है — ठीक कुकुरमुत्ते या पराश्रयीकी तरह। चीज अपने-आपमें बिलकुल भद्दी न भी हो, लेकिन अस्थानीय जरूर होती है, वह समग्रका भाग नहीं होती। हम कलाकी प्रदर्शनी करते हैं। वास्तवमें वह प्रदर्शन प्रवृत्ति है, यह अपने कौशल, प्रतिभा, क्षमता और प्रवीणताका प्रदर्शन होता है। जैसा कि एक जमानेमें हुआ करता था, आज स्थापत्य किसी जीवित-जाग्रत शक्तिका प्रतीक नहीं होता। अब वह किसी अभीप्साकी अभिव्यक्ति, किसी ऊपर उठानेवाली भावना या उस देवकी भव्यताका प्रतीक नहीं होता जिसका वह आवास होगा। तुम यहां-वहां यूं ही, बिना सोचे-समझे मकान बना डालते हो। उनमें आपसमें कोई मेल नहीं होता, कोई सामंजस्य नहीं होता, अड़ोस-पड़ोसके साथ कोई संबंध नहीं होता। तुम किसी मकानमें घुसो तो वहां भी यही चीज दिखायी देगी। यहां कोई चित्र लगा है, उधर कोई मूर्ति खड़ी है, इस कोनेमें कोई कलात्मक वस्तु रखी है, उस कोनेमें कोई और चीज पड़ी है। हां, यह प्रदर्शनवृत्ति ही होती है। एक संग्रहालय या बहुमूर्तिदर्शी संग्रह होता है — सचमुच कलात्मक सुरुचिवालेके लिये एक आघात होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं यह नहीं कहती कि संग्रहालयकी आवश्यकता नहीं होती या उसका कोई उपयोग नहीं होता; वह शिक्षाका अच्छा साधन होता है, अर्थात्, वहांपर हमें यह जानकारी मिलती है कि दूसरे लोगोंने दूसरे कालोंमें क्या किया था। यह चीजोंका ऐतिहासिक परिचय पानेमें सहायक होता है, लेकिन वह अपने-आपमें कलाकृति नहीं होता, नहीं, उससे बहुत दूर। संग्रहालय वह जगह नहीं है जहां कला अपनी उच्चतम या अपनी सच्ची अभिव्यक्ति कर पाती है। एक ऐसी कला है जो परस्पर-विरोधी चीजोंमें समन्वय करती है, विशिष्ट और विवेकपूर्ण समग्रता लाती है। इसे सज्जाकला कहते हैं और जहांतक इसका संबंध है हम सच्ची कलाकी ओर एक पग आगे बढ़े हैं।

यहां भारतवर्षमें चीजें कुछ भिन्न हैं और होनी भी चाहिये। यूरोपीय आधुनिकताके आक्रमणके बावजूद और अमुक दिशाओंमें कुछ भूलोंके होते हुए — यहां मैं उसका उल्लेख कर सकती हूं जिसे श्री-अरविन्द रवि वर्मा विष्कंभक कहते हैं — भारतका हृदय अंगरेज या यूरोपीय नहीं बना है। कलकत्ता शैली इसका एक चिह्न है, यद्यपि यह है छोटे पैमानेपर। फिर भी यह इस बातका सूचक है कि आधुनिक शिक्षाके होते हुए भारतकी कलात्मक सुरुचि अपनी सभ्यता और संस्कृतिके तात्विक और स्थायी अंशोंकी ओर ही मुड़ती है। पुराने मंदिर, पुराने चित्र अभीतक तुम्हारे सामने और तुम्हारी पहुंचके भीतर हैं जो तुम्हें यह सिखा सकते हैं कि कलाकी सृष्टि श्रद्धा-विश्वासको व्यक्त करनेके लिये, तुम्हें समग्रता और पूर्ण संगठनका भाव देनेके लिये होती है। तुम इस सिलसिलेमें एक और चीजकी ओर ध्यान दो जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। मंदिरों, गुफाओं और धार्मिक स्थानोंके इन चित्रों और मूर्तियोंपर कहीं भी कलाकारका नाम नहीं है। उन्हें नाम कमानेकी दृष्टिसे नहीं बनाया गया है। आजकल तुम कितनी भी छोटी चीज क्यों न करो, पहले उसपर अपना नाम जड़ देते हो, अखबारोंमें, इधर-उधर, बड़े जोशके साथ उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषणा करते हो ताकि लोग उस चीजको भूल न जायं। उन दिनों कलाकार जो करना चाहता था वह करता था, उसे यह परवाह न होती थी कि आनेवाली पीढ़ियोंको उसका नाम याद रहेगा या नहीं। यह काम उच्चतर सौंदर्यको अभिव्यक्त करनेकी अभीप्साके आधारपर, और उससे भी बढ़कर, जिस भगवान्‌का आवाहन किया जा रहा है उसके लिये उचित आवास बनानेकी दृष्टिसे किया जाता था। मध्य-कालीन यूरोपके कैथीड्रलोंमें भी इसी तरह काम होता था। उन दिनोंके वहांके कामोंपर भी कलाकारका नाम खोजे नहीं मिलता। अगर कोई नाम बचा रह गया है तो वह संयोगकी बात है।

फिर भी, बहुत भद्दा होते हुए भी आजके व्यापारवादमें भी कुछ फायदे हैं। व्यापारवादका मतलब है दुनिया-भरके सब भागोंका आपसमें मिलना-जुलना। यह पूरब और पश्चिमके भेदको मिटा देता है, पूरबको पश्चिमके और पश्चिमको पूरबके निकट लाता है। वस्तु-ओंके विनिमयके साथ-साथ विचार-विनिमय भी होता है, आदतों और आचरणोंका विनिमय भी होता है। प्राचीन कालमें रोमने यूनानको जीत लिया था और इस विजयके द्वारा स्वयं विजेता रोमको यूनानकी सभ्यता और संस्कृतिद्वारा जीत लिया गया था। आज शायद वही चीज बहुत बड़े पैमानेपर, अधिक तीव्रताके साथ हो रही है। एक समय था जब जापान अपने-आपको अमरीकी नमूनेके अनु-सार प्रशिक्षित कर रहा था, लेकिन अब जब कि भौतिक दृष्टिसे अमरीकाने जापानको जीत लिया है, वह जापानकी आत्माके आगे हथियार डाल रहा है। आज स्वयं अमरीकामें बनी चीजोंपर किसी-न-किसी तरहका जापानी प्रभाव दिखायी देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत—उसका उद्गम और स्वभाव

तुम्हें यह याद रखना चाहिये कि अन्य कलाओंकी तरह संगीत भी किसी भाव, किसी संवेदन, किसी भावना, किसी अभीप्सा या ऐसी ही किसी चीजको व्यक्त करनेका साधन है। एक ऐसा भी क्षेत्र है जहां ये सब गतियां उपस्थित रहती हैं, जहांसे इन्हें संगीतके रूपमें उतारा जाता है। थोड़ी-सी प्रेरणाके साथ एक अच्छा संगीतकार अच्छा संगीत बना लेता है और तब वह अच्छा संगीतज्ञ कहलाता है। एक बुरे संगीतज्ञके पास भी अच्छी प्रेरणा आ सकती है, वह उच्चतर लोकसे कुछ प्राप्त कर सकता है, लेकिन संगीतकी क्षमता न होनेके कारण बहुत ही मामूली, घिसा-पिटा और नीरस संगीत बनायेगा। फिर भी यदि तुम ऊंचे उठ जाओ और उस जगह जा पहुंचो जहांसे संगीत शुरू हुआ था, उस भावतक जा पहुंचो, उसके पीछेकी प्रेरणाको छू सको तो तुम बाहरी रूपमें अटके बिना ही इन चीजोंका रस ले सकते हो। फिर भी इस संगीतका उस पीछेकी चीजके साथ नाता जोड़ा जा सकता है जो रूपसे परे है, क्योंकि संगीतकी प्रेरणा तो वहींसे आयी थी। हां, ऐसे उदाहरण भी हैं जिनमें प्रेरणा नामके लिये भी नहीं होती, जिनमें संगीतका स्रोत यांत्रिक ध्वनिमें ही होता है। यह मजेदार नहीं होता। मैं जो कहना चाहती हूं वह यह है कि एक आंतरिक अवस्था होती है जिसमें बाह्य रूप सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं होता। उसमें संगीतकी प्रेरणा होती है और वह प्रेरणा कहीं परेसे आती है। यह है तो घिसी-पिटी बात, लेकिन आदमी प्रायः भूल जाता है कि संगीत केवल ध्वनिसे नहीं आता, ध्वनिके द्वारा अभिव्यक्त होनेवाली कोई चीज भी तो होनी चाहिये।

एक बिलकुल ही यांत्रिक संगीत होता है जिसमें कोई प्रेरणा नहीं होती। ऐसे संगीतज्ञ होते हैं जो बहुत कौशलके साथ बजाते हैं। वे संगीतकी तकनीकपर पूरा अधिकार पा लेते हैं और अधिक-से-अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जटिल और द्रुत गतियोंको भी बिना किसी भूलके बजा सकते हैं। शायद वह संगीत तो हो पर उसके द्वारा कुछ भी व्यक्त नहीं होता। वह मशीन जैसा होता है। उसमें होशियारी भले होती हो, उसमें कौशल भले हो, पर वह रुचिकर नहीं होता, उसमें आत्मा नहीं होती। केवल संगीतमें ही नहीं, सभी मानव सर्जनोंमें, मनुष्य जो कुछ करता है, सबमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है प्रेरणा। स्वभावत: आशा की जाती है कि प्रस्तुतीकरण भी प्रेरणाकी ही कोटिका हो। लेकिन सचमुच अच्छी तरह प्रकट करनेके लिये, तुम्हारे पास प्रकट करनेके लिये बड़ी चीजें होनी चाहिये। मेरे कहनेका यह मतलब नहीं है कि शिल्प या तकनीकका महत्त्व नहीं है, नहीं। तुम्हें तकनीकका बहुत अच्छा ज्ञान होना चाहिये, यह अनिवार्य है; लेकिन बस यही एकमात्र अनिवार्य चीज नहीं है और न यह प्रेरणाके बराबर महत्त्वपूर्ण है। संगीतका तात्त्विक गुण उस प्रदेशसे आता है जो उसका स्रोत है।

स्रोत या उद्गम वह चीज है जिसके बिना किसी वस्तुका अस्तित्व ही नहीं होता। ऐसी कोई चीज भौतिक रूपसे धरतीपर प्रकट नहीं हो सकती जिसका स्रोत किसी उच्चतर सत्यमें न हो। भौतिक अस्तित्वका मूल और उसकी प्रेरणा अगर उच्चतर सत्यमें न हो तो धरतीपर कुछ भी अभिव्यक्त नहीं हो सकता, इसी तरह प्राणके पीछे मन है और मनके पीछे अधिमन आदि। अगर विश्व एक चपटा पदार्थ होता जिसकी जड़ें उसीके अंदर होतीं तो उसका अस्तित्व बहुत जल्दी मिट जाता, विज्ञान जब सतत गतिको असंभव बतानेकी धारणा हमारे सामने रखता है तो शायद उसका यही मतलब होता है। जीवन इसलिये चलता रहता है क्योंकि उच्चतर स्रोत उसे प्रेरणा देता है। एक गुप्त ऊर्जा उसे अभिव्यक्तिकी ओर बढ़ाती रहती है। ऐसा न होता तो वह अपने-आपको कबका चुका बैठता।

संगीतके स्रोतमें एक क्रमिक सोपान है। संगीतकी एक पूरी श्रेणी उच्चतर प्राणसे आती है, वह बहुत मोहक होती है और शायद ज़रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंवारू भी। वह कुछ ऐसी चीज होती है जो मानों तुम्हारी स्नायुओंके चारों तरफ लपट जाती है और उन्हें ऐंठती है। यह तुम्हें जंघाओंके आस-पास नाभि-चक्र (मणिपूर) के आस-पास पकड़ती है और उस रास्ते तुम्हें मोह लेती है। जैसे एक प्राणिक संगीत होता है उसी तरह एक चैत्य संगीत भी होता है जो एक और ही स्रोतसे आता है। फिर एक और संगीत है जिसका स्रोत आध्यात्मिक होता है। अपने निजी प्रदेशमें यह संगीत बहुत ही बढ़िया होता है। यह तुम्हें गहराईमें पकड़ लेता है और कहीं और वहां ले जाता है। लेकिन अगर तुम उसे पूरी तरह अभिव्यक्त करना चाहो, उसे बजाना चाहो तो तुम्हें इस संगीतको भी प्राणिक स्तरमेंसे नीचे लाना होगा। अगर तुम्हारे अंदर प्राणिक स्पंदनकी तीव्रता नहीं है, जो उसे शक्ति और गौरव देती है, तो यह संगीत एकदम फीका पड़ सकता है। मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिनकी प्रेरणा तो बहुत ऊंची होती थी लेकिन उनका संगीत बिलकुल घटिया और मामूली होता था क्योंकि उनका प्राण गतिशून्य बना रहता था। उनकी आध्यात्मिक साधनाने उनके प्राणको लगभग पूरी तरह सुला दिया था। हां, वह सचमुच सोया पड़ा था और कुछ भी न करता था। इस तरह उनका संगीत वहांसे सीधा भौतिकमें उतरता था। अगर तुम ऐसे संगीतके पीछे जा सको और उसके स्रोतको पकड़ सको तो देखोगे कि यद्यपि उसके बजानेमें न तो शक्ति है, न प्रभाव, फिर भी उसमें कुछ अद्‌भुत चीज रहती है। जो चीज व्यक्त होती है उसमें मामूली-सी लय और स्वर-माधुर्य होता है, पर शक्तिशाली स्वरसंगति नहीं होती जो प्राणिक ऊर्जाके द्वारा ही प्रकट होती है। अगर तुम उच्चतर स्रोतवाले संगीतमें स्पंदनकी वह सारी शक्ति उंडेल सको जो प्राणसे आती है तो वह सचमुच प्रतिभासंपन्न संगीत होगा। वस्तुतः संगीत और सभी कलात्मक कृतियोंके लिये, साहित्य, काव्य, चित्रकला आदि सबके लिये एक मध्यस्थकी आवश्यकता होती है। इन क्षेत्रोंमें तुम जो कुछ करो वह निःसंदेह अपने आंतरिक मूल्यके लिये प्रेरणाके स्रोतपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भर होता है, इसपर निर्भर होता है कि वह प्रेरणा किस क्षेत्रसे या किस ऊंचाईसे आती है। लेकिन उसे कार्यान्वित करनेका काम प्राणकी शक्तिपर निर्भर होता है जो प्रेरणाको अभिव्यक्त करती है। एक पूर्ण प्रतिभाशाली व्यक्तिके लिये दोनों जरूरी हैं। दोनोंका मेल बहुत ही विरल होता है। या तो एक चीज होती है या दूसरी ओर बहुधा प्राणकी प्रधानता रहती है, वही छाया रहता है।

जब केवल प्राण होता है तो होटलोंका और सिनेमाका संगीत पैदा होता है। इसमें असाधारण चातुरी होती है लेकिन साथ ही यह असाधारण रूपसे मामूली और गंवारू भी होता है; लेकिन चूंकि उसमें चातुरी होती है इसलिये वह तुम्हारे मस्तिष्कको पकड़ लेता है, तुम्हारी स्मृतिमें मंडराता रहता है, स्नायुओंमें बजता और उन्हें उमेठता रहता है। उसके प्रभावसे पीछा छुड़ाना बहुत कठिन होता है क्योंकि वह इतनी अच्छी तरह, इतनी चातुरीसे बजाया जाता है। वह मुख्यतः प्राणिक स्पंदनोंसे बना होता है, लेकिन उसके पीछे जो चीज होती है वह कम-से-कम हितकर या स्वस्थ तो नहीं होती। अब कल्पना करो, अभिव्यक्तिकी वही प्राणिक शक्ति ऊपरसे आनेवाली, यथासंभव ऊंचे-से-ऊंचे क्षेत्रसे आनेवाली प्रेरणाके साथ जुड़ जाय — जहां स्वयं स्वर्ग खुलता दीखता है — तब वह सच्चा संगीत होता है। सीजर फ्रांककी कुछ चीजोंमें, बीठोवनकी कुछ चीजोंमें, बाखकी कुछ चीजोंमें और कुछ और चीजोंमें भी यह प्रभुता पायी जाती है। लेकिन यह क्षणिक होती है, क्षण-भरके लिये आती है और टिकती नहीं। ऐसा कोई कलाकार नहीं जिसकी सारी कला इस स्तरकी हो। प्रेरणा बिजलीकी एक कौंधकी तरह आती है और बहुधा वह इतने समय ही ठहरती है कि जरा-सा, यहां-वहां पकड़ा जा सके।

ठीक ऐसा ही अनुभव तुम्हें तब हो सकता है जब तुम्हारी पूरी चेतना एकाग्र चित्त और संकेंद्रित हो। अचानक तुम्हें लगता है कि तुम ऊपर उठाये जा रहे हो, तुम्हारी सारी शक्तियां इकट्ठी करके ऊपर उठायी जा रही हैं मानों तुम्हारा सिर खोल दिया गया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें खुली हवामें, असाधारण ऊंचाइयों और भव्य ज्योतियोंके बीच उछाल दिया गया है। कुछ क्षणोंमें यह अनुभूति तुम्हें वह दे जाती है जिसे पानेके लिये बरसों कठिन योग करना पड़ता है। लेकिन उस अनुभूतिके बाद ही तुम जमीनपर नीचे आ जाते हो क्योंकि नींव तैयार नहीं की गयी है। यहांतक कि तुम्हें शंका होने लगती है कि सचमुच तुम्हें यह अनुभूति हुई भी थी या नहीं। फिर भी चेतना तैयार की गयी है, कोई निश्चित चीज कर ली गयी है और वह स्थायी है।

भारतीय और यूरोपीय संगीत

भेद दोनों तरहका है: स्रोतके बारेमें भी और अभिव्यक्तिमें भी, और है भी उलटा। यूरोपीय संगीतमें बहुत ऊंची, आध्यात्मिक प्रेरणा बहुत विरल होती है, चैत्य स्रोत भी बहुत विरल होता है, लेकिन वहां मुख्य स्रोत प्राणमें होता है। अभिव्यक्ति तो हमेशा होती है, (स्वभावतः कुछ अपवादोंको छोड़कर) लेकिन वह प्रायः हमेशा प्राणिक अभिव्यक्ति होती है क्योंकि स्रोत शुद्ध रूपसे प्राणिक होता है। जैसा कि मैंने कहा कभी-कभी वह ऊपरसे भी आ जाती है और तब सचमुच अद्‌भुत होती है। कभी-कभी, ज्यादा विरल रूपमें, वह चैत्य प्रेरणा होती है। उनके धार्मिक संगीतमें इसका स्पर्श होता था, पर बहुत बार नहीं। इसके विपरीत, भारतीय संगीत प्रायः हमेशा, यानी, जब अच्छे संगीतज्ञ हों, चैत्य स्रोतसे आता है, रागोंका स्रोत प्रायः चैत्यमें होता है। यह ऊंचाइयोंके शिखरसे नहीं आता,. इसका स्रोत आंतरिक और अंतरतम होता है। लेकिन इसका प्राणिक शरीर कभी-कदास ही पर्याप्त होता है। मैंने काफी सारा भारतीय संगीत सुना है, वास्तवमें बहुत काफी। मैंने ऐसा बहुत ही कम देखा है कि इस संगीतमें काफी प्राण-शक्ति हो — शायद चार-पांच बार ही। इसकी अपेक्षा, मैंने चैत्य स्रोतवाला संगीत काफी अधिक बार सुना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ऐसा संगीत होता है जो अंदरसे सीधा बाहर प्रकट होता है। उसे सुननेके लिये तुम्हें एकाग्र होनेकी जरूरत होती है क्योंकि यह बहुत ही सूक्ष्म, बहुत नाजुक और हल्का होता है जिसमें प्रबल, तीव्र प्रतिध्वनिवाले प्राणिक स्पंदनों जैसी कोई चीज नहीं होती। तुम उसमें बह सकते हो, अपने-आपको धारमें छोड़ सकते हो और चैत्य स्रोतमें प्रवेश कर सकते हो। इसमें ऐसा प्रभाव होता है, यह कभी-कभी मादक असर करता है। तुम्हें एक प्रकारकी समाधिमें ले जाता है। अगर तुम अच्छी तरह सुनो, ध्यान दो और अपने-आपको बहने दो, तुम धीरे-धीरे बहो और डुबकी लगाओ तो चैत्य चेतना में डुबकी लगाओगे। लेकिन अगर तुम बाहरी चेतनामें रहो तो वहां इतनी पतली धारा प्रकट होती है कि प्राण कोई प्रत्युत्तर नहीं देता और उसे बिलकुल एकरस या नीरस पाता है। लेकिन अगर चैत्य स्पंदनके साथ उसे अभिव्यक्त करनेके लिये प्राणिक शक्ति भी हो तो परिणाम निश्चय ही रुचिकर होगा।

मुझे इस प्रकारका संगीत पसंद है जिसमें एक संगीत-विषय होता है जो धीरे-धीरे विभिन्नताके साथ, उसी एक ही विषयपर नाना प्रकारके परिवर्तनोंके साथ, इधर-उधर शाखाएं बनाता हुआ फिरसे अपने प्रारंभिक विषयपर लौट आता है। यूरोपमें भी एकदम भिन्न शैलीके होते हुए कहीं-कहीं इस तरहकी चीज थी। बाख और मौजार में यह चीज थी। आधुनिक कालमें दबूसी, रावाल और रूसी बोरोदीन और कुछ अन्य लोगोंने इस चीजको पकड़ा था। तुम अमुक गिनतीके स्वरोंको लो और उन्हें अमुक संबंधमें रखो, फिर उनपर नाना प्रकारकी विभिन्नताएं बजाते चलो, लगभग असंख्य विभिन्नताएं होंगी। यह अद्‌भुत है। यह तुम्हें बहुत अंदर गहराईमें ले जाता है और अगर तुम तैयार हो तो तुम्हें चैत्यकी चेतना देता है, कुछ ऐसी चीज देता है जो तुम्हें बाह्य भौतिक चेतनासे पीछे खींचकर अंदरकी किसी चीजके साथ जोड़ देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषज्ञता

तुम्हें अपने मनको विस्तृत करना, बढ़ाना और समृद्ध करना चाहिये। वह भावों और विचारोंसे भरपूर रहे। उसमें तुम्हारे अध्ययन और अवलोकनोंके परिणामोंका संग्रह रहे। उसे दरिद्र मन न होना चाहिये, ऐसा होना चाहिये जिसमें अधिक विचार न हों और न तर्क करने और विवाद करनेकी शक्ति ही हो। तुम्हारे मनमें विभिन्न विषयोंके बारेमें सोचनेकी क्षमता होनी चाहिये। हर समस्याको उसके पक्षोंसे देखनेकी क्षमता होनी चाहिये। वह हमेशा एक ही लीकपर न चलता रहा करे। उसे जापानी पंखेकी तरह होना चाहिये जो सभी दिशाओंमें खुलकर पूरा चक्कर बनाता है।

उदाहरणके लिये, तुम्हें विद्यालयमें बहुत-से विषय सीखने होते हैं, जितने अधिक विषय सीख सकते हो सीखो। अगर तुम घरपर पढ़ते हो तो जितने विभिन्न प्रकारकी चीजें पढ़ सको पढ़ो। मैं जानती हूं तुमसे प्रायः कहा जाता है और तुम्हें सलाह दी जाती है कि इससे अलग रास्ता अपनाओ। कम-से-कम विषय लो और विशेषज्ञ बननेकी कोशिश करो। हां, साधारणतः यही विचार प्रचलित है। अगर तुम एक अच्छे दार्शनिक बनना चाहते हो तो केवल दर्शन ही लो; अगर तुम एक अच्छे रसायन शास्त्री बनना चाहते हो तो केवल रसायन सीखो; इतना ही नहीं, दर्शन या रसायनकी एक समस्यापर ही पूरा जोर लगाओ। खेल-कूदमें भी तुमसे यही कहा जाता है। अगर तुम टेनिसके अच्छे खिलाड़ी बनना चाहते हो तो बस टेनिसके बारेमें ही सोचो। कोई एक चीज चुनकर उसीपर केंद्रित रहो। पर मैं इस रायकी नहीं हूं। मेरा अनुभव और तरहका है। मेरा ख्याल है कि व्यक्तिमें सामान्य क्षमताएं होती हैं जिन्हें प्रशिक्षित करना चाहिये। हां, अगर तुम श्रीमान और श्रीमती क्यूरीकी तरह बनना चाहो, जो एक वस्तु-विशेषकी खोज करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते थे एक निश्चित और विशेष प्रकारका रहस्य जानना चाहते थे, तब तुम्हें उसी एक वस्तुपर ही केंद्रित रहना चाहिये। लेकिन तब भी, अभीष्ट वस्तु मिल जानेपर तुम दूसरी चीजोंकी ओर मुड़ सकते हो। और फिर किसी एक बिंदुपर केंद्रित होते हुए भी अन्य विषयोंमें रस लेना असंभव नहीं है।

मैं बचपनसे ही यह बात सुनती आयी हूं, शायद हमारे बाप-दादोंने भी यह सीखा होगा कि अगर तुम किसी एक विषयमें सफल होना चाहो तो तुम्हें बस उसीपर लगे रहना चाहिये और किसी ओर ध्यान न देना चाहिये। मुझे कई बार इस चीजके लिये बुरा-भला सुनना पड़ा कि मैं एक ही समय अनेक विषयोंमें लगी रहती थी। मुझसे कहा गया था कि मैं बिलकुल बेकार निकलूंगी। मैं अध्ययन कर रही थी, मैं चित्रकारी करती थी, मैं संगीत सीखती थी और साथ ही और भी कई चीजें करती थी। मुझे कई बार चेतावनी दी गयी कि मेरी चित्रकारी एकदम बेकार होगी, मेरा संगीत बेकार होगा और मेरी शिक्षा अधूरी और दोषपूर्ण रह जायगी। शायद उनकी बात ठीक हो। परंतु मैंने अपने तरीकेके लाभ भी देखे। ठीक वही लाभ जिनके बारेमें मैंने शुरूमें कहा था, यानी, यह मन और चेतनाको विस्तृत बनाता है, नमनीय और लोचदार बनाता है, अचानक कोई भी नया विषय आ जाय तो उसे समझने और हाथमें लेनेकी क्षमता देता है। लेकिन अगर मैं प्रथम श्रेणीके वादकोंमें आना चाहती और वृन्दवाद्योंमें भाग लेना चाहती तो निश्चय ही मुझे अपने-आपको सीमित रखना पड़ता। या अगर चित्रकलामें मेरा उद्देश्य होता अपने युगके बड़े-से-बड़े कलाकारोंमें गिना जाना, तब मैं चित्रकारीके सिवा कुछ न करती। स्थिति आसानीसे समझमें आती है, पर यह एक दृष्टिकोण ही है। मेरी समझमें नहीं आता कि मुझे सबसे बड़ा संगीतकार या सबसे बड़ा चित्रकार क्यों बनना चाहिये। मुझ तो यह मिथ्या अभिमानके सिवा कुछ नहीं लगता।

परंतु मनुष्यके अंदर यह एक सहज-स्वाभाविक वृत्ति है कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना एक प्रकारका संतुलन बनाये रखनेके लिये एक कामके स्थान-पर दूसरा काम लेता रहता है। परिवर्तनका मतलब आराम भी होता है। हमने बहुत बार बड़े-बड़े विद्वानों और कलाकारोंके बारेमें सुना है कि उन्हें आरामकी जरूरत है या वे विश्रामकी खोजमें हैं। यह आराम काम बदलनेसे मिल जाता है। उदाहरणके लिये, इंग्रिस एक कलाकार था। चित्रकला उसका स्वाभाविक और प्रधान कार्य था, लेकिन जब कभी उसे समय मिल जाता तो वह वायोलिन उठा लेता था। और मजेकी बात यह है कि उसे चित्रकलाकी अपेक्षा वायोलिनमें ज्यादा मजा आता था। वह संगीतमें बहुत अच्छा नहीं था पर उसे इसमें मजा आता था। वह चित्रकलामें काफी अच्छा था, पर उसमें कम रस लेता था; लेकिन असली बात तो यह है कि उसे एक स्थायी संतुलनकी जरूरत थी। मैंने कहा न, कि अगर तुम किसी एक निश्चित परिणामकी टोहमें हो तो एक वस्तुपर एकाग्रता बहुत जरूरी है; लेकिन साथ ही तुम एक-दूसरी दिशाको भी अपना सकते हो जो अधिक सूक्ष्म, अधिक व्यापक और पूर्ण हो। निश्चय ही, तुम्हारी व्यापकताके लिये एक भौतिक सीमा है क्योंकि भौतिक क्षेत्रमें तुम देश और कालमें सीमित होते हो और बड़ी चीजोंको पाना तबतक कठिन होता है जबतक विशेष रूपसे एकाग्र न हो। लेकिन अगर तुम ज्यादा ऊंचा और ज्यादा गहरा जीवन बिताना चाहो तो तुम ऐसी क्षमताओंपर अधिकार पा सकते हो जो नियमित करने और सीमा बांधनेके तरीकेसे आनेवाली क्षमतासे बहुत ज्यादा बड़ी हैं। अपनी सीमाओंसे पीछा छुड़ानेमें बहुत लाभ है, वास्तविक उपलब्धिके रूपमें भले न हो पर आध्यात्मिक उपलब्धिके रूपमें तो है ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१३ मईको नई दिल्लीके विज्ञान भवनमें श्रीअरविन्द सोसायटीकी राष्ट्रीय समितिकी सभा हुई। श्रीनवजातने एक भाषण दिया जिसका सारांश यह था कि सभी केंद्रोंमें केवल आध्यात्मिक शिक्षाके पहलूपर ध्यान न देकर सर्वांगीण साधनापर ध्यान देना ज्यादा अच्छा होगा। शिक्षा कमीशनके सभापति डा० प्रेम किर्पाल और प्रधान सचिव श्री० पी० एस० भरद्वाज भी मौजूद थे।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें भी जो कार्यक्रम शुरू होंगे उनपर श्री खुरानाने भाषण दिया। ओरोवील और उसकी आजकलकी समस्याओंपर चर्चा हुई, और सदस्योंने अपने सुझाव दिये।

फिर अंतमें, पांडिचेरीमें अगस्त १९७८ में होनेवाले वार्षिक अधिवेशनकी योजना बनायी गयी।

१३ मईको श्रीअरविन्द सोसायटीकी उत्तर भारतीय प्रादेशिक कमेटीकी सभा हुई। उसके सभापति थे श्री दिनेश सिंह।

सोसायटीकी वल्लभ विद्यानगर शाखाने अपने क्रिया-कलापोंके विषयमें अपनी वार्षिक रिपोर्ट भेजी है। १९७७ में इस शाखाने कई सभाएं कीं। सालमें दो बार श्री एम० पी० पंडितने भाषण दिये और श्री मनोज दास और श्री ए० बी० पटेल भी गये थे।

भुवनेश्वरमें ओड़ीसाकी सरकारने माताजीकी जन्मशताब्दीकी महोत्सव-समिति बनायी। उसके संरक्षक हैं ओड़ीसाके राज्यपाल श्री

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवत्कृपापर पूर्ण विश्वास और निर्भरता बनाये रखना ही, अंतिम विश्लेषणमें, सर्वोत्तम बुद्धिमानी सिद्ध होता है।

—श्रीमाताजी

स्टार आटोमोबाईल सर्विसेज

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर (उ. प्र.)

एवं

भारत आयल कैरियर्स

लक्ष्मणझूला मार्ग

ऋशिकेश-२४९२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवद् दयाल शर्मा । वहां अप्रैलमें एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें श्री नवजातने भाषण दिया। विषय था: 'जगत्‌में भारतकी भूमिका'

सोसायटीकी इन्दौर शाखाने हिन्दीमें १६ पृष्ठकी एक पुस्तिका निकाली है। उसमें माताजीकी जीवनी दी गयी है। लेखक हैं डा० बी० एल० गुप्त।

बिहारके बैरमो केंद्रने २८ अप्रैलसे तीन दिनका कार्यक्रम रखा था। वहां हर सुबह सी० एन० शर्मा और डा० एच० माहेश्वरी स्वाध्याय शिविरका निर्देशन करते थे। शामको भाषण और आश्रम तथा ओरोवीलके बारेमें फिल्में होती थीं।

नये प्रकाशन

लाइट फार स्टूडंट्स: माताजी और श्रीअरविन्दकी रचनाओंसे संकलन। मू० ९.५० रु०; प्रकाशक: श्रीअरविन्द सोसायटी। प्राप्य 'शब्द', पांडिचेरी-६०५००२ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

आवश्यक सूचना

इंग्लैंडसे छपनेवाले ओरोवील इंटरनेशनल अप्रैल १९७८, अंक १८ के पृ० ६ पर छपा है कि लगभग एक वर्ष पहले श्रीअरविन्दाश्रम और ओरोवीलके कामके लिये धन संग्रह करनेके लिये मीरा (मदर्स इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च) नामक संस्था बनायी गयी थी। हमें यह भी पता चला है कि मदर्स सेंटेनरी पब्लिकेशन फंडके नामसे कोई संस्था काफी धनराशि इकट्ठी कर रही है। हम सभी संबद्ध व्यक्तियोंको सूचित करना चाहते हैं कि उक्त संस्थाओंके बारेमें हमें कुछ भी पता नहीं है और उनका श्रीअरविन्दाश्रमके साथ कोई संबंध नहीं है। हमने उन्हें पैसा इकट्ठा करनेकी स्वीकृति नहीं दी है। जो लोग आश्रमको धन देना चाहते हों वे माताजी और आश्रमके नामपर की गयी इन संस्थाओंकी अपीलसे भटक न जायं।

जो लोग श्रीअरविन्दाश्रम पांडिचेरीको कुछ धन भेंट करना चाहते हैं वे अपनी राशि 'श्रीअरविन्दाश्रम ट्रस्ट पांडिचेरी', 'श्रीअरविन्दाश्रम पांडिचेरी' या 'माताजी श्रीअरविन्दाश्रम पांडिचेरी' के नामसे भेज सकते हैं। भेजनेवाले अपना नाम और पूरा पता स्पष्ट लिखें। उनमें-से प्रत्येकको किसी ट्रस्टीके हस्ताक्षरवाली रसीद भेजी जायगी।

जो लोग आश्रमके वैज्ञानिक शोधकार्यके लिये धन भेजना चाहें वे अपने पत्रमें यह बात स्पष्ट लिखें। इस धनराशिपर उन्हें १९६१ के आयकर अधिनियमकी धारा १४ डी के अनुसार आयकरसे पूरी-पूरी छूट मिल जायगी।

पी० कुनूमा
मैनेजिंग ट्रस्टी, श्रीअरविंदाश्रम ट्रस्ट, पांडिचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

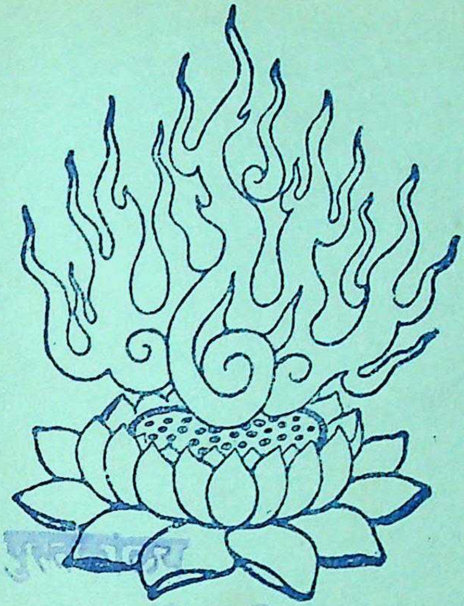

गुरुकुल कांगड़ी

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

अगस्त १९७८ वर्ष ९, अंक १, पूर्णांक ९७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त श्रीअरविंदके जन्मका, भारतकी स्वाधीनता और उसके विभाजनका मास है। माताजी और श्रीअरविंदने भारतके विभाजन-को कभी स्वीकार नहीं किया। उनका कहना है कि विभाजन जाना चाहिये और अवश्य जायेगा।

अगस्तके इस विशेषांकके साथ अग्निशिखाका भी नया वर्ष शुरू हो रहा है। इसमें उन सब संदेशोंका संग्रह दे रहे हैं जो माताजी-ने अगस्तके महीनेमें दिये थे।

स्वाधीनताके तुरंत बाद माताजीने एक छोटी-सी पुस्तिका बांटी थी जिसके शुरूमें दिव्य जननीका आध्यात्मिक चक्र है जिसका अर्थ होता है:

केंद्रीय वृत्त भागवत चेतनाको सूचित करता है।

चार दल भगवती माताकी चार शक्तियोंके सूचक हैं।

बारह दल भगवती माताके कार्यके लिये अभिव्यक्त उनकी बारह शक्तियोंके प्रतीक हैं।

दूसरे पृष्ठपर भारतकी वर्तमान अवस्था है जिसमें उसके भेद-भाव उसे छिन्न-भिन्न किये हुए हैं। तीसरे पृष्ठपर भारती अंतरात्मा-से प्रार्थना है और चौथे पृष्ठपर श्रीअरविंदका संदेश है जिसमें यह आश्वासन मिलता है कि समस्त धरतीपर मानव एकता प्रकट होगी।

शुरूके पन्नोंमें वह पुस्तिका उद्धृत की जा रही है।

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक रवींद्र
प्रकाशक श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य जननीकी जय!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत आज स्वाधीन है,
पर उसने एकता नहीं प्राप्त की है।
केवल एक कटी-छटी और
टूटी हुई स्वाधीनता है...
परन्तु चाहे किसी भी उपायसे हो,
चाहे किसी भी प्रकार हो,
विभाजन अवश्य जाना चाहिये और जायगा।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

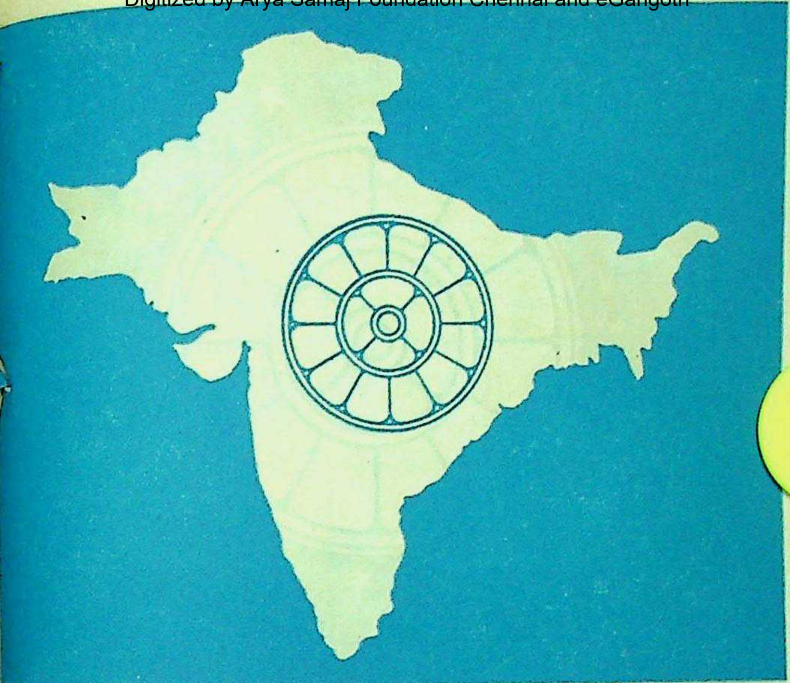

हे हमारी मां, हे भारतकी आत्म-शक्ति!
हमें पथ दिखा जिसमें हम
सदा महान् आदर्शोंके पक्षमें ही खड़े हों
और अध्यात्म-मार्गके नेताके रूपमें
तथा सभी जातियोंके मित्र
और सहायकके रूपमें
तेरा सच्चा स्वरूप मानवजातिको दिखा सकें।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

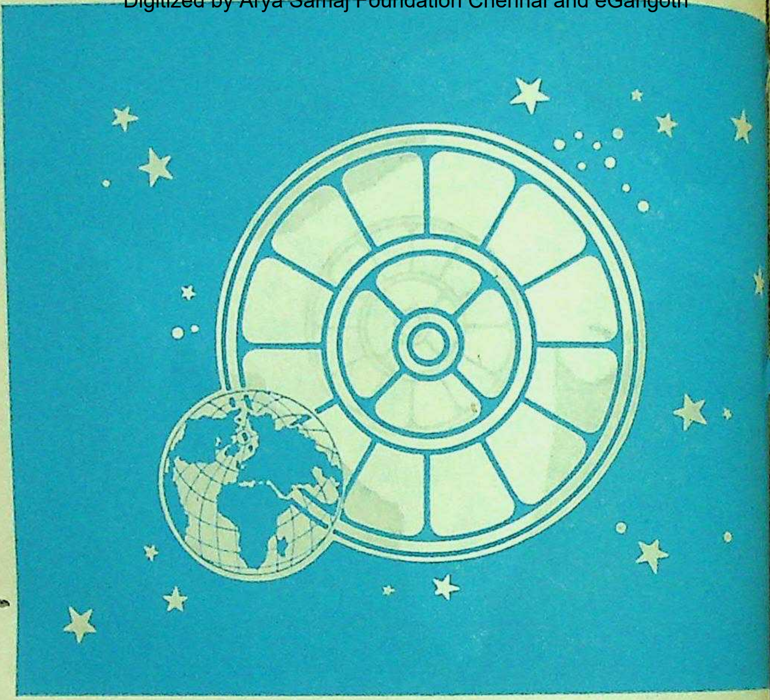

एकताकी
एक नयी भावना
मानवजातिपर अधिकार कर लेगी।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त-दर्शनके संदेश

१५-८-१९४७

१५ अगस्त, १९४७ स्वाधीन भारतका जन्मदिन है। यह दिन भारतके लिये पुराने युगकी समाप्ति और नये युगका प्रारंभ सूचित करता है। परंतु हम एक स्वाधीन राष्ट्रके रूपमें अपने जीवन और कार्योंके द्वारा इसे ऐसा महत्त्वपूर्ण दिन भी बना सकते हैं जो संपूर्ण जगत्के लिये, सारी मानवजातिके राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक भविष्यके लिये, नवयुग लानेवाला सिद्ध हो।

"१५ अगस्त मेरा अपना जन्मदिन है और स्वभावतः ही यह मेरे लिये प्रसन्नताकी बात है कि इस दिनने इतना विशाल अर्थ तथा महत्त्व प्राप्त कर लिया है। परंतु इसके भारतीय स्वाधीनता-दिवस भी हो जानेको मैं कोई आकस्मिक संयोग नहीं मानता, बल्कि यह मानता हूं कि जिस कर्मको लेकर मैंने अपना जीवन आरंभ किया था उसको मेरा पथ-प्रदर्शन करनेवाली भागवती शक्तिने इस तरह मंजूर कर लिया है और उसपर अपनी मुहर भी लगा दी है और वह कार्य पूर्ण रूपसे सफल होना आरंभ हो गया है। निःसंदेह, आजके दिन मैं प्रायः उन सभी जागतिक आंदोलनोंको, — जिन्हें मैंने अपने जीवनकालमें ही सफल देखनेकी आशा की थी, यद्यपि उस समय वे असंभव स्वप्न जैसे ही दिखायी देते थे, — सफल होते हुए या अपनी सफलताके मार्गपर जाते हुए देख सकता हूं। इन सभी आन्दोलनोंमें स्वाधीन भारत एक बड़ा पार्ट अच्छी तरह अदा कर सकता है और एक प्रमुख स्थान ग्रहण कर सकता है।

"इन स्वप्नोंमें पहला था एक क्रांतिकारी आन्दोलन जो स्वाधीन और एकीभूत भारतको जन्म दे। भारत आज स्वाधीन हो गया है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर उसने एकता नहीं प्राप्त की है। एक समय प्रायः ऐसा दीखता था मानों अपने स्वाधीन होनेकी प्रक्रियामें ही वह फिरसे उस पृथक्-पृथक् राज्योंकी अव्यवस्थापूर्ण स्थितिमें जा गिरेगा जो ब्रिटिश विजय-से पहले विद्यमान थी। परंतु सौभाग्यसे अब ऐसी प्रबल संभावना हो गयी है कि यह संकट टल जायगा और अभी पूर्ण न सही, पर एक विशाल तथा शक्तिशाली एकत्व अवश्य स्थापित हो जायगा। विधान-परिषद्की दूरदर्शितापूर्ण प्रबल नीतिने इस बातको संभव बना दिया है कि दलित वर्गोंकी समस्या बिना फूट-फटावके हल हो जायगी। परंतु हिंदुओं और मुसलमानोंका पुराना सांप्रदायिक भेद देशके स्थायी राजनीतिक विभाजनके रूपमें सुदृढ़ हो गया दीखता है। यह आशा करनी चाहिये कि इस तय किये गये विभाजनको पत्थरकी लकीर नहीं मान लिया जायगा और इसे एक कामचलाऊ अस्थायी उपायसे बढ़कर और कुछ न माना जायगा। क्योंकि यदि यह कायम रहे तो भारत भयानक रूपमें दुर्बल और अपंगतक हो सकता है; गृह-कलहका होना सदा ही संभव बना रह सकता है, नये आक्रमण और विदेशी राज्यका हो जाना तक संभव हो सकता है। भारतकी आंतरिक उन्नति और समृद्धि रुक सकती है, राष्ट्रोंके बीच उसकी स्थिति दुर्बल हो सकती है, उसका भविष्य कुंठित, यहां-तक कि व्यर्थ भी हो सकता है। यह नहीं होना चाहिये; देशका विभाजन अवश्य दूर होना चाहिये। हम आशा करें कि यह कार्य स्वाभाविक रूपसे ही हो जायगा, न केवल शांति और मेल-मिलापकी बल्कि मिल-जुलकर काम करनेकी भी आवश्यकताको उत्तरोत्तर समझ लेने तथा मिल-जुलकर काम करनेके अभ्यास और उसके लिये साधनोंको उत्पन्न कर लेनेसे संपन्न हो जायगा। इस प्रकार अंतमें एकता चाहे किसी भी रूपमें आ सकती है — उसके ठीक-ठीक रूप-का व्यावहारिक महत्त्व भले ही हो, पर कोई प्रधान महत्त्व नहीं। परंतु चाहे किसी भी उपायसे हो, चाहे किसी भी प्रकारसे हो, विभाजन अवश्य हटना चाहिये, एकता अवश्य स्थापित होनी चाहिये
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और स्थापित होगी ही, क्योंकि भारतके भविष्यकी महानताके लिये यह आवश्यक है।

"दूसरा स्वप्न था एशियाकी जातियोंका पुनरुत्थान तथा स्वातंत्र्य और मानव सभ्यताकी उन्नतिके कार्यमें एशियाका जो महान् स्थान पहले था उसी स्थानपर उसका लौट जाना। एशिया जग गया है; उसके बड़े-बड़े भाग स्वतंत्र हो गये हैं या इस समय बंधनमुक्त हो रहे हैं; इसके अन्य भाग जो अभी परतंत्र या अंशतः परतंत्र हैं वे भी, चाहे कैसे भी घोर संघर्षोंमेंसे गुजरते हुए, स्वतंत्रताकी ओर बढ़ रहे हैं। केवल थोड़ा ही करना बाकी है और वह आज न सही कल पूरा हो जायगा। उसमें भारतको अपना पार्ट अदा करना है और उसे उसने एक ऐसी सामर्थ्य और योग्यताके साथ करना शुरू कर दिया है जो अभीसे उसकी संभावनाओंकी मात्राको तथा उस स्थानको सूचित करती है जिसे वह राष्ट्रोंकी सभामें ग्रहण कर सकता है।

"तीसरा स्वप्न था एक विश्वसंघ जो समस्त मानवजातिके लिये एक सुन्दरतर, उज्ज्वलतर, और महत्तर जीवनका बाहरी आधार निर्मित करे। मानव संसारका वह एकीकरण प्रगतिके पथपर है। एक अधूरा प्रारंभ संगठित किया गया है पर वह बड़ी भारी कठिनाइयोंके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। किंतु उसमें एक वेग है और वह अनिवार्य रूपसे बढ़ता चला जायगा और विजयी होगा। इस कार्यमें भी भारतवर्षने प्रमुख भाग लेना आरंभ कर दिया है और यदि वह उस अधिक विशाल राजनीतिज्ञताको विकसित कर सके जो वर्तमान घटनाओं और तात्कालिक संभावनाओंसे ही सीमित नहीं होती, बल्कि भविष्यको देख लेती और उसे निकट लाती है, तो भारतकी उपस्थिति मंद एवं भीरुतापूर्ण विकास और द्रुत एवं साहस-पूर्ण विकासमें जो महान् भेद है उसे प्रदर्शित कर सकती है। जो कार्य किया जा रहा है उसमें महान् विपत्ति आ सकती है और वह उसमें बाधा डाल सकती है या उसे नष्ट कर सकती है, किंतु तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अंतिम परिणाम निश्चित है। क्योंकि एकीकरण प्रकृतिकी आवश्यकता है, अनिवार्य गति है। इसकी आवश्यकता राष्ट्रोंके लिये भी स्पष्ट है; क्योंकि इसके बिना छोटे-छोटे राष्ट्रोंकी स्वाधीनता किसी भी क्षण खतरेमें पड़ सकती है और बड़े तथा शक्तिशाली राष्ट्रोंका भी जीवन असुरक्षित हो सकता है, इसलिये इस एकीकरणमें ही सबका हित है और केवल मानवीय निःशक्तता तथा मूर्खतापूर्ण स्वार्थपरता ही इसे रोक सकती है; परंतु यह भी प्रकृतिकी आवश्यकता है और भगवान्की इच्छाके विरुद्ध हमेशा नहीं ठहर सकती, परंतु एक बाहरी आधार ही पर्याप्त नहीं है, अंतर्राष्ट्रीय भाव और दृष्टिकोण भी अवश्य विकसित होने चाहिये, अंतर्राष्ट्रीय पद्धति तथा संस्थाएं भी अवश्य प्रादुर्भूत होनी चाहिये, शायद इस प्रकारकी प्रगतियां भी पैदा हों जैसे कि दो या अनेक देशोंका एक संग नागरिक होना, संस्कृतियोंका आपसमें ऐच्छिक दान-प्रतिदान या उनका स्वेच्छापूर्वक घुलना-मिलना। राष्ट्रीयता तब अपने-आपको चरितार्थ कर चुकी होगी और अपनी युद्धप्रियताको छोड़ चुकी होगी, और तब वह ऐसी चीजोंको आत्म-संरक्षण तथा अपनी दृष्टिकी अखंडतासे असंगत नहीं अनुभव करेगी। एकत्वकी एक नयी भावना मनुष्यजातिपर आधिपत्य जमा लेगी।

"चौथा स्वप्न, संसारको भारतका आध्यात्मिक दान, पहलेसे ही प्रारंभ हो चुका है। भारतकी आध्यात्मिकता यूरोप और अमरीकामें नित्य बढ़ती हुई मात्रामें प्रवेश कर रही है। यह आंदोलन बढ़ेगा; वर्तमान कालकी विपदाओंके बीच अधिकाधिक लोगोंकी आंखें आशाके साथ भारतकी ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओंका अपितु उसकी आंतरात्मिक और आध्यात्मिक साधनाका भी उत्तरोत्तर आश्रय लिया जा रहा है।

"अंतिम स्वप्न था क्रमविकासमें अगला कदम जो मनुष्यको एक उच्चतर और विशालतर चेतनामें उठा ले जायगा और उन समस्याओंका हल करना आरंभ कर देगा जिन समस्याओंने मनुष्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तभीसे हैरान और परेशान कर रखा है जबसे कि उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाजके विषयमें सोचना-विचारना शुरु किया था। यह अभीतक एक व्यक्तिगत आशा और विचार और आदर्शमात्र है जिसने भारत और पश्चिममें दोनों जगह दूरदर्शी विचारकोंको वशमें करना शुरु कर दिया है। इस मार्गकी कठिनाइयां प्रयासके किसी भी अन्य क्षेत्रकी अपेक्षा बहुत अधिक जबर्दस्त हैं, परंतु कठिनाइयां जीती जानेके लिये ही बनी थीं और यदि दिव्य परम इच्छा-शक्तिका अस्तित्व है तो वे दूर होंगी ही। यहां भी, यदि इस विकासको घटित होना है तो, चूंकि यह आत्मा और आंतर चेतनाकी अभिवृद्धिद्वारा ही होगा, इसका प्रारंभ भारतवर्ष ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौम होगा, तथापि केंद्रीय आंदोलन भारत ही करेगा।

"ये हैं वे भाव और भावनाएं जिनको मैं भारतीय स्वाधीनताकी इस तिथिके साथ संबद्ध करता हूं। क्या ये आशाएं ठीक सिद्ध होंगी, या कहांतक सिद्ध होंगी, यह बात नये और स्वाधीन भारतपर निर्भर करती है।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1950

Our sadhana has reached a stage in which we are mostly dealing with the subconscient and even the inconscient. As a consequence the physical determinism has taken a predominant position bringing an increase of difficulties on the way which have to be faced with an increase of courage and determination.

In any case, whatever happens and whatever you do, do not allow Fear to invade you. At the slightest touch of it, react and call for help.

2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

You must learn not to identify with your body and treat it as a young child who needs to be convinced that it must not fear.

FEAR is the greatest of all enemies and we must overcome it here, once for all.

The Mother

हमारी साधना अब एक ऐसे स्तरपर पहुंच गयी है जहां हम अधिकतर अवचेतना और अचेतनापर काम कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप भौतिक नियतिवादका पल्ला भारी हो गया है और मार्गकी कठिनाइयां बढ़ गयी हैं, इनका सामना अधिक साहस और दृढ़ताके साथ करना चाहिये।

बहरहाल जो भी हो, तुम जो भी करो, भयको अपने ऊपर आक्रमण न करने दो। उसके ज़रा-से स्पर्शपर भी सक्रिय हो जाओ और सहायताके लिये पुकारो।

तुम्हें यह सीखना होगा कि अपने-आपको शरीरके साथ एक न समझो, शरीरके साथ एक छोटे बच्चेका-सा व्यवहार करो जिसे यह विश्वास दिलानेकी जरूरत है कि उसे डरना न चाहिये।

भय हमारे शत्रुओंमें सबसे बड़ा है, और यहां हमें उसपर अंतिम रूपसे विजय पानी ही चाहिये।

—माताजी

15.8.1952

VOICE OF "THE MOTHER OF MIGHT"

"I am charged by God to do his mighty work,
Uncaring I serve his will who sent me forth,
Reckless of peril and earthly consequence.
I reason not of virtue and of sin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

But do the deed he has put into my heart.
I fear not for the angry frown of Heaven,
I flinch not from the red assault of Hell;
I crush the opposition of the gods,
Tread down a million goblin obstacles.
I guide man to the path of the Divine
And guard him from the red Wolf and the Snake.
I set in his mortal hand my heavenly sword
And put on him the breastplate of the gods.
I break the ignorant pride of human mind
And lead the thought to the wideness of the Truth;
I rend man's narrow and successful life
And force his sorrowful eyes to gaze at the sun
That he may die to earth and live in his soul.
I know the goal, I know the secret route:
I have studied the map of the invisible worlds;
I am the battle's head, the journey's star.
But the great obstinate world resists my word,
And the crookedness and evil in man's heart
Is stronger than Reason, profounder than the Pit,
And the malignancy of hostile Powers
Puts craftily back the clock of destiny
And mightier seems than the eternal Will.
The cosmic evil is too deep to unroot:
The cosmic suffering is too vast to heal.
A few I guide who pass me towards the Light,
A few I save, the mass falls back unsaved;
A few I help, the many strive and fail:
But my heart I have hardened and I do my work:
Slowly the Light grows greater in the East,
Slowly the world progresses on God's road.
His seal is on my task, it cannot fail;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I shall hear the silver swing of heaven's gates
When God comes out to meet the soul of the world.

Savitri, Book VII, Canto IV — SRI AUROBINDO

15.8.1953

There is one thing everybody should remember that every thing should be done from the point of view of Yoga, of sadhana, of growing into a divine life in the Mother's consciousness. To insist upon one's own mind and its ideas, to allow oneself to be governed by one's own vital feelings and reactions should not be the rule of life here. One has to stand back from these, to be detached, to get in their place the true knowledge from above, the true feelings from the psychic within. This cannot be done if the mind and vital do not surrender, if they do not renounce their attachment to their own ignorance which they call truth, right, justice. All the trouble rises from that; if that were overcome, the true basis of life, of work, of harmony, of all in the union with the Divine would more and more replace the trouble and difficulty of the present.

SRI AUROBINDO

एक बात प्रत्येक व्यक्तिको याद रखनी चाहिये कि प्रत्येक कार्य योग एवं साधनाकी दृष्टिसे तथा श्रीमांकी चेतनाके अंदर प्राप्त दिव्य जीवनमें विकास पानेके उद्देश्यसे किया जाना चाहिये। अपने मन और उसकी धारणाओंपर आग्रह करना, अपने प्राणके वेदनों और प्रतिक्रियाओंके द्वारा अपने-आपको परिचालित होने देना यहांके जीवन-का नियम नहीं होना चाहिये। साधकको इन सबसे पीछे हटकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरमें स्थित होना चाहिये, अनासक्त हो जाना चाहिये और इनके स्थानपर ऊपरसे सच्चा ज्ञान और भीतरसे अंतरात्माके सच्चे अनुभवोंको प्राप्त करना चाहिये। यह तबतक नहीं किया जा सकता जबतक कि मन और प्राण समर्पित नहीं हो जाते, जबतक कि वे अपने उस अज्ञानके प्रति, जिसे वे सत्य, सुकृत और न्यायके नामसे पुकारते हैं, अपनी आसक्तिको छोड़ नहीं देते। सारी विपत्ति इसीसे उत्पन्न होती है; अगर इसको अतिक्रम कर लिया जाय तो वर्तमान समयकी विपत्ति और कठिनाईके स्थानपर उत्तरोत्तर भगवान्‌के साथ प्राप्त एकताके अंदर जीवन, कर्म और सामंजस्यका तथा चीजोंका सच्चा आधार स्थापित हो जायगा।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1954

THE HOUR OF GOD

There are moments when the Spirit moves among men and the breath of the Lord is abroad upon the waters of our being; there are others when it retires and men are left to act in the strength or the weakness of their own egoism. The first are periods when even a little effort produces great results and changes destiny; the second are spaces of time when much labour goes to the making of a little result. It is true that the latter may prepare the former, may be the little smoke of sacrifice going up to heaven which calls down the rain of God's bounty.

Unhappy is the man or the nation which, when the divine moment arrives, is found sleeping or unprepared to use it, because the lamp has not been kept trimmed for the

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

welcome and the ears are sealed to the call. But thrice woe to them who are strong and ready, yet waste the force or misuse the moment; for them is irreparable loss or a great destruction.

In the hour of God cleanse thy soul of all self-deceit and hypocrisy and vain self-flattering that thou mayst look straight into thy spirit and hear that which summons it. All insincerity of nature, once thy defence against the eye of the Master and the light of the ideal, becomes now a gap in thy armour and invites the blow. Even if thou conquer for the moment, it is the worse for thee, for the blow shall come afterwards and cast thee down in the midst of thy triumph. But being pure cast aside all fear; for the hour is often terrible, a fire and a whirlwind and a tempest, a treading of the winepress of the wrath of God; but he who can stand up in it on the truth of his purpose is he who shall stand; even though he fall, he shall rise again; even though he seem to pass on the wings of the wind, he shall return. Nor let worldly prudence whisper too closely into thy ear; for it is the hour of the unexpected.

SRI AUROBINDO

देव मुहूर्त्त

ऐसी घड़ियां आती हैं जब देव मनुष्योंके बीच विचरण करते हैं और हमारे जीवन-सलिलपर भगवान्‌का श्वास फैल जाता है। और फिर ऐसा भी समय आता है जब वे पीछे हट जाते हैं और मनुष्य अपने अहंकारकी ही सामर्थ्य या निर्बलतासे काम करनेके लिये छोड़ दिया जाता है। प्रथम कालमें थोड़ा-सा भी प्रयत्न करनेपर बड़े परिणाम पैदा होते हैं और भाग्य बदल जाता है और दूसरे कालमें जरा-से परिणामके लिये बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। यह सत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि दूसरा पहलेके लिये तैयारी कर सकता है और यज्ञका थोड़ा-सा धुंआ बनकर स्वर्गमें जा सकता है और वहांसे भगवान्‌की देनका आवाहन कर सकता है।

अभागा है वह मनुष्य या राष्ट्र जो भागवत मुहूर्त्तके आनेपर सोया हुआ रहे या उसके उपयोगके लिये तैयार न हो, जो उसके स्वागतके लिये दीया संजोकर न रखे और उसकी पुकारकी ओरसे कान बंद कर ले। पर कहीं अधिक अभागे हैं वे जो सशक्त और तैयार होते हुए भी उस शक्तिका अपव्यय करते हैं और उस मुहूर्त्तका दुरुपयोग करते हैं। उनके भाग्यमें होती है पूरी न हो सकनेवाली क्षति या एक महान् विनाश।

भागवत मुहूर्त्तमें धो डालो अपनी अंतरात्मासे अपने-आपको धोखा देनेकी वृत्ति, ढोंगबाजी और झूठी आत्म-प्रशंसा ताकि तुम सीधे अंतःपुरुषको देख सको और उसकी पुकारको सुन सको। तुम्हारी प्रकृतिका कपट, जो पहले तुम्हें प्रभुकी दृष्टिसे तथा आदर्शकी ज्योतिसे बचाये हुए था, तुम्हारे कवचमें एक छेद बन जायगा और ऊपरसे प्रहारोंको निमंत्रण देगा और यदि क्षण-भरके लिये तुम जीत भी गये तो तुम्हारे लिये और भी बुरा है क्योंकि प्रहार तो बादमें आयेगा ही और तुम्हारी विजयके समय भी तुम्हें पटक देगा। शुद्ध होकर झाड़ फेंको समस्त भयको। यह घड़ी प्रायः भयंकर होती है, यह आग, बवण्डर और तूफानकी न्याईं है और है रुद्रका ताण्डव नृत्य। परंतु जो इसमें अपने उद्देश्यकी सच्चाईके बलपर खड़ा रह सकता है वही खड़ा रहेगा और चाहे वह वायुके पंखोंपर उड़ भी क्यों न जाये फिर भी, वह जरूर वापिस आ जायगा। सांसारिक बुद्धिमत्ता तुमसे अधिक कानाफूसी न कर पाये। यह अप्रत्याशितकी घड़ी है।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15. 8. 1955

A strong son of lightning came down to the earth with fire-feet of swiftness, splendid;
Light was born in a womb and thunder's force filled a human frame.
The calm speed of heaven, the sweet greatness, pure passion, winged power had descended;
All the gods in a mortal body dwelt, bore a single name.

A wide wave of movement stirred all the dim globe in each glad and dreaming fold;
Life was cast into grandeur, ocean hands took the wheels of Time.
Man's soul was again a bright charioteer of days hired by gods impetuous bold,
Hurled by One on His storm-winged ways, a shaft aimed at height sublime.

The old tablets clanging fell, ancient slow Nature's dead wall was rent asunder,
God renewed himself in a world of young beauty, thought and flame:
Divine voices spoke on men's lips, the heart woke to white dawns of gleaming wonder,
Air a robe of splendour, breath a joy, life a godlike game.

SRI AUROBINDO

विद्युतका एक शक्तिमान पुत्र पृथ्वीपर उतर आया, वह ज्योतिर्मय पुरुष मानों क्षिप्रताके अग्निमय पैरोंसे नीचे उतरा;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानुषी गर्भमें ज्योति उत्पन्न हुई और मानवीय ढांचेमें मेघगर्जन-की शक्ति भर गयी।
स्वर्गकी प्रशान्त गति, मधुर महत्ता, विशुद्ध आवेग और पंखयुक्त शक्ति उतर आयी;
समस्त देवगण एक ही मर्त्य शरीरमें निवास करने लगे और बस एक ही नामसे उच्चारित होने लगे।

एक विशाल गति-तरंगने समूचे धूमिल भूमंडलको, उसकी प्रफुल्ल और स्वप्निल एक-एक तहको आन्दोलित कर दिया;
जीवन महानताके सांचेमें ढल गया और सागर-सम हाथोंने कालचक्रको पकड़ लिया।
मनुष्यकी आत्मा फिर एक बार जीवनका प्रदीप्त सारथी बन गयी और प्रचंड और साहसिक देवताओंने अपने कार्यपर नियुक्त कर लिया,
वह मानों एक भाला हो जिसे, आंधियोंसे भरे अपने पथोंपर चलते-चलते, महान् शिखरोंको लक्ष्य बनाकर, स्वयं परम प्रभुने हीं निक्षिप्त किया हो।

सभी पुरानी तख्तियां झनझनाकर गिर पड़ीं, पुरानी मंदगति वाली प्रकृतिकी मृत दीवाल दो टूक हो गयी,
यौवनपूर्ण सौंदर्य; विचार और प्रकाशके एक जगत्में भगवान्ने नया रूप धारण किया :
मनुष्योंकी जिह्वापर भागवत वाणी प्रकट हुई, चमकते चमत्कारों-की श्वेत ऊषाके प्रति हृदय जागृत हुआ,
वायु ज्योतिर्मय वस्त्र बन गयी, श्वास-प्रश्वास आनंद-कार्य और जीवन देवसुलभ क्रीड़ा बन गया।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15. 8. 1956

SUPRAMENTAL MANIFESTATION

(चित्र) अतिमानसिक अभिव्यक्ति।

15. 8. 1957

So the Light grows always.

As for the shadow it is only a shadow and will disappear in the growing Light.

SRI AUROBINDO

दिव्य ज्योति निरंतर बढ़ती ही जा रही है।

और छाया? वह तो बस छाया है, ज्योतिके बढ़नेसे विलीन हो जायगी।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1958

The Mother's white light is the light of the Divine Consciousness; you are living more and more under it and it is that that is liberating you.

(25.8.34) SRI AUROBINDO

श्रीमाताजीकी श्वेत ज्योति भागवत चेतनाकी ज्योति है; तुम अधिकाधिक उसके अंदर निवास करने लगे हो और वही तुम्हें मुक्त कर रही है।

(२५-८-१९३४) —श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15. 8. 1959

All is created by the Supreme Goddess, the Supreme Original Mahashakti, all proceeds from her, all lives by her, all lives in her even as she lives in all. All wisdom and knowledge are her wisdom and knowledge, all power is her power, all will and force her will and force, all action is her action, all movement her movement. All beings are portions of her power of existence.

SRI AUROBINDO

परात्परा भगवती, परमा और आद्या महाशक्तिद्वारा ही सब सृष्ट होता है, सब उन्हींसे उद्भूत होता है, सब उन्हींके कारण जीवन धारण करता है, सब उन्हींके अंदर ठीक वैसे ही रहता है जैसे कि वह सबके अंदर रहती हैं। समस्त प्रज्ञा और ज्ञान उन्हींकी प्रज्ञा और ज्ञान है, समस्त शक्ति-सामर्थ्य उन्हींकी शक्ति-सामर्थ्य, समस्त संकल्प और कर्मशक्ति उन्हींका संकल्प और कर्मशक्ति, समस्त कर्म उन्हींका कर्म, समस्त गतिधारा उन्हींकी गतिधारा है। सभी जीव उन्हींकी सत्ताकी आत्म-शक्तिके अंश हैं।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1960

THE MOTHER OF GOD

A conscious and eternal Power is here
Behind unhappiness and mortal birth
And the error of Thought and blundering trudge of Time.
The Mother of God, his sister and his spouse,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Daughter of his wisdom, of his might* the mate,
She has leapt from the Transcendent's secret breast
To build her rainbow worlds of mind and life.
Between the superconscient absolute Light
And the Inconscient's vast unthinking toil
In the rolling and routine of Matter's sleep
And the somnambulist motion of the stars
She forces on the cold unwilling Void
Her adventure of Life, the passionate dreams of her lust.
Amid the work of darker Powers she is here
To heal the evils and mistakes of Space
And change the tragedy of the ignorant world
Into a Divine Comedy of joy
And the laughter and the rapture of God's bliss.
The Mother of God is master of our souls;
We are the partners of his birth in Time,
Inheritors we share his eternity.

SRI AUROBINDO

15. 8. 1961

The Divine Consciousness emerging from the Inconscient.

★

In the depths of the inconscient there also shines the Divine Consciousness, resplendent and eternal.

निश्चेतनामेंसे निकलता हुआ भागवत चैतन्य ।

*

* strength

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चेतनाकी गहराईमें भी भागवत चैतन्य चमक रहा है, शाश्वत और देदीप्यमान।

15. 8. 1962

One day I shall behold my great sweet world
Put off the dire disguises of the gods,
Unveil from terror and disrobe from sin.
Appeased we shall draw near our mother's face,
We shall cast our candid souls upon her lap;
Then shall we clasp the ecstasy we chase,
Then shall we shudder with the long-sought god,
Then shall we find heaven's unexpected strain.

Savitri, Book X, Canto II — SRI AUROBINDO

15. 8. 1963

About the present civilisation, it is not this which hast o be saved; it is the world that has to be saved and that will surely be done, though it may not be so easily or so soon as some wish or imagine or in the way that they imagine. The present must surely change, but whether by a destruction or a new construction on the basis of a greater Truth, is the issue. The Mother has left this question hanging and I can only do the same.

September 1945 — SRI AUROBINDO

वर्तमान सभ्यताके विषयमें : यह सभ्यता तो वह चीज नहीं है जिसकी रक्षा करनी है। रक्षा तो इस संसारकी करनी होगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अवश्य की जायगी। हां, हो सकता है कि यह इतनी आसानीसे या इतनी जल्दी न हो सके जितना कुछ लोग चाहते या कल्पना करते हैं, शायद उस तरीकेसे भी न हो जिसकी वे कल्पना करते हैं। वर्तमानको अवश्य बदलना होगा। प्रश्न यही है कि यह परिवर्तन संहारके द्वारा होगा या एक महत्तर सत्यके आधारपर नवनिर्माणके द्वारा। माताजीने इस प्रश्नको यों ही लटकता छोड़ दिया है और मैं भी बस यही कर सकता हूं।

सितम्बर, १९४५ —श्रीअरविंद

15. 8. 1964

Avoid the imagination that the supramental life will be only a heightened satisfaction of the desires of the vital and the body. Nothing can be a greater obstacle to the Truth in its descent than this hope of glorification of the animal in the human nature. Mind wants the supramental state to be a confirmation of its own cherished ideas and preconceptions; the vital wants to be a glorification of its own desires; the physical wants it to be a rich prolongation of its own comforts and pleasures and habits. If it were to be that, it would be only an exaggerated and highly magnified consummation of the animal and the human nature not a transition from the human into the Divine.

SRI AUROBINDO

इस कल्पनाको दूर हटाओ कि अतिमानसिक जीवन केवल प्राण और शरीरकी कामनाओंकी ऊंची तृप्ति ही होगा। दिव्य सत्यके अवतरणमें, मानव-प्रकृतिमें विद्यमान पशुकी महिमा बढ़ानेकी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशासे बढ़कर कोई बाधा नहीं हो सकती। मन चाहता है कि अतिमानसिक अवस्था उसकी अपनी पोषित भावनाओं और पूर्व-धारणाओंका एक प्रकारका समर्थन हो; प्राण चाहता है कि यह उस-की अपनी कामनाओंका एक बढ़ा-चढ़ा रूप हो; और शरीर चाहता है कि यह उसके अपने आरामों, सुख-सुविधाओं और अभ्यासोंका अधिक समृद्ध रूपमें बने रहना हो। यदि इसे यही सब होना हो तब तो यह सब पशु और मानव-प्रकृतिकी केवल एक बहुत वर्धित और विस्तारित परिणति ही होगी, न कि मानवतासे भगवत्तामें रूपांतर।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1965

Some day surely
The world too shall be saved from death by love.

SRI AUROBINDO

एक दिन अवश्य आयेगा
जब प्रेम इस जगत्को भी मृत्युसे मुक्त कर देगा।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1966

Not the blind round of the material existence alone and not a retreat from the difficulty of life in the world into the silence of the Ineffable, but the bringing down of the peace and light and power of a greater divine Truth and consciousness to transform Life is the endeavour today of the greatest spiritual seekers in India. Here in the heart of such an endeavour pursued through many years with a single-hearted

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

purpose, living constantly in that all-founding peace and feeling the near and greatening descent of that light and power, the way becomes increasingly clear. One sees the soul of India ready to enter into the fullness of her heritage and the hour of an unparalleled greatness approaching when from her soil shall go forth the call and the leading to the highest destinies of the race.

Sri Aurobindo

आज भारतके महानतम आध्यात्मिक साधक एकमात्र स्थूल जीवनका अंध चक्कर काटते रहनेका या जागतिक जीवनकी कठिनाइयोंसे भागकर अव्यक्त ब्रह्मकी निश्चल-नीरवतामें आश्रय लेनेका, बल्कि वे जीवनको रूपांतरित करनेके लिये एक महत्तर दिव्य सत्य और चेतनाकी शांति, ज्योति और शक्तिको नीचे उतार लानेका प्रयास कर रहे हैं। यह प्रयास बहुत बर्षोंसे, एक ऐकांतिक उद्देश्यको सामने रखकर, निरंतर उसी सर्वाधार शांतिमें रहते हुए तथा उसी ज्योति और शक्तिके आसन्न तथा क्रमशः अवतरणको अनुभव करते हुए किया जा रहा है एवं यहीं, इस प्रयासके मर्मस्थलमें पथ भी अधिकाधिक सुस्पष्ट होता जा रहा है। हम देखते हैं कि भारतकी आत्मा अपने उत्तराधिकारके पूर्णत्वमें प्रविष्ट होनेके लिये तैयार हो रही है और एक अनुपम महानताका काल समीप आ रहा है जब उसकी भूमिसे मनुष्य जातिकी उच्चतम भवितव्यताओंकी ओर जानेका आवाहन उठेगा और पथ-प्रदर्शन मिलेगा।

श्रीअरविंद

15.8.1967

But in any case the Divine Power is working always behind and one day, perhaps when one least expects it, the obstacle breaks, the clouds vanish and there is again the light and the

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

sunshine. The best thing in these cases is, if one can manage it, not to fret, not to despond, but to insist quietly and keep oneself open, spread to the Light and waiting in faith for it to come: that I have found, shortens these ordeals.

Sri Aurobindo

पर जो हो, भागवत शक्ति पीछेकी ओर निरंतर कार्य कर रही है और एक दिन, जब कोई शायद ही आशा करता हो, बाधाएं भग हो जाती हैं, बादल विलीन हो जाते हैं और फिरसे प्रकाश और धूप छा जाती है। ऐसे समयोंमें सबसे अच्छी बात, यदि कोई कर सके तो, यह है कि उद्विग्न न हुआ जाय, हतोत्साह न हुआ जाय, बल्कि चुपचाप अड़े रहा जाय और अपनेको उद्घाटित रखा जाय, दिव्य ज्योतिकी ओर अपनेको फैलाये रखा जाय और विश्वास-के साथ उसके आनेकी प्रतीक्षा की जाय: मैंने देखा है कि यही चीज इन अग्निपरीक्षाओंको हल्का बना देती है।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1968

One needs to have a calm heart, a settled will, entire self-abnegation and the eyes constantly fixed on the beyond to live undiscouraged in times like these which are truly a period of universal decomposition.

Sri Aurobindo

आजकल सचमुच एक व्यापक सड़ांध और विघटनका काल है। इसमें निरुत्साहित हुए विना जीवन वितानेके लिये हमारे अंदर एक शांत-स्थिर हृदय, एक सुनिश्चित संकल्प और संपूर्ण आत्म-निवेदनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव होना चाहिये तथा हमारी आंखें निरंतर परात्परकी ओर लगी रहनी चाहिये ।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1969

Our attention must be fixed on the earth because our work is here. Besides, the earth is a concentration of all the other worlds and one can touch them by touching something corresponding in the earth-atmosphere.

13.1.1934 Sri Aurobindo

हमें अपना ध्यान पृथ्वीपर ही केंद्रित रखना चाहिये क्योंकि हमारा कार्य यहीं है। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी अन्य सब लोकोंका सार-संग्रह है। पार्थिव परिवेशमें उनके अनुरूप ऐसा कुछ-न-कुछ है जिसे छूनेसे उनका भी स्पर्श किया जा सकता है।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1970

Even the body shall remember God.

Savitri, Book XI, Canto I Sri Aurobindo

शरीर भी स्मरण करेगा भगवान्को।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15. 8. 1971

A veil behind the heart, a lid over the mind divide us from the Divine. Love and devotion rend the veil, in the quietude of the mind the lid thins and vanishes.

Sri Aurobindo

हृदयके पीछे विद्यमान एक पर्दा और मनके ऊपर पड़ा हुआ एक ढक्कन हमें भगवान्से विच्छिन्न करते हैं। प्रेम और भक्तिसे पर्दा फट जाता है और मनके निस्तब्ध हो जानेपर ढक्कन पतला हो जाता और विलीन हो जाता है।

—श्रीअरविंद

15. 8. 1972

One step more towards Eternity.

The Mother

शाश्वतकी ओर एक और पग।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

५-६-७८ का दिन आश्रममें एक समारोहके रूपमें मनाया गया। माताजीके अनुसार ५ की संख्या शक्तिकी प्रतीक है, ६ सृष्टि, ७ सिद्धि और ८ अभिव्यक्ति और द्विविध संरक्षणकी : (एक ऐसे ही अवसरपर माताजीने १९६७ में कहा था कि ४-५-६७ का पार्थिव वातावरणपर विशेष प्रभाव है, उस दिन कोई अवतरण हो सकता है। इसी भांति ६-६-६६ के लिये कहा था, पर चार छः की संख्याएं सृजनके वर्गका प्रतीक हैं), उस दिन आश्रममें एक आशीर्वादका कार्ड बांटा गया जिसमें द्विविध संरक्षणके फूलका चित्र था।

मई २९ से जून ८, १९७८ तक शिक्षामें रस लेनेवाले अध्यापकों के लिये एक शिक्षाशिविर हुआ था जिसमें आंध्र प्रदेश, बंगाल, गुजरात आदिसे आये हुए बारह अध्यापकोंने भाग लिया था। इसमें माताजी और श्रीअरविंदके शिक्षाविषयक लेखोंका अध्ययन किया गया और शिक्षासंवंधी बहुत-से प्रश्नोत्तर हुए। इसमें भाग लेने-वालोंने अनुभव किया कि ऐसे आयोजन बार-बार होने चाहिये।

१२ जून १९७८ को आकाशवाणीसे डा० एम० एस० अग्रवाल का "माताजी और भारत" के बारेमें एक भाषण प्रसारित हुआ।

मदुरैमें एक दो दिनका समारोह हुआ जिसमें अंगरेजी और तमिल में माताजी, "श्रीअरविंद और सावित्री" के बारेमें भाषण हुआ और "आदर्श बालक" नामक पुस्तिका वितरित की गयी।

मेरठमें २१-२-१९७८ को श्रीअरविंद गवेषण संस्थानका उद्घाटन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ जो श्रीअरविंद सोसायटीसे संबद्ध है। उसका कार्यभार डा० रामनाथ शर्मापर है। यह संस्था श्रीअरविंद साहित्यका अध्ययन करनेमें सहायता करेगी।

गौरीवडनौरमें श्रीअरविंद सोसायटीने एक शिशुशाला शुरू की है।

गुजरातमें चाणोद नामक स्थानपर २१ मईसे २७ तक एक शिविर हुआ जिसमें ऐसा कार्यक्रम रखा गया था कि सदस्य सारे दिन काममें लगे रहें। रोज एक विषयपर भाषण भी होता था।

सदस्योंसे : जब कभी आप अपना चंदा भेजें तो अपनी सदस्यताका नंबर जरूर लिखा करें। अगर आप पुराने सदस्य नहीं हैं तो यह लिख दीजिये कि आप नये सदस्य हैं। पुरोधा और अग्निशिखाके ग्राहक अपना धनादेश संपादक पुरोधा व अग्निशिखाके नाम, और सोसायटीके सदस्य अपना चंदा सोसायटीके सेक्रेटरीके नाम भेजा करें। पतेमें भूल होनेसे असुविधा हो जाती है।

पुरोधा और अग्निशिखा : — आप स्वयं आजीवन सदस्य बनकर, दूसरोंको बनाकर या विज्ञापन दिलवाकर इन पत्रिकाओंकी सहायता कर सकते हैं।

पुरोधाकी आजीवन सदस्यताके लिये रु. १५०.००
अग्निशिखाकी आजीवन सदस्यताके लिये रु. १००.००
(हिंदी) श्रीमातृवाणी——माताजीकी १५ पुस्तकोंका सेट रु० ३२५.००
डाक व्यय सहित
(अंगरेजी) श्रीमातृवाणी — माताजी की १५ पुस्तकोंका सेट
रु० ४२५.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्थायी उद्देश्य है — भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खालीपन चला जायगा।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donated by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA
STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ अन्य प्रकाशन

माताजी और श्रीअरविंदके बारेमें :

श्रीअरविंद — जीवन और दर्शन	रु. ४.००
बच्चोंके श्रीअरविंद	रु. ०.७५
माताजी — एक झलक	रु. ४.००
हमारी मां	रु. १.२५
श्रीअरविंद और उनका आश्रम	रु. १.५०

योग :

माताजीके मंत्र-वचन (दो भाग) प्रत्येक	रु. १.५०
ध्यान	रु. १.५०
जगन्माता (श्रीअरविंदकी पुस्तक 'माता'पर माताजीसे प्रश्नोत्तर)	रु. ३.००
योगके तत्त्व (श्रीअरविंदकी पुस्तक 'योगके तत्त्व' और उसपर माताजीसे प्रश्नोत्तर)	रु. ३.५०

शिक्षा और समाज :

नर और नारी	रु. १.५०
शिक्षाके आधार (माताजीके शिक्षाविषयक लेख)	रु. १.५०
शिक्षाके आयाम (श्रीअरविंदके शिक्षाविषयक लेख)	रु. १.५०
समयकी आवश्यकता (राजनीतिसे संबंध रखनेवाले श्रीअरविंदके लेख)	रु. १.५०

कहानियां जो कुछ और भी कहती हैं :

उसकी राहपर	रु. १.२५
दिलका आईना	रु. १.२५
प्रेमकी विजय	रु. १.५०
शताब्दी दैनन्दिनी (प्रत्येक पृष्ठपर माताजीके वचन)	रु. ५.००

पत्र, धनादेश आदि भेजनेका पता :

संपादक 'पुरोधा' एवं 'अग्निशिखा', श्रीअरविंद सोसायटी
पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

To give to the Divine
what one has in excess
is not an offering..
One should give at
least something out
of what one needs.

[signature]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

सितंबर १९७८ वर्ष ९, अंक २, पूर्णांक ९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

२९ **फरवरीकी ओर :** — श्रीअरविन्दका काम (१९३०)
अतिमानसका प्रभाव (१९३१)
चेतना — एक नसैनी
श्रीअरविन्दकी बलि (दिसंबर, १९५०)
श्रीअरविन्दकी फिरसे अभिव्यक्ति
श्रीअरविन्दद्वारा शारीरिक उपलब्धिका त्याग (१९५३)
श्रीअरविन्दके शरीरमें अतिमन
प्रकाशके मनकी उपलब्धि
भौतिक शरीरका रूपांतर
अतिमानसका अवतरण
संक्रमणके क्षण
अतिमानसिक शरीर (अगस्त, १९५४)
सीमित या सर्वांगीण पथ (१ फरवरी, १९५६)
२९ फरवरी, १९५६ का संदेश
अतिमानसका प्रादुर्भाव (२४ अप्रैल, १९५६)
अवतरण और अभिव्यक्ति (२ मई, १९५६)
कठिनाइयां बढ़ गयी हैं (११ जुलाई, १९५६)
अभिव्यक्ति दिखायी क्यों नहीं देती (५ सितंबर, १९५६)
अतिमानस अभिव्यक्तिसे फर्क (३ अक्तूबर, १९५६)
कितना समय लगेगा (१० अक्तूबर, १९५६)
विजय (जनवरी, १९५७)
एक वर्ष बाद (७ फरवरी, १९५७)
नये जगत्की सूचना (१० जुलाई, १९५७)
अतिमानसिक अंतर्दर्शन
वह चमत्कार हो गया (२० अक्तूबर, १९५७)
अतिमानसिक जीवनके बारेमें (नवंबर, १९५७)
१८ दिसंबर, १९५७
सोसायटी समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ फरवरीकी ओर

[१९५६ में २९ फरवरीको अतिमानसका अवतरण हुआ था। उसकी तैयारी बहुत पहलेसे चल रही थी। इस सिलसिलेमें समय-समयपर दिये गये माताजीके वक्तव्य देखिये। शायद ये अगले अंकमें पूरे होंगे। —सं०]

श्रीअरविंदका काम — १९३०

श्रीअरविंदका काम है पृथ्वीका एक अनोखा रूपांतर। मनके ऊपर सचेतन सत्ताके अनेक स्तर हैं। उनमेंसे सचमुच दिव्य जगत् वह है जिसे श्रीअरविंद अतिमन कहते हैं, यह सत्यलोक है . . . अतिमानस चेतना और शक्तिका सीधा अवतरण ही जीवनको पूरी तरह आत्माकी स्थितिमें नया रूप दे सकता है . . .।

हमने जो काम हाथमें लिया है उसके बारेमें जरा भी संदेह नहीं है, यह केवल एक परीक्षण नहीं है, बल्कि अतिमनका अनिवार्य अवतरण है। . . .

जब मैं पहली बार पांडिचेरीमें श्रीअरविंदसे मिली तो मैं गहन एकाग्रतामें थी, अतिमनमें चीजें देख रही थी, ऐसी चीजें जिनको अभिव्यक्त होना था, लेकिन किसी कारण अभिव्यक्त नहीं हो रही थीं। मैंने जो कुछ देखा था उसके बारेमें श्रीअरविंदको सुनाया और यह पूछा कि वे अभिव्यक्त होनेवाली हैं या नहीं। उन्होंने स्पष्ट कहा: हां। और तुरंत मैंने देखा कि अतिमनने धराको छू लिया और सिद्ध होने लगा था! पहली बार मैं उस शक्तिको अपनी आंखोंसे देख रही थी जो सत्यको वास्तविक बनाती है।

अतिमानसका प्रभाव — १९३१

थोड़ी-थोड़ी मात्रामें अतिमानस अपना प्रभाव फैला रहा है। सत्ता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कभी एक और कभी दूसरा अंश उसके देवत्वका स्पर्श या आलिंगन अनुभव करता है। लेकिन जब वह अपनी पूर्ण स्वयं शक्तिके साथ आयेगा तब एक परम आमूल परिवर्तन संपूर्ण प्रकृतिको अपने कब्जेमें कर लेगा। हम उसकी पूरी विजयकी घड़ीके अधिकाधिक निकट बढ़ रहे हैं...

सबसे महान् विजयोंमें एक होगी ... जड़-भौतिकका रूपांतर, जो देखनेमें सबसे अदिव्य है ... जिस अतिमानसिक शरीरका यह प्रादुर्भाव होता है उसकी प्रधान विशेषताएं हैं: हल्कापन, अनुकूलन-शीलता, नमनीयता और ज्योतिर्मयता। जब भौतिक शरीर पूरी तरह भागवत बन जायगा तो उसे ऐसा लगेगा मानों वह हवापर चल रहा है, उसमें भारीपन या तमस् या निश्चेतना नहीं होगी। उसकी अनुकूलनशीलता-शक्तिका भी कोई अंत न होगा: वह चाहे कैसी भी परिस्थितियोंमें क्यों न हो, वह तुरंत उससे की जानेवाली मांगोंको पूरा करेगा, क्योंकि उसकी पूर्ण चेतना उस सारे तमस् और अक्षमताको भगा देगी जो साधारणतः जड़ भौतिकको आत्माके लिये एक बोझ बना देते हैं। अतिमानसिक नमनीयता उसे यह क्षमता प्रदान करेगी कि वह छेद करनेका प्रयास करनेवाली हर विरोधी शक्तिके आक्रमणका सामना करे। वह कोई मंद विरोध प्रस्तुत नहीं करेगा, बल्कि, इसके विपरीत, वह इतना नमनीय होगा कि आक्रमणको निकल जानेका रास्ता देकर उसकी शक्तिको रद्द कर देगा। इस तरह उसे हानिकर परिणाम नहीं सहने पड़ेंगे और सबसे खतरनाक आक्रमणोंके बावजूद वह सही सलामत रहेगा। अंततः वह प्रकाशके पदार्थमें बदल दिया जायगा, एक-एक कोषाणु अति-मानसिक महिमाको फैलायेगा। केवल वे व्यक्ति ही नहीं जो इतने विकसित हैं कि अपनी सूक्ष्म दृष्टिको खोल सकें, बल्कि साधारण मनुष्य भी इस ज्योतिर्मयताको देखनेमें समर्थ होगा। यह हर एकके लिये एक स्पष्ट तथ्य होगा, उस रूपांतरका चिरस्थायी प्रमाण जो बड़े-से-बड़े अविश्वासीका भी संदेह दूर कर देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना — एक नसैनी

चेतना एक नसैनीकी तरह है। हर महान् युगमें एक महान् सत्ता रही है जो नसैनीमें एक और सीढ़ी जोड़नेमें और एक ऐसी जगहतक पहुंचनेमें समर्थ होती है जहां साधारण चेतना कभी न गयी हो। एक उच्च स्तरतक पहुंचकर पूर्ण रूपसे भौतिक चेतनाके बाहर निकलना संभव है। लेकिन तब फिर तुम नसैनीको बनाये नहीं रखते जब कि यह विश्वके महान् युगोंकी महान् उपलब्धि रही है। भौतिकके साथ संपर्क खोये बिना नसैनीमें एक और सीढ़ी जोड़नेकी क्षमता, उच्चतमको प्राप्त करनेकी और साथ ही एक प्रकारकी शून्यताको, दोनों स्तरोंके बीचके संबंध तोड़ देनेके स्थानपर उच्चतमको निम्नतमसे जोड़नेकी क्षमता। ऊपर और नीचे जाना, और शिखरको तलीसे जोड़ना ही सिद्धिका पूर्ण रहस्य है और यही अवतारका काम है। हर बार जब वह नसैनीमें एक और सीढ़ी जोड़ता है तो धरापर एक नयी सृष्टि होती है।

अब जो सीढ़ी जोड़ी जा रही है उसे श्रीअरविंद अतिमन कहते हैं। उसके फलस्वरूप चेतना अतिमानसिक जगत्में प्रवेश कर सकेगी और फिर भी अपने व्यक्तिगत रूपको, अपने व्यष्टिकरणको बनाये रख सकेगी, और फिर यहां एक नयी सृष्टिको स्थापित करनेके लिये उतर सकेगी।

निश्चय ही यह अंतिम नहीं है, क्योंकि सत्ताके और भी क्षेत्र हैं। लेकिन अभी हम अतिमानसको उतारनेके लिये, जगत्में एक पुन-संगठनको उत्पन्न करनेके लिये, जगत्को फिरसे अपनी वास्तविक दिव्य व्यवस्थामें लानेके लिये काममें लगे हैं।

तत्त्वत: यह व्यवस्थाकी सृष्टि है, हर एक चीजको अपने यथार्थ स्थानपर रखनेकी क्रिया है। इस समय मुख्य क्रियाशील शक्ति है महासरस्वती जो पूर्ण संगठन और व्यवस्थाकी देवी हैं।

एक ऐसी निरंतरताको प्राप्त करनेका काम, जो व्यक्तिको ऊपर और नीचे जाने दे और जो ऊपर है उसे भौतिकमें लानेके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनाके भीतर किया जाता है, जो यह करनेके लिये नियत है यानी, अवतार, वे चाहे कारागारमें बंद कर दिये जायं, वे किसीसे न मिलें-जुलें, कभी बाहर न निकलें, फिर भी वह अपना काम करेंगे क्योंकि यह चेतनाका काम है, अतिमन और भौतिक सत्ताके बीचमें संबंध जोड़नेका काम है। उन्हें मान्यता पानेकी कोई जरूरत नहीं, इस सचेतन संबंधको स्थापित कर सकनेके लिये उन्हें किसी बाहरी शक्तिकी जरूरत नहीं, फिर भी एक बार संबंध स्थापित हो जाय तो उसका असर बाहरी जगत्में एक नयी सृष्टिके रूपमें होकर रहेगा, एक नमूनेके नगरसे शुरू होकर एक पूर्ण जगत्में परिणति होगी। . . .

श्रीअरविंदकी बलि — दिसंबर १९५०

लोग यह नहीं जानते कि श्रीअरविन्दने संसारके लिये कितनी बड़ी बलि दी है। लगभग एक साल पहले ही जब मैं उनके साथ बातचीत कर रही थी तो मैंने कहा : "मेरी शरीर छोड़नेकी इच्छा हो रही है।" उन्होंने बहुत दृढ़ स्वरमें उत्तर दिया, : "नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। अगर इस रूपांतरके लिये जरूरी हुआ तो मैं जाऊंगा और तुम्हें हमारे अतिमानसिक अवतरण और रूपांतरके योग-को सिद्ध करना होगा।"

श्रीअरविंदकी फिरसे अभिव्यक्ति

जब मैंने उनसे (श्रीअरविन्दसे) पुनर्जीवित होनेके लिये कहा तो उन्होंने स्पष्ट रूपसे उत्तर दिया : "मैंने जान-बूझकर इस शरीरका त्याग किया है। मैं उसे फिरसे नहीं अपनाऊंगा। मैं अतिमानसिक पद्धतिसे बने पहले अतिमानसिक शरीरमें फिरसे अभिव्यक्त होऊंगा।"

श्रीअरविंदद्वारा शारीरिक उपलब्धिका त्याग — १९५३

श्रीअरविन्दने एक चरम निःस्वार्थताके कार्यके तौरपर अपना शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ा है। सामूहिक उपलब्धिको जल्दी लानेके लिये उन्होंने अपनी शारीरिक-उपलब्धिका त्याग किया। निश्चय ही, यदि धरती अधिक ग्रहणशील होती तो यह आवश्यक न होता।

श्रीअरविंदके शरीरमें अतिमन

१९३८ में भी मैं श्रीअरविन्दके अंदर अतिमनको उतरते हुए देखती थी, लेकिन उस समय वे उसे यहां स्थापित नहीं कर सके।

प्रकाशके मनकी उपलब्धि

ज्यों ही श्रीअरविन्दने अपना शरीर त्यागा त्यों ही जिसे वे "प्रकाशका मन" कहते थे वह इहलोकमें सिद्ध हो गया...

अतिमानस मनमें, यहांतक कि प्राणमें भी, बहुत पहले उतर चुका था — बहुत पहले: वह भौतिकमें भी काम कर रहा था लेकिन इन माध्यमोंके द्वारा, परोक्ष रूपसे। अब सवाल था भौतिकमें अतिमानस की प्रत्यक्ष क्रियाका। श्रीअरविन्दने कहा था कि वह तभी संभव होगा जब भौतिक मनको अतिमानसिक प्रकाश मिलेगा: भौतिक मन, स्थूलतम स्तरपर, प्रत्यक्ष क्रियाका यंत्र था। जब यह भौतिक मन अतिमानसिक प्रकाशको ग्रहण करता है तब उसे श्रीअरविन्द प्रकाश-मय मन कहते हैं।

भौतिक शरीरका रूपांतर

भूतकालमें कभी भौतिक शरीरका रूपांतर नहीं किया गया, शायद कभी प्रयास भी नहीं हुआ। यह तभी हो सकता है जब जीवन काफी लंबा हो; तुम शरीरको तबतक न छोड़ो जबतक तुम्हारा संकल्प न हो। इस तरह परिवर्तन लानेके लिये तुम्हारे पास काफी समय होगा। श्रीअरविन्दने एक बार कहा था — और बिना संकोच-के कहा था — कि इसमें तीन सौ वर्ष लगेंगे, यानी, भगवान्‌के साथ ऐक्यकी अन्तिम अवस्था प्राप्त करनेके बाद तीन सौ साल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं कहूंगी तीन सौ वर्ष तो कम-से-कम हैं। तुम्हें यह समझना चाहिये कि शरीरका रूपांतर करनेका मतलब क्या है। शरीरके सभी अवयव और कार्य तुम्हारी चेतनाके हस्तक्षेपके बिना यंत्रवत् चलते रहते हैं और यह शरीर पाशविक शरीरके नक्शेके अनुसार ही बना है। अगर तुम्हारा हृदय सेकण्डके सौंवे हिस्सेके लिये भी बंद हो जाय तो तुम्हारा शरीर चल बसेगा। किसी भी अवयवके बिना तुम्हारा काम नहीं चल सकता। तुम्हें उनपर निगाह रखनी चाहिये कि वे ठीक ढंगसे काम करें। रूपांतरका मतलब है इस शुद्ध रूपसे भौतिक व्यवस्थाके स्थानपर विधिवत् शक्तियोंकी एकाग्रताको लाना। तुम्हें शक्तियोंकी एक व्यवस्था लानी होगी जो विशेष प्रकारके स्पंदनों-के अनुकूल होगी। हर अवयवके स्थानपर आत्म-चेतन ऊर्जाका केंद्र होगा जो उच्चतर शक्तिकी एकाग्रताके द्वारा काम करेगा। तब पेट न होगा, हृदय भी न होगा। इन चीजोंके स्थानपर एक स्पंदन संस्थान होगा जो इनके सच्चे रूपका प्रतिनिधि होगा। भौतिक अवयव ऊर्जाके केंद्रोंके प्रतीक हैं। वे असली, अनिवार्य सद्वस्तु नहीं हैं। वे अमुक परिस्थितियोंमें उसे एक रूप या आकार देते हैं। रूपांत-रित शरीर अपने सच्चे ऊर्जा-केंद्रोंसे काम करेगा, पाशविक शरीरमें विकसित अपने प्रतिनिधियोंके द्वारा नहीं। उसके लिये तुम्हें पहले इन केंद्रों और उनके क्रिया-कलापके बारेमें सचेतन होना चाहिये। असचेतन यांत्रिक गतिकी जगह सचेतन नियंत्रणकी क्रिया होनी चाहिये। इस भांति तुम्हारे अधिकारमें भौतिक, पाशविक अवयवोंकी जगह प्रतीकात्मक स्पंदन होंगे, प्रतीकात्मक ऊर्जाएं होंगी। इसका यह अर्थ नहीं है कि कोई निश्चित रूपमें पहचानमें आनेवाला रूप ही न होगा। रूप इन ठोस कणों (धूलि) से नहीं, गुणोंसे बना हुआ होगा। वह नमनीय और गतिशील होगा, आजके स्थूल निश्चित रूपके जैसा नहीं। जैसे तुम्हारे संवेदनों और भावोंके अनुसार तुम्हारा चेहरा बदलता है उसी तरह आंतरिक गतिकी आवश्यकताके अनुसार शरीर बदलेगा। क्या तुम्हें स्वप्नमें कभी इस तरहका अनुभव नहीं हुआ? तुम हवामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर उठते हो। तुम अपनी कोहनीसे एक दिशामें धक्का देते हो और शरीर उस ओर बढ़ जाता है। तुम लात मारते हो और शरीर कहीं और जा पहुंचता है। तुम अपनी इच्छाके अनुसार पारदर्शक हो सकते हो और ठोस दीवारमेंसे आर-पार हो सकते हो! रूपांतरित शरीर कुछ-कुछ इसी तरह व्यवहार करेगा। वह हल्का, प्रकाशमान और लचीला होगा। हल्कापन, प्रकाश और लचीलापन शरीरके आधारभूत गुण होंगे।

ऐसा शरीर तैयार करनेके लिये तीन सौ वर्ष कुछ भी नहीं हैं, हजार वर्ष भी बहुत अधिक न होंगे। स्वभावतः मैं एक ही शरीरकी बात कर रही हूं। अगर तुम बीचमें शरीर बदल लो तो वह वही शरीर न रहेगा। पचास वर्षका होते-होते शरीर क्षीण होने लगता है। इसके विपरीत तुम्हारा शरीर ऐसा हो जो अपने-आपको पूर्ण करता जाय। अगर हर गुजरता हुआ साल एक कदम आगे बढ़ाता चले तो तुम अनिश्चित कालतक रह सकते हो क्योंकि आखिर तुम अमर हो।

रूपांतरके काममें एक और कठिनाईका सामना करना पड़ेगा। कोई शरीर-विशेष तबतक नहीं बदल सकता जबतक इर्द-गिर्दके शरीरोंमें और सामान्य परिवेशमें भी उसके अनुरूप परिवर्तन न हों। आदमी आखिर औरोंके बीचमें पारस्परिक आदान-प्रदानद्वारा ही जीता है। व्यक्तिगत परिवर्तनकी अपेक्षा सामूहिक परिवर्तनमें अधिक समय लगता है। अतः अब केवल व्यक्तिगत चेतनाको नहीं, सामूहिक चेतनाको काम करना है।

अतिमानसका अवतरण

क्या यह कहा जाता है कि जब अतिमानस उतरेगा तो वह इतनी प्रबल और अप्रतिरोध्य शक्तिके साथ आयगा कि सारी मानवजाति तुरंत परिवर्तित हो जायगी, यानी, सभी मनुष्य, वे चाहें या न चाहें, उसके लिये प्रयास करें या न करें, सबके-सब अपने-आप रूपांतरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायेंगे ? यह संभव नहीं है : यह एक आरामदेह सिद्धांत है जो आलस्य और तमस्‌को प्रोत्साहन देता है।

सभी मनुष्योंके अतिमानवमें बदल जानेकी और साधारण मानव-जातिके पूरी तरह विलुप्त हो जानेकी कोई जरूरत नहीं। अतिमानव-को स्थान देनेके लिये मानवजातिका पुरातन "मैमथ" या "मैस्टडन" की तरह विलुप्त हो जाना जरूरी नहीं है। दोनों जातियां एक साथ वास कर सकती हैं। पृथ्वी पर्याप्त विशाल है। मनुष्य प्रकट हुआ है, इस कारण वानर विलुप्त नहीं हुआ, यद्यपि कहा यह जाता है कि मनुष्य वानर वंशसे ही आया हुआ है। अतिमानव आयगा और अपने जीवनके नये विधानके अनुसार रहेगा, मनुष्य भी अपने मानवी धर्मके अनुसार चलता रहेगा। केवल इतना ही नहीं। उन्हें कठोरता-के साथ अलग-अलग कक्षोंमें रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं। दोनोंमें अदला-बदली और परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया हो सकती है।

अतिमानवके आनेके साथ-ही-साथ स्वभावतः पृथ्वीके वातावरणमें सामंजस्य, शांति, सुख और सद्भावनाका अवतरण होगा और संभवतः मानवजातिको इससे लाभ होगा। जीवनकी परिस्थितियां बदल जायंगी और मानव जीवनपर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। मानवजातिके सामान्य बरतावोंमें प्रकाश, आनंद और शांतिका तत्त्व प्रवेश पायगा। और हो सकता है कि मनुष्य अपनी तरफसे अतिमानवजातिके लिये, रंगरूट भरती करनेके क्षेत्रके रूपमें अपनी सेवाएं प्रस्तुत करे। इससे बढ़कर, चूंकि समस्त प्रकृति एक ही गति है और सृष्टिका कोई भी स्तर दूसरोंसे पूरी तरह अलग नहीं है इसलिये हो सकता है कि परि-वर्तन पशु और यहांतक कि वनस्पतिको भी छू ले। उदाहरणके लिये वनस्पति ज्योतिर्मय या ज्यादा हरा रंग-रूप पा जाये और पशुमें ज्यादा सुखी और सजीव उछाल आ सकती है। संभव है कि पृथ्वी-पर दुलर्भता, अभाव, सूखा, खलबली और अनर्थ कम हो जायं।

फिर भी हमेशा अपवाद संभव हैं। अब भी जब जीवनकी परि-स्थितियां ज्यादा अच्छी हैं और यह आशा की जाती है कि चीजें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल और सामंजस्यपूर्ण हों, ऐसे लोग हैं जो स्वभावसे ही इतने अंध-कारपूर्ण, झगड़ालू और अशांत हैं कि उनपर कोई असर नहीं होता और वे लड़ाई-झगड़ा करने, और कष्ट देनेके अवसरोंकी खोजमें चलते चले जाते हैं। वे नयी मानवजातिके बीचमें ऐसे होंगे जैसे "हौटेण्टौट्स" और "हेडहण्टर्स" — आदिवासी और जंगली जातियां — आज सभ्य मानवजातिकी आंखोंमें हैं।

संक्रमणके क्षण

पृथ्वीके इतिहासमें ऐसे संक्रमणके क्षण होते हैं जब हजारों सालोंसे चलती चली आनेवाली चीजोंको उन चीजोंके लिये स्थान देना पड़ता है जो अभिव्यक्त होनेवाली हैं। ऐसे समय, विश्व-चेतनाकी विशेष एकाग्रता होती है, कह सकते हैं उसका प्रयास तीव्र हो उठता है और प्रगतिके प्रकार और सिद्ध किये जानेवाले रूपांतरके स्वरूपके अनुसार बदलता है। हम जगत्के इतिहासके ठीक ऐसे ही एक मोड़पर हैं, जिस प्रकार प्रकृतिने पृथ्वीपर मानसिक सताका सर्जन किया, उसी प्रकार अब इस मनमें अतिमानसिक चेतना और व्यक्तित्व-को लानेके लिये संकेंद्रित क्रिया चल रही है।

कुछ सताओंको, जो देवताओंके इस रहस्यको जानती हैं, पार्थिव जीवनके इस क्षणके महत्त्वके बारेमें बता दिया गया है, और उन्होंने इस पृथ्वीपर जन्म लिया है ताकि वे जैसे बने अपनी भूमिका निभा सकें। एक महान् ज्योतिर्मय चेतना पृथ्वीके ऊपर मंडरा रही है और अपने वातावरणमें एक प्रकारका भंवर पैदा कर रही है। वे सब जो ग्रहणशील हैं, इस आवर्तसे एक लहर पाते हैं, इस प्रकाशसे एक किरण पाते हैं और हर एक अपनी क्षमताके अनुसार उसे रूप देनेका प्रयास करता है।

यहां हमें फैलते हुए प्रकाशके ठीक केंद्रमें, रूपांतरकी शक्तिके स्रोतमें होनेका अद्वितीय सौभाग्य प्राप्त है।

श्रीअरविंदने मानव शरीरमें अतिमानसिक चेतनाको मूर्त्त रूप दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उन्होंने हमें केवल उस पथकी प्रकृति और उसका अनुसरण करनेकी पद्धति ही नहीं बतायी, बल्कि अपनी व्यक्तिगत सिद्धिद्वारा हमारे सामने उदाहरण रखा। कहा जा सकता है कि उन्होंने हमें इस बातका प्रमाण दिया है कि यह चीज की जा सकती है और यही समय है उसे करनेका।

अतिमानसिक शरीर — अगस्त १९५४

अतिमानसिक शरीर अलैंगिक होंगे, क्योंकि तब पाशविक प्रजनन की आवश्यकता न रहेगी।

मानव आकृति केवल अपने प्रतीकात्मक सौंदर्यको बनाये रखेगी और अभीसे देखा जा सकता है कि कुछ बेढंगे उभार लुप्त हो जायंगे, जैसे, पुरुषकी जननेन्द्रिय और स्त्रीके स्तन।

जनवरी १९५६

सबसे महान् विजयें सबसे कम शोर मचाती हैं।

नए जगत्की अभिव्यक्तिकी घोषणा ढिंढोरा पीटकर नहीं की जाती।

*

...एक दिन किसीने मुझसे संदेश मांगा, उसने मुझसे कहा: "ओह, हम इसे छापना चाहते हैं, क्या आप संदेश नहीं दे सकतीं?" मैं क्या करती? मैंने आगामी सालकी तरफ देखा: उसके बारेमें कुछ भी कह सकनेके लिये पहले मुझे उसको देखना चाहिये। मैंने देखा और देखते समय साथ-ही-साथ इस तथाकथित अद्भुत सालकी घटनाओंके बारेमें लोगोंकी कल्पनाओं, अनुमानों और आविष्कारोंको भी देख लिया। उन्हें देखते वक्त मैंने यह भी देखा कि साल कैसा होगा, पहलेसे वह कैसा है — इस तरह उसका कुछ अंश दिखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने सोचा वह कैसे होगा, इसके बारेमें कुछ न कहना ही ज्यादा अच्छा होगा।

और जब लोग बहुत धूमधाम और घोषणाकी प्रतीक्षा कर रहे थे तब मैंने वही कहा जो यहां कहा है। बस, इतना ही, ज्यादा कुछ नहीं। मैंने जो कहा वह इतना ही है कि सालके बारेमें शोर मचानेकी जगह चुप रहना ही ज्यादा अच्छा है, क्योंकि शोर कोई सहायता नहीं करता। जो लोग अज्ञानी हैं और जो कुछ हो रहा है उसे हक्के-बक्के होकर देखते हैं उनकी परेशानीके बिना, चीजोंको ज्यादा गहरे विधानके अनुसार चलने दो।

और सबसे बढ़कर, आकर यह मत कहना: "जानते हो, इस तरह होगा" — क्योंकि यही सारी चीजको कठिन बना देता है। मैंने यह नहीं कहा है कि जो होना है सो नहीं होगा। लेकिन अगर उसकी चर्चा करें तो वह बहुत ज्यादा कठिन हो जायगा। इसलिये चीजोंको अपने-आप रूप लेने देना ज्यादा अच्छा होगा।

और आखिर अगर तुम बहुत संयमी और शांत होना चाहो तो तुम अपने-आपसे पूछो: "अच्छा, दस हजार साल बाद यह सिद्धि क्या कहायेगी जिसे हम चरितार्थ करनेके मार्गपर हैं?" कालके अभियानमें एक अति सूक्ष्म बिंदु, भावी उपलब्धियोंके लिये एक तैयारी, एक प्रयास। ओह! इसमें वह न जाना इतनी बुद्धिमत्ताकी बात है! आओ, हम जितना कर सकते हैं करें और अपने-आपको शांत रखें...

★

...फिर भी मुझे बहुत आशा है कि जब कोई चीज अभिव्यक्त होगी तो तुम उसे देखनेमें समर्थ होओगे। स्वभावतः, अगर अचानक ज्योतिर्मय प्रदुर्भाव हों या बाहरी रूप बिलकुल बदल जायं तो मेरा ख्याल है कि कोई भी, यहांतक कि कुत्ते-बिल्ली भी उसे देख लेंगे। लेकिन ऐसी चीजके लिये समय लगता है, वे निकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यकी नहीं हैं, वे काफी दूर हैं, बहुत बादमें आयंगी, उनसे पहले बहुत-सी बड़ी चीजें होंगी और, इस बातका ख्याल करो कि वे बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण होंगी। क्योंकि वे केवल खिलते फूलके समान होंगी, लेकिन खिलनेसे पहले उनकी सत्ताका तत्त्व जड़ और पौधेमें होना चाहिये।

सीमित या सर्वांगीण पथ — १ फरवरी, १९५६

...ठीक यही समस्या यहां श्रीअरविंदके सामने और फ्रांसमें मेरे सामने रखी गयी थी। क्या व्यक्तिको इस पथको सीमित करके लक्ष्यतक जा पहुंचना चाहिये और फिर बादमें बाकी सब हाथमें लेकर सर्वांगीण रूपांतरका काम शुरू करना चाहिये या उसे इधर-उधर कुछ भी छोड़े बिना, पथसे कुछ भी हटाये बिना, सभी संभावनाओंको एक साथ लेकर, सभी बिंदुओंपर साथ-ही-साथ उत्तरोत्तर बढ़ना चाहिये? दूसरे शब्दोंमें, क्या जबतक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता यानी, व्यक्ति अतिमानसके प्रति सचेतन बनकर उसे सिद्ध नहीं करता तबतक उसे जीवनसे दूर हट जाना चाहिये या उसे संपूर्ण सृष्टिका आलिंगन करना चाहिये और संपूर्ण सृष्टिके साथ-साथ अतिमानसकी ओर क्रमशः बढ़ना चाहिये?

यह कल्पना की जा सकती है कि चीजें एक-एक चरण बढ़ती हैं: तुम आगे बढ़ते हो, सामने एक कदम भरते हो, फिर परिणामस्वरूप बाकी सब कुछको आगे बढ़ाते हो। फिर एक और कदम, बाकीको और आगे बढ़ाते हो, इस तरह चलता है।

इससे लगता तो ऐसा है कि तुम आगे नहीं बढ़ रहे, लेकिन इस तरह समग्र वस्तु आगे बढ़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ फरवरी, १९५६ का संदेश

२९ फरवरी — २९ मार्च, १९५६

प्रभु, तूने संकल्प किया और मैं कार्यान्वित करती हूं
धरतीपर एक नया प्रकाश आ रहा है
एक नए जगत्‌ने जन्म लिया है
जिन चीजोंके लिये वचन दिया गया था वे चरितार्थ हो गयीं।

अतिमानसका प्रादुर्भाव — २४ अप्रैल, १९५६

पृथ्वीपर अतिमानसका प्रादुर्भाव एक प्रत्याशा नहीं, बल्कि जीता-जागता तथ्य है, वास्तविकता है।

वह यहां काम कर रहा है और एक ऐसा दिन आयगा जब कि सबसे अंधा, सबसे निश्चेतन, यहांतक कि सबसे अनिच्छुक व्यक्ति भी उसे पहचाननेके लिये बाधित होगा।

★

अतिमानसिक प्रकाश, चेतना और शक्तिका प्रादुर्भाव हो चुका है। अतिमानसिक आनंद अभी नहीं आया है। जब मैं "अवतरित" की जगह "अभिव्यक्ति" कहती हूं तो मेरा मतलब यह नहीं होता कि जड़में, निश्चेतनमें अंतर्ग्रस्त अतिमन प्रकट हुआ है। वह प्रकटन तो भविष्यके लिये है, लेकिन अब निश्चय ही यह केवल समयका सवाल है : प्रक्रिया स्वाभाविक और अनिवार्य है। अभिव्यक्ति है हमारे विश्वके सूक्ष्म भौतिक वातावरणमें स्वयं अतिमानसिक जगत्‌का प्रादुर्भाव।

अवतरण और अभिव्यक्ति — २ मई, १९५६

जब तुम ऊपर उठकर वहां स्थित वस्तुको पकड़कर उसके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतरते हो तो मैं उसे अवतरण कहती हूं। वह व्यक्तिगत घटना है।

जब कोई ऐसी घटना घटे जो सामान्य व्यवस्थाकी संभावना उत्पन्न करनेके लिये पर्याप्त हो तो वह अवतरण नहीं, अभिव्यक्ति होती है।

मैं जिसे अवतरण कहती हूं वह व्यक्तिगत चेतनामें एक व्यक्तिगत गति है। और जब पुराने जगत्में एक नया जगत् अभिव्यक्त होता है — उदाहरणके लिये, जब मन पृथ्वीपर आया था — तो मैं उसे अभिव्यक्ति कहती हूं...

तुम उसे जो मर्जी नाम दे लो, मेरे लिये एक ही बात है, लेकिन हमें एक-दूसरेको समझना चाहिये।

"आरोह" और "अवरोह" कहनेके तरीके हैं, उनका कोई निर्णायक अर्थ नहीं होता: सच पूछो तो "ऊपर" और "नीचे" नामकी कोई चीज नहीं होती। जब हमें लगता है कि हम किसी चीजकी ओर ऊपर उठ रहे हैं तब हम आरोहकी बात करते हैं; और हम अवरोह तब कहते हैं जब उस चीजको हाथमें करके हम उसे अपने अंदर उतारते हैं।

लेकिन जब द्वार खोल दिये जायं और बाढ़ घुस जाये तो तुम उसे अवतरण नहीं कह सकते। वह एक शक्ति है जो अपने-आपको फैला रही है।

★

जो लोग अंदरसे तैयार हैं, जो खुले और उच्चतर शक्तियोंके संपर्कमें हैं, जो लोग अतिमानसिक प्रकाश और चेतनाके साथ कम या अधिक रूपसे व्यक्तिगत संपर्कमें हैं, वे भौतिक वातावरणमें फर्क महसूस करनेमें सक्षम हैं...

लेकिन जो लोग अपनी आंतरिक सत्ताके प्रति लेशमात्र भी सचेतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हैं और जो अपनी आत्माके स्वरूपके बारेमें बात करते ही घबड़ा उठेंगे, ऐसे लोग निश्चय ही पृथ्वीके वातावरणमें फर्क देखनेके लिये तैयार नहीं हैं। उसके लिये उन्हें अभी बहुत दूर जाना है, क्योंकि जिनकी चेतना कम या अधिक रूपमें पूरी तरह बाहरी सत्तामें केंद्रित है — मानसिक, प्राणिक और शारीरिक सत्तामें — उनकी मान्यता पानेके लिये चीजोंको असंगत और अप्रत्याशित प्रतीत होना चाहिये और तब ये लोग उन्हें चमत्कार कहते हैं।

लेकिन शक्तियोंके हस्तक्षेपका, बदलती परिस्थितियों और चरित्रोंका और सामान्य प्रभावका निरंतर चमत्कार — यह चमत्कार नहीं कहलाता, क्योंकि व्यक्ति केवल बाहरी रूप देखता है और यह उसे बिलकुल स्वाभाविक लगता है।

कठिनाइयां बढ़ गयी हैं — ११ जुलाई, १९५६

कुछ अधीर लोग हैं जो मुझसे कहते हैं: "यह कैसी बात है कि कुछ साधकोंकी कठिनाइयां बढ़ गयी हैं? एक बार आपने कहा था कि जब अतिमानस उतरेगा तो हम सबको पता लग जायगा। क्या यह वचन पूरा किया गया है?"

मानवजाति मुझे जितना देनेमें समर्थ है मैंने शायद उससे कहीं अधिककी आशा की थी। लेकिन तुम्हें कैसे मालूम कि कठिनाइयां बढ़ गयी हैं, तुम ज्यादा सचेतन नहीं बन गये? यह संभव है कि सभी कठिनाइयां पहलेसे ही मौजूद थीं और तुम्हें उनका पता न था। अगर तुम ज्यादा स्पष्ट रूपसे देखते हो और यह पाते हो कि चीजें बहुत सुन्दर नहीं हैं, तो यह अतिमानसका दोष नहीं है। दोष तुम्हारा ही है। अतिमानस तुम्हें प्रकाश देता है, तुम्हें एक ऐसा आईना देता है जिसमें तुम इतनी अच्छी तरह देखते हो जितनी अच्छी तरह अबतक नहीं देखा। और तुम नाराज होते हो क्योंकि जो दीखता है वह हमेशा सुखद नहीं होता...

बात यह है: "क्या ऐसा नहीं है कि अतिमानसिक शक्ति पुन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्धारवंचित मानस प्रकृतिद्वारा खड़ी की गयी बाधाओंके बावजूद यहां काम कर रही है?" सचमुच मैं आशा करती हूं कि वह काम कर रही है। क्योंकि अन्यथा करनेके लिये कुछ न होगा, जगत्का पुनरुद्धार कभी न होगा। लेकिन चीजें तुम्हें ज्यादा कठिन मालूम हो सकती हैं क्योंकि तुम जरा ज्यादा सचेतन हो और अबतक अपने अंदर जो चीज नहीं देखी थीं उन्हें देख पा रहे हो।

एक और कारण भी है। वह यह कि जब क्रियाशील शक्ति ज्यादा शक्तिशाली होती है, ज्यादा जोर देती है तो स्वभावतः विरोध करनेवाली चीज उसी अनुपातमें अधिक विरोध करने लगती है। और अगर तुम अपनी छोटी कठिनाइयों, छोटी असुविधाओं, छोटे कष्टों और बड़े दोषोंसे मोहित होनेकी जगह दूसरे छोरको देखनेकी कोशिश करो, यह देखनेकी कोशिश करो कि किस बिंदुपर भागवत शक्ति ज्यादा शक्तिशाली है, भागवत कृपा ज्यादा क्रियाशील है, और सहायता ज्यादा ठोस है — एक शब्दमें, कहें तो, अगर तुम जरा कम स्वार्थपूर्ण बनो, अपने ऊपर जरा कम एकाग्र हो और जरा विस्तृत दृष्टि रखो जिसमें तुम ऐसी चीजोंको शामिल कर सको जो तुमसे व्यक्तिगत रूपमें संबद्ध न हों, तो शायद समस्याके बारेमें तुम्हारी दृष्टि बदल सकती है।

अभिव्यक्ति दिखायी क्यों नहीं देती — ५ सितंबर १९५६

संपूर्ण जगत्के लिये अतिमानसिक अभिव्यक्ति ज्यादा दृश्य और ठोस इंद्रियगोचर हो सके उससे पहले शायद हजारों वर्षोंको बीतना पड़ेगा . . .। विकसित चेतनाके लिये अतिमानस सूक्ष्म-भौतिकके किसी क्षेत्रमें पहले ही सिद्ध हो चुका है। वहां वह पहलेसे ही उपस्थित, दृष्टिगोचर और ठोस है। वह क्रिया-कलाप और रूपोंमें अपने-आपको अभिव्यक्त कर रहा है। जब तुम उस चेतनाके संपर्कमें होते हो और उसके अंतर्दर्शनमें रहते हो तो तुम्हें यह दृढ़ प्रतीति होती है कि इस जगत्को सघन करके सबके लिये दृश्य बनानेके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पर्याप्त है...। यह संभव है कि जो लोग अपने सपनोंमें सचेतन हैं उनको नये प्रकारके सपने आयंगे जो नये जगत्‌के साथ उनका नाता जोड़ देंगे। क्योंकि वह उन सबके सूक्ष्म भौतिककी पहुंचके अंदर है जिनमें उसके साथ मेल खानेवाले अवयव हों। और अगर तुम संस्कारोंको ग्रहण करने और उन्हें अपनी चेतनामें प्रविष्ट करनेके लिये तैयार हो तो उस भौतिकताका अनिवार्य रूपसे बाहरी जड़ पदार्थपर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है।

अतिमानसी अभिव्यक्तिसे फर्क — ३ अक्तूबर, १९५६

मुझसे पूछा गया है कि अतिमानसकी उपस्थितिसे क्या फर्क पड़ेगा, घटनाओंके प्रवाहको वह किस तरह बदलेगी क्योंकि अतिमानसिक अभिव्यक्तिके बाद जीवनका पुनरावलोकन करना होगा।

यह स्पष्ट है कि आधुनिक वैज्ञानिक धारणा प्रस्तर-युगकी धारणाओं-की अपेक्षा उस चीजके ज्यादा निकट है जो वैश्व सद्वस्तुसे मेल खाती है। इसके बारेमें जरा भी शंका नहीं। लेकिन अब विश्वमें एक ऐसी चीज प्रवेश करेगी जो पहले यहां न थी और जिसका अध्ययन आजतक नहीं किया गया है, और शायद वह इस वैज्ञानिक धारणाको पूरी तरह पार करके, उससे आगे बढ़कर उसे उलट-पुलट कर दे।

यह परिवर्तन, वैश्व तत्त्वोंका यह आकस्मिक परिवर्तन हमारे प्रत्यक्ष दर्शनोंमें एक प्रकारकी अव्यवस्था अवश्य लायेगा, लेकिन उसमेंसे नया ज्ञान उठेगा। अतिसामान्य रूपमें वह नूतन अभिव्यक्तिका परि-णाम होगा।

यह संभव है कि अब ऐसी चीजें हो रही हैं जिन्हें देखनेका लोगों-को अभ्यास नहीं है। लेकिन यह तो अर्थ लगानेपर निर्भर है। केवल एक ही तथ्य है जिसका मुझे पूरा विश्वास है...वह यह कि संभाव्य वैश्व संयोजनोंके स्वरूप और उनके गुण और मात्रामें इतना ज्यादा परिवर्तन आनेवाला है कि जीवनके साथ संबंध रखनेवाले सभी लोग चकरा जाएंगे। चलो, प्रतीक्षा कर देखें...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन कड़े नियम बनाता है, और यह करते समय तुम अपने-आप-को बाहरी, सतही जीवनसे अलग नहीं कर लेते, क्योंकि तुम्हें ऐसा लगता है कि सतह उदारताके साथ इन विधानोंको स्वीकार करती है। लेकिन यह तो केवल बाहरी रूप है जो तुम्हें आत्माकी सर्जनात्मक शक्तिसे अलग कर देता है, भागवत कृपाकी सच्ची शक्ति-से अलग कर देता है। तुम समझ सकते हो कि अगर तुम अपनी अभीप्सा और मनोवृत्तिसे एक उच्चतर तत्त्वको, नये तत्त्वको — जिसे अब हम अतिमानस कह सकते हैं — वर्तमान संयोजनोंमें लाओ तो तुम एकाएक उनके स्वरूपको बदल सकोगे और तब ये सब तथाकथित आवश्यक और अटल विधान बेतुके हो जायंगे।

कितना समय लगेगा — १० अक्तूबर, १९५६

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारोंके अनुसार वानर मस्तिष्कसे पहले मानव मस्तिष्कतक विकसित होनेके लिये मानसिक अभिव्यक्तिको क़रीब दस लाख साल लगे। इसीलिये मैंने तुमसे कहा है कि यह आशा नहीं करनी चाहिये कि अतिमानसिक अभिव्यक्ति कुछ ही महीनों या सालोंमें चरितार्थ हो जायगी। यह स्पष्ट है कि उसमें कुछ अधिक समय लगेगा।

ऐसा लगता है कि कुछ लोगोंने यह निष्कर्ष निकाला है कि मैंने यह घोषणा की थी कि दस लाख सालोंतक अतिमानव नहीं होगा। इस विचारको ठीक करना चाहती हूं।

श्रीअरविन्द कहते हैं कि जैसे-जैसे विकास चेतनाके अधिकाधिक ऊंचे स्तरपर पहुंचता है वैसे-वैसे उसकी गति ज्यादा तेज होती जाती है और जब अतिमानस या आत्मा उसके साथ मिल जायगी तो चीज ज्यादा तेजीसे बढ़ेगी। इसलिये हम यह आशा कर सकते हैं कि कुछ शताब्दियोंमें पहली अतिमानसिक जाति प्रकट होगी।

लेकिन यह बात भी कुछ लोगोंको घबरा देती है क्योंकि वे मानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि श्रीअरविन्द हमेशा जो वचन देते आये हैं कि वह समय आ गया है जब अतिमानसिक रूपांतर संभव है, यह उसके विपरीत है। लेकिन तुम्हें नयी जातिके आगमन और अतिमानसिक रूपांतरमें घपला नहीं करना चाहिये। श्रीअरविन्दने जिसका वचन दिया था और जिसमें हम उन लोगोंको, जो यहां हैं, स्पष्ट रूपसे रस है, वह यह है कि अब समय आ गया है जब वर्तमान मानवजातिसे कुछ गिनी-चुनी सत्ताएं, जो आवश्यक आध्यात्मिकताकी शर्तें पूरी करती हैं, अतिमानसिक शक्ति, अतिमानसिक चेतना और अतिमानसिक प्रकाशकी सहायतासे अपने शरीरको रूपांतरित करनेमें समर्थ होंगी, और पशु-मानव न रहकर अतिमानव बन जायं।

यह वचन उन्होंने अपने इस ज्ञानके आधारपर दिया था कि अतिमानसिक शक्तिका पृथ्वीपर प्रादुर्भाव होनेवाला था। वास्तवमें अतिमानसिक शक्ति उनमें बहुत पहले उतर चुकी थी। वे उसे जानते थे और वे यह भी जानते थे कि उसके परिणाम क्या होंगे।

अब चूंकि अतिमानस सामान्य वैश्व रूपमें अभिव्यक्त हो चुका है; इसलिये रूपांतरकी संभावनाकी निश्चिति बहुत ज्याद बढ़ गयी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो लोग शर्तोंको पूरा करेंगे वे इस रूपांतरके पथपर हैं।

शर्तें तो श्रीअरविन्दने सविस्तार 'योग-समन्वय' में और उससे भी बढ़कर अपने अंतिम लेखोंमें (अतिमानसिक अभिव्यक्तिपर) ज्यादा ब्योरेमें बतलायी हैं। अब केवल उसे चरितार्थ करना है।

विजय — जनवरी, १९५७

"विजय केवल वही शक्ति पा सकती है जो विरोधी अशुभ शक्तिसे ज्यादा महान् हो।

"क्रूसपर चढ़ा हुआ शरीर नहीं, महामहिमान्वित शरीर ही संसारका उद्धार करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह संदेश अगर समझमें आ जाय तो, ठीक वही है जो अधिकाधिक पृथ्वीपर प्रकट होती हुई श्रेष्ठ मानव सद्भावनाको अपने लक्ष्य-तक पहुंचा सकता है। मैंने इसे मनुष्योंमें भ्रातृत्वके सच्चे भावको जगाने और सभी भावी युद्धोंको रोकनेके महान् सामूहिक प्रयासके उत्तरमें लिखा था।

संदेशने कुछ-कुछ विशेष रूप धारण कर लिया है क्योंकि वह सद्भावना एक ईसाई देशसे चली थी और मैंने एक ईसाई धारणाका उत्तर दिया था। ज्यादा यथार्थ रूपसे कहना हो . तो एक ऐसी धारणाके ईसाई रूपका उत्तर दिया जो जगत्में हर जगह, विभिन्न देशोंमें और धर्मोंमें विभिन्न रूपसे अभिव्यक्त पायी जाती है। मैं भौतिक वास्तविकताके पूर्ण त्यागके विचारके बारेमें कह रही हूं। यह विचार सारे जगत्में उन सबमें फैला हुआ है जो आध्यात्मिकताकी ओर मुड़ते हैं। यह विचार भौतिक जगत्के लिये गहरी अवहेलना-द्वारा उसे भ्रांति और मिथ्यात्वकी चीज बना देता है और, जैसा कि श्रीअरविन्द कहा करते थे, इस तरह सारा क्षेत्र विरोधी शक्तियोंके अधिराज्यके लिये खाली छोड़ देता है. . .

चूंकि आजतक अशुभका विरोध एक ऐसी आध्यात्मिक शक्तिने किया है जिसमें भौतिक जगत्का रूपांतर करनेकी क्षमता नहीं थी, इसलिये हजारों वर्षोंतक मानवजातिका सद्भावनाके लिये किया गया दृढ़ प्रयास केवल एक दयनीय पराजयमें समाप्त हुआ है और जगत्को कष्ट, भ्रष्टता और मिथ्यात्वकी उसी अवस्थामें छोड़ गया है। व्यक्तिको — एकमात्र सच्चा उपाय यही है कि व्यक्तिको उस स्तर-पर, भौतिक स्तरपर, जहां विरोधी शक्तियोंका राज्य होता है, एक ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिये जो उनसे बढ़-चढ़कर हो, जो उन-पर उसी क्षेत्रमें विजय पानेके लिये सक्षम हो। दूसरे शब्दोंमें, एक आध्यात्मिक शक्ति जिसमें चेतना और भौतिक जगत्को रूपांतरित करनेकी क्षमता है। यह है अतिमानसिक शक्ति। आवश्यकता इस बातकी है कि भौतिक स्तरपर उसकी क्रियाके प्रति ग्रहणशील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना जाय और निर्विरोध राज्य शत्रुको सौंपकर सुदूर निर्वाणमें न भागा जाय।

न भौतिक जीवनका त्याग, न ही भौतिक शक्तिका उत्सर्ग विजय प्राप्त कर सकता है। वह काम केवल आनंद ही कर सकता है, वह आनंद जिसे अतिमानसिक चेतना लाती है, वह आनंद जो शक्ति, सहनशीलता और परम साहस है। सब कुछ छोड़कर बच निकलनेकी अपेक्षा इसमें कहीं अधिक वीरताकी जरूरत है, लेकिन विजय प्राप्त करनेका यही एकमात्र तरीका है।

एक वर्ष बाद — ७ फरवरी, १९५७

लगभग एक वर्ष हो गया, एक बुधवारको अतिमानसिक शक्तिकी अभिव्यक्ति हुई थी। तभीसे शक्ति बहुत क्रियाशील रूपमें काम कर रही है, यद्यपि बहुत कम लोग उसे देखनेमें समर्थ हैं। और मेरे ख्यालसे, वह समय आ गया है जब सामूहिक ग्रहणशीलताके लिये प्रयास करके हम उसकी यथासंभव मदद कर सकते हैं। स्वभावतः, शक्ति केवल आश्रममें ही काम नहीं कर रही, बल्कि सारे जगत्में, हर जगह काम कर रही है। जहां कहीं ग्रहणशीलता है वहां वह काम कर रही है। संपूर्ण जगत्में केवल आश्रमको ही ग्रहणशीलताका एकाधिकार प्राप्त नहीं है। लेकिन चूंकि हम सब यहां हैं, और कम या अधिक रूपमें जो हुआ है उसे जानते हैं, इसलिये हम सामूहिक रूपसे—मैं आशा करती हूं कि व्यक्तिगत रूपसे हर एक परिस्थितियोंका लाभ उठानेका भरसक प्रयास कर रहा है—भूमिको एक करके, मिट्टीको उर्वर बनाकर उसकी क्रियाको आसान कर दें, ताकि अधिक-से-अधिक ग्रहणशीलता प्राप्त हो सके और समय तथा ऊर्जाका कम-से-कम अपव्यय हो।

नये जगत्की सूचना — १० जुलाई, १९५७

पिछले साल जब मैंने तुम्हारे आगे अतिमानसिक चेतना, प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शक्तिकी अभिव्यक्तिकी घोषणा की थी तो मुझे यह और जोड़ना चाहिये था कि वह एक नये जगत्के जन्मकी सूचना लानेवाली घटना थी। लेकिन उस समय नया जगत् पुराने जगत्में इतना ज्यादा डूबा हुआ था कि अभीतक ऐसे लोग कम ही हैं जो उसके जन्मके प्रति और जगत्में वह जो अंतर लाता है उसके प्रति सचेतन हैं। फिर भी नयी शक्तियोंकी क्रिया बहुत ही नियमित, लगातार, आग्रहपूर्ण और कुछ हदतक बहुत प्रभावकारी रूपसे चलती रही है। उस सबका परिणाम कदम-कदमपर दैनिक अनुभूतियोंमें अंकित हो गया है। यह संक्षिप्त या यूं कहें रैखिक पद्धतिसे कहा जा सकता है। पहली बात तो यह कि वह केवल आध्यात्मिक जीवन और भागवत सद्वस्तुके बारे-में एक नयी धारणा मात्र नहीं है। श्रीअरविन्दने इस धारणाको बहुत ही स्पष्ट और पूर्ण रूपसे अभिव्यक्त किया है। संक्षेपमें उसे इस तरह सूत्रबद्ध किया जा सकता है :

पुरानी आध्यात्मिकता, जगत्को वह जहां था वहीं, जैसे-का-तैसा छोड़कर भागवत सद्वस्तुकी ओर जीवनसे पलायन थी। इसके विप-रीत, हमारा नया अंतर्दर्शन है जीवनको दिव्य बनाना, भौतिकका दिव्य जगत्में रूपांतर। यह कहा जा चुका है, दोहराया जा चुका है और लगभग समझा जा चुका है। वास्तवमें हम जो करना चाहते हैं उसका यही आधारभूत विचार है। लेकिन यह काम पुराने जगत्-को, जैसा कि वह था, केवल जारी रखना, उसे सुधारना और बढ़ाना हो सकता था। और पूरी धारणा, चाहे वह कितनी ही सत्य, कितनी ही नयी क्यों न हो, जबतक उच्चतर स्तरोंपर, विशुद्ध विचार-के क्षेत्रमें रहती है तबतक केवल संभाव्य रूपसे नयी सृष्टि हो सकती है। लेकिन जो हुआ है वह सचमुच नयी चीज है। एक नये जगत्का जन्म हुआ है। पुरानेको परिवर्तित नहीं किया जा रहा, एक बिलकुल नया जगत् सचमुच ठोस रूपमें जन्मा है।

अभी हम संक्रमण कालके ठीक बीचों-बीच हैं, जहां दोनों साथ गुंथे हैं : पुराना डटा हुआ है, अभीतक सर्वशक्तिमान् है, और साधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रण चेतनापर उसका शासन करना जारी है, जब कि नया अंदर सरकता जाता है, अभी बहुत ही विनम्र और अलक्षित है, यहांतक कि बाहरी तौरपर अभीतक वह कोई हलचल पैदा नहीं करता और अधिकतर लोगोंकी चेतनामें भी काफी अदृश्य है। और फिर भी वह उस क्षणतक काम किये जाता है, विकसित होता जाता है जब वह दृश्य रूपसे अपने-आपको आरोपित करनेके लिये पर्याप्त शक्तिशाली बन जायगा।

बहरहाल, बातको सरल करनेके लिये हम कह सकते हैं कि पुराना जगत्, जो उस चीजकी सृष्टि है जिसे श्रीअरविंद अधिमन या अधिमानस कहते हैं, विशिष्ट रूपसे देवताओंका युग और फलस्वरूप धर्मोंका युग था। मनुष्यके अपनेसे ऊपर उठनेके प्रयासने मंजरित होकर अनेक धर्मोंको और गिने-चुने व्यक्तियोंकी आत्माओं और अदृश्य जगत्के बीच धार्मिक संबंधको जन्म दिया। और इस सबके शिखरपर, और ऊंची सिद्धिकी ओर प्रयासके रूपमें, धर्मोंकी एकताका किसी अनोखी चीजका विचार जन्मा जो सारी अभिव्यक्तिके पीछे है—और यह विचार सचमुच मानव अभीप्साकी अंतिम पहुंच था। यह धारणा सीमा-प्रदेशपर है। वह कोई ऐसी चीज है जो अधिमानसिक जगत्, अधिमानसिक सृष्टिकी है और वहांसे किसी और चीजकी तरफ देखती नजर आती है, ऐसी चीजकी ओर जिसका उसे केवल पूर्वाभास है। वह एक नयी सृष्टि है, जिसे प्राप्त करनेके लिये वह कोशिश तो करती है लेकिन पकड़ नहीं पाती। उसे पकड़नेके लिये जरूरी है उलटाव। तुम्हें अधिमानसिक सृष्टिसे बाहर निकलना होगा। लेकिन उसके लिये नयी सृष्टि, अतिमानसिक सृष्टि आ जानी चाहिये।

और अब वे सारी पुरानी चीजें बहुत पुरानी, बहुत घिसी-पिटी, बहुत मनमानी, और सच्चे सत्यकी विडम्बना लगती हैं!

अतिमानसिक सृष्टिमें धर्म नहीं होंगे, सारा जीवन जगत्में अभिव्यक्त होती हुई भागवत एकताकी अभिव्यक्ति और उसके रूपोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलना होगा। और अब मनुष्य जिन्हें देवता कहते हैं वे भी न होंगे।

ये महान् भागवत सत्ताएं खुद नयी सृष्टिमें भाग ले सकेंगी, लेकिन उसके लिये उन्हें पृथ्वीपर अतिमानसिक पदार्थ धारण करना होगा। और अगर कुछ सत्ताएं अपने जगत्में ज्यों-की-त्यों बनी रहना पसंद करें, अगर वे अपने-आपको भौतिक रूपमें अभिव्यक्त न करनेका निश्चय करें, तो पृथ्वीपर दूसरी अतिमानसिक सत्ताओंके साथ उनका संबंध मित्रों, सहयोगकारियों और बराबरके व्यक्तियोंका-सा होगा, क्योंकि उच्चतम भागवत सार-तत्त्व पृथ्वीपर नये अतिमानसिक जगत्की सत्ताओंमें अभिव्यक्त हो चुका होगा।

जब भौतिक पदार्थ अतिमानसिक बन जायगा, तब पृथ्वीपर शरीरमें जन्म लेना हीनताका कारण न होगा। इसके विपरीत, इससे एक ऐसी पूर्णता प्राप्त होगी जो अन्यथा प्राप्त नहीं हो सकती।

लेकिन यह सब भविष्यकी बातें हैं। एक ऐसे भविष्यकी जो आरंभ तो हो चुका है लेकिन जिसे अपने-आपको सर्वांगीण रूपमें चरितार्थ करनेमें समय लगेगा। इस बीच, हम बहुत ही विशेष स्थितिमें हैं, बहुत ही विशेष स्थितिमें जिसका उदाहरण पहले नहीं मिलता। हम एक नये जगत्के, बिलकुल नन्हे, बिलकुल कमजोर जगत्के जन्मके साक्षी हैं — वह अपने सार-तत्वमें कमजोर नहीं है, लेकिन अपनी बाहरी अभिव्यक्तिमें अभी वह पहचाना नहीं गया है, उसका अनुभव भी नहीं किया गया है और अधिकतर लोगोंने उसका खंडन किया है। लेकिन वह मौजूद है, वह मौजूद है और विकसित होनेका प्रयास कर रहा है और परिणामके बारेमें निश्चित है। फिर भी वहांतक पहुंचनेका रास्ता नया है, और आजतक उसपर कदम नहीं रखा गया है। कोई उस रास्ते नहीं गया है, कोई नहीं। यह एक आरंभ है, वैश्व आरंभ। अतः यह एक साहस यात्रा है बिलकुल अप्रत्याशित और अनपेक्षित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितंबर १९७८
कुछ लोग हैं जन्हें साहस-यात्रा प्रिय है मैं उन्हें टेर कर सकती हूं :

मैं तुम्हें इस महान् साहस-यात्राके लिये निमंत्रण देती हूं और इस साहस-यात्रामें तुम्हें आध्यात्मिक रूपसे वही नहीं दोहराना है जो और लोग हमसे पहले कर चुके हैं, क्योंकि हमारी साहस-यात्रा उस मंजिलके बादसे शुरू होती है। हम एक नूतन सृष्टिके लिये हैं, बिलकुल नूतन और जो अपने अंदर सभी अनपेक्षित खतरों और संकटोंका वहन करती है — एक सच्ची साहस-यात्रा जिसका लक्ष्य है निश्चित विजय, लेकिन जिसका रास्ता अनजाना है और जिसे कदम-कदमपर ढूंढ़ निकालना होगा। वह ऐसी चीज है जो वर्तमान विश्व-में आजतक कभी नहीं रही और एक ही रूपमें कभी न रहेगी, अगर तुम्हें उसमें रस है तो चल पड़ो। कल क्या होगा, मुझे मालूम नहीं।

जो कुछ देखा गया है जो कुछ आंका गया है, जो कुछ निर्मित किया गया है उस सबको तुम्हें पीछे छोड़ना होगा और अनजानेमें आगे बढ़ना होगा। चाहे कुछ क्यों न हो !

२ अक्तूबर, १९५७
जो लोग केवल अपनी भौतिक आंखोंका उपयोग करते हैं उनके लिये विजय तभी प्रत्यक्ष होगी जब वह पूर्ण, यानी भौतिक हो।

अतिमानसिक अंतर्दर्शन

अतिमानसिक अंतर्दर्शनमें चीजोंका प्रत्यक्ष पूर्ण और तुरंत ज्ञान होता है, मतलब यह कि तुम सभी चीजोंको एक ही समय पूर्ण रूप-से, सर्वांगीण रूपसे देखते हो। तुम अमुक चीजके सत्यको अपने सभी रूपोंमें एक ही समय देखते हो।

लेकिन ज्यों ही तुम उसकी व्याख्या या वर्णन करना चाहो तो तुम्हें निम्नतर स्तरपर उतर आनेके लिये बाधित होना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द इसे "प्रकाशका मन" कहते हैं। यहां चीजोंको एकके बाद एक अमुक क्रममें, अमुक अनुपातमें (परस्पर अमुक संबंधमें) कहा, यहांतक कि सोचा या अभिव्यक्त या कार्यमें चरितार्थ किया जाना चाहिये; अतः युगपत्ता गायब हो जाती है। क्योंकि अभिव्यक्त करनेकी हमारी वर्तमान अवस्थामें किसी चीजको तुरंत सीधा कह देना असंभव है। हम जो कुछ देखते और जानते हैं उसके एक अंशको ढकनेके लिये हम बाधित होते हैं ताकि उसे थोड़ा-थोड़ा करके बाहर ला सकें। इसलिये श्रीअरविन्द उसे पारदर्शक परदा कहते हैं। क्योंकि तुम एक ही समय सब कुछ देखते हो, सब कुछ जानते हो, तुम्हें अमुक चीजका पूर्ण या समग्र ज्ञान होता है, लेकिन तुम उसे एक ही बारमें इकाईके रूपमें अभिव्यक्त नहीं कर पाते।

जबतक हम वही बने रहें जो हम हैं, तबतक अतिमानसिक अंतर्दर्शनको अभिव्यक्त करनेकी पद्धतियां नहीं होंगीं, शब्द नहीं होंगे... पूरी तरह अतिमानसिक ज्ञानमें रह सकनेके लिये हमारे पास इस समय अभिव्यक्तिकी जो पद्धतियां हैं उनसे अलग पद्धतियां होनी चाहियें। अतिमानसिक चीजोंको अतिमानसिक पद्धतिसे अभिव्यक्त कर सकनेके लिये अभिव्यक्तिकी नयी पद्धतियोंको विकसित करना होगा। फिलहाल, हमें अपनी मानसिक क्षमताको अपने उच्चतम शिखरतक उठाना चाहिये, एक प्रकारकी सीमातक जो मुश्किलसे नजर आती है और फिर भी विद्यमान है। क्योंकि हमारी अभिव्यक्तिकी पद्धतियां अभी इस मानसिक जगत्की हैं और उनमें अतिमानसिक शक्ति नहीं है। हमारे पास आवश्यक अवयव नहीं हैं।

अतिमानसिक ज्ञानको अतिमानसिक तरीकेसे अभिव्यक्त कर सकनेके लिये हमें अतिमानसिक जगत्की सत्ताएं बनना चाहिये जिनमें अतिमानसिक पदार्थ और अतिमानसिक आंतरिक संगठन हों। अबतक हम अपनी चेतनाके किसी अंशमें पूरी तरह अतिमानसिक अंतर्दर्शन और ज्ञानमें बाहर आ सकते थे लेकिन वहांसे अभिव्यक्त नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाते थे। जैसा कि मैं कहती हूं, अपने-आपको अभिव्यक्त कर सकनेके लिये हमें निम्नतर स्तरपर उतरना पड़ा।

वह चमत्कार हो गया — २० अक्तूबर, १९५७

बड़ी-से-बड़ी चीज जो कभी हो सकती है, सृष्टिके आरंभसे आज-तककी सबसे अद्‌भुत चीज हो गयी है — वह चमत्कार हो गया है। और उसी चीजके साथ हमारा सबसे घनिष्ठ संबंध है और उसी एकमात्र चीजके साथ हमारा संबंध होना चाहिये। एक नया जगत्, हां, एक पूर्ण रूपसे नया जगत् जन्मा है और यहां है। इससे बढ़-कर कोई महत्त्वपूर्ण चीज नहीं हो सकती। और, फिर भी, क्या तुम उसे जानते हो, उसे अनुभव करते या देखते हो? जबतक कि चीजें तुम्हारी नाकपर भौतिक घूंसा न लगाये तबतक तुम उनकी वास्त-विकतापर विश्वास नहीं करते। फिर भी वह मौजूद है। तुम अंधे और मूढ़ हो क्योंकि तुम अपने अहम्‌से बंधे हो। तुम्हारे "मैं, मेरा और मेरा अपना" ने तुम्हारे चारों तरफ एक जाल, एक परदा बुन दिया है।

अतिमानसिक जीवनके बारेमें — नवम्बर, १९५७

अतिमानसिक जीवनके बारेमें तुम्हारी क्या धारणा है? एक स्वर्ग जहां सब लोग सब कुछ एक ही तरहसे करेंगे? . . . स्वर्गका वह पुराना विचार जहां हर एक वीणा बजानेवाला फरिश्ता है? बात ठीक ऐसी नहीं है। वहां सभी अंतर होंगे, विभेदन और विभिन्न क्रिया-कलाप, लेकिन साधारण मानव अज्ञानद्वारा काम करनेकी जगह व्यक्ति ज्ञानके द्वारा काम करेगा। उससे फर्क पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ दिसंबर, १९५७

...अगर, जैसा कि श्रीअरविन्दने हमें वचन दिया है, अतिमानसिक शक्ति, प्रकाश और चेतना जगत्को रूपांतरित करें और एक नयी जाति उत्पन्न करें तो मनुष्य इन नयी सत्ताओंके अस्तित्वसे इन्कार न कर पायेगा — बशर्ते कि वे मानवजातिसे पर्याप्त रूपमें भिन्न हों, ताकि फर्क भ्रामक मानवी इंद्रियोंको भी दिखायी दे जाय — मनुष्य उन सत्ताओंका खंडन करनेमें उतना ही असमर्थ होगा जितना कि वानर और पशु — अगर वे बोल सकते तो — मानव अस्तित्वका।

इन तर्कोंके अनुसार ऐसा लगता है कि आनंद और सत्यके रूपकी अपेक्षा सबसे निर्णायक, सबसे स्पष्ट और सबसे पहले आनेवाला रूप होगा शक्तिका। दूसरे भौतिक तत्त्वोंसे सुरक्षित रहना नयी जातिके लिये जरूरी होगा, ताकि वह स्थापित होकर बनी रह सके और शक्ति है सुरक्षा। कृत्रिम, बाहरी झूठी शक्ति नहीं, बल्कि सत्य-शक्ति, विजयी संकल्प। अतः यह सोचना असंभव नहीं है कि अति-मानसिक क्रिया, सामंजस्य ज्योति, आनंद और सौंदर्यकी क्रिया होनेसे पहले सुरक्षाके लिये उपयोगी शक्तिकी क्रिया होगी। स्वभावतः, अगर इस क्रियाको सचमुच प्रभावकारी होना है तो उसे ज्ञान और सत्यपर, प्रेम और सामंजस्यपर आधारित होना चाहिये, लेकिन यह संभव है कि ये चीजें अपने-आपको शनैः-शनैः तभी प्रकट करें जब किसी परम संकल्प और शक्तिकी क्रियाद्वारा क्षेत्र तैयार हो जाय।

लेकिन इनमेंसे न्यूनतम वस्तुको भी संभव बनानेके लिये पूर्ण संतुलनका आधार जरूरी है, वह संतुलन जो अहम्के अभावसे, परम प्रभुके प्रति पूर्ण समर्पणसे, सच्ची पवित्रतासे और परम प्रभुके साथ तादात्म्यसे आता है। इस पूर्ण समताके आधारके बिना, अतिमानसिक शक्ति खतरनाक होगी और किसी भी हालतमें उसे न तो खोजना चाहिये, न खींचनेकी इच्छा ही करनी चाहिये। क्योंकि एकदम जरा-सी मात्रामें भी वह इतनी सशक्त और भयंकर है कि वह सारे तंत्र-को अस्तव्यस्त कर सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

५-६-७८ का दिन आश्रममें प्रतीकात्मक अवसरके रूपमें मनाया गया। माताजीने कहा है: "संख्या पांच 'शक्ति'का प्रतिनिधित्व करती है; छः 'सृष्टि'; सात: 'सिद्धि' और आठ: 'दुहरी अभि-व्यक्ति और दुहरी सुरक्षा'का।" (१९६७ में, ऐसे ही अवसरपर, माताजीने कहा था: "४-५-६७ का मेल धरतीके वातावरणमें कोई चीज लानेके लिये एक अद्‌भुत शक्तिका प्रयोग करता है।" ६-६-६६ के रोचक मेलके बारेमें माताजीने कहा था: "चार छः सर्जनके संपूर्ण चौखटेका प्रतिनिधित्व करते हैं।"

५-६-७८ के दिन सवेरे-ही-सवेरे आश्रममें एक कार्ड बांटा गया, जिसपर "दुहरी सुरक्षा" (आंतरिक और बाह्य) नामक फूलका रंगीन चित्र था। माताजी और एक साधकके बीच तारीखोंमें संख्याओंके विभिन्न मेलोंके प्रतीकके बारेमें बातचीत हुई थी। शामको क्रीड़ांगणमें ध्यानके समय श्री नलिनीकांत गुप्तने वह पढ़ कर सुनाया।

पांडिचेरीमें २९ मईसे ८ जूनतक अध्यापकों और अन्य सदस्योंके लिये जिनको रुचि है एक शिक्षा शिविर हुआ था। आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान और उत्तर प्रदेशसे बारह सदस्य आये थे। इसमें श्रीअरविन्द और माताजीकी पुस्तक 'शिक्षा' का अध्ययन, शिक्षा-केंद्रके अध्यापकोंके साथ बैठकें, वाद-विवाद, प्रश्न और उत्तर हुए, साथ ही उन्होंने आश्रमके विभिन्न विभाग देखे। लोगोंने महसूस किया कि इस तरहके शिविर बड़े उपयोगी हैं, पांडि-चेरी और सोसायटीके अन्य केंद्रोंमें भी समय-समयपर इनकी व्यवस्था होनी चाहिये।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदुराईमें, 'श्रीअरविन्द सर्कल'ने दो दिनके कार्यक्रमकी व्यवस्था की। दक्षिण रेलवेके डिविजनल परसनल अफसरने श्री ए० के० मुखर्जी, चित्रोंकी प्रदर्शनीका उद्घाटन किया। उन्होंने स्थानीय रेलवे स्कूल-के बच्चोंको तमिलमें 'आदर्श बालक' की प्रतियां मुफ्तमें बांटीं। 'सावित्री' और 'श्रीअरविन्द'पर कुछ भाषण हुए। फिर, कुछ भजन और ध्यान हुआ।

गौरीबिदानुर (कर्नाटक) के सोसायटी केंद्रने १४ जूनको "ओरो-नर्सरी-स्कूल' का श्रीगणेश किया जिसका उद्घाटन श्री एस० आर० शेषगिरियप्पाने किया।

मेरठमें, २१ फरवरी, १९७८ को अर्चना, सिविल लाइन्समें श्रीअर-विन्द सोसायटीसे संबंधित, श्रीअरविन्द रिसर्च इंस्टिट्यूटका उद्घाटन हुआ। इसके अध्यक्ष हैं डा० रामनाथ शर्मा। इस संस्थाका उद्देश्य है श्रीअरविन्दकी अंतर्दृष्टिके विभिन्न क्षेत्रोंका अन्वेषण करना और उनकी शिक्षाको समझनेमें सहायता करना।

डा० एम० एस० अग्रवालने "माताजीके प्रकाशमें भारतका भविष्य" पर भाषण दिया जो १२ जूनको 'ऑल इण्डिया रेडियो'के सभी स्टेशनों-से प्रसारित हुआ।

नरसापुर (आंध्र प्रदेश) के श्री वाई० एन० कालेजने अपनी रजत जयंती मनाते हुए "माताजीका शताब्दी-अंक" निकाला। इसके संपा-दक हैं श्री वैम्पति कृष्णमूर्ति।

गुजरातमें, गंगानाथ, चाणोद (नर्मदाके किनारे) में २१ से ७ तक सप्ताहभरके शिविरकी व्यवस्था हुई थी। उसमें रोज कसरत, आसन, प्रार्थना, ध्यान इत्यादि होते थे। इसका उद्घाटन श्री भाईलालभाई ठेकेदार ने किया था; व्यवस्थापक थे श्री बाबू भाई पटेल और श्री कांतिलाल सोनी।

श्रीअरविन्द सोसायटीका उत्तर प्रदेश वार्षिक सम्मेलन **नैमिषारण्यमें** संपन्न होगा। यह सीतापुरसे ३९ किलोमीटर दूर है। जो सज्जन इसमें भाग लेना चाहें वे श्री उमाकांत, ग्रीक गंज, सीतापुर; अथवा मंत्री, श्रीअरविन्द सोसायटी, लखनऊसे संपर्क स्थापित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

सूचना और निवेदन

जनता और संस्थाओंके सदस्य जो श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी; ओरोवील-निर्माण या 'मातृमंदिर'के लिये कुछ भेंट, न्यौछावर भेजना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे सिर्फ श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी - ६०५००२ के नाम ही भेजें। "मीरा" नामक संस्था ("मदर्स इंस्टिट्यूट ऑफ रिसर्च") या मदर्स सेंटिनरी पब्लिकेशन फंड" नामक संस्थाओंके नाम न भेजें। इनका श्रीअरविन्द सोसायटी-के साथ कोई संबंध नहीं है, न ही इन्हें भेंट या न्यौछावर स्वीकारने-का अधिकार है।

आयकरसे छूट

(१) श्रीअरविन्द सोसायटीको दिये गये अनुदानोंको १९६१ के आयकरके अनुसार छूट मिल सकती है।

(२) "काउंसल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च" ने श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरीको आयकरकी छूटके संबंधमें एक वैज्ञानिक शोध संस्था स्वीकार किया है।

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक रवींद्र
प्रकाशक श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

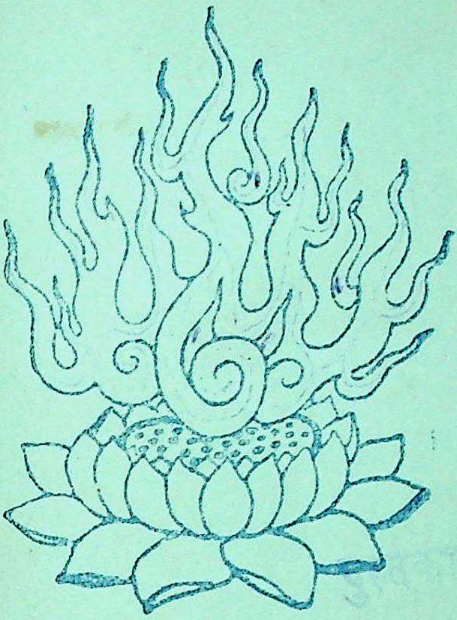

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

अक्तूबर १९७८ वर्ष ९, अंक ३, पूर्णांक ९९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

२९ फरवरीकी ओर: (२)
माताजी और प्रकृतिके बीच घनिष्टता (जनवरी, १९५८) १
शरीरकी स्वतंत्रता (फरवरी, १९५८) ३
जहाजका अनुभव (३ फरवरी, १९५८) ४
लोग तैयार न हों तो (१५ फरवरी, १९५८) ६
मध्यवर्ती जाति (१६ अप्रैल, १९५८) ८
अतिमानस और मानसिक क्रिया-कलाप (१४ मई, १९५८) ११
निश्चेतनाकी तलीमें (जनवरी १९५९) १३
विरोधी शक्तियोंसे मुक्ति (फरवरी, १९५९) १४
अतिमानसिक ज्योतिका प्रवाह (२९ फरवरी, १९५६) १६
अतिमानसिक अभिव्यक्ति (अप्रैल, १९५६) १९
श्रीअरविंदवाणी :
समाज सुधार २१
माताजीके वचन :
सुन्दर कहानियां : विनयशीलता २२
श्रीमातृवाणी २३
सोसायटी समाचार आ० ३

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक रवींद्र
प्रकाशक श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९ फरवरीकी ओर

(२)

माताजी और प्रकृतिके बीच घनिष्टता — जनवरी, १९५८

...मैंने अपने-आपको प्रकृतिके साथ एक कर लिया और मैंने उसकी लीलामें प्रवेश किया और तादात्म्यकी इस गतिका एक प्रत्युत्तर मिला — मेरे और प्रकृतिके बीच एक नये प्रकारकी घनिष्टता — अधिकाधिक निकट आनेकी एक क्रिया जिसकी परिणति ८ नवम्बर-की अनुभूतिमें हुई।

अचानक प्रकृति समझ गयी। वह समझ गयी कि यह नयी चेतना जिसने जन्म लिया है उसे ठुकराना नहीं, पूरी तरह अंकमें भर लेना चाहती है। वह समझ गयी कि नयी आध्यात्मिकता जीवनसे कतराती नहीं है, वह उसकी गतियोंकी भयंकर विशालतासे पीछे नहीं हटती बल्कि उसके सभी रूपोंको संघटित करना चाहती है। वह समझ गयी कि अतिमानसिक चेतना उसे कम करनेके लिये नहीं, पूर्ण करनेके लिये है।

तब परम सद्वस्तुमेंसे यह आज्ञा आयी :

"हे प्रकृति, सहयोगके आनंदके प्रति जागो।" और समस्त प्रकृति आनंदसे उछल पड़ी और बोली : "मैं स्वीकार करती हूं, मैं सहयोग दूंगी।" और उसी समय शांत स्थिरता छा गयी, संपूर्ण शांति छा गयी ताकि शरीरका यह आधान टूटे बिना, कुछ भी खोये बिना उस प्रकृतिके आनंदकी बाढ़को ग्रहण करके अपने अंदर रख सके, जिसने अपने-आपको कृतज्ञताकी गतिमें छोड़ दिया था। उसने स्वीकार किया, उसने समस्त नित्यताको अपने सामने देखते हुए जाना कि यह अतिमानसिक चेतना अधिक पूर्ण रूपसे उसकी पूर्ति करेगी, उसकी गतिविधिको और भी अधिक शक्ति देगी और उसकी लीलाको और भी अधिक संभावनाएं और अधिक विस्तार प्रदान करेगी।

और अचानक धरतीके सभी कोनोंसे मुझे वे महान् स्वर सुनायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिये जो कभी-कभी सूक्ष्म भौतिकमें सुनायी देते हैं, जो कुछ-कुछ बीठोवनके कोनसर्टोंसे मिलते-जुलते हैं। ये कभी-कभी महान् प्रगतिके समय सुनायी देते हैं। ऐसा लगता है मानों सैकड़ों वृन्द-वाद्य एक साथ बज उठे जिनमें कहीं कोई स्वर बेसुरा नहीं है। यह संगीत प्रकृति और आत्माके मिलनकी घोषणा करने, लंबे अरसेके विछोहके बाद पुराने मित्रोंके मिलनकी घोषणा कर रहा था।

और तब ये शब्द आये: "हे प्रकृति, हे भौतिक माता! तूने कहा है कि तू सहयोग देगी और तेरे इस सहयोगकी भव्यताकी कहीं कोई सीमा नहीं...।"

लेकिन तुम्हें इस अनुभूतिका अर्थ समझनेमें भूल न करनी चाहिये। यह कल्पना न करो कि अब सब कुछ बिना किसी कठिनाईके और हमारी व्यक्तिगत इच्छाओंके अनुकूल होगा।... यह कुछ ज्यादा गहरी चीज है। प्रकृतिने नयी अभिव्यक्त शक्तिको अपनी शक्तियों की लीलामें प्रविष्ट कर लिया है। उसने उसे अपनी गतियोंमें सम्मिलित कर लिया है। हमेशाकी तरह प्रकृतिकी चीजें, प्रकृतिकी गतियां इतने बड़े पैमानेपर होती हैं जो मानव पैमानेसे अनंत गुणा बड़ा है और साधारण मानव चेतनाके लिये अगोचर है। धरतीपर आश्चर्यजनक परिवर्तनोंने नहीं, एक आंतरिक, मनोवैज्ञानिक संभावनाने जन्म लिया है।

मैं यह इसलिये कह रही हूं ताकि तुम यह माननेके लिये लालायित न हो कि अब धरतीपर परी-कथाएं चरितार्थ होनेवाली हैं। उनका समय अभी नहीं आया...

शरीरकी स्वतंत्रता — फरवरी, १९५८

अतिमानसिक अभिव्यक्तिके सबसे पहले परिणामोंमेंसे एक है शरीरको एक ऐसी स्वतंत्रता और स्वायत्तता प्रदान करना जो उसने कभी नहीं जानी थी। और जब मैं स्वतंत्रताकी बात करती हूं तो मेरा मतलब मनोवैज्ञानिक बोध या आंतरिक चेतनाकी अवस्थासे नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता। वह कोई और ही चीज होती है और वह ज्यादा अच्छी है — वह शरीरमें, शरीरके कोषाणुओंमें एक नया तथ्य है। स्वयं कोषाणुओंने पहली बार यह अनुभव किया है कि वे स्वतंत्र हैं, कि उनमें निर्णयकी शक्ति है।

जब नये स्पंदन आये और पुराने स्पंदनोंके साथ मिल-जुल गये तो मैंने इसे तुरंत अनुभव किया और इसीने मुझे सचमुच दिखा दिखाया कि एक नया जगत् जन्म ले रहा है।

सामान्यतः, वर्तमान अवस्थामें शरीर इस विचारके साथ जीता है कि वह अपने घरमें स्वामी नहीं है: उसके अंदर बीमारी घुस पड़ती है और वह सचमुच उसका विरोध नहीं कर पाता। हजारों चीजें उसपर थोपी जाती हैं, उसपर दबाव डालती हैं। अपनी रक्षाके लिये उसके पास एक ही शक्ति है, प्रतिक्रिया करना . . . अब, अतिमानसिक अभिव्यक्तिके साथ शरीरमें कोई नयी चीज हुई है: उसे लगता है कि वह घरका स्वामी है, स्वशासित है, और कह सकते हैं कि उसके दोनों पैर पृथ्वीपर हैं। भौतिक रूपसे ऐसा लगता है कि सारी सत्ता तनकर खड़ी है, उसने सिर ऊंचा किया है — वह स्वामी है।

हम हमेशा अपने कंधोंपर मानों एक बोझ रखे हुए जीते आये हैं, यह कोई ऐसी चीज है जो हमारे सिरको झुका देती है और हमें लगता है कि हम खिंचे जा रहे हैं, सभी बाहरी शक्तियां हमें लिये जा रही हैं, — हमें नहीं मालूम किस व्यक्ति या चीजद्वारा, हमें नहीं मालूम कहां खिंच रहे हैं — मनुष्य उसे भाग्य या नियति कहते हैं। जब तुम योग करते हो तो तुम्हें सबसे पहली अनुभूति होती है चेतनाके ऊपरको उठनेकी जिसे भारतमें कुण्डलिनी की अनुभूति कहते हैं। वह उस कठोर आवरणमेंसे सहस्रदल कमल सिरके शिखरसे फूट पड़ती है और अन्ततः तुम प्रकाशमें निकल आते हो। तब तुम देखते हो, जानते हो, निर्णय करते हो और सचेतन होते हो — कठिनाइयां तब भी रहती हैं, लेकिन तुम वास्तवमें उनसे परे खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हो। अब, अतिमानसिक अभिव्यक्तिके साथ वह अनुभूति शरीर में आ गयी है। शरीरने सिर ऊपर किया है और अपनी मुक्ति और स्वतंत्रताका अनुभव किया है।

उदाहरणके लिये, इंफ्लुएंजाकी महामारीके समय मैं रोज उन लोगोंके बीच रही जो रोगके वाहक थे। लेकिन एक दिन मैंने स्पष्ट रूपसे अनुभव किया कि शरीरने रोगग्रस्त न होनेका निश्चय कर लिया है। उसने अपनी स्वायत्ताका दावा किया। स्वभावतः उच्चतर संकल्पके निर्णय लेनेका सवाल नहीं था, चीज उच्चतम चेतनामें नहीं हो रही थी, नहीं, स्वयं शरीर निर्णय ले रहा था। जब तुम पूरी तरह अपनी चेतनामें ऊंचे होते हो तुम चीजें देखते हो, जानते हो, लेकिन वास्तवमें जब तुम फिरसे जड़ पदार्थमें उतर आते हो तो यह ऐसा होता है मानों पानी रेतमें धंस रहा हो। हां, चीजें बदल गयी हैं, बिना किसी बाहरी हस्तक्षेपके स्वयं शरीरमें प्रत्यक्ष शक्ति होती है। मैं इसे बहुत महत्त्वपूर्ण परिणाम मानती हूं, यद्यपि वह बहुत दिखाऊ नहीं है।

और शरीरमें इस नए स्पंदनने मुझे रूपांतरकी यंत्रावली समझा दी है। यह कोई ऐसी चीज नहीं है जो उच्चतर संकल्पके साथ आती है या शरीरपर उच्चतर चेतना थोपी जाती है, स्वयं शरीर अपने कोषाणुओंमें जागृत हो उठता है, यह स्वयं कोषाणुओंकी स्वतंत्रता है, पूरी तरह नया स्पंदन, और अव्यवस्थाएं ठीक की जाती हैं, अतिमानसिक अभिव्यक्तिसे पहले जो अव्यवस्थाएं थीं वे भी ठीक कर ली जाती हैं।

स्वभावतः, यह सब क्रमशः प्रगतिशील है, लेकिन मुझे आशा है कि थोड़ी-थोड़ी करके यह चेतना विकसित होगी, अधिकार प्राप्त करेगी और विनाश तथा विध्वंसकी पुरानी शक्तियोंका, उस भाग्यका सफलतापूर्वक विरोध करेगी जो अटल माना जाता था।

जहाजका अनुभव — ३ फरवरी, १९५८

...अतिमानसिक जगत् और मनुष्योंके बीच लगभग उतना ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर है जितना मनुष्यों और पशुओंके बीच . . . ३ फरवरीको मुझे जो अनुभूति हुई थी वह इसका ठोस प्रमाण है। पहले, अतिमानसके साथ मेरा संपर्क व्यक्तिगत था, आत्मनिष्ठ था, लेकिन ३ फरवरीको मैं वहां ठोस रूपसे चली, उतने ही ठोस रूपसे जैसे मैं पहले पैरिसमें चला करती थी, एक ऐसे जगत्में जो हर प्रकारकी आत्मनिष्ठतासे अलग अपने-आपमें विद्यमान था। यह अनभूति दोनों जगतोंके बीच बंधे पुलके समान है।

अतिमानसिक जगत्का अस्तित्व चिरस्थायी है और मैं वहां अतिमानसिक शरीरमें हमेशा रहती हूं। आज मुझे इसका प्रमाण मिला जब मेरी भौतिक चेतना वहां गयी और दोपहरके दो और तीन बजेके बीच वहां सचेतन रूपसे रही। अब मैं जानती हूं कि दोनों जगतोंके निरंतर और सचेतन संबंधमें मिलनेके लिये एक चीज गायब है और वह है भौतिक जगत्, जैसा कि वह है और अतिमानसिक जगत् जैसा कि वह है — दोनोंके बीच, एक मध्यवर्ती स्थान। इसी स्थानको व्यक्तिगत चेतनामें और वस्तुनिष्ठ जगत्में खड़ा करना है और उसे खड़ा किया जा रहा है। जब मैंने पहले उस नए जगत्की बात की थी जिसका निर्माण हो रहा है तो मेरा मतलब इस मध्यवर्ती क्षेत्रसे था। उसी तरह जब मैं इस तरफ यानी, भौतिक चेतनाकी प्रधानतामें होती हूं, और अतिमानसिक शक्ति, अतिमानसिक प्रकाश और पदार्थको निरंतर रूपसे जड़ भौतिकमें घुसते देखती हूं तो वह इस क्षेत्रका निर्माण होता है और मैं उसमें अपना भाग लेती हूं।

मैंने अपने-आपको एक बहुत बड़े जहाजपर पाया जो उस जगहका प्रतीकात्मक चित्रण है जहां काम चल रहा है। यह जहाज, शहरके जितना बड़ा और पूरी तरह व्यवस्थित था। निश्चित रूपसे काफी समयसे काम कर रहा होगा, क्योंकि उसकी व्यवस्था पूर्ण थी। यह जगह उन लोगोंके प्रशिक्षणके लिये है जो अतिमानसिक जगत्के योग्य हैं। इन लोगोंमें, या कम-से-कम उनकी सत्ताके एक भागमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहलेसे ही अतिमानसिक रूपांतर हो चुका है, क्योंकि स्वयं जहाज और उसकी हर एक चीज न तो भौतिक थी न सूक्ष्म भौतिक, न प्राणिक थी न मानसिक, वह अतिमानसिक पदार्थ था। स्वयं पदार्थ अत्यंत भौतिक अतिमानसिकका था — वह अतिमानसिक पदार्थ जो भौतिक जगत्के सबसे निकट है जो सबसे पहले अभिव्यक्त होता है। प्रकाश सुनहरे और लाल रंगोंका मिश्रण था जिससे एकरूप ज्योतिर्मय नारंगी पदार्थ बना था। सब कुछ वैसा ही था — प्रकाश वैसा था, लोग वैसे थे — सबका वही रंग था, यद्यपि छटाएं अलग-अलग थीं जिससे चीजें पहचानी जा सकती थीं। सामान्य भावना थी छायाहीन जगत्की। छटाएं थीं लेकिन छायाएं नहीं थीं। वातावरण आनंद, शांति और व्यवस्थासे भरपूर था। सब कुछ नियमित रूपसे, शांतिमें आगे बढ़ता था। और फिर भी, व्यक्ति सभी क्षेत्रोंमें शिक्षाके, प्रशिक्षणके हर एक ब्योरेको देख पाता था जिसके द्वारा जहाजके लोगोंको तैयार किया जा रहा था।

यह विशाल जहाज अभी-अभी अतिमानसिक जगत्के किनारे आया था जहां उन लोगोंका पहला दल उतरनेवाला था जो इस अतिमानसिक जगत्के भावीवासी होनेके लिये नियत थे।... घाटपर ऊंचे कदकी सत्ताओंको खड़ा किया गया था। वे मनुष्य नहीं थे और कभी मानव नहीं रहे थे, न ही वे अतिमानसिक जगत्के चिरस्थायी वासी थे, उन्हें ऊपरसे, जहाजमेंसे उतरनेवालोंकी व्यवस्था और निगरानीके लिये नियुक्त किया गया था। एकदम शुरूसे और सारे समय सारी चीज मेरे हाथमें रही। मैंने खुद सभी लोगोंके दलोंको तैयार किया था। मैं जहाजपर सीढ़ीके ऊपर खड़ी थी और दलोंको एक-एक करके बुलाकर उन्हें नीचे तटपर भेज रही थी। जो लंबे लोग वहां खड़े थे वे उन लोगोंका पुनरीक्षण कर रहे थे जो नीचे उतर रहे थे। जो लोग तैयार थे उन्हें जाने दे रहे थे और जो तैयार न थे उन्हें जहाजपर अपना प्रशिक्षण जारी रखनेके लिये वापिस भेज रहे थे।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाजपर वस्तुएं उस प्रकारकी नहीं थीं जो पृथ्वीके लिये परि-वित हों। उदाहरणके लिये, पोशाक कपड़ेकी नहीं बनी थी। जो चीज कपड़े जैसी दीखती थी वह बुनी हुई नहीं थी, वह उनके शरीरका अंश थी और उसी पदार्थसे बनी हुई थी और विविध रूप-धारण कर लेती थी। उसमें एक प्रकारकी नयमनीयता थी। जब परिवर्तन करना पड़ता था तो वह किसी कृत्रिम और बाहरी साधन-द्वारा नहीं, बल्कि आंतरिक क्रियाद्वारा, एक ऐसी चेतनाकी क्रियाके द्वारा किया जाता था जो पदार्थको रूप या आकार प्रदान करती थी। जीवन अपने रूप उत्पन्न करता था। हर एक चीजमें एक ही पदार्थ था। वह आवश्यकता या उपयोगके अनुसार अपने स्पंदन-का स्वरूप बदल लेता था।

जिन लोगोंको और प्रशिक्षणके लिये वापिस भेजा जा रहा था उनका रंग एक-सा नहीं था। उनके शरीरमें मानों कुछ धब्बे थे —अपारदर्शी और भूरे, एक ऐसे पदार्थके जो भौतिक पदार्थसे मिलता-जुलता था। वे निस्तेज थे, मानों प्रकाश उनमें पूरी तरह न फैला हो, उनका रूपांतर न हुआ हो।...

तटपर खड़ी उन लंबी सत्ताओंका रंग वही नहीं था, कम-से-कम नारंगी रंगकी वह छटा तो न थी, वे ज्यादा हल्की, ज्यादा पारदर्शक थीं। उनकी सत्ताके एक अंशके सिवाय उनकी आकृतिका केवल खाका दिखता था: वे सत्ताएं बहुत लंबी थीं, और ऐसा लगता था कि उनमें कोई निर्मित चीज अस्थिपंजर है ही नहीं। वे आवश्यकताके अनुसार आकार ले सकती थीं, केवल कमरसे नीचे कुछ घनत्व था। उनका रंग बहुत हल्का था, उसमें जरा-सी लालिमा था। वह सुनहरे, बल्कि सफेदके ज्यादा निकट था। सफेद प्रकाशके भाग अर्ध पारदर्शक थे, पूरी तरह पारदर्शक नहीं, लेकिन कुछ कम घने, नारंगी पदार्थकी अपेक्षा ज्यादा सूक्ष्म...

मैं इन लंबे व्यक्तियोंका और जहाजके लोगोंका संमिश्रण थी। मेरा ऊपरी भाग विशेषकर सिर, केवल छायाचित्र था, उसका आयतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ सफेद-सा था और किनारे नारंगी। पांवकी तरफ मेरा शरीर अधिकाधिक जहाजके लोगों जैसा होता जा रहा था, यानी नारंगी। और ऊपरकी तरफ अधिकाधिक अर्धपारदर्शक और सफेद, लाल कम था। सिरके आकारके बीचमें चमकदार सूरज था। उसमेंसे प्रकाश-की किरणें निकल रही थीं जो संकल्पकी क्रिया थी।

जहाजपर मैंने जिन लोगोंको देखा उन सबको पहचान लिया। कुछ आश्रमके थे। कुछ कहीं औरसे आये थे यद्यपि मैं उन्हें भी जानती थी . . . दो-चार शक्लें बहुत स्पष्ट थीं और जब मैंने उनको देखा तो मुझे वह भावना समझमें आ गयी जो यहां, पृथ्वीपर, उनकी आंखोंमें देखनेसे मेरे अन्दर जागती थी। उनमें इतना असाधारण आनंद था। अधिकतर लोग जवान थे। बच्चे बिलकुल कम थे, १४ या १५ आयुके, दस या बारहसे कम नहीं . . . कुछ अपवादोंको छोड़कर बहुत वयस्क लोग भी नहीं थे। नीचे उतरनेवाले अधिकतर अधेड़ थे, कुछ लोगोंके सिवाय . . .

. . . दृष्टिकोण, मूल्यांकन, पूरी तरह इस बातपर आधारित था कि वे लोग किस पदार्थसे बने हैं, यानी, वे पूरी तरह अतिमानसिक जगत्के थे या नहीं, उस पदार्थसे बने थे या नहीं जो इतना विशेष था। जो दृष्टिकोण अपनाया जाता था वह नैतिक या मनोवैज्ञानिक नहीं था। उनके शरीर जिस पदार्थसे बने थे वह शायद किसी ऐसे आंतरिक विधान या गतिविधिका परिणाम था जिसका उस समय सवाल ही नहीं था। कम-से-कम यह तो बिलकुल स्पष्ट है कि वहांके मूल्य अलग हैं।

जब मैं अनुभूतिकी यादके साथ लौटी तो मुझे . . . ऐसा . . . लगा कि बाहरी जगत्के साथ इस जगत्का संबंध चीजोंके मूल्यांकन या उनके महत्त्वमें बिलकुल अलग दृष्टिकोण ला रहा है। उस दृष्टि-कोणमें कोई मानसिक चीज नहीं थी और एक अजीब आंतरिक भावना पैदा कर रहा था, कि हम जिन चीजोंको अच्छा या बुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं वे वास्तवमें ऐसी नहीं हैं ... भागवत और अभागवत चीजोंका हमारा मूल्यांकन ठीक नहीं है...

जब हमारे जगत्को अतिमानसिक चेतनासे देखा जाय तो प्रधान विशेषता होती है विजातीयताकी, कृत्रिमताकी भावना — एक अजीब (बेतुका) जगत्, क्योंकि वह कृत्रिम है।...

लोग तैयार न हों तो — १५ फरवरी, १९५८

पिछली रात मुझे यह अंतर्दर्शन हुआ कि अगर लोग पर्याप्त रूपसे तैयार न हों तो अतिमानसिक जगत् कैसा होगा। अब पृथ्वीपर जो अस्तव्यस्तता है वह, जो हो सकता है उसकी तुलनामें कुछ भी नहीं नहीं। कल्पना करो, किसी शक्तिशाली संकल्पकी जिसमें जड़पदार्थ-को अपनी इच्छाके अनुसार रूपांतरित करनेकी क्षमता हो! अगर शक्तिके विकासके अनुपातमें सामूहिक एकताका भाव भी न बढ़े तो फलस्वरूप होनेवाला संघर्ष हमारे सारे भौतिक संघर्षोंकी अपेक्षा बहुत ज्यादा खतरनाक और कोलाहलपूर्ण होगा।

मध्यवर्ती जाति — १६ अप्रैल, १९५८

निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि मानसिक और अतिमानसिक सत्ताके बीचमें एक मध्यवर्ती जाति होगी, एक प्रकारका अति-मानव जिसमें अभी मनुष्यके गुण और अंशतः स्वभाव होंगे, यानी, जो अभी, अपने बाह्यतम रूपमें, पाशविक मूलवाला मनुष्य होगा, लेकिन जो अपनी चेतनाको काफी रूपांतरित कर चुका होगा ताकि अपनी सिद्धि और क्रियाकलापमें नयी जातिका, अतिमानवजातिका अंश हो सके।

इस जातिको संक्रमण कालकी जाति मान सकते हैं, क्योंकि जैसा कि पहलेसे देखा जा सकता है वह पुरानी पाशविक पद्धतिसे गुजरे बिना नयी सत्ताएं उत्पन्न करनेका साधन ढूंढ निकालेगी और यही सत्ताएं, जिनका जनम सचमुच आध्यात्मिक रूपसे होगा, नयी जातिके, अतिमानसिक जातिके तत्त्व बनेंगी।

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह हम अतिमानवका नाम उनको दे सकते हैं जो अपने मूलमें जन्मसे तो पुरानी पद्धतिके हों, लेकिन जो अपनी उपलब्धियोंमें अतिमानसिक सिद्धिके नए जगत्‌के साथ सचेतन और क्रियाशील संबंध रखते हों।

ऐसा लगता है, यह निश्चित भी है कि वह पदार्थ जिससे मध्यवर्ती जगत् बनेगा और जो पहलेसे बनाया जा रहा है एक ऐसा पदार्थ होगा जो ज्यादा समृद्ध, ज्यादा शक्तिशाली, ज्यादा ज्योतिर्मय, ज्यादा टिकाऊ, अमुक नए गुणोंसे संपन्न, ज्यादा सूक्ष्म और व्यापक और वैश्वताके लिये एक प्रकारकी अन्तर्जात क्षमता लिये होगा। मानों उसने जिस हदतक सूक्ष्मता और सुरुचि प्राप्त की है वह यदि स्पंदनोंको पूर्ण नहीं तो कम-से-कम ज्यादा विस्तृत रूपसे अनुभव करने देती है और विभाजनकी वह भावना हर लेती है जो पुराने पदार्थ, सामान्य मानसिक पदार्थके साथ थी। स्पंदनकी एक सूक्ष्मता है जो वैश्व व्यापक स्पंदनको स्वाभाविक और सहज चीज बना देती है। उस पदार्थके साथ विभाजनका, अलगावका भाव पूर्णतया स्वाभाविक और सहज रूपसे गायब हो जाता है। और वह पदार्थ अब पृथ्वीके वातावरणमें लगभग हर जगह फैल गया है।

अगर तुम चेतनाकी थोड़ी-सी एकाग्रता और आत्म-विलीनताके साथ पीछे हटो, अधिकाधिक कृत्रिम और झूठी लगनेवाली सामान्य बहिर्मुखतासे अपने-आपको खींच लो तो जागृत अवस्थामें उसे अनुभव किया जा सकता है।...

यह नया बोध अपने-आपको अधिकाधिक पक्का कर रहा है, वह अधिकाधिक स्वाभाविक होता जा रहा है और कभी-कभी सत्ताकी पुरानी पद्धतिको फिरसे पकड़ना मुश्किल होता है — मानों वह एक धुंधले अतीतमें अदृश्य हो रही हो — कोई ऐसी चीज हो जिसका अस्तित्व समाप्त होनेको है।

इससे तुम इस निष्कर्षपर पहुंच सकते हो कि पाशविक पद्धतिसे रचित शरीर इस चेतनाको स्वाभाविक, सहज और सरल रूपसे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनेसे वाहर आये विना ही जीनेमें समर्थ है, इसलिये यह इस बात-का प्रमाण है कि वह अपवादिक और अनोखी हालत नहीं है। वह केवल एक ऐसी सिद्धिका चिह्नमात्र या अग्रदूत है जो एकदम सामान्य भले न हो, पर जिसमें बहुत-से व्यक्ति भाग ले सकते हैं। और ज्यों ही ये व्यक्ति उस अनुभूतिमें भाग लेंगे त्यों ही यह भावना खो वैठेंगे कि वे अलग-अलग व्यक्ति हैं और एक जीती-जागती समष्टि बन जायंगे।

यह नयी सिद्धि बहुत तेजीसे अपने पथका अनुसरण कर रही है क्योंकि अगर हम कालको सामान्य तरीकेसे मानें तो केवल दो ही साल बीते हैं, दो सालसे कुछ ऊपर — जब अतिमानसिक जगत्‌ने भौतिक वातावरणमें प्रवेश किया था तबसे अबतक जब भौतिक वाता-वरणमें यह परिवर्तन लाया जा चुका है।

अगर चीजें इसी गतिसे चलती रहें तो यह संभवसे बढ़कर लग-भग निश्चित है कि श्रीअरविंदने एक चिट्ठीमें जो लिखा था वह भविष्यसूचक घोषणा थी: "१९६७ में अतिमानसिक चेतना चरि-तार्थ होनेवाली शक्तिकी अवस्थामें प्रवेश करेगी।"

अतिमानसिक और मानसिक क्रिया-कलाप — १४ मई, १९५८

जैसे-जैसे अतिमानसिक जीवनका — उस जीवनका जो विश्वके क्रम-विकासमें अगले कदमपर चरितार्थ होनेवाला है — आरंभ शायद प्रत्यक्ष नहीं, पर निश्चित रूपसे विकसित हो रहा है, वैसे-वैसे यह वात अधिकाधिक स्पष्ट होने लगी है कि इस अतिमानसिक जीवनकी ओर बढ़नेके लिये सबसे कठिन साधन है मानसिक क्रिया-कलाप।

हम कह सकते हैं कि जीवनमें किसी चैत्य भावनासे — कोई ऐसी चीज जो एक प्रतिबिंबके समान, जड़ भौतिकमें भागवत उपस्थितिके ज्योतिर्मय निर्गमनके समान हो — अतिमानसिक चेतनातक गुजरनेकी अपेक्षा मानसिकसे अतिमानसिक जीवनतक जाना ज्यादा कठिन है। किसी भी उच्चतम बौद्धिक चिंतनसे अतिमानसिक स्पंदनतक पहुंचनेकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपेक्षा चैत्य भावनासे अतिमानसिक चेतनातक पहुंचना ज्यादा आसान है। शायद अतिमानस शब्द ही हमें गलत मार्गपर ले जाता है। चूंकि हम उसे अतिमानसिक कहते हैं इसलिये उसे उच्चतर मानसिक क्रिया-कलापके द्वारा प्राप्त करनेकी आशा करते हैं। लेकिन तथ्य बहुत भिन्न हैं। इस बहुत ऊंचे, पवित्र और उदात्त मानसिक क्रिया-कलापके द्वारा तुम मानों एक प्रकारके भावशून्य और शक्तिहीन विरक्ति या अलगावमें एक जमे हुए प्रकाशमें प्रवेश करते हो जो निश्चय ही जीवनसे दूर और अतिमानसिक सद्वस्तुकी अनुभूतिसे और दूर है।

इस पदार्थमें, जो जगत्‌में फैल रहा है और क्रियाशील है, इतनी तीव्र ऊष्मा, शक्ति और आनंद है कि उसके सामने हर प्रकारका मानसिक क्रिया-कलाप भावशून्य और नीरस लगता है। इसलिये इन चीजोंके बारेमें तुम जितना कम बोलो उतना अच्छा है। एक क्षण मात्रके लिये, गहरे और सच्चे प्रेमकी एक तरंग मात्र, भागवत कृपामें एक निमिषमात्रकी घनिष्टता तुम्हें सभी संभव व्याख्याओंकी अपेक्षा लक्ष्यके ज्यादा निकट ले जाती है।

तुम यह भी कह सकते हो कि एक प्रकारकी सुसंस्कृत, सूक्ष्म, स्पष्ट, ज्योतिर्मय, तेज, गहराईमें पैठनेवाली भावना, सबसे सूक्ष्म व्याख्याओंकी अपेक्षा तुम्हारे लिये ज्यादा द्वार खोलती है। और अगर तुम अनुभूतिको जरा ज्यादा आगे बढ़ा सको तो तुम्हें लगता है कि तुम शरीरके रूपांतरके कामतक पहुंच चुके हो, कि कुछ कोषाणु अन्य कोषाणुओंकी अपेक्षा ज्यादा तैयार, ज्यादा संस्कृत, सूक्ष्म और लचीले हैं, वे ज्यादा ठोस रूपसे भागवत कृपा, भागवत संकल्प और भागवत शक्तिकी उपस्थितिको अनुभव कर रहे हैं जो मानसिक नहीं बल्कि तादात्म्यद्वारा प्राप्त-ज्ञान है, जब तुम अपने शरीरके कोषाणुओंमें यह अनुभव करो तो अनुभूति इतनी पूर्ण, इतनी अनिवार्य, इतनी सजीव, ठोस, मूर्त और सच्ची लगती है कि बाकी सब कुछ एक निरर्थक सपना प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह तुम कह सकते हो कि अनुभूति सचमुच निर्णायक तभी होगी जब चक्र पूरा होगा, जब दोनों सिरे मिलेंगे, जब उच्चतम सबसे अधिक जड़ भौतिकमें अभिव्यक्त होगा।

ऐसा लगता है कि जबतक तुम अपने शरीरसे न समझो तबतक सचमुच कभी नहीं समझ पाते।

निश्चेतनाकी तलीमें — जनवरी, १९५९

(५ नवंबर, १९५८ की अनुभूति)

सबसे कठोर और सख्त और संकरी और दम घोटनेवाली निश्चेतनाकी बिलकुल तलीमें मैं एक सर्वशक्तिमान कमानीसे जा टकरायी जिसने मुझे एक निराकार अनंत विशालतामें उछाल दिया जो नये जगत्के बीचसे स्पंदित थी।

...वह मूल निश्चेतना नहीं थी। अगर हम कह सकें तो वह मानसिक निश्चेतना थी... जबतक मन अभिव्यक्त नहीं हुआ था तब तक निश्चेतना ऐसी नहीं थी: वह निराकार थी और उसमें निराकार वस्तुओंकी नमनीयता थी — वह नमनीयता अब गायब हो गयी है... अब एक ऐसी निश्चेतना है जो रूपांतरित होनेके इनकारमें संगठित है! इसलिये मैंने लिखा: "सबसे कठोर, सख्त और संकरी" — कोई ऐसी चीज जो तुमपर दबाव डालती है, दबाव डालती है — बहुत दम घोटनेवाली होती है।

फिर मैंने लिखा: "मैं एक सर्वशक्तिमान कमानीसे जा टकरायी।" उसका मतलब ठीक यह है: निश्चेतनाकी सबसे गहरी गहराइयोंमें एक परम स्रोत है जो हमें परमको स्पर्श करनेमें समर्थ बनाता है क्योंकि निश्चेतनाकी ठीक तलीमें परम प्रभु विद्यमान हैं। परम प्रभु ही हमें परम प्रभुके संपर्कमें आनेके लिये समर्थ बनाते हैं। वही सर्वशक्तिमान कमानी हैं।

हमेशा वही विचार है कि उच्चतम ऊंचाई नीची-से-नीची गहराई-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को छूती है। विश्व एक चक्रके समान हैं। उसका प्रतीक एक सांप है जो अपनी पूंछ काटता है। इसका मतलब यह कि परम ऊंचाई सबसे अधिक भौतिकको बिना मध्यवर्तीके छूती है।

अंतमें मैंने कहा है: "निराकार अनंत विशालता जो नए जगत्के बीजोंसे स्पंदित है।" आदि सृष्टिका नहीं, बल्कि अतिमानसिक सृष्टिका सवाल है। यह अनुभूति परम प्रभु, सबके स्रोत, में निवर्तनके साथ मिलती जुलती नहीं; मुझे ऐसा लगा कि मुझे अतिमानसिक सृष्टिके स्रोतमें प्रक्षिप्त किया जा रहा है: अतिमानसिक सृष्टिके लिये परमकी कोई चीज जिसे वस्तुनिष्ठ किया जा चुका है।

वास्तवमें शक्ति, ऊष्मा और सुनहरे रंगका आभास था। वह तरल नहीं बल्कि चूर्णके समान था। और इनमेंसे हर एक चीज (उन्हें कण, टुकड़े या बिन्दु भी नहीं कह सकते — शायद बिन्दु कह सकें बशर्ते कि हम उसे गणितकी परिभाषामें लें जिसके अनुसार वह देशमें स्थान नहीं लेता), सजीव सुवर्णके समान थी, बिखरे हुए ऊष्मायुक्त सुवर्णके समान। . . . ऐसा कह सकते हैं कि उन्होंने मेरी आंखोंको मेरे मुखको छुआ. . . और जबरदस्त शक्तिके साथ छुआ! साथ ही साथ प्रचुरताकी, सर्वशक्तिमान शांतिकी भावना थी — वह समृद्ध थी, परिपूर्ण थी। वह गतिकी चरम सीमा थी, हम जिसकी कल्पना कर सकते हैं उससे कहीं अधिक, अनन्तगुनी फुर्तीली, और साथ ही वह निरपेक्ष शांति, पूर्ण नीरवता थी।

और यह सर्वशक्तिमान कमानी उस चीजका पूर्ण चित्रण थी जो **सबके लिये** होती है, होगी और जिसका होना अनिवार्य है। एकाएक तुम विशालतामें उछल पड़ते हो।

विरोधी शक्तियोंसे मुक्ति — फरवरी, १९५९

. . . तुम तबतक विरोधी शक्तियोंसे मुक्त नहीं होते जबतक कि तुम सदाके लिये प्रकाशमें बाहर, निम्नतर गोलार्धसे परे न उठ जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां "विरोधी शक्तियों" यह पद अपना अर्थ खो बैठता है। वहां केवल प्रगतिकी ही शक्तियां हैं जो तुम्हें प्रगति करनेके लिये बाधित करती हैं। लेकिन चीजोंको उस दृष्टिसे देख सकनेके लिये तुम्हें निम्नतर गोलार्धसे बाहर निकलना पड़ेगा। क्योंकि नीचे, वे भागवत योजनाका विरोध करनेमें बहुत वास्तविक हैं।

पुरानी परंपरामें कहा जाता था कि शरीरको त्यागे बिना और परम मूलको लौटे बिना उच्चतर अवस्थामें बीस दिनसे ज्यादा रहना संभव नहीं है। अब वह विचार सच नहीं रहा।

सभी आक्रमणोंसे परे पूर्ण सामंजस्यकी ठीक यही स्थिति अतिमानसिक सिद्धिके साथ संभव हो जायगी. . . लेकिन दोनों जगतोंके बीच अभीतक ठीक यही कड़ी नहीं बनी है, वह निर्माणकी प्रक्रियामें है। ३ फरवरी, १९५८ की उस अनुभूतिका यही मतलब था, विशेष रूपसे दोनों जगतोंके बीच एक कड़ी बनाना। क्योंकि दोनों जगत् वास्तवमें मौजूद हैं — एकके ऊपर एक नहीं — एकके अंदर एक, दो अलग-अलग आयामोंमें। लेकिन दोनोंमें कोई संपर्क नहीं है। एक दूसरेसे जुड़े बिना वे एक-दूसरेको ढकते हैं। ३ फरवरीकी अनुभूतिमें मैंने यहांके और कहीं औरके कुछ व्यक्तियोंको देखा जो अपनी सत्ताके एक अंशमें अतिमानसिक जगत्के थे, लेकिन कोई संबंध नहीं, कोई संयोजन नहीं। विश्वके इतिहासमें ठीक वह घड़ी आ गयी है जब उस कड़ीको स्थापित किया जा सकता है।

५ नवंबरकी अनुभूति दोनों जगतोंके बीच एक कड़ी बनानेके लिये एक नया कदम थी। मैं अतिमानसिक सृष्टिके ठीक स्रोतमें प्रक्षिप्त हुई थी : वह सारा ऊष्मा-भरा सुवर्ण, वह जीवंत जबरदस्त शक्ति, वह परम शांति।

मैंने फिरसे देखा कि अतिमानसिक जगत्में जिन मूल्योंकी प्रधानता थी उनका हमारे, इहलोकके मूल्योंके साथ कोई संबंध नहीं था, उच्चतम ज्ञानके साथ, यहांतक कि उन मूल्योंके साथ भी कोई संबंध न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जिन्हें हम निरंतर रूपसे भागवत उपस्थितिमें रहते, समय भागवत मानते हैं। वह बिलकुल भिन्न है....

उस समय परम प्रभुके साथ मेरे संबंधका जो गुण या प्रकार था वह यहांकी अपेक्षा बहुत भिन्न था और तादात्म्यका गुण भी अलग था। जहां निम्नतर गतिविधियोंका सवाल है हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि वे अलग होंगी। लेकिन वह अनुभूति जो हमारे लिये यहां चरम बिंदु है, वह तादात्म्य जिसके कारण परम प्रभु शासन और वास करते हैं — हां, तो, वह इस निम्नतर गोलार्धमें या अतिमानसिक जीवनमें अलग प्रकारसे शासन और वास करते हैं। उस क्षण (१३ नवंबरकी अनुभूति) जिस चीजने अनुभूतिको तीव्रता दी वह यह थी कि मैं, बहुत धुंधले रूपमें, चेतनाकी दोनों अवस्थाओंको एक ही समयमें देख पायी। यह लगभग ऐसा है मानो परम प्रभु ही अलग हैं, यानी उनके बारेमें हमारी अनुभूति। और फिर भी दोनों हालतोंमें परम प्रभुके साथ संपर्क था। शायद जो चीज अलग होती है वह यह कि हम भगवान्को किस रूपमें देखते हैं और किस तरह उसका अर्थ लगाते हैं। फिर भी अनुभूतिका गुण अलग होता है।

दूसरे गोलार्धमें एक तीव्रता और परिपूर्णता है जो यहां काफी भिन्न शक्तिमें अनूदित होती है.... यहां हम जिस चोटीतक उठ सकते हैं उससे यह कुछ ऊंची है, वह **एक और कदम** नहीं है। यहां हम अंतमें, शिखरपर हैं... गुण अलग होता है, इस अर्थमें कि प्राचुर्य होता है, समृद्धता और शक्ति होती है — यह हमारी पद्धतिमें अनुवाद है — लेकिन कोई चीज है जो हमसे बच निकलती है... वह सचमुच चेतनाका नया उलटाव है।

जब हम आध्यात्मिक जीवन जीना शुरू करते हैं तो चेतनाका उलटाव होता है जो हमारे लिये इस बातका प्रमाण है कि हमने आध्यात्मिक जीवनमें प्रवेश किया है। जब हम अतिमानसिक जगत्में प्रवेश करेंगे तब चेतनाका एक और उलटाव होगा....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिमानसिक ज्योतिका प्रवाह — २९ फरवरी, १९५६

(२९ फरवरी, १९५६ — बुधवारकी रातको सामूहिक ध्यानके समय)

आजकी सांझ तुम्हारे बीचमें भगवान्‌की ठोस और द्रव्यात्मक उपस्थिति थी। मेरा रूप जीवित स्वर्णका था — सारे विश्वसे बड़ा। मैं एक बहुत बड़े विशालकाय सोनेके दरवाजेके सामने थी खड़ी जो जगत्‌को भगवान्‌से अलग करता है।

जैसे ही मैंने दरवाजेपर नजर डाली, मैंने चेतनाकी एक ही गतिमें जाना और संकल्प किया कि अब समय आ गया है', और दोनों हाथोंसे एक बहुत बड़ी सोनेकी हथौड़ी उठाकर मैंने एक चोट लगायी; दरवाजेपर एक प्रहार किया और दरवाजा चूर-चूर हो गया।

तब अतिमानसिक ज्योति, शक्ति और चेतना धरतीपर अबाध प्रवाहके रूपमें बह निकली।

१

मैंने जो लिखा है उसे तुम मुश्किलसे समझ पाओगे, लेकिन अपने मनको शांत रखनेकी और उसे ग्रहण करनेकी कोशिश करो।

निश्चय ही, जहांतक मेरा सवाल था चीजको शब्दोंमें सूत्रबद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं थी। मैंने सब कुछ दूसरोंके लिये शब्दबद्ध करनेके लिये लिख लिया। लेकिन हमेशा, लिखते समय उपलब्धि, चेतनाकी अवस्था, सीमित हो जाती है। अभिव्यक्तिकी क्रिया ही वास्तविकताको कुछ हदतक संकीर्ण कर देती है।

२९ फरवरी, १९५८ को जो हुआ वह न कोई अन्तर्दर्शन था न अनुभूति, बल्कि एक काम था जो किया गया। क्रीड़ांगणमें शामके ध्यानके समय मैं अतिमानसमें गयी और देखा कि कुछ करनेकी जरूरत है और उसे कर दिया।

यह बात मजेदार है कि ये शब्द — "समय आ गया है" —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो उस चीजको अभिव्यक्त करते हैं जिसे मैंने तब जाना और साथ ही उसका संकल्प किया जब मैंने अपने-आपको उस महाकाय द्वारके सामने पाया, पर जिसके उस पार वह जगत् था — मुझे ये शब्द फ्रेंचमें नहीं अंग्रेजीमें सुनायी दिये। मानों श्रीअरविंदने बोले हों।

जब प्रकाशकी बाढ़ सारे विश्वपर फैल चुकी थी तब मैं अतिमानससे उतरी। मैंने सोचा कि चूंकि बाढ़ इतनी जबर्दस्त थी इसलिये क्रीड़ांगणमें मेरे सामने जो बैठे थे वे जमीनपर चित होंगे। लेकिन आंखें खोलनेपर मैंने देखा कि सब लोग चुपचाप बैठे हैं: जो कुछ हुआ था उसके बारेमें वे पूरी तरह अचेतन लग रहे थे!

२

दिसम्बर १९५० से व्यक्तिगत रूपमें अतिमनकी क्रिया मौजूद थी। जनवरी १९५६ में श्रीअरविंद मेरे आगे दो-तीन बार प्रकट हुए और मानों यह सूचना दी कि व्यापक अभिव्यक्ति आ रही है। लेकिन जब यह घटना हुई तो अचानक हुई।

वह बिलकुल अप्रत्याशित थी। लेकिन मेरी सभी महान् अनुभूतियां इसी तरह आयी हैं। मैं अपनी सामान्य चेतनामें रहती हूं और वे अचानक आती हैं, मानों अधिक-से-अधिक विषमतामें सजीव रूपसे अपनी वास्तविकता प्रकट करनेके लिये आती हैं। जब इस तरह किसी उपलब्धिको महसूस किया जाय तो व्यक्तिको उसका श्रेष्ठ मूल्य प्राप्त होता है। अगर उसे पहलेसे ही सूचना मिल जाय तो मन भाग लेने लगता है। इस अवस्थामें मन आया तबतक मैं द्वारके इस पार आ चुकी थी। सब जगह इतना अद्‌भुत प्रकाश था। इस अभिव्यक्तिका आभास प्राप्त करनेके लिये मनमें रहनेवालोंकी अपेक्षा हृदयमें वास करनेवालोंमें संभावना अधिक है।

बीस मिनटतक प्रकाश बरसता रहा, बल्कि मैंने ध्यानमें बीस मिनटतक देखा और फिर ध्यान बंद कर दिया। मैं अनिश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालतक ध्यान जारी नहीं रख सकती थी। कुछ समय बाद लोग बेचैन होने लगते हैं। अपने निजी बाह्य व्यक्तित्वतक लौटनेके लिये मुझे विशेष प्रयास करना पड़ा। और मैं बहुत मुश्किलसे एक शब्द बोल पाती थी।

जो हुआ उसे आश्रममें केवल दो व्यक्तियों और बाहरके तीन शिष्योंने अनुभव किया। ऐसी बात नहीं है कि उन्हें मालूम था कि यह अतिमानसिक अभिव्यक्ति थी। लेकिन उसके कारण उन्हें कोई असाधारण अनुभूति हुई।

प्रकाशका बरसना निरंतर है, लेकिन छज्जेपर उसकी विशेष एकाग्रता होती है। अब, जो चीजें आसान थीं वे मानों बिना प्रयासके चरितार्थ हो रही हैं, जो चीजें कठिन प्रतीत होती थीं अब आसान मालूम होती हैं और असंभव चीजें प्राप्य और संभव दीखती हैं।

वैश्व वातावरणमें अभिव्यक्ति सूक्ष्म भौतिकमें है। बाहरी भौतिकमें अभी कोई चीज नहीं दीखती। प्रकृतिने अतिमनसे इनकार नहीं किया — वह इनकार न कर सकी। लेकिन अतिमन अंतर्ग्रस्त हो गया है और उसे अपना उद्धार करना है।

फिर भी सब कुछ बदल गया है, मूलतः बदल गया है। पहले काम प्रकाशके मनके दबावसे होता था। श्रीअरविंदने वह विजय प्राप्त कर ली थी। अब अतिमन ही प्रत्यक्ष रूपसे निर्देशन और शासन कर रहा है। यहां भी श्रीअरविंद ही माध्यम रहे हैं। और मेरे अंदर उनकी उपस्थिति सदा बनी रहती है।

अतिमानसिक अभिव्यक्ति — अप्रैल, १९५६

१९५६ के अप्रैलमें माताजीने संदेश दिया :

हे प्रभु, तूने इच्छा की है, और मैं कार्यान्वित करती हूं :
एक नयी ज्योति पृथ्वीपर प्रकट हो रही है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नया जगत् उत्पन्न हो गया है।

जिन चीजोंके लिये वचन दिया गया था वे पूरी हो गयी हैं।

पृथ्वीपर अतिमानसिक अभिव्यक्तिका होना अब महज एक संभावना नहीं है, बल्कि एक जीवंत तथ्य, एक सत्य वस्तु है।

यह (अतिमानस) यहां कार्य कर रहा है, और एक दिन आयेगा जब अति अंध, अत्यंत अचेतन, यहांतक कि सर्वाधिक अनिच्छुक लोग भी इसे पहचाननेके लिये बाध्य होंगे।

किसीने पूछा : आपने कहा है : "अतिमानस पृथ्वीपर उतर आया है।" इसका ठीक-ठीक तात्पर्य क्या है? आपने यह भी कहा है: "जिन चीजोंकी प्रतिज्ञा की गयी थी वे संसिद्ध हो गयी हैं।" वे कौनसी चीजें हैं?

माताजी — आह! यह बात, यह तो निस्संदेह अज्ञान है! बहुत दीर्घ कालसे इसके लिये वचन दिया गया है, बहुत समय पहलेसे यह बात कही गयी है — केवल यहां नहीं, बल्कि जगत्के प्रारंभसे। इस विषयमें सभी प्रकारकी भविष्यवाणियां सभी प्रकारके पैगंबरोंद्वारा की गयी हैं; यह कहा गया है: "एक नया स्वर्ग और एक नयी पृथ्वी उत्पन्न होगी, एक नयी जाति पैदा होगी, यह संसार रूपांतरित होगा. . .।" सभी परंपराओंमें पैगंबरोंने इस बातकी चर्चा की है।

इस नयी चेतनाके प्रति हमारा क्या मनोभाव होना चाहिये?

माताजी — यह इस बातपर निर्भर है कि तुम उसके द्वारा क्या करना चाहते हो।

यदि तुम एक अनोखी वस्तुके रूपमें उसकी ओर ताकना चाहो तो तुम्हें बस उसे देखते रहना होगा, समझनेका प्रयत्न करना होगा।

यदि तुम चाहो कि वह तुम्हें बदल दे तो तुम्हें अपने-आपको खोलना होगा और प्रगति करनेका प्रयास करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज-सुधार

समाज-सुधारक कुछ युक्तियोंको दकियानूसी विचारोंकी तरह दोहराता रहता है। वह इन पुरानी बातोंके लिये पागल होता है, उसके लिये जहाद करता रहता है। साधारणतः, वह अपने विचारोंके अनुसार आचरण नहीं करता लेकिन वह पूरी सचाईके साथ उनसे अनुराग रखता है और उनके लिये लड़ता-झगड़ता है। वह रामबाणकी तरह उनकी घोषणा करता है, उनकी क्षमता या उनके प्रभावके बारेमें शंका करना या परीक्षण करना उसकी दृष्टिमें नास्तिकता या विश्वासघात है। उसके यूरोपीय डाक्टरोंने उसे बतलाया है कि बाल-विवाह जातिके शरीरके लिये हानिकर है और यह बात उसके लिये वेद वाक्य है। यह याद रखना उसके लिये सुविधाजनक नहीं है कि भारतमें शारीरिक ह्रास एक नयी चीज है, कि हमारे पुरखे मजबूत, ओजस्वी और सुंदर होते थे। वह गायब होती हुई नाचनेवालियोंकी जड़ खोदनेके लिये तत्पर रहता है लेकिन ऐसा लगता है कि उसे इस बातकी परवाह नहीं है कि वेश्याओंकी संख्या बढ़ती जाती है। हो सकता है कि कुछ तो यह भी सोचते हैं कि यह एक लाभदायक चीज है कि बीमारीके भारतीय रूपका स्थान यूरोपीय रूप ले रहा है। वह हमारे समाजकी सहकारी पद्धतिको तोड़नेमें लगा है पर यह नहीं देखता कि यूरोप दानवी पग उठाता हुआ समाजवादकी ओर बढ़ रहा है।

कट्टर पंथी हों या सुधारक, वे अपने-आपको समान रूपसे ब्योरेकी बातोंमें खो देते हैं, लेकिन ब्योरोंको निश्चित रूप तो सिद्धांत ही देते हैं। समाजके स्थायी कल्याणपर कोई भी असर डाले बिना समाज-सुधारकोंकी उठायी हुई सभी बातोंका इस ओर या उस ओर फैसला किया जा सकता है। वह एक दयनीय दृश्य होता है जब लोग उपजातियोंके बीच ब्याह करानेके मामलेपर श्रम करते हैं और इक्के-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुक्के उदाहरणोंमें सफलता पाकर फूले नहीं समाते। आधुनिक प्रश्न तो यह है कि जातिके भाव और उसकी देहको रहना भी चाहिये या नहीं। हिंदू इस बातको याद रखें कि अपने वर्तमान रूपमें जाति केवल शिल्पीसंघके जैसी चीज है जिसे स्वीकृति दे दी गयी है पर अब वह काम नहीं कर रही। यह शाश्वत धर्म नहीं है, यह वर्ण व्यवस्था नहीं है। मैं इस बातकी परवाह नहीं करता कि विधवाएं फिरसे ब्याह करती हैं या बिना ब्याही रहती हैं, परंतु इस बातपर विचार करना बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि वैधानिक और सामाजिक तौरपर स्त्रीका पुरुषके साथ क्या संबंध होगा। वह उसके अधीन रहेगी, समान होगी या उससे श्रेष्ठ होगी, क्योंकि भविष्यमें श्रेष्ठताका संबंध भी असंभव नहीं है जैसा कि वह सुदूर भूतकालमें था। और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि समाजका रूप प्रतियोगी होगा या सहयोगी, व्यक्तिवादी होगा या साम्यवादी। यह बात सामान्य भारतीय बुद्धिकी दरिद्रताको बड़े दुखद रूपमें प्रकट करती है कि हम इन महत्त्वपूर्ण बातोंपर इतनी कम बातचीत करते हैं लेकिन नगण्य ब्योरेकी बातोंपर तूफान खड़े कर देते हैं। अगर इन बड़ी चीजोंका फैसला हो जाय, जैसा होना चाहिये, तो छोटी-मोटी बातें अपने-आप ठीक हो जायंगी।

—श्रीअरविंद

वोल्यूम १०, खंड ३, पृ० १२२-२३

सुन्दर कहानियां :

विनयशीलता

जापानी मकानके सामनेके दरवाजेपर यह कौन आ रहा है? यह फूलोंका कलाकार है। यह फूलोंको सजानेकी कला जानता है। गृहस्वामी एक थाली लिये आ रहा है जिसमें फूल रखे हैं, साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही एक कैंची, एक छोटी-सी आरी और एक सुन्दर गुलदान भी है।

"महाशय, मैं इस सुन्दर गुलदानके योग्य गुलदस्ता न बना सकूंगा।"

"मुझे विश्वास है कि आप बना सकेंगे," बड़ी सभ्यतासे कहकर गृहस्वामी कमरेसे बाहर निकल जाता है।

अब कलाकार अकेला है। वह काटता, तराशता, मोड़ता, बांधता जाता है और थोड़ी देरके बाद एक सुन्दर-सा गुलदस्ता गुलदानमें दिखायी देता है। सचमुच आंखोंके लिये देखनेलायक चीज बनी है!

गृहस्वामी अपने मित्रके साथ कमरेमें आता है। कलाकार एक ओर खड़ा होकर धीरे-से ओठों-ही-ओठोंमें कहता है: "मेरा गुलदस्ता कुछ बन नहीं पाया। इसे हटा दीजिये।"

"नहीं, अच्छा है।"

गुलदस्तेके पास, मेजपर कलाकारने कैंची रख दी है जिसका मतलब यह है कि अगर किसीको गुलदस्तेमें कोई दोष दिखायी दे, अगर कोई ऐसी चीज हो जो आंखोंको नहीं भाती तो वह उसे काटकर ठीक कर दे।

कलाकारने सुन्दर काम किया है, लेकिन वह उसका गुणगान नहीं करता। वह स्वीकार करता है उसमें भूलें हो सकती हैं। वह विनयशील है।

शायद जापानी कलाकार वास्तवमें यह सोचता हो कि उसका काम प्रशंसनीय है, मुझे उसके विचारोंका पता नहीं लेकिन कम-से-कम वह घमंड तो नहीं छांटता। उसका व्यवहार अच्छा लगता है।

दूसरी ओर हम घमंड़ी लोगोंपर हंसते हैं।

दमिश्कका खलीफा सुलैमान घमंडी था। एक शुक्रवारको वह गरम पानीसे स्नान करके आया, हरे-हरे कपड़े पहने और सिरपर हरा साफा बांधकर हरे बिस्तरपर बैठ गया। उसके कमरेमें कालीन भी हरा था उसने आईना लेकर अपना मुंह देखा तो खुश होकर बोल पड़ा:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हज़रत मुहम्मद पैगम्बर थे, अबू बक्र सत्यके निष्ठावान साक्षी थे। उम्र सत्य और असत्यमें विवेक कर सकते थे, उस्मान विनयशील थे, अली वीर थे, मुआविया दयालु थे और यजीद धीर, अब्दुल मालिक अच्छे प्रशासक थे और वालिद एक बलवान स्वामी थे, पर मैं, मैं युवा और सुन्दर हूं।"

गुलदानमें फूल सुन्दर ढंगसे सजाये गये हैं और उन्हें देखकर हमारी आंखें खुश होती हैं, लेकिन यह बात हमें कहनी चाहिये, कलाकारको नहीं।

सुलैमान सुन्दर है। यह तो ठीक है कि यह जाननेमें कोई हर्ज नहीं, लेकिन हम उसकी शेखीपर हंस पड़ते हैं जब वह अपने-आपको आईनेमें देख-देखकर अपने-आपसे कहता है कि अपनी सुन्दरताके कारण वह सच्चे उमर और धीर यजीदसे बड़ा है।

*

इससे भी बढ़कर अनर्गल है उस आदमीकी शेखी जो यह समझता था कि यह पृथ्वी उसकी महिमाके लिये काफी बड़ी नहीं है और उसे अन्य लोकोंमें जाना चाहिये।

कहानी यूं है।

ईरानका एक राजा कैकौस था जिसने बहुत-से युद्ध लड़े और जीते। वह पराजित देशोंको लूट-मारकर इतना धनी बन गया था कि उसने अलबर्ज नामक पहाड़ीपर दो नये महल बनवाये। वहां इतना चांदी-सोना भरा था कि रातको भी दिनका-सा प्रकाश रहता था।

कैकौस गर्वसे भर गया कि वही धरतीका सबसे बड़ा राजा है।

अब इलबीस (शैतान) ने राजाके हृदयमें भरे घमंडको देखा तो उसे अपने जालमें फंसानेका निश्चय कर लिया। उसने एक भूतको नौकरके वेशमें राजाको एक सुन्दर-सा गुलदस्ता भेंट करनेके लिये भेजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरने राजाके सामने धरतीको चूमकर कहा: "राजन्, सारे संसारमें आप जैसा कोई राजा नहीं है। लेकिन अब भी एक दुनिया है जहां आपका हुकुम नहीं चलता और वह है सूरज, चांद और तारोंकी दुनिया। हे राजा, चिड़ियोंके पीछे-पीछे उड़ो और आकाश-में जा पहुंचो।"

"लेकिन मैं पंखोंके बिना कैसे उड़ सकता हूं?" राजाने पूछा।

"यह तो आपके बुद्धिमान सलाहकार ही बता सकेंगे।"

अब राजा कैकौसने सभी ज्योतिषियों और पंडितोंको बुलाया और उनसे आकाशमें उड़नेका उपाय पूछा। उन्होंने एक योजना बनायी। उन्होंने एक घोंसलेसे गरुड़के चार बच्चे पकड़वाए और उन्हें विशेष भोजन आदि देकर खूब बड़ा मजबूत बनाया।

अब एक लकड़ीका चौखटा बनाया गया। चारों खूंटोंपर एक-एक लकड़ी बांधी गयी और उसपर बकरेका मांस बांध दिया गया। चार लकड़ियोंपर मांसके चार टुकड़े बांधे गये और हर खूंटेके साथ एक-एक गरुड़ बांध दिया गया। इस चौखटेपर राजाका सिंहासन रख दिया गया और शराबकी सुराहीके साथ राजा उसपर आन बिराजे। गरुड़ मांसतक पहुंचनेके उपायमें ऊपर उड़े। लोगोंके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। उनके राजा सचमुच उड़ रहे थे। ऊपर, और ऊपर, मांसके टुकड़े, गरुड़ और राजा उठते ही जा रहे थे। बादलोंसे भी ऊपर, चंद्रमाके आसपास। आखिर गरुड़ थक गये। उन्होंने पंख मारना छोड़ दिया और राजा अपनी सुराही और सिंहासन समेत चीनकी पहाड़ियोंमें जा गिरे। बेचारेकी हालत खराब थी। बेचारा राजा भूखा, प्यासा, घायल अकेला पड़ा था। उसके दूत इधर-उधर ढूंढते आये और उसे लेकर राजधानी लौटे।

राजाने जान लिया कि उसकी योजना कितनी बेवकूफीसे भरी थी, उसने कितना झूठा गर्व किया था उसने निश्चय कर लिया कि अब अपने बूतेसे बाहर उड़ानें न भरेगा। वह राजकाजमें लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया और इतनी अच्छी तरह काम संभाला कि प्रजासे तारीफ-ही-तारीफ मिलने लगी।

राजा शेखीके मीनारसे उतरकर विनयकी ठोस धरतीपर आ गया।

*

कभी-कभी हम ऐसे गर्वीले आदमीसे घृणा करते हैं जो केवल अपनी प्रशंसा ही नहीं करता, बल्कि खूब शेखी भी बघारता है। शेखी बघारनेवालेको कोई पसंद नहीं करता, यहांतक कि दूसरे शेखी बघारनेवाले भी उसे पसंद नहीं करते।

भयंकर रावण रामका शत्रु था। रावणने सीता-हरणका घृणित काम किया था। इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं कि ऐसा राक्षस शेखी बघारा करे।

राम और लंकाके राक्षसोंके अंतिम युद्धमें भगवान् राम अपने रथमें बैठे रावणके सामने आ गये। रावण भी अपने रथपर आरूढ़ था। आज द्वन्द्व-युद्ध होना था। रावणके राक्षस और रामके भालू-बंदर दर्शक बनकर खड़े थे।

रावणने भयंकर निनाद करते हुए कहा, "राम, आज यह लड़ाई खतम हो जायगी। हां, तुम मैदानसे भागकर जान बचा लो तो और बात है। कमबख्त, आज मैं तुम्हें मौतके हाथोंमें सौंप दूंगा। याद रखो, तुम्हें रावणसे पाला पड़ा है।"

राम शांत भावसे मुस्कराये। वे जानते थे कि रावणका अंत आ गया है। उन्होंने कहा "हां, रावण मैंने तुम्हारे बलके बारेमें सब कुछ सुन रखा है, अब मैं देखना चाहता हूं। मैं तुम्हें बता दूं कि इस दुनियामें तीन तरहके आदमी हैं। वे तीन पेड़ों जैसे होते हैं।

"गुलाबमें फूल आते हैं — ये वे लोग हैं जो सिर्फ बोलते हैं। आममें फूल भी आते हैं और फल भी लगते हैं — ये वे लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जो बोलते भी हैं और काम भी करते हैं। और फिर हैं कटहल जिसमें केवल फल आते हैं। ये वे हैं जो बोलते नहीं, सिर्फ करते हैं।

राक्षस विवेक-भरे इन शब्दोंको सुनकर हंसा लेकिन कुछ ही देरमें उसका मुंह हमेशाके लिये बंद हो गया।

श्रीमातृवाणी

(यौगिक जीवनका उद्देश्य; नैतिकता आध्यात्मिक-जीवनके विपरीत; कामनामात्रका जन्म अंधेरी प्राणमय सत्ता और अज्ञानसे; उदारता और लोभ आध्यात्मिक दृष्टिसे एक ही महत्तर दैवी शक्तिके विकृत रूप; प्रत्येक व्यक्ति भागवत अभिव्यक्तिके लिये अपरिहार्य यंत्र)

यदि तुम इस बातको समझ जाओ तो तुम आध्यात्मिकता और नैतिकतामें — लोग इन्हें एक-दूसरेमें मिला देनेकी भूल सदा ही किया करते हैं — जो अंतर है, जो महान् अंतर है उसे समझ सकोगे। आध्यात्मिक जीवन, अर्थात्, यौगिक जीवनका उद्देश्य है भागवत चेतनामें परिवर्धित होना और फलतः, तुममें जो कुछ है उसे पवित्र, तीव्र, महान् और पूर्ण करना। यह जीवन तुम्हें भगवान्की अभिव्यक्ति करनेवाली एक शक्ति बना देता है। यह प्रत्येक व्यक्तिके चरित्रको पूर्ण गुणोत्कर्षतक ऊपर उठा देता है तथा अधिक-से-अधिक आत्म-प्रशासनकी सीमातक पहुंचा देता है; कारण यह भगवान्की योजनाका एक अंग है। परंतु नैतिकता एक मानसिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनाके सहारे आगे बढ़ती है, और क्या अच्छा है और क्या नहीं विषयके थोड़े-से विचारोंके आधारपर एक आदर्श नमूना गढ़कर तैयार करती है, जिसके सांचेमें ढलना हर एकके लिये जरूरी होता है। इस नैतिक आदर्शका समग्र स्वरूप या उसके घटक अंग देश और कालके अनुसार जुदा-जुदा होते हैं। फिर भी, यह आदर्श अपने-आपको बेजोड़ आदर्श, अपनेमें बिलकुल परिपूर्ण मानता है, वह अपने बाहर किसी मत या सिद्धांतको स्वीकार नहीं करता, अपने अंदर भी किसी प्रकारके हेर-फेरकी इजाजत नहीं देता। सभीको उस आदर्श नमूनेके सांचेमें ढलना होगा, हर एकको उसीके हू-बहू, बिना किसी भूलके वैसा ही बनना होगा, चूंकि नैतिकता इस तरहके कठोर और अवास्तविक स्वभाववाली है, इसी कारण वह अपने सिद्धांत और क्रियामें आध्यात्मिक जीवनके विपरीत जा पड़ती है।

आध्यात्मिक जीवन सबके अंदर उपस्थित सार-वस्तुका दर्शन कराता है, लेकिन साथ ही उसके अनंत वैचित्र्य भी दिखाता है; यह एकतामें विविधता और फिर उस विविधतामें पूर्णताको सिद्ध करनेकी चेष्टा करता है। नैतिकता एक ही कृत्रिम मानदंडको उठा लेती है जो जीवनके वैचित्र्य और आत्माकी स्वतंत्रताके विपरीत है। वह बंधी हुई, मर्यादित और मानसिक वस्तुकी सृष्टि करके यह मांग करती है कि सभी उसके अनुसार चलें, हर व्यक्ति एक ही प्रकारके गुणों और एक ही प्रकारके आदर्श स्वभावको प्राप्त करनेके लिये परिश्रम करे। नैतिकता न तो दिव्य है और न भगवान्‌की है; यह मनुष्यकी है और मानवीय है। नैतिकता भले और बुरेके बीच स्थायी विभाजनको अपना आधारतत्त्व मानती है, किंतु यह मनमानी धारणा है। यह आपेक्षिक चीजोंको निरपेक्षके रूपमें आरोपित करनेकी चेष्टा है; क्योंकि यह अच्छा और बुरा भिन्न जलवायु और भिन्न समयोंमें, भिन्न युगों और भिन्न देशोंमें बदलता रहता है। नैतिकताका विचार यहांतक जाता है कि वह कहता है कि कामनाएं भी अच्छी या बुरी होती हैं और वह अच्छीको स्वीकारने और बुरी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को त्यागनेके लिये कहता है। परंतु आध्यात्मिक जीवनकी तो यह मांग है कि तुम कामनामात्रका त्याग करो। उसका नियम है कि जो गतियां भगवान्से दूर ले जाती हों उन्हें अपनेसे दूर करो; इसलिये नहीं कि वे अपने-आपमें बुरी हैं,—कारण वे किसी औरके लिये अथवा किसी दूसरे क्षेत्रमें अच्छी हो सकती हैं—बल्कि इस-लिये कि उनका संबंध उन आवेगों या शक्तियोंसे है जो अंधेरी और अज्ञानमय होनेके कारण भगवान्के पास पहुंचनेके मार्गमें बाधा पहुंचाती हैं। सभी कामनाएं, चाहे अच्छी हों या बुरी, इसी व्याख्याके अंतर्गत हैं, कारण, कामनामात्रका उद्भव अंधेरी प्राणमय सत्ता और उसके अज्ञानसे होता है। दूसरी ओर, तुम्हें उन सब गतियोंको स्वीकारना चाहिये जो भगवान्के संपर्कमें लानेवाली हों। परंतु तुम उन्हें इस-लिये नहीं स्वीकारते कि वे अपने-आपमें अच्छी हैं, बल्कि इसलिये कि वे तुम्हें भगवान्के पास पहुंचाती हैं। अतएव जो कुछ तुम्हें भगवान्के पास ले जाता हो उसे स्वीकार करो और जो कुछ उनसे दूर ले जाता हो उसका त्याग करो, किंतु यह मत कहो कि यह अच्छा है और वह बुरा है, अथवा अपने दृष्टिकोणको दूसरेपर थोपनेकी चेष्टा मत करो; क्योंकि जिस चीजको तुम बुरा ठहराते हो वही चीज तुम्हारे पड़ोसीके लिये, जो दिव्य जीवनको सिद्ध करनेका प्रयास नहीं कर रहा है, अच्छी हो सकती है।

वस्तुओंके बारेमें नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिके भेदका एक उदाहरण ले लो। साधारण सामाजिक विश्वास मनुष्योंको उदार और लोभी, इन दो श्रेणियोंमें बांटता है। लोभी मनुष्यसे घृणा की जाती है, जब कि उदार मनुष्यको निःस्वार्थ और समाजके लिये उपयोगी समझा जाता है और इस गुणके लिये उसकी प्रशंसा की जाती है। परंतु आध्यात्मिक दृष्टिके लिये दोनों एक ही भूमिकापर खड़े हैं; एककी उदारता और दूसरेका लोभ, दोनों ही किसी उच्च-तर सत्यके, किसी महत्तर दैवी शक्तिके विकृत रूप हैं। एक ऐसी शक्ति है, ऐसी दैवी प्रवृत्ति है जो प्रकृतिकी समस्त भूमिकाओंपर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यंत जड़ प्राकृतिक भूमिकासे लेकर अत्यंत आध्यात्मिक भूमिकातक, शक्तियोंको और वस्तुओंको तथा जो कुछ भी उसके पास हो उसे फैलाती, बिखेरती और दोनों हाथोंसे बांटती रहती है। उदार मनुष्य और उसकी उदारताके पीछे एक ऐसी विशिष्ट नमूनेकी आत्मा होती है जो इस दैवी प्रवृत्तिको अभिव्यक्त करती है, वह मनुष्य बिखेरने और दूर-दूरतक बांटनेकी एक शक्ति होता है। इसी तरह एक दूसरी शक्ति होती है, एक और दैवी प्रवृत्ति होती है जो इकट्ठा करने और जमा करनेका काम करती है, वह शक्तियों और वस्तुओंको तथा अन्य जो कुछ भी स्वायत्त किया जा सकता है उस सबको, फिर चाहे वे निम्नतर भूमिकाओंके हों या उच्चतर भूमिकाओंके — एकत्र करती और जमा करती रहती है। जिसे तुम लोभी होनेका दोषी ठहराते हो उसे इस दैवी प्रवृत्तिका एक यंत्र होना था। दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं, समग्र योजनामें दोनोंकी ही आवश्यकता है। जो प्रवृत्ति एकत्र और जमा करती है उसकी आवश्यकता उस प्रवृत्तिसे जरा भी कम नहीं है जो फैलाती और बिखेरती रहती है। दोनों ही — यदि सचमुच भगवान्‌के अर्पण हो जायं — तो समान मात्रामें और समान मूल्यके साथ, भागवत कर्मके लिये यंत्ररूपसे उपयोगमें लायी जायंगी। परंतु जबतक उनका समर्पण नहीं होता तबतक दोनों ही समान रूपसे अज्ञानके आवेगोंद्वारा परिचालित होती रहती हैं। एक फेंकनेके लिये बाहरकी ओर ढकेली जाती है, दूसरी बचा रखनेके लिये अंदरकी ओर खींची जाती है; परंतु दोनोंका संचालन ऐसी शक्तियोंद्वारा होता है जो स्वयं अपनी चेतनाके लिये अंधकारमय होती हैं, इन दोनोंमें चुनने लायक कुछ भी नहीं है। योगके उच्चतर दृष्टि-बिंदुसे इस बहुत प्रशंसित उदार मनुष्यसे यह कहा जा सकता है कि : "तुम्हारे उदारताके आवेगोंका आत्माके हिसाबसे कुछ मूल्य नहीं है, क्योंकि ये अहंकार और अज्ञानमय कामनासे आते हैं।" और, दूसरी ओर, जिन्हें लोभी होनेका दोष लगाया जाता है उनमें कभी कोई ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य मिल सकता है जो प्रकृतिके सौंपे हुए इस काममें सर्वथा शांत भावसे और एकाग्रताके साथ लगा हुआ, चीजोंको बटोरता और जमा करता रहता है, और ऐसा मनुष्य एक बार जागनेपर भगवान्‌का एक बहुत अच्छा यंत्र बन जायगा। परंतु साधारणतया लोभी मनुष्य, अपने विपक्षीकी ही तरह, अहंकार और कामनाके वश कर्म करता है; यह उसी एक अज्ञानका दूसरा छोर है। दोनों-को अपने-आपको शुद्ध और परिवर्तित करना होगा तब कहीं वे अपने पीछे रहनेवाली किसी उच्चतर वस्तुके संपर्कमें आ सकेंगे और उस वस्तुको उस रूपमें व्यक्त कर सकेंगे जिस रूपमें उनकी प्रकृति चाहती है।

इसी प्रकार, तुम सब तरहके लोगोंको ले सकते हो और यह ढूंढ सकते हो कि भागवत-शक्तिकी योजनामें उनका मूल आशय क्या है। हर एक भगवान्‌द्वारा अभिप्रेत नमूनेका क्षीण स्वरूप अथवा विकृत चित्र है, ज्यादा ऊंचे आध्यात्मिक मूल्यवाली चीजकी मानसिक या प्राणिक विकृति है। गलत गति ही यह विकृति या विद्रूप बनाती है। एक बार इस अशुद्ध आवेगको वशमें कर लिया जाय, उचित वृत्ति धारण की जाय, शुद्ध गतिको पा लिया जाय तो सभीका दिव्य मूल्य प्रकट हो जाता है। सभी अपने अंदर रहनेवाले सत्यके कारण न्याय्य हैं, सभी समान रूपसे उपयोगी, समान रूपसे आवश्यक हैं और भिन्न होते हुए भी सभी भागवत अभिव्यक्तिके लिये अपरिहार्य यंत्र हैं।

(श्रीमातृवाणी भाग १, खंड १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१५ अगस्तको श्रीअरविंदका जन्मदिन मनाया गया। आश्रमवासी और दर्शनार्थी सब मिलकर लगभग चार हजार व्यक्ति श्रीअरविंदके कमरेमें दर्शनके लिये गये। सबको श्रीअरविंदका एक चित्र दिया गया। दस बजे समाधिके पास सामूहिक ध्यान हुआ। शामके समय क्रीड़ांगनमें 'मार्च पास्ट' और ध्यान हुआ। रातको माताजीके बारेमें एक फिल्म दिखायी गयी।

देशके बहुत-से केंद्रों और शाखाओंसे इस पर्वकी समाचार आ रहे हैं।

१४ और १६ अगस्तको दर्शनके लिये आये हुए सोसायटीके कार्यकर्ताओंकी बैठकें हुईं जिनमें सोसायटीके सभापति नवजातजीने उन लोगोंके साथ बातचीत की।

बंगलौरके ओरोवील-मित्र-संघकी पांचवीं वर्षगांठ मनायी गयी। कर्णाटकके राज्यपाल और सभाके मुख्य अतिथि श्री गोविंद नारायणने ओरोवीलके बारेमे प्रकाशित एक कन्नड़ पुस्तकका प्रथम विमोचन किया। इस सभामें श्री गोककने माताजीके स्वप्नका विवेचन किया, श्रीनवजातजीने जीवनमें साधना और भगवान्‌के साथ संपर्कके बारेमें भाषण दिया और श्री सबनीसने वार्षिक वृत्तांत पढ़कर सुनाया। साथमें एक प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ।

२९ और ३० जुलाईको बंगलौर विश्व-विद्यालयमें माताजीकी शिक्षाके बारेमें संगोष्ठी हुई। वहांके उपकुलपति श्री जयरामनके अतिरिक्त अन्य कई विद्वानोंने भाग लिया जिनमेंसे कुछ आश्रमसे आये थे। आश्रमकी फिल्म भी दिखायी गयी और पुस्तकोंकी प्रदर्शनी हुई। डा० माहेश्वरीने रोटरी क्लब और धर्मराज कालेजमें भी भाषण दिये।

छोटा उदयपुर (गुजरातमें) तीन दिनकी संगोष्ठी हुई और श्री पेवाड़ी (कर्णाटक) में स्वाध्याय केंद्रकी व्यवस्था हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 8731

बड़ौदा सोसायटी शाखाने २१ फरवरी, ७९ तक हर रविवारको माताजीकी शताब्दीसे संबद्ध भाषणकी व्यवस्था की है।

ऊना (हिमाचल प्रदेश) में ३१ जुलाई और अगस्तकी श्रीअरविंद योग मंदिरकी ओरसे श्री छोटे नारायण शर्माके भाषण हुए।

हनमकोंडा (आंध्र प्रदेश) केंद्रने तेलुगु भाषामें मानव प्रेम और भागवत प्रेमपर एक पुस्तक प्रकाशित की है।

श्रीमती विद्यावती कोकिलने भंडारा (महाराष्ट्र) के सार्वजनिक पुस्तकालयमें 'सावित्री' और महोद्यालयमें श्रीअरविंदकी शिक्षा-पद्धतिके बारेमें भाषण दिये और नागपुर केंद्रके सदस्योंसे बातचीत की।

घोषणाएं :

*उत्तर प्रदेश श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन नैमिषारण्यमें २२ से २४ अक्तूबरतक मनाया गया। यह स्थान सीतापुरसे १९ किलोमीटर दूर है। अधिक जानकारीके लिये श्री उमाकांत ग्रोकगंज, सीतापुरको पत्र लिख सकते हैं।

*आल इंडिया मैगजीनका ओड़िया संस्करण भी छपना शुरू हो गया है।

*जब कभी आप सोसायटीके नाम कुछ रुपया भेजें तो उसके साथ अपना पूरा पता, अपना सदस्यता नंबर जरूर लिखें और साथ ही यह भी लिखें कि रुपया किस कामके लिये भेजा है।

*हिंदी भाषी जनतामें माताजी और श्रीअरविंदके बारेमें जाननेकी उत्सुकता तो बढ़ रही है, पर लोगोंतक इस विषयका साहित्य ठीक तरहसे नहीं पहुंच रहा है। साहित्यका प्रचार-प्रसार करनेमें हाथ बंटानेके इच्छुक शब्द या संपादक पुरोधा, पांडिचेरी-६०५००२ से पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

थीऑसॉफिकल सोसायटी और ऐक्यानकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

नवंबर १९७८ वर्ष ९, अंक ४, पूर्णांक १००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

नवंबर दर्शनके संदेश		१
श्रीरामकृष्णके वचन		१६
सोसायटी समाचार		३२
दो कविताएं : समाधि	सुरेशचंद्र त्यागी	आ० ३
सर्विस ट्री	"	आ० ४

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक रवींद्र

प्रकाशक श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवंबर दर्शनके संदेश

24-11-1950

The Supramental is a truth and its advent is in the very nature of things inevitable.

SRI AUROBINDO

अतिमानस सत्य है और स्वाभाविक गतिके अनुसार उसका आविर्भाव अनिवार्य है।

—श्रीअरविंद

24-11-1951

It is not a hope but a certitude that the complete transformation of the nature will take place.

*

Keep firm faith in the victory of the Light and face with calm equanimity the resistances of Matter and human personality to their own transformation.

SRI AUROBINDO

यह केवल आशा नहीं, निश्चय है कि प्रकृतिका पूर्ण रूपान्तर होगा।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिकी विजयपर पूरी श्रद्धा रखो। जड़-पदार्थ और मानव व्यक्तित्व अपने रूपांतरका विरोध करते हैं, उसका शांत धैर्यके साथ मुकाबिला करो।

—श्रीअरविंद

24-11-1952

To follow Sri Aurobindo in the great adventure of his integral Yoga, one needed always to be a warrior; now that he has left us physically, one needs to be a hero.

THE MOTHER

श्रीअरविंदके पूर्णयोगके महान् साहसिक कार्यमें उनका अनुसरण करनेके लिये योद्धा होनेकी तो हमेशा ही जरूरत रही है; लेकिन अब जब वे हमें शरीरसे छोड़ गये हैं, उनका अनुसरण करनेवालेका उदात्त वीर होना जरूरी है।

—माताजी

24-11-1953

An inner fullness has come in like the coming in of light in dark caves. It fills, it illumines, it vibrates the multiple strings of life; it has found the contact with the forgotten achievements of the past to enable me to start the new ones of the future on the basis of the changing formations of the present. The currents of life well up to meet the descending rays of light from the upper heavens for transmutation of the base and the dark into the luminous and the true, for transmutation of the ugly and the wrong into the beautiful and the right.

O Mother of Radiance, you have dawned in the narrow horizons of my mind. Out of its depthless rigidities, in the midst

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

of its walled-up spaces you have created a heart-like something that will live its eternal life. You have revealed to me a chamber alive and warm within the mind's substanceless polar regions and there I can safely retire and find in you my refuge.

The lower network of moving forces remains, but I feel your presence in its midst. The higher network of moving forces remains, and here you have stepped in also shedding a warmth of life that was not there before, you have turned the dull grey luminosity into a brilliance of living waters. Your active and living presence is everywhere; you have heeded my words of aspiration, the fire of my demand for your omnipresence. More than what I ignorantly sought for, you have revealed to me. You are intimate and one with me when in truth and law and yet away and far off from me when in error and in falsehood.

When there are no more darkening shadows about me; when you see me bared of all shams and shows in every part of the being; when you see in every cell of my body an eternal home for you and an eternal temple; when you see me one with you in identity and still worshipping you; when you melt the compact gold of knowledge in the living and running waters of devotion; when you break my earth and release the energies; when you turn my pride into power in your hands and my ignorance into light, my narrowness into wideness, my selfishness into a true gathering together of forces in one centre, my greed into a capacity of untiring search after the truth for the attainment of its substances, my egoism into the true and conscious instrumental centre, my mind into a channel for you to descend, my heart into your hearth of pure fire and flame, my life into a pure and translucent substance for your handling, my body into a conscious vessel for holding what of you is meant for me; then, O Mother of Radiance, my aim in life

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

now and hereafter will be fulfilled in the true and right and vast way. Aspiration wakes in me! Achieve in me all that I flame for!

SRI AUROBINDO

जैसे अंधेरी गुहामें ज्योति आती है वैसे ही एक आंतरिक परिपूर्णता मेरे अंदर आ गयी है। वह जीवनके बहुसंख्यक तारोंमें व्याप्त हो गयी है, उन्हें प्रकाशित और झंकृत कर रही है; उसने भूतकालकी विस्मृत सिद्धियोंके साथ संस्पर्श प्राप्त कर लिया है ताकि मैं वर्तमान कालके परिवर्तनशील रूपोंके आधारपर भविष्यकालकी नवीन सिद्धियोंको प्रारंभ करनेमें समर्थ हो सकूं। जीवनकी धाराएं ऊर्ध्वतर स्वर्गोंसे उतरनेवाली ज्योति-किरणोंके साथ मिलनेके लिये नीचेसे उमड़ रही हैं जिससे कि निकृष्ट और अंधकारपूर्ण वस्तुएं ज्योतिपूर्ण और सत्य वस्तुओंमें, भद्दी तथा मिथ्या वस्तुएं सुन्दर और यथार्थ वस्तुओंमें रूपांतरित हो जायें।

हे ज्योतिर्मयी मां! तुम मेरे मनके संकीर्ण क्षितिजोंमें उदित हो गयी हो। उसकी अतल कठोरतामेंसे, उसकी चहारदीवारीमेंसे घिरे प्रदेशोंके अंदर तुमने एक हृदय जैसी चीज उत्पन्न कर दी है जो अपना शाश्वत जीवन याप्रन करेगी। तुमने मनके सूने हिम-प्रदेशोंमें एक सजीव और उष्ण आवास मेरे सामने प्रकट कर दिया है और वहां मैं निर्विघ्न प्रवेश कर सकता हूं और तुम्हारी गोदमें आश्रय पा सकता हूं।

नीचेकी गतिमान शक्तियोंका जाल अभी बना हुआ है, परंतु उसके अंदर मैं तुम्हारी उपस्थितिको अनुभव करता हूं। ऊपरकी गतिमान शक्तियोंका जाल भी बना हुआ है, और यहां भी, जीवनकी उष्णता बरसाती हुई, जो कि वहां पहले नहीं थी, तुम आ गयी हो; तुमने मंद धूमिल प्रकाशको जीवंत जलोंकी प्रोज्ज्वलतामें परिणत कर दिया है। तुम सर्वत्र सक्रिय और सजीव रूपसे विद्यमान हो; तुमने अपनी सार्वभौम उपस्थितिके लिये उठनेवाली मेरी अभीप्साको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी तथा मेरी उत्कट स्पृहाकी ओर ध्यान दिया है। मैंने अज्ञानपूर्वक जो कुछ खोजा है उससे बहुत अधिक तुमने मेरे सामने प्रकट कर दिया है। जब मैं सत्य और ऋतमें रहता हूं तब तुम मेरे अत्यंत निकट और मेरे साथ एक होकर रहती हो, और फिर भी, जब मैं भूल-भ्रांति और मिथ्यात्वमें रहूं तो तुम मुझसे अलग और बहुत दूर रहती हो।

जब मेरे आस-पास अंधकार करनेवाली छाया नहीं रहेगी; जब तुम मुझे सत्ताके प्रत्येक अंगमें सब प्रकारके छल-कपट और दिखावेसे खाली देखोगी; जब तुम मेरे शरीरके प्रत्येक कोषमें अपने लिये एक शाश्वत धाम और एक शाश्वत मंदिर देखोगी; जब तुम मुझे अपने साथ तदाकार और साथ ही अपनी पूजामें रत देखोगी; जब ज्ञानके ठोस सोनेको गलाकर तुम भक्तिकी सजीव और वेगवती मंदाकिनी बहा दोगी; जब तुम मेरी मिट्टीको तोड़ दोगी और उसमेंसे शक्तियोंको उन्मुक्त कर दोगी; जब तुम मेरे गर्वको अपने हाथकी एक शक्तिमें बदल दोगी और मेरे अज्ञानको ज्योतिमें, मेरी संकीर्णताको विशालतामें, मेरी स्वार्थपरताको एक केंद्रमें एकत्रित शक्तियोंके एक सच्चे समुच्चयमें, मेरे लोभको सत्यके सार-तत्त्वको अथक खोज करनेवाली एक शक्ति-सामर्थ्यमें, मेरे अहंको एक सच्चे और सचेतन यंत्ररूप केंद्रमें, मेरे मनको अपने अवतरणकी एक प्रणालीके रूपमें, मेरे हृदयको पवित्र अग्नि और ज्वालावाले अपने कुण्डमें, मेरे प्राणको अपने व्यवहार-योग्य एक शुद्ध और उज्ज्वल वस्तुमें, मेरे शरीरको, तुम्हारा जो कुछ अंश मेरे लिये निर्दिष्ट है उसे धारण करनेवाले सचेतन पात्रमें परिवर्तित कर दोगी; तब, हे सर्वज्योतिर्मयी माता! मेरे जीवनका वर्तमान और भावी लक्ष्य सच्चे, समुचित और बृहत् रूपमें सिद्ध हो जायगा। मेरे अंदर अभीप्सा जग रही है! जिन सब चीजोंके लिये मेरे अंदर लौ जल रही है उन्हें मेरे अंदर संसिद्ध करो।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-11-1954*

Our mortal littleness is not all we are;
There is a grandeur and an infinite room:
Unmeasured breadths and depths of being are ours,
In fragments of whose mightiness we live;
Akin to the ineffable Secrecy,
Neighbours of Heaven are Nature's altitudes.
Immortal our forgotten vastnesses,
Mystic, eternal in unrealised Time,
Await discovery in our summit selves;
And we can visit in great lonely hours
All-seeing eagle-peaks of silent power
And noon-flame oceans of swift fathomless bliss
And calm immensities of spirit space.

Savitri SRI AUROBINDO

24-11-1955

How shall ascending nature near her goal?
Not through man's stumbling tardy intellect
Straining the powers around it to detect
But by the surer vision of his soul.
An algebra of mind, a scheme of sense,
A symbol language without depth or wings,
A power to handle deftly outward things
Is our power booty of intelligence;
The Truth is greater and asks deeper ways;
A sense that gathers all into one being,

---

*ये संदेश ज्यों-के-त्यों छापे जा रहे हैं। पुस्तकमें बादमें कुछ परिवर्तन हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A close and luminous touch, an intimate seeing,
A Thought flung free from the world's deadal maze,
A heart of calm in sympathy with all,
A will one-pointed wide imperial.

SRI AUROBINDO

आरोहण करती हुई प्रकृति अपने लक्ष्यतक कैसे पहुंचेगी ?
मनुष्यकी लड़खड़ाती हुई निस्तेज बुद्धिके द्वारा नहीं जो ढूंढ़नेके लिये अपने चारों ओरकी शक्तियोंपर बल देती रहती है। अंतरात्माकी अधिक निश्चित दृष्टिके सहारे ही वह लक्ष्यके निकट पहुंच सकेगी।
हमारी बेचारी बुद्धिकी लूट-खसूटमें है क्या ? मनका बीज-गणित, इंद्रियोंकी योजना, बिना किसी गहराई या बिना पंखोंवाली प्रतीक भाषा जो बाहरी चीजोंको भली-भांति हाथमें ले सकती है।
लेकिन सत्य ज्यादा बड़ा है और उसके लिये ज्यादा गहरे उपायोंकी जरूरत होती है। जरूरत होती है एक बोधकी जो सबको मिलाकर एक सत्तामें समेट सके — एक घनिष्ठ और ज्योतिर्मय स्पर्श तथा एक अंतरतम दृष्टिकी, एक ऐसे विचारकी जो संसारकी घातक भूल-भुलैयासे मुक्त हो चुका हो, एक हृदयकी जो शांत और सबके साथ संवेदनशील हो, तथा एक एकनिष्ठ प्रतापी संकल्पकी।

—श्रीअरविंद

24-11-1956

Without care for time, without fear for space, surging out purified from the flames of the ordeal, we shall fly without stop towards the realisation of our goal, the supramental victory.

THE MOTHER

कालकी परवाह न करते हुए, देशके भयसे रहित होकर, अग्नि-परीक्षाकी ज्वालाओंमेंसे शुद्ध-पवित्र होकर उछलते हुए, हम अपने लक्ष्यकी सिद्धि, अतिमानसिक विजयकी ओर, बिना रुके उड़ते चलेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-11-1957

Who is the superman? He who can rise above this matter-regarding broken mental human unit and possess himself universalised and deified in a divine force, a divine love and joy and a divine knowledge.

If thou keepest this limited human ego and thinkest thyself the superman, thou art but the fool of thy own pride, the plaything of thy own force and the instrument of thy own illusions.

SRI AUROBINDO

अतिमानव कौन है? वह जो जड़-तत्त्वपर केंद्रित भग्न मनोमय मानवी सत्तासे ऊपर उठ सकता हो और भागवत शक्ति, भागवत प्रेम और आनंद तथा भागवत ज्ञानको प्राप्त करके विराट् दिव्य पुरुष बन सकता हो।

यदि तू इस सीमाबद्ध मानुषी अहंको बनाये रखे और फिर अपनेको अतिमानव समझे तो तू अपने ही मिथ्याभिमानका मूर्ख दास है, अपनी ही व्यक्तिगत शक्तिके हाथोंका खिलौना है और अपनी ही भूल-भ्रांतियोंका यंत्र है।

—श्रीअरविंद

24-11-1958

From the non-being to true being,
from the darkness to the Light,
from death to Immortality.
OM Peace! Peace! Peace!

(Upanishad)

So be it.

SRI AUROBINDO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

असत्से मुझे सत्की ओर ले चल।
तमसे ज्योतिकी ओर ले चल।
मृत्युसे अमरत्वकी ओर ले चल।
ॐ शांति! शांति! शांति!!

(उपनिषद्)

तथास्तु

—श्रीअरविंद

24-11-1959

How can the immortal Gods and Nature change?
All changes in a world that is the same
As man from childhood grows, yet is the same.
Man most must change who is a soul of Time
And the gods alter too who rule his mind.
Out of their Chthonian darkness they arise
And are in their new birth the Suns of Light.
Man then shall change into a Soul of Light.
And be the likeness of his gods.

SRI AUROBINDO

24-11-1960

Forsaking my godhead I have come down
    Here on the sordid earth,
Ignorant, labouring, human grown
    Twixt the gates of death and birth.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I have been digging deep and long
In a horror of mud and mire
A bed for the golden river's song,
A home for the deathless fire.

SRI AUROBINDO

दिव्यता त्याग अपनी बलात् धूसर मिट्टीपर
देवलोकसे मैं चलकर आया हूं,
जन्म-मरणके द्वार बीचमें अटके
अज्ञानी श्रमशील मनुज लगता हूं।

मैं प्रलंब खोदता हूं गहन मध्य
कीच और कर्दममें भय-कंपनमें
नितल एक स्वर्णिम सरिताके गान हेतु,
आवास खोजते मृत्यु-हीन पावकके।

—श्रीअरविंद

24-11-1961

It is by a constant inner growth that one can find a constant newness and unfailing interest in life. There is no other satisfying way.

SRI AUROBINDO

निरंतर आंतरिक विकास होते रहनेपर ही मनुष्य जीवनमें सतत नवीनता और अक्षय रस पा सकता है, और कोई संतोषजनक उपाय नहीं है।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24-11-1963

One must be divine oneself before one can bear the pressure of the divine love.

SRI AUROBINDO

भागवत प्रेमका दबाव सह सकनेसे पहले व्यक्तिका अपने-आपमें भागवत बनना जरूरी है।

—श्रीअरविंद

24-11-1964

The world will trouble you so long as any part of you belongs to the world. It is only if you belong entirely to the Divine that you can become free.

SRI AUROBINDO

जबतक तुम्हारा कोई भी भाग दुनियाका होकर रहेगा तबतक दुनिया तुम्हें तंग करती रहेगी। तुम केवल तभी आजाद हो सकोगे जब पूरी तरह भगवान्‌के हो जाओगे।

—श्रीअरविंद

24-11-1965

It is certainly a mistake to bring down the light by force — to pull it down. The Supramenal cannot be taken by storm. When the time is ready it will open of itself — but first there is a great deal to be done and that must be done patiently and without haste.

SRI AUROBINDO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय ही ज्योतिको बलपूर्वक उतार लाना — उसे नीचे खींच लाना — एक भूल है। अतिमानसको तूफानी वेगसे झपटकर हथियाया नहीं जा सकता। जब उसका समय आ जायगा तो वह स्वयं ही अपने-आपको खोल देगा — पर उससे पहले बहुत कुछ करनेकी आवश्यकता है और उसे धैर्यके साथ तथा उतावलीके बिना करना चाहिये।

—श्रीअरविंद

24-11-1966

There are these three powers: (1) The Cosmic Law, of Karma or what else; (2) the Divine Compassion acting on as many as it can reach through the nets of the Law and giving them their chance; (3) the Divine Grace which acts more incalculably but also more irresistibly than the others.

SRI AUROBINDO

ये तीन ही शक्तियां हैं: (१) कर्म आदिका सार्वभौम सिद्धांत (२) भागवत करुणा जो इस सिद्धांतके जालमेंसे जितने लोगोंतक पहुंच सकती है, उनपर कार्य करती है और उन्हें एक अवसर प्रदान करती है; (३) भागवत कृपा जो अन्य दोनोंकी अपेक्षा अधिक अपरिमेय रूपमें, पर साथ ही अधिक अदम्य रूपमें कार्य करती है।

—श्रीअरविंद

24-11-1967

There is always this critical hostile voice in everybody's nature, questioning, reasoning, denying the experience itself, suggesting doubt of oneself and doubt of the Divine. One has

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

to recognise it as the voice Adversary trying to prevent the progress and refuse credence to it altogether.

SRI AUROBINDO

यह आलोचनात्मक विरोधी वाणी प्रत्येक मनुष्यकी प्रकृतिमें सदैव विद्यमान रहती है और प्रश्न उठाती, तर्क करती, अनुभवतकको अस्वीकार करती तथा मनुष्यके अपने विषयमें एवं भगवान्‌के विषयमें शंका-संदेह व्यक्त करती रहती है। इसे उस विरोधी शक्तिकी वाणी समझना चाहिये जो साधनाकी प्रगतिको रोकनेकी चेष्टा करती है और उसपर विश्वास करनेसे एकदम इंकार कर देना चाहिये।

— श्रीअरविंद

24-11-1968

The changes we see in the world today are intellectual, moral, physical in their ideal and intention: the spiritual revolution waits for its hour and throws up meanwhile its waves here and there. Until it comes, the sense of the others cannot be understood and till then all interpretations of present happening and forecast of man's future are vain things. For its Nature, power, event are that which will determine the next cycle of our humanity.

Thoughts and Glimpses (written in 1917) SRI AUROBINDO

जिन परिवर्तनोंको हम आज संसारमें देख रहे हैं वे अपने आदर्श और अभिप्रायमें बौद्धिक, नैतिक और भौतिक हैं: आध्यात्मिक क्रांति अपने समयकी प्रतीक्षा कर रही है और इस बीच अपनी लहरें जहां-तहां उछाल रही है। जबतक यह आ नहीं जाती तबतक अन्य सबका मर्म भी समझमें नहीं आ सकता, तबतक वर्तमान स्थितिकी सभी व्याख्याएं तथा मनुष्यकी भवितव्यताविषयक भविष्यवाणी निर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्थक हैं। क्योंकि इस क्रांतिकी प्रकृति, शक्ति और क्रिया ही हमारी मानवताका आगामी युगचक्र निर्धारित करेंगी।
(विचार और झांकियां)

—श्रीअरविंद

24-11-1969

Every truth, however true in itself, yet, taken apart from others which at once limit and complete it, becomes a snare to bind the intellect and a misleading dogma; for in reality each is one thread of a complex weft and no thread must be taken apart from the weft.

Sri Aurobindo

प्रत्येक सत्य, वह अपने-आपमें चाहे कितना भी सत्य क्यों न हो, दूसरोंसे अलग करनेपर, जो उसे एक साथ ही सीमित और पूर्ण बनाते हैं, बुद्धिको फंसानेके लिये एक फंदा और एक भ्रामक सिद्धांत बन जाता है; क्योंकि वास्तवमें उनमेंसे हर एक सत्य एक पेचीदे ताने-बानेका तार है और ताने-बानेसे कोई तार अलग नहीं किया जाना चाहिये।

——श्रीअरविंद

24-11-1970

To persevere in turning towards the Light is what is most demanded. The Light is nearer to us than we think and at any time its hour may come.

Sri Aurobindo

9.9.1943

सबसे अधिक आवश्यक बात है ज्योतिकी ओर मुड़नेका निरंतर प्रयास करते रहना। हम जितना समझते हैं उसकी अपेक्षा ज्योति हमसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक नजदीक है और कभी भी उसका समय आ सकता है।

९.९.१९४३ —श्रीअरविंद

24-11-1971

One must rely on the Divine and yet do some enabling sadhana — The Divine gives the fruits not by the measure of the sadhana but by the measure of the soul and its aspiration. Also worrying does no good — I shall be this, I shall be that, what shall I be? Say "I am ready to be not what I want but what the Divine wants me to be" — all the rest should go on that base.

SRI AUROBINDO

हमें भगवान्‌पर निर्भर होना चाहिये और फिर भी कोई उपयुक्त बनानेवाली साधना करनी चाहिये — भगवान् साधनाके अनुपातमें नहीं, बल्कि अंतरात्मा तथा उसकी अभीप्साके अनुपातमें फल प्रदान करते हैं। फिर चिंतित होनेसे — मैं यह बनूंगा, वह बनूंगा, मैं क्या बनूं? सोचते रहनेसे — भी कोई लाभ नहीं होता। कहना चाहिये, "मैं जो कुछ होना चाहता हूं वह नहीं, बल्कि जो भगवान् चाहते हैं कि मैं बनूं वह बननेके लिये तैयार हूं" — बाकी सब कुछ उसी आधारपर चलते रहना चाहिये।

—श्रीअरविंद

24-11-1972

Beyond all preferences limitations, there is a ground of mutual understanding where all can meet and find their harmony: it is the aspiration for a divine consciousness.

THE MOTHER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब पसन्दों और सीमाओंके परे पारस्परिक समझौतेका एक क्षेत्र है जहां सभी मिल सकते हैं और अपना सामंजस्य पा सकते हैं: यह है भागवत चेतनाके लिये अभीप्सा।

—माताजी

श्रीरामकृष्णके वचन

(माताजीने फ्रांसमें रहते हुए बहुत-से भारतीय साहित्यका अध्ययन किया था और उसमेंसे कुछ चीजोंका फ्रेंचमें अनुवाद भी किया था। इसी सिलसिलेमें उन्होंने श्रीरामकृष्ण परमहंसके कुछ वचनोंका अंगरेजीसे फ्रेंचमें अनुवाद किया था। यहां उनमेंसे कुछ वचन दिये जा रहे हैं। — संपादक)

मैं तुमसे जो कुछ कह रहा हूं, क्या तुम उस सबको जीवनमें उतारनेमें समर्थ हो सकोगे ? मैं जो सिखा रहा हूं उसका रुपयेमें एक आना भी जी सको तो तुम निश्चित रूपसे लक्ष्यतक पहुंच जाओगे।

अनगिनत हैं भगवान्‌के नाम और अनंत वे रूप जो हमें उनकी ओर ले जाते हैं। तुम जिस किसी नाम या रूपद्वारा उनके संपर्कमें आना चाहो उसी नाम या रूपमें तुम्हें उनके दर्शन होंगे।

जिस प्रकार घरकी छततक पहुंचनेके लिये नसैनी, बांसकी सीढ़ी या रस्सीका उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार भगवान्‌तक पहुंचनेके लिये भी तरह-तरहके मार्ग हैं। संसारका हर एक धर्म उनमेंसे एक मार्ग दिखाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार परिवारकी नयी बहू अपने पतिके साथ सबसे ज्यादा प्रेम करते हुए भी सास, ससुर और घरके बाकी सदस्योंके प्रति आदर और प्रेम रखती है, उसी प्रकार अपने इष्ट-देवपर अटल श्रद्धा रखते हुए, दूसरे देवोंका तिरस्कार नहीं, बल्कि सम्मान करो।

जहां दूसरे लोग घुटने टेकते हैं वहां तुम भी प्रणाम करो और आराधना करो। क्योंकि जहां इतनी बड़ी जनसंख्या श्रद्धांजलि अर्पित करती है वहां करुणामय ईश्वर अवश्य अवतरित होंगे। क्योंकि वे करुणाके भण्डार हैं।

दो व्यक्तियोंके बीच, गिरगिटके रंगपर खूब गरमागरम बहस चल रही थी। एक कह रहा था: "इस ताल-वृक्षके गिरगिटका रंग बहुत सुन्दर लाल है।" दूसरा उसका विरोध करते हुए कह रहा था: "आप गलती कर रहे हैं। यह गिरगिट लाल नहीं, नीला है।" लेकिन बहसके द्वारा किसी निष्कर्षपर न पहुंच पानेके कारण वे दोनों उस आदमीके पास गये जो हमेशा उसी वृक्षके नीचे रहता था। वह गिरगिटका असली रंग-रूप अवश्य जानता होगा। पहले व्यक्तिने कहा: "महोदय, क्या यह सच नहीं है कि इस पेड़का गिरगिट लाल है?" उस आदमीने उत्तर दिया: "जी हां।" लेकिन दूसरा व्यक्ति बोल उठा: "आप क्या कह रहे हैं? यह हो ही कैसे सकता है? वह गिरगिट लाल नहीं, नीला है।" बड़े विनम्र भावसे उस आदमीने फिर वही उत्तर दिया: "जी हां।" वह जानता था कि गिरगिट एक ऐसा प्राणी है जो हर वक्त रंग बदलता रहता है; इसीलिये उन दोनों परस्पर-विरोधी वक्तव्योंके उत्तरमें उसने "हां" कह दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी प्रकार सत्-चित्-आनंदके भी अनेक रूप होते हैं। जिस भक्तने भगवान्का एक रूप देखा है वह उनको केवल उसी रूपमें जानता है। लेकिन जिसने उनके बहुविध रूपोंको देखा हो, केवल वही कह सकता है: "यह सब रूप भगवान्के ही हैं और भगवान् बहुविध हैं। वह साकार हैं तो निराकार भी हैं, और अनगिनत हैं उनके वे रूप जिन्हें हम जानते ही नहीं।"

ब्रह्म निर्गुण, निर्विकार, अविचल हैं। और मेरु पर्वतकी भांति स्थिर हैं।

उनका नाम है चिन्मय। उनका धाम है चिन्मय। और वे प्रभु स्वयं चिन्मय हैं।

भक्ति मार्गपर, धार्मिक मनुष्यको, एक अवस्थामें सांकार भगवान्में तृप्ति मिलती है। एक और अवस्थामें निराकार भगवान्में।

मायाकी तुलना एक चंचल और फुर्तीले सांपसे की जा सकती है, जब कि ब्रह्मन् बिलकुल निष्क्रिय सांपके समान है। माया निरपेक्ष और अटल सद्वस्तुसे अभिव्यक्त शक्तियोंका नाम है। उस सद्वस्तुको ब्रह्मन् कहते हैं।

अगर माया और उसकी अभिव्यक्ति नहीं होती तो कौन सचेतन बनकर निरपेक्ष ब्रह्मन्को प्राप्त कर पाता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो पांडित्यके द्वारा भगवान्‌की व्याख्या करनेकी कोशिश करता है वह ठीक उस व्यक्तिके समान है जो नक्शे या चित्रके द्वारा काशीका वर्णन करता हो।

वेद, तंत्र, पुराण और इसी तरह दुनियाके सारे धर्मग्रन्थ जूठे हो गये हैं क्योंकि उन्हें बार-बार दोहराया गया है और वे मनुष्यके मुंहसे निकले हैं। लेकिन ब्रह्म कभी जूठा या दूषित नहीं होता, क्योंकि आजतक कोई उन्हें मानव भाषामें अभिव्यक्त नहीं कर पाया है।

सांत अनंतको समझ कैसे सकता है? यह तो ऐसा है मानों नमककी एक मूर्ति समुद्रकी गहराइयोंको थाहनेकी कोशिश कर रही हो। यह करते हुए नमक समुद्रमें घुल जाता है और अपने-आपको खो बैठता है। उसी प्रकार निर्गुण ब्रह्मकी थाह लेते हुए जीवन अपना व्यक्तिगत अहं खो देता है और सत्ताके साथ, निर्गुणके साथ एक हो जाता है।

जंजीरोंमें बंधी आत्मा जीव है और जंजीरोंसे मुक्त शिव।

जिस प्रकार पानी और बुलबुला एक हैं: बुलबुला पानीमें पैदा होता है, पानीपर तैरता है और अंतमें पानीमें ही विलीन हो जाता है; उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा एक और अभिन्न हैं; अंतर मात्रामें है। एक सांत और छोटा है तो दूसरा अनंत है; एक पराधीन है तो दूसरा स्वाधीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबतक तुम्हें दिव्य दृष्टिका सौभाग्य प्राप्त न हुआ हो, जबतक खोटी धातु पारसके संपर्कसे सोनेमें परिवर्तित न हो गयी हो, तबतक यह "मैं ही कर्ता हूं" की माया बनी रहेगी। और तबतक अनिवार्य रूपसे यह भेद-भाव बना रहेगा कि "मैंने यह सत्कर्म किया है, मैंने वह दुष्कर्म किया है।" भेद-भाव या द्विविधताकी यह धारणा ही वह माया है जो इस संसृतिका कारण है। विद्या मायामें शरण लेकर (मायामें सत्त्वकी प्रधानता है), आगे चलकर जो ठीक मार्ग अपनाती है उससे भगवान्‌की प्राप्ति हो सकती है। भवसागरको वही पार कर सकता है जो भगवान्‌का साक्षात्कार कर लेता है, उन्हें पा लेता है। वह — जो यह जानता है कि भगवान् ही कर्ता-धर्ता हैं, वह स्वयं कर्ता नहीं है — अपने शरीरमें रहते हुए भी सचमुच स्वाधीन है।

शाश्वत प्रभु सभी मनुष्योंमें विद्यमान हैं। लेकिन सब मनुष्य शाश्वत प्रभुमें नहीं हैं। इसी कारण वे कष्ट पाते हैं।

वस्तुतः, वस्तुतः मैं तुमसे कहता हूं कि जो भगवान्‌के लिये अभीप्सा करता है वह उन्हें पा लेता है।

जिसकी अभीप्सा और एकाग्रता जितनी ज्यादा होती है वह शाश्वत‑को उतनी ही जल्दी पा लेता है।

मनुष्य गंगा-जमुना बहाते हैं क्योंकि उनके कोई बेटा नहीं हुआ। दूसरे ऐसे ह जो दिलको मसोसते रहते हैं क्योंकि उनको धन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौलत नहीं मिली। लेकिन ऐसे कितने हैं जो इसलिये रोते हों कि उन्हें भगवान्‌के दर्शन नहीं हुए? जो भगवान्‌की खोज करता है उसे वे मिल जाते हैं। जो तीव्र अभीप्साके साथ भगवान्‌के लिये आंसू बहाता है वह भगवान्‌को पा चुका है।

वस्तुतः, वस्तुतः मैं तुमसे कहता हूं कि जो भगवान्‌के लिये अभीप्सा करता है वह उन्हें पा लेता है। जाओ, अपने जीवनमें इसकी परीक्षा कर देखो। लगातार तीन दिनतक, बहुत सचाईके साथ कोशिश करो और तुम निश्चित रूपमें सफल होगे।

"इस जीवनमें ही मुझे पूर्णता सिद्ध करनी चाहिये, हां, तीन ही दिनमें मुझे भगवान्‌को प्राप्त करना चाहिये। नहीं, केवल एक बार उनका नाम पुकारकर ही मैं उन्हें अपने पास खींच लूंगा।" इस प्रकारके तीव्र प्रेमसे भगवान् शीघ्र आकर्षित होते हैं। शिथिल प्रेमी उनके पासतक जा भी पायं तो उन्हें कई युग लग जाते हैं।

भगवान्‌को पानेके लिये किस चढ़ावेकी आवश्यकता होती है? भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिये तुम्हें अपना तन, अपना मन और अपना धन उन्हें अर्पित कर देना चाहिये।

तुम जिस उद्देश्यको पाना चाहते हो उसके अनुकूल साधन अपनाओ। यह चिल्ला-चिल्लाकर कि "दूधमें मक्खन है", तुम मक्खन नहीं पा सकते। अगर तुम मक्खन बनाना चाहो तो पहले दूधसे दही बनाओ, फिर दहीको खूब अच्छी तरह मथो। तभी तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मक्खन मिलेगा। उसी तरह अगर तुम भगवान्का साक्षात्कार चाहो तो साधना करो। तभी तुम्हें भगवान्के दर्शन होंगे। केवल "भगवान्! भगवान्!" पुकारनेसे क्या लाभ?

किसी अज्ञात कोनेमें या जंगलोंके एकांतमें बैठकर, या फिर, अपने ही मनके एकांतमें भगवान्का ध्यान करो।

जबतक कोई मनुष्य जोर-जोरसे "या अल्लाह! या अल्लाह!" पुकारे तबतक निश्चय जानो, उसने अपने अल्लाहको नहीं पाया है। क्योंकि जिसने उसे पा लिया है वह शांत और अचंचल हो जाता है।

गहरे समुद्रमें मोती होते हैं लेकिन उन्हें पानेके लिये बहुत-सी विपदाओंमेंसे गुजरना पड़ता है। इस जगत्में भगवान् उसी प्रकार हैं।

अगर समुद्रमें एक ही डुबकी लगानेपर तुम्हें मोती नहीं मिल जाता तो इस निष्कर्षपर मत पहुंच जाओ कि समुद्र बिना मोतीके है। फिरसे, बार-बार डुबकियां लगाओ। अंतमें फल जरूर मिलेगा। इसी प्रकार अगर भगवान्को देखनेका तुम्हारा पहला प्रयास निष्फल निकले तो साहस मत खो बैठो। प्रयासमें लगे रहो। निश्चय रखो अंतमें तुम्हें भागवत कृपा जरूर प्राप्त होगी।

काई और गंदी घाससे भरे किसी तालाबके किनारे खड़े होकर तुम कहते हो कि, तालाबमें पानी नहीं है। अगर तुम पानीको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना चाहो तो तालाबकी सतहसे काईको हटा दो। आंखोंपर मायाका परदा होनेके कारण तुम शिकायत करते हो कि भगवान् दिखायी नहीं देते। अगर तुम उनका दर्शन करना चाहो तो अपनी आंखोंसे मायाका परदा हटा दो।

जैसे बादल सूरजको ढक देते हैं उसी तरह माया भगवान्को ढकती है। जब बादल छंट जाते हैं तो सूरज दिखाई देने लगता है। उसी प्रकार जब माया छंट जायगी तो भगवान् दिखायी देंगे।

जैसे उषा सूर्योदयकी सूचना देती है उसी प्रकार निःस्वार्थता, पवित्रता और आर्जव भगवान्के आगमनसे पहले आते हैं।

जब मन शांत होता है तो भगवान् दिखायी देते हैं। जब मनका समुद्र कामनाकी आंधीसे विक्षुब्ध हो तो वह विचार नहीं कर पाता, और हर प्रकारकी दिव्य दृष्टि असंभव होती है।

भगवान् तभी प्राप्त होते हैं जब मनुष्य इन तीन अवस्थाओंमेंसे किसी एकमें परिपक्व हो जाता है: (१) "सब कुछ मैं हूं" (२) "सब कुछ तू है" (३) "तू प्रभु है और मैं सेवक"।

जब दूध पानीके संपर्कमें आता है तो वह तुरत उसके साथ एक हो जाता है। उसी दूधका मक्खन बनाकर पानीमें डालो तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानीके साथ मिलता नहीं, बल्कि पानीके ऊपर तैरने लगता है। उसी प्रकार जब आत्मा एक बार दिव्य स्थितिको पा लेती है तो वह पुनरुद्धारवंचित अनगिनत आत्माओंमें सतत सचाईमें रह सकती है, फिर भी उनसे रंचमात्र प्रभावित नहीं होती।

अगर लोहा एक बार पारसके स्पर्शसे सोनेमें परिवर्तित हो जाय तो तुम उसे चाहे धरतीमें रखो या कूड़े-करकटमें फेंक दो, वह हमेशा सोना ही बना रहेगा और कभी अपनी पुरानी अवस्थामें नहीं लौटेगा। उस व्यक्तिकी भी यही अवस्था है जिसने चाहे एक बार ही क्यों न हो, अपने हृदयमें सर्वशक्तिमान्‌के चरणोंका स्पर्श पा लिया है। चाहे वह जगत्‌के कोलाहलमें रहे या जंगलोंके एकांतमें, कोई चीज उसे कभी दूषित नहीं कर सकती।

भगवान्‌का ज्ञान और प्रेम एक और अभिन्न हैं। शुद्ध ज्ञान और शुद्ध प्रेममें कोई फर्क नहीं।

भगवान्‌के ज्ञानकी तुलना पुरुषसे की जा सकती है, जब कि भगवान्‌के लिये प्रेम (भक्ति) स्त्रीकी न्याईं है। ज्ञानकी पहुंच भगवान्‌के बाहरी कमरोंतक ही सीमित है। लेकिन प्रेमके सिवाय भगवान्‌के अंतःपुरमें और किसीका प्रवेश नहीं हो सकता। प्रेमकी पहुंच सर्वशक्तिमान्‌के मर्मोंतक है।

कमरेमें जैसे ही प्रकाशकी एक किरण लायी जाती है, तुरत युग-युगांतरोंका अंधेरा छंट जाता है। उसी तरह सर्वशक्तिमान्‌के प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक नन्ही-सी किरणके सामने जन्म-जन्मांतरोंके एकत्रित पाप विलीन हो जाते हैं।

हृदयकी ओर इशारा करते हुए भगवान् यह कहा करते थे: "जिस व्यक्तिमें यहां भगवान् हैं उसके लिये वहां (बाहरी जगत्में) भी हैं। जो भगवान्को अपने अंदर नहीं ढूढ पाता वह उन्हें बाहर कभी नहीं ढूंढ पायेगा। परंतु जो उन्हें अपनी आत्माके मंदिरमें देखता है वह उन्हें विश्वके मंदिरमें भी देखता है।

जब भगवान् राम इस ज़गत्में उतरे तो केवल सात ऋषि उन्हें साकार भगवान्के रूपमें पहचान पाये।

इसी तरह जब ईश्वर इस जगत्में अवतरित होते हैं तो इने-गिने लोग ही उनके दिव्य स्वरूपको पहचान पाते हैं।

यह मत सोचो कि सीता, राम, श्रीकृष्ण, राधा अर्जुन इत्यादि ऐतिहासिक चरित्र नहीं, केवल दृष्टांत या प्रतीक मात्र थे, या शास्त्रों-का केवल आंतरिक और गुह्य अर्थ ही होता है। नहीं, ठीक तुम्हारी तरह वे भी हांड़-मांसके प्राणी थे। किंतु चूंकि वे देवता थे इसलिये उनके जीवनका अर्थ ऐतिहासिक और आध्यात्मिक, दोनों तरहसे लगाया जा सकता है।

दो प्रकारके मनुष्य होते हैं। गुरुने अपने शिष्योंमेंसे एकसे कहा: "मैं तुम्हें जो (ज्ञान) दे रहा हूं वह अमूल्य है। उसे अपने पास ही रखो।" और शिष्यने उसे अपने पास ही रखा। लेकिन जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुने यही बात दूसरे शिष्यसे कही तो वह झटसे एक ऊंचे स्थानपर खड़ा हो गया और सभी मनुष्योंको उपकारकी बातें सुनाने लगा, क्योंकि उसको मालूम था कि जो बातें उसके गुरुने बतायी थीं उनका मूल्य कितना अकल्पनीय है। इसलिये वह अकेला उसका आनंद नहीं लेना चाहता था। अवतार दूसरी श्रेणीके होते हैं जब कि सिद्ध पुरुष पहलीके।

जब बाढ़ आती है तो वह सभी नदी-नालोंको जलमग्न कर देती है और आस-पासकी सारी जमीनको झीलमें बदल देती है। परंतु वर्षाका पानी अपने-आप निश्चित मार्गोंसे बह जाता है। जब कोई रक्षक जन्म लेता है तो उसकी कृपासे सभीकी रक्षा हो जाती है। जब कि सिद्ध पुरुष बहुत कष्ट और तपस्याके साथ केवल अपनी ही रक्षा करते हैं।

सिद्ध पुरुष उस पुरातत्त्वज्ञके समान है जो किसी पुराने कुंएकी सतहसे, अनुपयोगके कारण जमे हुए झाड़-झंकाड़ और धूलको हटाकर उसे उपयोगके लायक बनाता है। दूसरी ओर अवतार उस इंजिनियरके समान है जो किसी ऐसे स्थानपर एक नया कुंआ खोदता है जहां पहले पानी नहीं था। महापुरुष केवल उनको मुक्ति दे सकते हैं जिनके भीतर भक्तिका पानी छिपा हुआ है, किंतु रक्षक उसकी भी रक्षा करता है जिसका हृदय प्रेम-शून्य है और बंजर है।

इस जगत्में पाये जानेवाले सिद्ध पुरुष पांच प्रकारके होते हैं:

(१) स्वप्न-सिद्ध वे हैं जो स्वप्न-प्रेरणाके द्वारा पूर्णता प्राप्त करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) मंत्र-सिद्ध वे हैं जो किसी पवित्र मंत्र या सूत्रद्वारा पूर्णता प्राप्त करते हैं।

(३) हठात्-सिद्ध वे हैं जो पूर्णताको अचानक इस तरह प्राप्त करते हैं जैसे कोई गरीब किसी अमीर परिवारमें ब्याह करके या छिपा धन पाकर अचानक अमीर बन जाता है। कितने ही पापी एकाएक पवित्र बन जाते हैं और स्वर्गमें प्रवेश पाते हैं।

(४) जिस प्रकार कोई आदमी दरिद्र राजाकी कृपासे धनी बन जाता है, उसी प्रकार कृपा-सिद्ध वे हैं जो सर्वशक्तिमान्की ठोस कृपासे पूर्णता प्राप्त करते हैं।

(५) नित्य-सिद्ध वे हैं जो हमेशा पूर्ण रहते हैं। जिस प्रकार कुम्हड़े या काशी फलकी लतापर पहले फल लगते हैं, फिर फूल, उसी प्रकार सदा-पूर्ण आत्मा जन्मसे ही सिद्ध होती है। और पूर्णता प्राप्त करनेके लिये उसके बाह्य प्रयास केवल मानवजातिके सामने उदाहरण प्रस्तुत करनेके लिये होते हैं।

संत ही संतको पहचान सकता है। जो सूतका व्यापारी है वही बता सकता है कि अमुक सूत किस तरहका और कितने नंबरका है।

एक साधु किसी सड़कपर गहरी समाधिमें लेटे हुए थे। उधरसे गुजरते हुए एक चोरने उन्हें देखकर सोचा: "यह आदमी जो यहां पड़ा है जरूर कोई चोर है। सारी रात किसी घरमें सेंध लगाते-लगाते थककर (पुलिससे बचनेके लिये) यहां सो रहा है। जल्दी ही पुलिस इसे पकड़नेके लिये आयेगी तो मैं भी पकड़ा जाऊंगा। उसके आनेसे पहले मुझे यहांसे भाग जाना चाहिये।" यह सोचकर वह भाग निकला। थोड़ी देर बाद एक पियक्कड़ आया। उसने कहा: "ओहो! तुम जरा ज्यादा पी गये हो और पीकर गिर पड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। मैं तुमसे कहीं अधिक ठोस हूं और तुम्हारी तरह गिरनेवाला नहीं।" सबके अंतमें एक साधु आये। वे समझ गये कि ये एक महान संत हैं और समाधिमें हैं। वे उनके पास बैठ गये और बड़े श्रद्धा-भावसे उनको प्रणाम किया और धीमे-से उनके पवित्र चरण दबाने लगे।

जिस प्रकार जलपक्षी, जैसे कि जलसिंह, पानीमें डुबकी लगाता है लेकिन उसके पर नहीं भीगते; उसी तरह जीवनमुक्त इस जगत्में रहते तो हैं, लेकिन उनपर जगत्का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

कई महान् आत्माएं ऐसी हैं जो समाधिके सातवें या उच्चतर स्तरतक पहुंच चुकी हैं, अतः दिव्य चेतनाके साथ एक हो गयी हैं। वे मानवजातिके हितके लिये उस आध्यात्मिक ऊंचाईसे उतरनेमें खुश होती हैं। उनमें विद्याका अहं या, दूसरे शब्दोंमें, उच्चतर स्व बना रहता है। लेकिन यह अहम् प्रतीति मात्र है। वह ऐसा ही है जैसे पानीपर खिंची हुई रेखा।

समाधिकी उपलब्धिके बाद भी कइयोंमें अहं बना रहता है—वह होता है सेवकका अहं, भक्तका अहम्। शंकराचार्यने दूसरोंको शिक्षा देनेके लिये विद्याके अहंको बनाये रखा था।

जली हुई रस्सीका रूप बना रहता है। किंतु राख-ही-राख होने-के कारण उससे कुछ भी नहीं बांधा जा सकता। उसी प्रकार जीवनमुक्त मनुष्य अपने अहंके रूपको बनाये रखता है, पर उसमें अहंकारका भाव नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध सोनेसे गहने नहीं बनाये जा सकते। उसमें कुछ मिलावट करनी पड़ती है। जो मनुष्य बिलकुल माया-शून्य है वह २१ दिन-से ज्यादा नहीं बच सकता। जबतक मनुष्यके पास शरीर है तबतक थोड़ी-बहुत माया अनिवार्य है, चाहे यह कितनी ही कम क्यों न हो, ताकि वह शारीरिक व्यापारको चलाता रह सके।

दूसरोंको उपदेश देनेकी जगह अगर तुम सारे समय भगवान्की आराधना करो तो वह पर्याप्त उपदेश होगा।

सच्चा उपदेशक वह है जो अपने-आपको मुक्त बनानेकी कोशिश करता है। जो मुक्त होता है उसके पास सीखनेके लिये सैंकड़ों लोग चारों ओरसे, न जाने कहां-कहांसे आते रहते हैं।

गरम घीमें कच्ची पूरी डालो तो जोरसे कड़कड़ाहट होगी। मगर जैसे-जैसे वह तलती जाती है आवाज भी कम होती जाती है। और जब वह अच्छी तरह तल जाती है तो आवाज एकदम बंद हो जाती है। जबतक मनुष्यके पास थोड़ा-सा ज्ञान होता है तबतक वह भाषण और उपदेश देता फिरता है। लेकिन जब ज्ञानीकी पूर्णता प्राप्त हो जाती है तो वह अहंकारपूर्ण प्रदर्शन करना छोड़ देता है।

सब जगह पड़नेवाली धूप एक ही है। लेकिन केवल पानी, शीशे, धातु इत्यादिकी चमकीली सतह ही उसे पूर्ण रूपसे प्रतिबिंबित कर सकती हैं। दिव्य प्रकाश भी उसी प्रकार है। वह बिना पक्षपातके हर एक हृदयपर एक ही मात्रामें पड़ता है, लेकिन केवल साधुओं और भले आदमियोंके शुद्ध और पवित्र हृदय ही उसे पूर्ण रूपसे प्रतिबिंबित कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविक मनुष्य वही है जो सच्चे ज्ञानके प्रकाशसे प्रबुद्ध है। बाकी सब तो नामके मनुष्य हैं।

सच्चा ज्ञान वही है जो बुद्धिको पवित्र बनाता है, बाकी सब अज्ञान है।

पवित्र और विवेकशील व्यक्तियोंकी संगति आध्यात्मिक प्रगतिके मुख्य तत्त्वोंमेंसे एक है।

जबतक मन अस्थिर और चंचल है तबतक कोई लाभ नहीं, भले व्यक्तिको अच्छा गुरु और सत्संगति क्यों न प्राप्त हो।

कथाके अनुसार जब स्वाति नक्षत्र आरोहणमें होता है तो मुक्ता-शक्ति सीप समुद्रकी गहराईमें स्थित अपने घरसे निकलकर वर्षाकी एक बूंद पकड़नेके लिये सतहपर आती है। और तबतक सतहपर अपना संपुट खोले इधर-उधर तैरती रहती है जबतक कि अद्‌भुत स्वाति-जलकी एक बूंद पकड़नेमें सफल न हो जाय। फिर वह समुद्रमें डुबकी लगाकर उसकी तलीमें तबतक विश्राम करती है जबतक कि वह उस बूंदको एक मनोहर मोतीमें परिवर्तित करनेमें सफल नहीं हो जाती।

इसी प्रकार कई सच्चे और उत्सुक उच्चाकांक्षी होते हैं जो किसी सद्‌गुणके ऐसे संकेत-शब्दकी खोजमें एक जगहसे दूसरी जगह यात्रा करते रहते हैं जो उनके लिये परमानंदके द्वार खोल दे। और अगर अपनी परिश्रमपूर्ण खोजमें उनमेंसे किसीको ठीक ऐसे ही गुरुसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हो, और वह चिराकांक्षित शब्द प्राप्त हो जाय जो सभी बेड़ियोंको काट सकता है तो वह तुरंत समाजसे अलग होकर अपने हृदयकी गहनतम गहराइयोंमें पैठता है और तबतक वहां रहता है जबतक कि वह परम शांतिको प्राप्त करनेमें सफल न हो जाय।

मानव गुरु कानमें पवित्र मंत्र धीमे-से फुसफुसाते हैं। दिव्य गुरु आत्मामें प्राण फूंकते हैं। मानव गुरु कानमें मंत्र देते हैं, दिव्य गुरु हृदय-पटलपर उसकी मुहर लगाते हैं।

गुरु मध्यस्थ हैं। वे मनुष्य और भगवान्‌को निकट लाते हैं।

जो सर्वशक्तिमान्‌को आत्माकी सचाई और तीव्र निष्कपटताके साथ पुकार सकता है, उसे गुरुकी आवश्यकता नहीं होती। लेकिन आत्माकी यह गहरी अभीप्सा बहुत ही विरल होती है, इसीलिये गुरुकी आवश्यकता होती है। गुरु बस एक ही होना चाहिये, लेकिन उपगुरु अनेक हो सकते हैं। उपगुरु बस वह है जिससे कुछ भी सीखा जाय। इस तरह उन महान् अवधूतके चौबीस उपगुरु थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त, १९७८ का पावन पर्व था। **नई दिल्लीमें** संसद भवनके केंद्रीय कक्षके प्रवेश द्वारपर श्रीअरविन्दकी एक संगमरमरकी मूर्तिका उद्‌घाटन समारोह हुआ। सदनके बहुतसे सदस्य और अन्य प्रतिष्ठित लोगोंकी उपस्थितिमें श्री डाक्टर कर्ण सिंहने औपचारिक रूपसे संसदको मूर्ति भेंट करते हुए कहा, "इस भेंटके द्वारा मैं आशा करता हूं कि हम श्रीअरविन्दके ज्वलंत राष्ट्रप्रेम और उनके सांस्कृतिक और आध्यात्मिक नेतृत्वसे मार्ग-दर्शन पा सकेंगे।" लोक सभाके अध्यक्ष श्री हेगडेने मूर्तिका उद्‌घाटन करनेसे पहले श्रीअरविन्दको अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए कहा, "श्रीअरविन्दने मनुष्यों और राष्ट्रों-की भगवान्‌का मार्ग दिखाया। उन्होंने मनुष्य जातिकी सबसे पुरानी अभीप्साको सिद्ध होनेकी आशा दिलायी।" यह मूर्ति बंबईके प्रसिद्ध मूर्तिकार श्री वाघने बनायी है।

संस्कृत विश्व परिषद् : श्री राजभाऊ दिगवेकर, संयोजक संस्कृत समिति, श्रीमातृ शताब्दी समिति, सूचना देते हैं कि उनकी समिति सारे भारतमें सौ संस्कृत वर्कशाप और पांडिचेरीमें संस्कृत विद्वानोंके एक सम्मेलनका आयोजन कर रही है। उनकी ओरसे प्रयागमें जनवरी १९७९ में विश्व संस्कृत परिषद्‌की बैठक होगी जिसमें सभी देशोंके प्रतिनिधि भाग लेंगे। जिन्हें इस विषयमें ज्यादा रस हो वे निम्नलिखित पतेपर पत्र-व्यवहार करें :

श्री एम. पी. दिगवेकर
१६-१० आर्य समाज मार्ग, करोल बाग
नई दिल्ली-११०००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाधि

अतिमानसके अग्रदूत हैं
चिरनिद्रामें लीन यहां,
ऐसा पावन तीर्थ धरापर
मिल सकता है और कहां !
देश, धर्म औ' जाति-बन्धको
भूल यहां जन आते हैं,
अपना मस्तक टेक यहां पर
अद्‌भुत सुख वे पाते हैं।
मानवकी क्या बात यहांपर
सेवामें है लीन वृक्ष भी,
ऐसा है परिवेश, निकटतर —
आ जाता है स्वयं लक्ष्य भी।
चेतन मनकी ऊर्ध्व तरंगें
यहां करे अनुभव कोई,
विगलित होकर अहं, शांत हो
पा जाये सत्ता सोई।
यह समाधि है उनकी जिनके
ऋणसे मुक्ति असंभव है,
यह प्रकाशकी विजय, तिमिरका—
निस्संदेह पराभव है।
मिथ्यापर है विजय सत्यकी
और अशिवपर शिवकी है,
सुन्दर जेता बना बिहंसता
महिमा यह इस भू की है।
दृष्टि मूंदकर जो दिखता है
दर्शन वही परमका है,
इस समाधिको नमस्कार है
दर्शन यही नमनका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्विस ट्री[1]

सेवाका व्रत लेकर जनमे
हे समाधिके प्रहरी!
कैसा अद्‌भुत त्याग तुम्हारा
निष्ठा कितनी गहरी!
कोटि-कोटि मानव-जीवन भी
हेय तुम्हारे सम्मुख,
दिव्य अलौकिक छांव तुम्हारी
हर लेती सारे दुःख।
पत्र तुम्हारे नहीं धरापर,
बिखर रहा दैवी आशीष;
जो समाधिपर झुकते हैं वे
तुमको भी झुकते हैं शीश।
ऊर्ध्वमुखी शाखाएं हैं या
दिव्य चेतनाके संकेत,
मौन प्रार्थना करते हैं हम
चरणोंमें नत हो समवेत।
धन्य-धन्य सौभाग्य तुम्हारा
अतिमानसकी छाया हो तुम,
तुम साधारण वृक्ष नहीं हो
प्रभुकी अद्‌भुत माया हो तुम।

—सुरेशचन्द्र त्यागी

[1] "पेल्टोफोरम" नामक एक वृक्ष जो समाधिके ऊपर छाया किये रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

दिसंबर १९७८ वर्ष ९, अंक ५, पूर्णांक १०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

माताजीकी वार्ताओंके आधारपर :
शरीर और चैत्य पुरुष १
चैत्य पुरुष — कुछ रहस्य ९
चैत्य पुरुष और पिछले जीवन १६
एकरूप सत्ता १९
सत्यकी कसौटी — नलिनीकांत गुप्त २२
धम्मपद (यमकवग्गो) २६
माताजीके स्फुट वचन ३१
सोसायटी समाचार आ० ३

	पुरोवा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका पुरोधा तथा ओ. शि. को नत्थी
करके रिमन्ड के अंकों के साथ
विलम्ब हो रहा है। कृपया आप
जांच के लिए अभी से १४)
भेजने की कृपा कर दीजिएगा।
कारण यदि इसे यथा समय ना
प्राप्त नहीं होता तो इसे बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर और चैत्य पुरुष

तुम पूछते हो कि शरीरमें सीमित ग्रहणशक्ति क्यों होती है। इसका कारण यह है कि भौतिक जगत्में चीज़ोंको घुल-मिल नहीं जाना चाहिये। उनके आकार और स्थिति कुछ स्थायी होने चाहिये। उदाहरणके लिये, अगर तुम्हारा शरीर अचानक गलने लग जाय और दूसरेकी ओर बहे तो जरा कष्टदायक स्थिति होगी। अगर तुम्हारे पड़ोसीका शरीर द्रव बनकर तुम्हारे द्रव शरीरमें आ मिले तो तुम्हें घृणा होगी। इस तरहके मिश्रणसे बचानेके लिये द्रव्योंमें घनताकी आवश्यकता थी। शक्तिकी स्थिरताकी आवश्यकता होती है जो राशियोंको अलग रख सके और यही स्थिरता शरीरको उतनी तेजीसे प्रगति नहीं करने देती जितनी तेजीसे वह बढ़ सकता है और उसे बढ़ना चाहिये। जब तुम वयस्क हो जाते हो, साधारण शरीर और ढांचा बन जाता है तो तुम शरीरमें और भी ज्यादा कठोर हो जाते हो। बचपनमें तुम्हारे अंदर वृद्धिकी नमनीयता रहती है। बच्चे बराबर बदलते रहते हैं। उनका परिवर्तन दिखायी देता है। जबतक तुम छोटे रहते हो तबतक यह लचीलापन बना रहता है और तुम बढ़ते जाते हो, विकसित होते रहते हो। लेकिन, चालीसके बाद लोग सोचते हैं कि वे अपने लक्ष्यतक पहुंच गये, वे अपनी मेहनतका फल पानेके लिये बैठ जाते हैं। वे धीरे-धीरे सूखने लगते हैं और धूल जैसे हो जाते हैं, लकड़ीके जैसे, बल्कि अंतमें पत्थर जैसे हो जाते हैं। तब शरीर आंतरिक परिवर्तनके अनुसार नहीं बदलता और पथरा जाता है, टूट-फूट जाता है — इसका अर्थ है मृत्यु।

तो मृत्युके बाद कोई प्रगति नहीं होती ?

यह निर्भर है। कभी-कभी एक प्रकारकी प्रगति होती है। उदा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरणके लिये, लेखकों, संगीतकारों, चित्रकारोंको ले लो जो जरा ऊंचे मानसिक स्तरपर रहते हैं, जिन्हें लगता है कि वे धरतीपर अपना काम पूरा नहीं कर पाये, उन्होंने अपना जो लक्ष्य चुना था वहांतक नहीं पहुंच पाये। वे जहांतक हो सके धरतीके वातावरणमें ही रहना चाहते हैं और जितना बन पड़े अपनी सत्ताकी संबद्धताको बनाये रखते हैं। वे दूसरोंके द्वारा अपने-आपको अभिव्यक्त करते हैं और प्रगति करते रहते हैं। मैंने ऐसे बहुत-से उदाहरण देखे हैं। मैं तुम्हें एक संगीतकार, पियानोवादककी मजेदार घटना सुनाती हूं। वह उच्च कोटिका पियानोवादक था। उसके हाथ अद्‌भुत थे, उनमें सचमुच विलक्षण कौशल, यथार्थता, शक्ति और तेजी थी। यह आदमी अपेक्षाकृत छोटी अवस्थामें मर गया। उसे यह विश्वास था कि अगर और जी पाता तो वह अपने संगीतद्वारा आत्माभिव्यक्तिमें बहुत आगे बढ़ सकता। उसकी अभीप्सा इतनी तीव्र थी कि उसके सूक्ष्म हाथोंने अपना रूप बनाये रखा, वे विघटित नहीं हुए। जहां कहीं कोई निष्क्रिय और ग्रहणशील व्यक्ति मिल जाता, जो साथ ही अच्छा संगीतज्ञ भी होता, वहीं ये हाथ उसके जीवित हाथोंमें प्रवेश करके बजाने लग जाते थे। मैं जिस आदमीकी बात कह रही हूं वह काफी अच्छा बजा लेता था, फिर भी था साधारण अच्छा। लेकिन बजाते-बजाते अचानक अद्‌भुत कलाकार बन जाता था क्योंकि उस मृत व्यक्तिके हाथ उसमें प्रवेश कर जाते थे। किसी चित्रकारके बारेमें भी यही हो सकता है। उसके भी हाथ ही उसका मुख्य यंत्र है। कुछ लेखकोंके बारेमें भी यही हो सकता है। लेकिन यहां मृत लेखकका मस्तिष्क अपना आकार बनाये रखता है और अगर किसी औरका मस्तिष्क इतना ग्रहणशील हो कि इस मस्तिष्कको पूरा-पूरा ले सके तो ऐसा ही परिणाम आ सकता है। मैंने एक लेखक देखा है। वह साधारणतः बहुत सामान्य-सा था, लेकिन ऐसे क्षणोंमें साधारणसे बहुत ज्यादा अच्छी चीजें लिख सकता था। मैंने एक संगीत-रचना करनेवाला देखा है, बजानेवाला नहीं, जिसका उदाहरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने ऊपर दिया है, यह सचमुच विलक्षण था। लेखककी तरह संगीत-रचना करनेवालेका भी मस्तिष्क काम करता है जब कि संगीतकारके लिये हाथ प्रधान होते हैं। संगीत-रचना मस्तिष्कका व्यापार है। बीठोवन, बाख, सीज़र फ्रांक बड़े संगीत-रचयिता थे यद्यपि फ्रांक संगीतकार भी था। एक बहुत बड़े संगीत-रचयिताका मस्तिष्क इस संगीत-रचयिताके मस्तिष्कमें प्रवेश करता था और उससे अद्‌भुत टुकड़ोंकी रचना करवाता था। वह आदमी एक संगीत-नाट्य लिख रहा था। तुम्हें पता होगा कि ऑपेराका संगीत कितना कठिन होता है। यह एक जटिल समग्र होता है जिसमें बहुत-से पात्रोंको अलग-अलग वाद्य-यंत्रोंपर बजानेके लिये अलग-अलग टुकड़े दिये जाते हैं। उन सबको अलग-अलग बजाना होता है। सबकों मिलकर और हर एकको अलग-अलग उस विचारको प्रकट करना होता है जो रचयिताके मनमें है। मैं जिस आदमीकी बात कह रही हूं वह जब कोरा कागज लेकर बैठ जाता था तो अपने मस्तिष्कमें संगीत रचना पाने लगता था और सीधा लिखना शुरू कर देता था मानों सामने रखी चीजको अंकित कर रहा हो। मैंने उसे शुरूसे आखिर-तक पूरा एक पृष्ठ, सभी बारीकियोंके साथ, वृन्दवाद्यके सभी ब्योरों के साथ भरते देखा। उसे कोई बाजा सुननेकी जरूरत न होती थी। वह सब कुछ कागजपर लिख देता था और वह सचमुच त्रुटि-हीन, पूर्ण होता था। वह अपने-आप बहुत अचेतन न था। वह अनुभव कर सकता था कि कोई चीज उसके अंदर प्रवेश करके संगीत-रचना करनेमें उसकी सहायता करती थी।

तुम्हें इस बातका ख्याल रखना चाहिये कि जब मैं कहती हूं कि एक जीवित मनुष्यमें अमुक रचना प्रवेश कर पाती थी तो इसका मतलब वह मृत व्यक्ति, यानी, उसकी अंतरात्मा या उसका चैत्य पुरुष नहीं होता। मेरा कहना है कि कोई विशेष क्षमता, जो मृत व्यक्तिके चले जानेके बाद भी पार्थिव वातावरणमें बनी रहती है। वह इतनी अच्छी तरह बनी होती है कि वह आदमीके मर जानेपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाये रखती है। अंतरात्मा, व्यक्तिकी सच्ची सत्ता, वहां नहीं रहती। मैंने तुमसे बहुधा कहा है कि मौतके बाद वह चैत्य लोकमें चली जाती है जो उसका अपना लोक है। वह वहां जाकर विश्राम करती है और यहांकी कमाईको आत्मसात् करती है और आगेके लिये तैयारी करती है। मैं यह नहीं कहती कि इससे उल्टा नहीं हो सकता। एक अंतरात्मा जो महान् संगीतज्ञके रूपमें आती है, फिरसे संगीतज्ञके रूपमें ही आ सकती है, यद्यपि मैंने किसी और प्रसंगमें कहा था कि अंतरात्मा प्रायः परिवर्तन पसंद करती है। कभी-कभी परस्पर-विरोधी और विपरीत जन्म लेती है। उदाहरणके लिये, बेलजियमके, अपनी शताब्दीके सबसे बड़े वायोलिनवादकको लो, उसका नाम था इसाह। मैं उसे व्यक्तिगत रूपमें जानती थी। मुझे विश्वास है वह अगर पूरा अवतार नहीं तो कम-से-कम महान् बीठोवनका अंश अवश्य था। हो सकता है कि यह पूरा-पूरा चैत्य न हो जिसने इस तरह जन्म लिया, अंतरात्माके संगीतकी क्षमताने ही वह रूप लिया हो। देखनेमें वह वैसा ही लगता था, ठीक वैसा ही सिर था। जब मैंने उसे पहली बार मंचपर आते देखा तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने अपने-आपसे कहा : "यह तो बीठोवनके जैसा लगता है, उस प्रतिभाशाली व्यक्तिकी हूबहू तसवीर!" फिर वह खड़ा हुआ, गज संभाला, फिर एक चरण जिसमें बस तीन-चार स्वर थे, लेकिन वे तीन-चार स्वर शक्ति, महानता, वैभवसे भरे थे। सारे हालमें एक अद्भुत और अनोखा दृश्य था। मैं भली-भांति पहचान गयी कि इसके पीछे बीठोवनकी प्रतिभा है। यहां भी यह संभव है कि बीठोवनकी पूरी अंतरात्मा इस आदमीमें न उतरी हो, केंद्रीय चैत्य सत्ता शायद कहीं और हो, अधिक सामान्य और विनम्र अनुभव प्राप्त कर रही हो — भले कहीं मोची बनी हुई हो। लेकिन जो बच रहा था और यहांपर प्रकट हो रहा था वह उस महान् संगीतकारका विशेष अंश था। उसने अपनी संगीतकी क्षमताके नाते अपनी मानसिक और प्राणिक सत्ताको ही नहीं, भौतिक सत्ता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को विशेष रूपसे प्रशिक्षित किया था और यह रचना उसके जानेके बाद भी दृढ़ बनी रही और इस तरह दूसरे शरीरमें उतरी। संगीत-की सत्ता शुरूमें चैत्य चेतनाके चारों ओर गढ़ी और व्यवस्थित की गयी थी, इसलिये उसने चैत्यकी कुछ विशेष शक्ति और बने रहनेकी क्षमता, लगभग अमरता पा ली थी। ऐसी रचनाएं अपने-आप चैत्य पुरुष तो नहीं होतीं, पर उनमें कुछ चैत्य गुण अवश्य होते हैं, वे स्वतंत्र सत्ताएं होती हैं, उनका अपना जीवन होता है और जब अवसर मिले तो वे अपने-आपको अभिव्यक्त करती और अवतरित होती हैं ताकि अपनी पूर्णताको पा सकें।

क्या चैत्य पुरुष एक ही समयमें दो शरीर धारण कर सकता है?

बात इतनी सीधी नहीं है। मैंने तुमसे बहुत बार कहा है कि चैत्य पुरुष एक विकासका परिणाम होता है, यानी, वह उस भागवत चेतनाकी अभिव्यक्ति है जिसने जड़-पदार्थमें प्रवेश करके अपने-आपको फैला लिया है और धीरे-धीरे जड़-पदार्थको उठाकर विकसित करती है ताकि वह अपने मूल स्रोत, भगवान्, तक वापिस पहुंच सके। भागवत केंद्रसे ही बहुत-से जीवनों या अवतारोंमें क्रमशः चैत्य पुरुष रूप लेता है। एक ऐसा समय आता है जब वह एक प्रकारकी पूर्णता प्राप्त कर लेता है — विकास और निर्माणकी पूर्णता। तब उसमें ज्यादा बड़ी उपलब्धिकी ओर, और अधिक प्रगतिकी ओर एक अभीप्सा होती है, वह, भगवान्‌को और अधिक, और भी ज्यादा अच्छी तरह अभिव्यक्त करनेके लिये अभीप्सा करता है। इस आकर्षणके परिणामस्वरूप वह, साधारणतः, अपनी ओर उच्चतर लोकसे उच्चतर श्रेणीकी सत्ताओंको खींचता है, जिसे श्रीअरविन्द अधिमानस कहते हैं। यह निवर्तनकी सत्ता चैत्य पुरुषमें अवतार लेती है। मनुष्य अधिमानसकी इन सत्ताओंको देवता कहते हैं। इस तरह जब किसी देवताका चैत्य पुरुषके साथ मेल होता है तो, स्वभावतः, चैत्यकी स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा ऊंची हो जाती है, वह देवताके स्वभावका असर पाता है और उसमें भी अपने अंदरसे अंश अभिव्यक्त करनेकी क्षमता आ जाती है, अर्थात्, वह अपने अंदरसे एक ऐसा भाग निःसृत करता है जिसका अपना स्वतंत्र जीवन होता है और वह भी औरोंके अंदर अवतरित हो सकता है। इस तरह एक ही मौलिक सत्ताके बहुत-से अंश-प्रक्षेप हो सकते हैं। दूसरे शब्दोंमें कहें तो मूल रूपमें तो एक ही दैवी चैत्य सत्ता हो सकती है पर उसमेंसे निकलनेवाले व्यक्तित्व अनेक हो सकते हैं। इसीलिये कभी-कभी कुछ अलग-अलग व्यक्ति आपसमें एक-दूसरेके प्रति सजातीयता या आकर्षणका अनुभव करते हैं जो कभी तादात्म्य भी हो सकता है — और वह भी सकारण होता है — क्योंकि उनमें वही एक देवता होता है जिसमेंसे वे, यानी, उनका चैत्य पुरुष प्रकट हुआ था। यह दोहरे व्यक्तित्वकी उस तरहकी चीज नहीं है जिसमें तुम अपने अंदरसे कुछ निकालते हो और अपना एक अंश खो बैठते हो अथवा तुम अपने-आपको दो हिस्सोंमें बांट देते हो और दोनों तरफ आधा-आधा रहता है। यहां प्रक्षिप्त प्रक्षेपण पूर्ण, और समग्र होता है और उसका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। अगर तुम अपने अंदरसे एक सत्ता निःसृत करो तो तुम अपने-आप पूर्ण और समग्र रहते हो, अपने अंदरसे कुछ भी नहीं खोते और निःसृत अंश भी पूर्ण और समग्र रूपमें स्वतंत्र जीवन जीता है।

(२)

चैत्यका कार्य क्या है ?

चैत्य जेनरेटर और बत्तीके बीचके तार जैसा होता है। जेनरेटर कौन-सा है और बत्ती कौन-सी है ? भगवान् जेनरेटर हैं और शरीर, यह दृश्य-सत्ता, बत्ती है। इस तरह चैत्यका काम है इन दोनोंमें संपर्क रखना। दूसरे शब्दोंमें, अगर जड़-तत्त्वमें चैत्य न होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो जड़-तत्त्व कभी भगवान्के साथ सीधे संपर्कमें न आ पाता। सभी मनुष्योंको जिनमें तुम्हारी भी गिनती है, सबके अंदर पैठनेकी जरूरत है। यह मानवकी, या यूं कहें, धरतीपर रहनेवाले सभी सशरीर जीवोंकी बहुत बड़ी विशेषता है। मनुष्यमें चैत्य पुरुष ज्यादा सचेतन हो जाता है और अपना एक रूप लेता है। ज्यादा सचेतन होनेके नाते वह ज्यादा स्वतंत्र भी होता है और एक व्यक्ति बन जाता है। ध्यान रहे कि यह धरतीकी और केवल धरतीकी ही एक विशेषता है। यहां पवित्र करनेवाले, उद्धार करनेवाले तत्त्वका निश्चेतन जड़-तत्त्वके साथ सीधा मेल होता है ताकि वह उसे क्रमशः भागवत चेतनाके प्रति जगाकर, भागवत उपस्थिति और स्वयं भगवान्की ओर ले चले। चैत्य पुरुष ही मनुष्यको एक असाधारण सत्ता बना देता है। शायद मनुष्यसे यह बात बार-बार कहना ठीक नहीं है क्योंकि वह पहले ही बहुत फूला हुआ है और अपने बारेमें बहुत ऊंची राय रखता है, उसे इस दिशामें प्रोत्साहित करनेकी जरूरत नहीं। फिर भी यह एक तथ्य है कि दूसरे लोकोंकी सत्ताएं, अर्ध-देव या स्वयं देव भी, श्रीअरविन्द जिन्हें अधिमानसकी सत्ताएं कहते हैं, धरतीपर भौतिक शरीर पानेके लिये उत्सुक रहते हैं ताकि वे चैत्यका अनुभव कर सकें, उनके अपने अंदर तो चैत्य होता नहीं। इन सत्ताओंमें ऐसे बहुत से गुण होते हैं जो मनुष्योंमें नहीं होते, लेकिन उनमें वह भागवत सत्ता नहीं होती जो एक असाधारण चीज और धरतीकी ही विशेषता है। उच्चतर लोकोंके सभी निवासी — उच्चतर मन, अधिमन आदि — बिना चैत्यके होते हैं। स्वभावतः, प्राणमय जगत्की सत्ताओंमें भी चैत्य नहीं होता, लेकिन इसके लिये प्राणिक सत्ताओंको कोई खेद नहीं है। वे उन्हें पाना भी नहीं चाहतीं। लेकिन इस स्तरपर कुछ इनी-गिनी अपवादिक सत्ताएं हैं जो बदलना चाहती हैं और इस हेतु भौतिक शरीर पाना चाहती हैं, लेकिन बाकीको ऐसी कोई चाह नहीं है। वे अपनी सत्ताके नियमोंसे बंधी रहती हैं और उन्हें तोड़ नहीं सकतीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिये मैं कहती हूं, और हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मनुष्यका यह विशेष गुण है कि उसके अंदर चैत्य पुरुष होता है। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि ऐसा लगता नहीं कि उसने चैत्यकी उपस्थितिसे कोई विशेष लाभ उठाया हो। वह इस सत्ताके साथ जैसा व्यवहार करता है उससे तो यही लगता है कि वह इसे बहुत ज्यादा वांछनीय वस्तु नहीं मानता। वह उसकी अपेक्षा अपने मानसिक विचारोंको, अपनी प्राणिक मांगोंको, अपनी भौतिक आदतोंको ज्यादा पसंद करता है। मुझे पता नहीं तुममेंसे कितनोंने बाइबल पढ़ा है। बाइबलमें एक कहानी है जो मुझे हमेशा अच्छी लगा करती थी। इसाओ और जैकब दो भाई थे। इसाओ शिकारके लिये बाहर चला गया था और उसे बहुत भूख लगी थी। वह लौटकर आया तो उसने देखा कि उसका भाई कुछ पका रहा है। उसने जैकबसे खाना मांगा। जैकबने कहा : "अगर तुम मुझे अपना जन्माधिकार बेच दो तो मैं तुम्हें खाना दे सकता हूं।" इसाओने अपना जन्माधिकार बेच डाला। उसने कहा : "यह मेरे किस कामका है," और यह कहकर बेच दिया। तुम इसका मतलब समझे? तुम इसे बिलकुल ऊपरी अर्थमें ले सकते हो, लेकिन मैंने इसका कुछ और ही अर्थ लिया है। जन्माधिकारका मतलब है भगवानका पुत्र होनेका अधिकार। इसाओ कुछ थोड़े-से शोरबेके बदले इस भागवत अधिकारको बेचनेके लिये तैयार था। यह है तो पुरानी कहानी, पर है शाश्वत सत्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्य पुरुष — कुछ रहस्य

क्या चैत्य पुरुष हमेशा प्रगति करता रहता है?

चैत्यमें प्रगतिके दो प्रकार होते हैं और दोनों एक-दूसरेसे बहुत भिन्न हैं। एक तो है उसकी रचना, निर्माण और संगठन, क्योंकि चैत्य हमेशा एक छोटी-सी दिव्य चिनगारीके रूपमें अन्तःपुरुषके अंदर शुरू होता है। फिर, इस चिनगारीमेंसे धीरे-धीरे एक स्वतंत्र सचेतन व्यक्तिका विकास होता है जिसका अपना संकल्प होता है, अपनी क्रिया होती है। मैंने कहा कि शुरूमें चैत्य पुरुष भागवत चेतनाकी एक चिनगारीके रूपमें होता है। एकके बाद एक जीवनके अनुभव प्राप्त करते हुए वह एक सचेतन व्यक्तित्व बन जाता है। यह प्रक्रिया बढ़ते हुए बच्चेकी प्रगतिकी और वृद्धिकी तरह है। यह एक निर्मित होती हुई वस्तुकी तरह है और अधिकतर लोगोंमें बहुत लंबे समयतक स्थिति ऐसी ही बनी रहती है। उनमें यह पूरी तरह विकसित व्यक्तिके रूपमें नहीं होती। यह न तो अपने बारेमें पूरी तरह सचेतन होती है, न उसे अपने ऊपर पूरा अधिकार ही होता है। उसे अपना निर्माण करनेके लिये, पूरी तरह सचेतन होनेके लिये एकके बाद एक बहुत-से जन्मोंकी जरूरत पड़ती है। अंतमें ऐसा समय आता है जब वह पूर्ण व्यक्तित्व पा लेती है, अपने बारेमें और अपनी नियतिके बारेमें पूरी तरह सचेतन होती है। जब ऐसी चैत्य सत्ता मनुष्य रूपमें अवतार लेती है तो उससे बहुत फर्क पड़ता है। वह आदमी साधारण लोगोंकी तरह अपनी परिस्थितियों, अपने परिवेश, अपने भूत या परंपराओंसे नहीं बंधा होता, वह स्वतंत्र रूपसे जन्म लेता है। जब वह धरतीपर आता है तो वह अनुभव करता है कि उसे कुछ काम करना है, संसारमें उसे कोई लक्ष्य पूरा करना है। उस हदतक उसकी प्रगतिका चक्र पूरा हो गया, यानी, अब उसे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक प्रगति करनेके लिये नये जन्म लेनेकी जरूरत नहीं रह गयी। तबतक पुनर्जन्म आवश्यक होता है, अनिवार्य होता है क्योंकि वह पुनर्जन्मके द्वारा, नया शरीर लेकर ही प्रगति करता, बढ़ता और विकसित होता है। अंतरात्मा भौतिक जीवनमें ही अपना निर्माण करती रहती है जबतक कि पूर्ण रूपसे विकसित सचेतन सत्ता न बन जाय। लेकिन अगर यह पूरी तरहसे निर्मित सत्ता भगवान्‌के कामका यंत्र बनना चाहे, जाकर अपने ही लोकमें चैत्य आनंदमें विश्राम करनेकी जगह भगवान्‌के वैश्व हेतुको पूरा करनेके लिये उनका कार्य करना चाहे तो उसे एक और दिशामें प्रगति करनी होगी, कार्य-क्षमताकी दिशामें प्रगति, कार्यकी व्यवस्था और निष्पादन करनेकी शक्ति, भगवान्‌की इच्छा-शक्तिको प्रकट करने और मूर्त रूप देनेकी शक्ति। जबतक संसार चलता रहेगा, जबतक वह भगवान्‌की सेवा करना चाहेगा तबतक चैत्य पुरुषकी यह प्रगति चलती रहेगी। लेकिन अगर वह चैत्य लोकमें लौट जाना चाहे और भागवत योजनाके अनुसार काम करना छोड़ दे तो वह प्रगतिके क्षेत्रसे परे गतिशून्य स्थितिमें रह सकता है। जैसा कि मैं कह चुकी हूं, प्रगति तो केवल भौतिक जगत्‌में ही संभव है। कहीं और प्रगति संभव नहीं हो सकती। चैत्य लोकमें एक प्रकारका आनन्दमय विश्राम है। तुम हिले-डुले बिना जो हो वही, जहां हो वहीं बने रहते हो, हिलते तक नहीं।

धरतीपर हर चीज प्रगति करती है, उसे करनी पड़ती है। सभी मनुष्योंको, बिना अपवादके, जिन्हें चैत्यका भानतक नहीं है, वे चाहें या न चाहें, प्रगति करनी पड़ती है। उनके बावजूद चैत्यकी प्रगति होती रहती है और उन्हें उसकी विकास-रेखाका अनुसरण करना पड़ता है। शरीर क्षीण होता है क्योंकि वह आंतरिक कूचमें कदम मिलाकर नहीं चल सकता। वह अपने-आपको बदल नहीं सकता, आंतरिक ढांचेमें ढाल नहीं सकता, उसकी लयका साथ नहीं दे पाता। यह भेद इतना बढ़ जाता है कि आगे चलकर टूटनेकी बारी आती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और यही है मृत्यु। शुद्ध रूपसे आध्यात्मिक स्तरपर भी प्रगति नहीं होती। शुद्ध आत्माके क्षेत्रका अर्थ है एक अचल अवस्था। वहां कोई प्रगतिशील गति नहीं होती, वह प्रगतिके क्षेत्रसे परे हैं, सब प्रकारकी अभिव्यक्तिसे परे है। जब तुम आत्मामें निमज्जित हो जाओ तो इसका मतलब है कि तुम सृष्टिसे बाहर निकल आये। तब कोई सवाल ही नहीं रहता, किसी छोटी-सी गतिका भी सवाल नहीं रहता।

जब चैत्य पुरुष जन्म लेना चाहता है तो क्या वह पहलेसे ही अपना रूप चुन लेता है?

यह निर्भर है। जैसा कि मैं तुमसे कह चुकी हूं कुछ चैत्य पुरुष ऐसे होते हैं जो अभी निर्माण और वृद्धिके मार्गपर हैं। सामान्यतः, वे शुरूमें अपना चुनाव नहीं कर सकते, वे कुछ ज्यादा नहीं चुन सकते। लेकिन जब वे विकास और चेतनाके अमुक स्तरतक आ जाते हैं तो वे चुनते हैं। सामान्यतः, शरीरमें रहते हुए ही, जब वे काफी अनुभव इकट्ठे कर लेते हैं, वे यह निश्चय कर लेते हैं कि उनके अनुभवोंका अगला क्षेत्र कैसा होगा। मैं तुम्हें एक उदाहरण देती हूं, है तो जरा बाहरी ही। उदाहरणके लिये, किसी चैत्य सत्ताको शक्ति, अधिकार, प्रभुताकी आवश्यकता थी। वह इन गतियोंकी प्रतिक्रिया जानना चाहती थी और यह जानना चाहती थी कि इन्हें भगवान्‌की सेवामें कैसे लगाया जा सकता है, संक्षेपमें कहें तो वह जानना चाहती थी कि ये चीजें क्या सिखाती हैं। इसलिये उसने, अंतरात्माने राजा या रानीका चोला स्वीकार किया। जब उसे काफी अनुभव हो गया, जो कुछ सीखा जा सकता था, सीख लिया तो उसने वह शरीर त्याग दिया क्योंकि अब वह उपयोगी न रह गया था। उस क्षण जब वह शरीरमें रहते हुए शरीर-त्यागका निश्चय करता है, उसी समय वह अगले अनुभवके बारेमें निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लेता है। यह चुनाव प्रायः क्रिया-प्रतिक्रियाका रूप ले लेता है। अगर अंतरात्माने एक विशेष क्षेत्रका अनुभव और अध्ययन कर लिया है तो अगली बार वह उससे उलटा क्षेत्र चुनती है। जैसे यदि आत्मा राजाकी स्थिति देख चुकी है और उसके द्वारा भगवान्‌के साथ सचेतन संबंध बना चुकी है तो जब वह उस शरीरको छोड़ रही होगी जिसने शक्ति, अधिकार और प्रभुत्व देखा है, शायद उस समय वह कहे: "इस बार मैं एक मध्यम वर्गीय स्थिति चुनूंगी, न बहुत ऊंची, न बहुत नीची, जहां सारे समय बाहरी जीवन बितानेकी जरूरत न होगी, न बहुत समृद्धि होगी, न बहुत दरिद्रता।" इस निश्चय-के साथ वह आवश्यक विश्रामके लिये चैत्य लोकमें चली जाती है और वहां अपने अनुभवोंको आत्मसात् करती और आगेके लिये तैयारी करती है। जब धरतीपर लौटनेका समय आता है, भौतिक शरीरमें अवतरणका समय, तो स्वभावतः, उसे अपना पिछला चुनाव याद आता है। परंतु उस समय उस उच्चतर सूक्ष्म लोकसे भौतिक जगत् वैसा नहीं दीखता जैसा हमें यहां दिखायी देता है, वह एक अलग ही रूपमें दिखायी देता है, फिर भी, परिवेश और उसकी क्रियाओंका फर्क तो दीख ही जाता है। वहां ब्योरोंकी दृष्टि तो नहीं होती पर समग्र या सार्वभौम दृष्टि तो होती ही है। वह एक वातावरणका चुनाव कर सकती है, वह एक देश-विशेषको चुन सकती है। उसकी नजर किसी खास प्रकारकी शिक्षा, सभ्यता, प्रभावपर होती है। वह जानती है कि वह वैसा जीवन पाना चाहती है। तब जैसे-जैसे वह नीचे उतरती है वह विभिन्न प्रकार-के स्पंदनोंमें भेद कर सकती है और उनके अनुसार अपना रास्ता बनाती है। वह ठीक उस स्थानका निशान लगाना चाहती है जहां उसे उतरना है। लेकिन निशान लगभग ही होता है क्योंकि और भी तो दो-एक बातें इस बीच आ जाती हैं। क्योंकि ऊपरसे उसका चुनाव ही काफी नहीं है, नीचेसे ग्रहणशीलता भी तो होनी चाहिये, एक ऐसी अभीप्सा होनी चाहिये जो उस व्यक्ति-विशेषको या उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकारके व्यक्तिको अपने अंदर खींच सके। साधारणतः, पुकार मांकी ओरसे आती है, कभी-कभी मां-बाप दोनोंकी तरफसे होती है। अगर मांमें कोई अभीप्सा है या ग्रहणशीलता है, कोई ऐसी चीज है जो काफी निष्क्रिय रहते हुए किसी उच्चतर वस्तुकी ओर खुली हो तो यह चीज चैत्य पुरुषको ज्योतिर्मय स्पन्दनकी तरहसे दीखती है और उसे बुलाती है। यह उसकी इच्छाका उत्तर है। यह उसे वह जगह दिखाती है जहां उसे जाना है। लेकिन वह जन्म लेनेका दिन नहीं ठीक कर सकती। कुछ अनिश्चितताका समय रहेगा ही, लेकिन वह साल-भरसे अधिक नहीं हो सकता। दूसरी चीज जो इस चुनावमें कुछ हेर-फेर कर सकती है वह है स्वयं जन्म लेनेकी प्रक्रिया। अंतरात्मा, सचेतन सत्ता भौतिक जगत्-के लिये निश्चेतनामें उतरती है, अपने अच्छे रूपमें भी मानव चेतना तब चैत्यकी तुलनामें निश्चेतना ही है। इस उतरनेमें मानों अंत-रात्मा सिरके बल औंधी गिरती है। इससे वह स्तब्ध रह जाती है और काफी लंबे समयतक उसे पता ही नहीं लगता कि वह कहां है, कैसे है, क्या कर रही है और क्यों आयी है। वह एकदम रिक्त हो जाती है। वह अपने-आपको अभिव्यक्त करनेमें असमर्थ होती है। विशेष रूपसे बिलकुल ही बचपनमें उसके पास कुछ समझने या कुछ अभिव्यक्त करनेके लिये पर्याप्त मस्तिष्क नहीं होता। ऐसा बहुत ही विरल होता है कि बच्चे अपने अंदरकी अपवादिक सत्ताको प्रकट कर सकें। ऐसे उदाहरण होते तो हैं पर बहुत ही कम और कभी-कदास। साधारणतः अंतरात्माको अपनी स्थिततक पहुंचते देर लगती है। वह अपनी सुप्त अवस्थासे जागती तो है पर बहुत धीरे-धीरे ही यह समझना शुरू करती है कि वह किसी विशेष उद्देश्य-से और अपने ही चुनावसे आयी है। यह विस्मृति मन और मान-सिक शिक्षाके कारण आती है जो चैत्य चेतनाको पूरी तरहसे बन्द कर देते हैं। सब प्रकारकी परिस्थितियां, घटनाएं, अनुभूतियां —बाहरी और भावात्मक — दरवाजा खोलनेके लिये जरूरी हो जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जो यह याद दिलायें कि तुम कहीं औरसे, किसी विशेष कामके लिये आये हो। यह सामान्यतः लंबी प्रक्रिया है। लेकिन कभी तुम्हें छोटी अवस्थामें ही किसी ऐसे व्यक्तिसे मिलनेका अवसर मिल सकता है जो जानता है। तब इधर-उधर अंधेरे और अज्ञानमें टटोलने और भटकनेकी जगह तुम्हें प्रकाश मिल जाता है, ऐसी सहायता मिल जाती है जिससे तुम्हें सीधा संपर्क काफी तेजीसे मिल जाता है।

चैत्य संकल्प और चैत्य विकास ऐसी चीजें हैं जो सामान्य धारणाओं की पहुंचके बाहर हैं। यहां न्याय, पुरस्कार और दंडके विचारोंके लिये कोई स्थान नहीं है। बहुत-से लोग मेरे पास आकर शिकायत करते हैं: "मैंने पिछले जन्ममें ऐसा क्या किया है कि मुझे ऐसी कठिन परिस्थितियोंमें रहना पड़ रहा है, इतना कष्ट सहना पड़ रहा है!" मैं हमेशा कहती हूं: "क्या तुम देख नहीं पाते कि यह तुम्हारे लिये आशीर्वाद है, भगवान्‌की कृपा है? शायद पिछले जन्ममें स्वयं तुमने ऐसी परिस्थितियोंकी मांग की थी ताकि उनके द्वारा तुम ज्यादा प्रगति कर सको।" देखनेका यह तरीका बिलकुल नया लग सकता है, पर सत्य है इसी राहपर।

एक बार बुद्धिमत्तापूर्ण और सर्जनशील जीवन बितानेके बाद चैत्य पुरुष मूढ़ता और सामान्यताके जीवनमें कैसे प्रवेश कर सकता है?

मैंने ठीक यह नहीं कहा था। चैत्य पुरुष मूढ़ नहीं है। जो होता है उसका वर्णन इस तरह किया जा सकता है: मान लो चैत्य पुरुषको लेखकके जीवनका अनुभव हो चुका है। लेखकका काम है अपने-आपको अभिव्यक्त करना, अपने बोध, अवलोकन और अपने मूल्यांकनको शब्दोंके द्वारा अभिव्यक्त करना। उसका एक विशेष क्षेत्र होता है, संपर्क और परिस्थितियोंकी एक परिधि होती है जिसमें वह इतना हिलता-मिलता है। लेकिन, उसके परे, उसके बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य क्षेत्र और अन्य प्रदेश भी हैं जिनका उसे कोई अनुभव नहीं। इसलिये वह अपने-आपसे कह सकता है: "मैं अपने मस्तिष्कका जीवन बिता चुका, मैं जीवनके प्रति बौद्धिक प्रतिक्रियाओंको जान गया हूं। चलो, अब हृदयका जीवन बिताकर देखें, संवेदनों और आवेगोंकी प्रतिक्रिया देखूं।" वास्तवमें, कभी-कभी बुद्धिकी क्रिया बढ़ जाय तो हृदयकी क्षमताएं कम हो जाती हैं। इसलिये नये प्रकारका अनुभव पानेके लिये चैत्य पुरुष अपने बौद्धिक शिखरोंको त्यागकर नीचे, प्राणिक मैदानोंमें आ जाता है। अब वह प्रतिभाशाली सर्जक न रहकर एक साधारण आदमी बन जाता है जिसका हृदय अपने-आपको तीव्र या उदार गतिविधियोंके द्वारा समृद्ध बनाता है। (यहांपर शंकराचार्यकी कहानी याद आती है जिन्हें बचपनसे ही संन्यासी होनेके कारण प्रेमका अनुभव बिलकुल न था। उन्होंने यह अनुभव पानेके लिये एक राजाके शरीरमें प्रवेश किया था।) ऐसे उदाहरण बहुत कम नहीं हैं जहां चैत्य पुरुषने अमुक दिशाओंमें पूर्ण विकास साधित कर लिया, और फिर, कुछ अन्य दिशाओंमें प्रगति करनेके लिये या किसी और उद्देश्यसे बहुत मामूली और सीधा-सादा जीवन अपनाया। उदाहरणके लिये, जो एक बार राजा था, जैसा कि मैं पहले सुना चुकी हूं, जिसे शक्ति, अधिकार और प्रभुत्वका अनुभव था, जो राजसी शिखरोंपर रहता था, वह सामान्य जीवनके निचले स्तरपर आना पसंद करे और उच्चपदकी तड़क-भड़कके बिना मध्यवर्गीय वातावरणमें, साधारण लोगों और साधारण वस्तुओंके बीच जीवन बिताये और एक ऐसा अवसर पा ले जहां वह अजाना रहकर शांति और अचंचलताके साथ अपना काम कर सके। क्या तुम कह सकते हो कि यह उसका पतन है? यह जीवनका सामना एक और दिशासे, एक और कोणसे करना हुआ। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि चेतनाके लिये सच्ची चेतना, चैत्य चेतनाके लिये गौरव, महिमा और विस्मृति या गुमनामी एक ही हैं, सफलता और असफलता एक ही हैं। महत्त्व है चेतनाके विकासका। कुछ परिस्थितियां जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी मानव दृष्टिमें अनुकूल हों वे वास्तवमें प्रगतिके प्रतिकूल हो सकती हैं। अपने सामान्य विचारों और सामान्य प्रतिक्रियाओंके कारण तुम हर चीजका मूल्यांकन सफलता और असफलताकी दृष्टिसे करते हो। परंतु यह तो निर्णय करनेका सबसे पिछड़ा हुआ तरीका है। यह बिलकुल बनावटी और सत्यका विरोधी तरीका है। मानव जीवनमें, वह इस समय जिस रूपमें संगठित है, शायद लाखों-करोड़ों उदाहरणोंमें एक बार या इससे भी कम पहला स्थान मिलता है। हमेशा दिखावेका कुछ अंश मिला रहता है। जब किसीको सफलता मिलती है, बहुत सफलता मिलती है तो, विश्वास करो, उसमें बहुत-सा दिखावा मिला हुआ है।

चैत्य पुरुष और पिछले जीवन

बहुत अधिक संख्या ऐसे लोगोंकी है जिन्हें यह पता नहीं होता कि उनके अंदर क्या हो रहा है। उनकी चेतना या उनकी सत्ता मानसिक, प्राणिक और भौतिक तत्त्वोंका मिश्रण, या यूं कहें, एक तरहकी खिचड़ी होती है। कुछ थोड़े-से, सचमुच बहुत ही थोड़े लोग सचेतन होते हैं — इन तीनोंके परे चैत्य पुरुषके बारेमें सचेतन होते हैं। क्योंकि केवल वही बना रहता है, क्रमशः आनेवाले जीवनोंमें बना रहता है। कुछ लोगोंने इस विषयका प्रारंभिक ज्ञान पाया या सीख लिया है, वे पुनर्जन्मको मानते तो हैं, लेकिन एक बहुत ही बचकाने तरीकेसे। उनका विचार यही है कि पुनर्जन्म ऐसे ही होता है जैसे कोई व्यक्ति अपने कपड़े बदल रहा हो। ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने इस विषयपर किताबें लिख मारी हैं, बंदरके जन्मसे लेकर आजके जन्मतक सभी जन्मोंकी कहानी बड़ी गंभीरतासे लिखी है! लेकिन जैसा कि मैंने कहा, मृत्युके बाद केवल चैत्य सत्ता ही बनी रहती है, बाकी सब विघटित हो जाता है। और हजारमेंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौ सौ निन्नानवे ऐसे हैं जिनमें चैत्य बहुत छोटे-से रूपमें, कहीं पीछे पड़ा रहता है और व्यक्तिके वास्तविक जीवनमें बहुत कम भाग लेता है। मैं साधारण आदमीकी बात कर रही हूं, उस योगीकी नहीं जिसका चैत्य पुरुष काफी विकसित है और उसके बाहरी जीवन-को भली-भांति वशमें रखता और मार्ग दिखाता है। साधारण आदमी अपने सारे जीवनमें कितनी बार चैत्य पुरुषके संपर्कमें आता है! बरस-पर-बरस गुजर जाते हैं पर शायद ही कोई कभी इसकी गतिविधिका जरा-सा रसास्वादन कर पाता है। अधिकतर लोग ऐसे ही हैं। यह क्षण अमर हो जाता है और यहांसे अगले जीवनमें ले जाया जाता है, बाकी सब कुछ मिट जाता है। हमारे जीवनके किसी बिन्दु-विशेषपर कोई विशेष परिस्थिति आती है, अंदर पुकार होती है और कोई बहुत बड़ी आंतरिक आवश्यकता चैत्य पुरुषको आगे लाती है और बस क्षण-भरके लिये चैत्य संपर्क बन जाता है। चैत्य-स्मृति इस क्षणको संजोये रखती है। चैत्य-स्मृति जिस चीज-की रक्षा करती है वह बाहरी परिस्थिति या भौतिक घटना नहीं है, बल्कि घनिष्ठ भाव और बोधके समयके स्पन्दन हैं। अधिक-से-अधिक कहा गया एक शब्द, सुना हुआ एक वाक्य, एक उड़ता-सा दृश्य, पूरी तरह स्पष्ट अंकित रहता है मानों खुदा हुआ हो। इन सबसे भी बढ़कर महत्त्वपूर्ण है अन्तरात्माकी अपनी अवस्था। ये छितरे हुए तत्त्व अन्तरात्माकी यात्रामें मार्गपट्ट या सीढ़ियोंका काम देते हैं। यही वे स्थित तत्त्व हैं जो मनुष्यके व्यक्तित्वका निर्माण करते हैं। बहुत ही विरल अवसरोंपर जरा ज्यादा बड़ा मैदान होता है। जो परिस्थितियां सुरक्षित रखी जाती हैं वह इतनी निश्चित होती हैं कि उनसे किसी तारीख या ऐतिहासिक व्यक्तिका संकेत मिल सकता है। लेकिन, साधारणतः, तुम यह नहीं कह सकते कि मैं अमुक व्यक्ति था, अमुक काम करता था, अमुक देशमें रहता था। मनुष्यके जीवन-इतिहासका प्रामाणिक रूप इन चैत्य कौंधोंमें ही पाया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल वही व्यक्ति अपने जीवनकी पूरी-पूरी गाथा याद रख सकता है या चेतनामें सुरक्षित रख सकता है जो पूरी तरह भगवान्-के साथ एक हो गया हो, जिसने अपने सब भागोंको, अपने समग्र व्यक्तित्वको इस केंद्रके चारों ओर व्यवस्थित कर लिया हो और एक समग्र रूप दे लिया हो, जो पूरी तरह भगवान्‌की ओर अभिमुख हो। इसके मामलेमें तो बात यह है कि शरीर गिर भी जाय तो भी, चूंकि बाकी सभी भाग चैत्य द्रव्यके अंदर एक हो चुके होते हैं, इसलिये चैत्यके इर्द-गिर्द बना व्यक्तित्व बना रहता है और उसकी याद भी बनी रहती है। वह चेतना खोये बिना एक जीवनसे दूसरे जीवनमें जा सकता है।

चैत्य स्मृतिका बहुत सुनिश्चित लक्षण होता है। उसमें अद्‌भुत तीव्रता होती है। वह जीवनके उन क्षणोंको याद रखती है जब चेतना बहुत अधिक प्रकाशमान, बहुत अधिक शक्तिशाली और बहुत अधिक सक्रिय थी। जीवनके ये क्षण सबसे ज्यादा भाग्यशाली और सुखी होते हैं। पर उसके बारेमें बात नहीं की जा सकती।

कुछ ऐसे लोग हैं जो कहते हैं, शायद मानते भी हों, कि वे पिछले जन्ममें यह थे और वह थे और वे अपने पिछले जीवनोंका विस्तृत वर्णन भी देते हैं। फिर वे लोग भी हैं जो बिछुड़ी आत्माओंसे किसी माध्यमके द्वारा संपर्क स्थापित करते हैं। एक आदमी तुम्हारे पास आकर कहता है कि वह नेपोलियन था। दूसरा कहता है वह शेक्सपीयर था आदि-आदि। इस तरह न जाने कितने शेक्सपियर, नेपोलियन और सीज़र प्रकट हों, उनकी कोई गिनती नहीं। कुछ प्रेतात्माएं बहुत बातूनी होती हैं और अपनी मोहक कहानियोंसे तुम्हारे ऊपर जादू कर देती हैं, जिनमेंसे कई बहुत वास्तविक और देखनेमें सच्ची प्रतीत होती हैं और कुछ स्पष्ट रूपसे झूठी और परस्पर विरोधी बातोंसे भरी होती हैं। फ़िर भी, तथ्य तो यह है कि सामान्यतः, यह प्रेतात्माएं प्राणलोककी छोटी-छोटी सत्ताएं होती हैं। यह प्रायः मृत व्यक्तिके अवशेष, उसके विघटित व्यक्तित्वके कुछ बचे-खुचे भाग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बचे हुए अरमान और जमी हुई कल्पनाएं होती हैं जो वहांसे छूटकर इधर-उधर घूमती हैं और व्यक्तियोंको अपने अधिकारमें करके उनमें बस जाना चाहती हैं। प्राणमय लोककी ये सत्ताएं प्रायः बदमिजाज होती हैं और भोले-भाले लोगोंको तंग करके मजा लेती हैं, उन्हें मूर्ख बनाती हैं। उस जगत्‌में एक-दूसरेके मनकी बात जानना आसान होता है। प्रेतात्मा, तुम कुछ भी न कहो तो भी, स्पष्ट रूपमें देख सकती है कि तुम्हारे मनमें क्या है। इसी भांति वह ऐसे रहस्य खोल सकती है जिन्हें तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानता या जिन्हें तुम भी भूल चुके हो। वे दूसरे लोगोंकी नकल भी कर सकती हैं। उन्हें ऐसी बहुत-सी तरकीबें या चालाकियां आती हैं जिनसे तुम चक्करमें पड़ जाओ और भौंचक्के रह जाओ।

एकरूप सत्ता

किसी चीजको एकरूप तब कहा जाता है जब उसके सब भाग एक जैसे हों, उसी जैसे हों या, दूसरे शब्दोंमें कहें तो, जब सारी सत्ता एक ही चेतनाके प्रभावमें हो, एक ही चेतना, आवेग और संकल्पद्वारा परिचालित हो। साधारणतः, मनुष्य बहुत प्रकारके टुकड़ोंसे बना होता है। सब-के-सब भाग पृथक् और विषम होते हैं और हर एक बारी-बारीसे अलग-अलग समय सक्रिय होता है। एक ऐसा भाग सक्रिय हो सकता है जो पिछले सक्रिय भागसे एकदम भिन्न है, इतना भिन्न कि वह और ही आदमी मालूम होने लगता है। हमारे अंदर हर एक तत्त्वका अपना अलग स्वभाव और अपनी अलग क्रिया है। हर एक अपने-आपको चरितार्थ करनेकी मांग करता है और लगभग स्वतंत्र व्यवितत्वकी तरह व्यवहार करता है। वास्तवमें, हम बहुविध व्यक्तित्वोंका समूह हैं।

उदाहरणके लिये, इस समय तुम चेतनाकी बहुत अच्छी दशामें हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें लगता है कि तुम सचमुच किसी आदर्शके लिये जीते हो, भगवान्‌के लिये जीते हो। तुम बहुत प्रसन्न हो। अचानक कुछ हो जाता है, तुम किसीसे मिलते हो जो बहुत वांछनीय नहीं है या तुम कोई ऐसा काम करते हो जो बहुत सराहनीय नहीं है या तुम किसी अप्रिय परिस्थितिके बीचमें हो और तुम्हें पता चलता है कि तुम अपना अनुभव खो चुके हो, यहांतक कि तुम्हें उसकी यादतक बाकी नहीं रही। तुम्हें आश्चर्य होता है कि यह कैसे हुआ। तुम्हारी सत्ताका कोई डूबा हुआ भाग बाहर निकल आया है, जो तत्त्व कहीं एक ओर पड़ा था वह सामने आ गया है। वह और भागोंको एक ओर हटाकर या निष्प्रभ करता हुआ आगे आ जाता है।

इस प्रकारके दोहरे, तिहरे, चौहरे या नानाविध व्यक्तित्वके बहुत-से उदाहरण हैं। ये भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व एक-दूसरेके बारेमें सचेतन नहीं होते। हर एक स्वतंत्र रूपमें काम करता और अपने ही रास्ते चलता है। वे साथ-साथ रहते हैं पर एक-दूसरेसे या एक-दूसरेमें मिलते-जुलते नहीं। उनमें बस एक ही संबंध होता है— वे एक ही शरीरमें रहते हैं। यह ऐसे है जैसे एक ही बोरेमें मोती —यदि वे सच्चे मोती हों— और पत्थर एक साथ भर दिये गये हों। बोरा ही उनमें एकताका एकमात्र सूत्र है। यह एकरूपता नहीं, विषमता है।

मैंने एक आदमी देखा है जिसमें संकल्प-बल था, विचारों और भावोंकी स्पष्टता थी। वह किसी कार्य-विशेषके लिये जो कुछ करना जरूरी होता उसे बुद्धिमत्ताके साथ तैयार करता था। अचानक ही पूरी सत्ता पलट गयी। एक और व्यक्तित्व ऊपर आया जो न केवल पिछले व्यक्तिका काम आगे न चलाता था, बल्कि उसे बिगाड़ता था। वह दस मिनटमें वह सब बरबाद कर देता था जिसे बनानेमें पहलेने महीनों लगाये थे। और तुम कल्पना कर सकते हो, जब पहला व्यक्तित्व वापिस आकर वह स्थिति देखता था तो उसे कैसी निराशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती होगी। उसे सारा काम फिरसे शुरु करना पड़ता था।

तब क्या किया जाना चाहिये ? इसका उपाय क्या है ?

तुम्हें अपने अंदर चेतनाके आसनका पता लगाना चाहिये जो कहीं गहराईमें एक मार्ग-पट्ट और साथ-ही-साथ दर्पण है। सभी वस्तुओं, सभी घटनाओंको इस दर्पणके आगेसे गुजरना चाहियें। यह उन्हें उनके ठीक रूपमें दिखलायेगा, ठीक अपने निजी रूपमें जैसी कि वे हैं, उस रूपमें नहीं जिसमें वे दीखती हैं या जिस रूपका दिखावा करती हैं। उनके गुण और स्वभावके अनुसार उन्हें स्थान दो। मार्ग-पट्ट तुम्हें बता देगा कि किसे अपने उचित स्थानके लिये कहां जाना चाहिये। दर्पण ऊपर आनेवाले प्रत्येक भाव, प्रत्येक आवेश, प्रत्येक संवेदनकी परीक्षा करेगा। अगर वह सुखद हो, प्रकाशमय हो, ऐसा हो जैसा होना चाहिये तो उसे केन्द्रके पास जगह दो। इसके विपरीत, यदि वह धुंधला, धूसर, संदेहास्पद हो तो उसे दूर, और भी दूर रखो। अगर अचानक कोई अप्रिय तत्त्व जोर करके आगे बढ़ आया है और आगेका स्थान हड़प बैठा है तो उसे कड़ी चेतावनी देकर हटा दो, उसे उसके योग्य स्थान दो। जब वह अपने-आपको पहचान ले, अपने-आपको बदल ले, उसके बाद उसे ज्यादा नजदीकके घेरेमें आने दिया जा सकता है। तुम अपनी सत्ताके सभी तत्त्वोंको व्यवस्थित करके अलग-अलग वर्गोंमें रख सकते हो। हर एक अपने गुण और मूल्य-के अनुसार केन्द्रीय चेतनाके इर्द-गिर्द हो, इस तरह तुम अपनी सत्ता-का संगठन कर सकते हो। तुम संकेंद्रित मंडलोंका एक नमूना बना लो जो मण्डल-केंद्रके जितने अधिक निकट हो उसे बनाने वाले तत्त्व उतने ही अधिक शुद्ध होने चाहिये और इसलिये उनका मूल्य और महत्त्व ज्यादा होगा। अगर तुम अपनी सत्ताके सभी भागों और राशियोंको चैत्य सत्ताके चारों ओर, इस तरह कि हर एक अपनी भूमिकाके अनुसार अपने स्थानपर हो, संगठित कर सको और सब-के-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब केंद्रीय चेतनाकी ओर अभिमुख हों, सब उसीसे प्रेरणा लें और उसीसे संचालित हों और कोई भी तत्त्व बेसुरा न होने पाये, तो तुम्हारी प्रकृतिमें पूर्ण एकरूपता आ जायगी।

यह बहुत मजेदार प्रयोग है जिसमें तुम अपने-आपको लगा सकते हो। अगर तुम इसे लेकर नियमित रूपसे परिश्रमके साथ करते चलो तो तुम्हें बहुत मजा आयगा और लाभ भी होगा। तब समय कभी भारी न पड़ेगा, वह सुनहरे फल देगा। अन्तमें, लगभग दो-तीन वर्ष बाद तुम पीछे मुड़कर देखोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि तुम कितने बदल गये हो, तुम्हें आश्चर्य होगा कि तुमने जो सोचा और किया है वह कैसे सोच या कर पाये। तुम अपने-आपको बहुत बदला हुआ व्यक्ति पाओगे। तुम आजसे ही यह परीक्षण शुरू कर सकते हो। तुम देखोगे जीवन कितना अधिक रुचिकर और महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

(श्रीअरविंदका योग, भाग ७)

सत्यकी कसौटी

सन्त आगस्टाइनने कहा है कि सत्यकी कसौटी है उसकी असंभावना। सत्यके इस जिज्ञासुके कथनमें एक सत्य है, काफी बड़ा सत्य। "सत्यकी विजय होगी, क्या यह सत्य है? क्या यह सत्य हो सकता है? यह असंभव है। इसलिये यह सत्य है।" भगवान् हैं, क्या यह असंभव है? तब भगवान् जरूर हैं। क्या हम इस अंधकारमेंसे कभी निकल सकेंगे? यह असंभव है। इसलिये हम जरूर इसमेंसे निकल आयेंगे।

हमारी इन्द्रियां उसीको संभव मानती हैं जो आजकल हो रहा है। आजके मोटे तथ्य संभव हैं और इनके साथ समानता रखनेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें संभाव्य गिनी जा सकती हैं, उनका हो सकना संभव है। जो चीज तथ्यसे उल्टी जाती हो या उससे मेल न खाती हो, वह हमारे लिये संदिग्ध या असंभव है। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि हर क्षण असंभव चीजें संभव होती रहती हैं, जिन बातोंको निश्चित और अवश्यंभावी माना जाता है वे टूटती रहती हैं। लेकिन हम उनकी ओर ध्यान नहीं देते।

कौन मानता था कि भारत स्वाधीन होगा और अंग्रेज अपना बोरिया-बिस्तरा लेकर चले जायेंगे? कौन मानता था कि रूसके ज़ारका राज्य धरतीसे गलत अक्षरकी तरह मिट जायगा? और होहेनज़ोलर्न और हेप्सबर्ग आज कहां है? कहां है महान् हिटलर? कुछ ही वर्ष पहले यह माननेके लिये कौन तैयार होता कि मनुष्य चन्द्रमापर चल सकेगा? और क्या आज भी आपको इस बातपर विश्वास होता है कि पदार्थकी तरह प्रति पदार्थ (एंटी मैटर) का भी अस्तित्व है? फ्रेंच कविने व्यर्थमें ही नहीं कहा था, "कहां है, किस तरफको हैं, किधर हैं, वे बर्फें पिछले सालोंकी कहां हैं?"

भौतिक मनको यह पाठ पढ़ाना होगा, उसे अपने-आप भी यह सीखना होगा कि हर क्षण, हर कदमपर कुछ नयी चीज है, कोई नयी बात है जिसे न पहले देखा गया था और न सुना गया था, जिसके बारेमें पहलेसे कुछ कहना संभव न था। उसे वह दृष्टि प्राप्त करनी चाहिये, वह विवेक पैदा करना चाहिये जो इन चीजोंको पहचान सके और यह न कहे कि यह तो स्वाभाविक है, यह तो होना ही था। इसमें कोई नयापन नहीं है, नयेपनका भ्रम है।

आध्यात्मिक वास्तविकताएं तुम्हारे दरवाजेपर हैं। न वे असत् हैं और न बहुत दूर हैं। स्वाधीनता, शांति, स्थिरता, प्रसन्नता, आनन्द, स्वास्थ्य अपने-आप, अपने सत्य रूपमें मौजूद हैं। जैसे कि माताजी कहा करती हैं, जरा उनकी ओरको मुड़ जाओ, जरा उस ओर ढुलक जाओ और तुम उनके बीचमें होओगे। सन्देह, संकोच आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी दृष्टिपर पर्दा डाल देते हैं और दृश्यको धुंधला करते हैं या आंखसे ओझल कर देते हैं। भगवान्, अन्तरात्मा, अमरता भी इसी तरह मानव चेतनाको आसानीसे मिल सकते हैं। ये सामान्य जीवनकी चीजें हैं। यूं कहें ये हमारे पड़ोसी हैं।

श्रद्धा — और श्रद्धा निश्चित रूपमें अंध श्रद्धा होती है — इन असंभव चीजोंपर श्रद्धा ही इनके लिये सबसे बड़ा प्रमाण है, क्योंकि श्रद्धा तुम्हें इन असंभव दीखनेवाली चीजोंके संपर्कमें ले आती है। यह तुम्हें एक निश्चितताकी भावना देती है, तुम्हारी चेतनाको ज्वलंत स्पष्टता देती है। सत्य और सद्वस्तुका इतना स्पष्ट परिचय और किसी मार्गसे नहीं हो सकता। तुम्हें लगता है कि तुम सत्यको जानते हो, कहीं सन्देहकी छाया भी नहीं है, कहीं प्रश्न या शंकाके लिये स्थान ही नहीं है। क्या यह आत्म-सम्मोहन नहीं है? सन्देह करनेवाला तिरस्कारकी भावनाके साथ पूछ सकता है। आत्म-सम्मोहन है क्या? यह चेतनाकी एक शक्ति है जो अपने-आपको इतना ज्यादा एकाग्र कर सकती है कि उसे किसी भी रूपमें, अपने विरोधी रूपमें भी बदला जा सकता है। अपने-आपमें लीन चेतना एक छोरपर निश्चेतनाके रूपमें दिखायी देती है और दूसरी ओर अतिचेतन ब्रह्म बन जाती है। चेतना सत्ताकी शक्ति है; वह किसी भी चीजको कोई भी नाम या रूप दे सकती है। जिसकी चेतनाका बनना चाहती है वह वही बन जाती है।

परम सत्य अपने-आप अपना अस्तित्व रखते हैं और मन उनके बारेमें प्रश्न करे, शंका करे, उनपर निर्णय देने बैठे या उनसे इनकार करे तो यह बेहूदा बात होगी। साथ ही, मन जब उन्हें ग्रहण करनेकी, उनकी स्थापना करनेकी कोशिश करता है तो वह कोशिश भी बेकार और हास्यास्पद होती है। उपनिषद्ने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया है: 'ततो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह', यानी, वाणी अपना पूरा जोर लगाकर भी उसे नहीं पकड़ सकती, मनकी वहांतक पहुंच ही नहीं है, वह निराश होकर लौट आता है। इसलिये सत्यके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिज्ञासुको हमेशा यही सलाह दी जाती है कि वह शुरूसे और सारे समय मनको शान्त और खाली रखे, उसमें सरल श्रद्धाकी प्रतिष्ठा करे और सद्वस्तुको अपने-आप आने दे। ये परमार्थ तत्त्व प्राप्त नहीं किये जाते, इनपर कब्जा नहीं किया जा सकता, ये अपने-आप जीवित जाग्रत सत्ताएं हैं। वे ठीक समयपर तुम्हारे अन्दर प्रवेश करती हैं और तुम्हारे ऊपर अधिकार कर लेती हैं, तुम उनको पकड़-कर उनपर अधिकार नहीं कर सकते। नचिकेताके बारेमें यही तो कहा गया है कि श्रद्धाने उसमें प्रवेश किया और इसी कारण वह मृत्युका सामना कर सका, उसका मित्र बन सका। अन्तमें उपनिषद्का कहना है कि जब सत्य अपने-आपको जिज्ञासुके आगे प्रकट करता है तभी जिज्ञासु सत्यको उसके सच्चे रूपमें देख सकता है।

परमार्थ तत्त्वों या परम वास्तविकताके बारेमें मनकी कल्पनाएं सत्यसे बहुत दूर हैं। मनने स्वाधीनता, आनन्द या चेतनाके बारेमें कुछ विचार बना रखे हैं; वह भगवान्, अमरता, अनन्तता, नित्यता वगैराके बारेमें कुछ सोचता है। लेकिन ये सब न्यूनाधिक रूपमें उसकी अपनी रचनाएं हैं। मनके उच्चतम शिखरपर ऊपरी लोक-की इन चीजोंका कुछ आभास मिल सकता है; लेकिन वह एक झलक, एक छाया एक गूंजसे बढ़कर कुछ नहीं, वे वास्तविक सद्वस्तुकी नकलसे बढ़कर कुछ नहीं हैं। भगवान्में या भगवान्के साथ जो स्वाधीनता होती है, भगवान्में जो आनन्द या चेतना है उनका गुण, उनका स्पन्दन कुछ और ही तरहका होता है। नीचेके स्तरोंपर मन उनसे अपरिचित होता है। जैसे-जैसे हम चेतनाके सोपानपर नीचे उतरते हैं, हमें इन चीजोंका ज्यादा-ज्यादा विकृत रूप दिखायी देता है। अगर मनका तत्त्व ही बदल जाय, वह अपनी पारदर्शक-सी निष्क्रियता फिरसे प्राप्त कर ले तो वह उन ऊंचे परमार्थ तत्त्वों-की झांकी पा सकेगा।

— नलिनीकान्त गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम्मपद

(माताजीकी टीका सहित)

यमकवग्गो

अनिक्कसावो कासावं यो वत्थं परिदहेस्सति।
अपेतो दमसच्चेन न स कासावमरहति ॥९॥

(जो) व्यक्ति अपनी अशुद्धियोंका त्याग किये बिना काषाय वस्त्र धारण करता है और जिसके पास न आत्म-संयम है न सत्य, (वह) काषाय (वस्त्र)का अधिकारी नहीं है।

निःसंदेह, काषाय वस्त्र, अपने शाब्दिक अर्थमें, बौद्ध संन्यासियोंका वस्त्र है — यह उन सब लोगोंका वस्त्र बन गया जो त्यागकी साधना करते हैं। परंतु यहांपर 'धम्मपद' वास्तवमें इस बातकी चर्चा नहीं कर रहा है। क्योंकि ऐसे आदमियोंका कोई अभाव नहीं जो गेरुआ वस्त्र पहनते हैं, पर अपने दोषोंसे मुक्त नहीं हुए हैं। काषाय वस्त्र इस बातके प्रतीकके रूपमें लिया जाता है कि उसे ग्रहण करने-वाला आध्यात्मिक जीवनके लिये अपना उत्सर्ग कर रहा है, वह इस बातका बाह्य चिह्न है कि मनुष्य उन सब चीजोंको त्याग रहा है जो आध्यात्मिक जीवनके लिये की जानेवाली अनन्य एकाग्रतासे मेल नहीं खातीं।

बौद्ध धर्मके अनुसार "अशुद्धियों" का मुख्य अर्थ है अहंभाव और अज्ञान; क्योंकि, बौद्ध धर्मकी दृष्टिसे, सबसे महान् दोष है अज्ञान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाह्य वस्तुओंका अज्ञान नहीं, प्रकृतिके विधानोंका अथवा उन सब वस्तुओंका अज्ञान नहीं, जिन्हें तुम स्कूलमें सीखते हो, बल्कि वस्तुओंके गभीरतम सत्यका अज्ञान, सत्ताके विधानका, धर्मका अज्ञान।

यहां यह ध्यान देनेकी बात है कि जिन दो बुराइयोंपर जोर दिया गया है वे हैं आत्म-संयमका अभाव और निष्ठाका अभाव। निष्ठा-का यहां अर्थ है सहृदयता, ईमानदारी; 'धम्मपद' अत्यंत कठोर रूपमें जिस चीजकी निंदा करता है वह है पाखंड: इस बातका झूठा दिखावा करना कि तुम आध्यात्मिक जीवन बिताना चाहते हो और न बिताना, यह दिखावा करना कि तुम सत्यकी खोज करना चाहते हो और न करना, दिव्य जीवनके प्रति अपनेको उत्सर्गकर देनेका बाहरी चिह्न प्रदर्शित करना — यहां गेरुआ वस्त्र उस उत्सर्गका प्रतीक है — पर भीतर स्वयं अपने साथ, अपने ही स्वार्थ और अपनी आवश्यकताओंमें संलग्न रहना।

यहां मजेकी बात है आत्म-संयमपर 'धम्मपद'का आग्रह, क्योंकि बौद्ध शिक्षाके अनुसार, प्रत्येक बातमें अतिका होना बुरा है। बुद्ध सदा "मध्यम निकाय" (मध्यम पथ) पर सबसे अधिक जोर देते हैं। तुम्हें कभी इस ओर या उस ओर बहुत अधिक नहीं चले जाना चाहिये, किसी इस या उस वस्तुको अतिरंजित नहीं करना चाहिये। तुम्हें सभी बातोंमें एक मात्रा, सब चीजोंमें मिताचारका संतुलन बनाये रखना चाहिये।

अतएव, जो गुण तुम्हें आध्यात्मिक जीवन यापन करनेका अधि-कारी बनाते हैं वे हैं आंतरिक संतुलन, अपने कर्ममें संतुलन बनाये रखना और प्रत्येक विषयमें संयत होना, सच्चा, ईमानदार, सत्य-निष्ठ होना।

संतुलन, संयम, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी: बस, यही आज हमारे ध्यान-का विषय है।

८-११-१९५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो च वन्तकसावस्स सीलेसु सुसमाहितो ।
उपेतो दमसच्चेन स वे कासावमरहति ॥१०॥

जिसने समस्त अशुद्धियोंको त्याग दिया है, जो शील, अर्थात्, नैतिक आचार-विचारमें अच्छी तरह समाहित है, जो आत्म-संयम और सत्य-से भरपूर है, वही काषाय (वस्त्र) का अधिकारी है।

मैं नहीं चाहती कि तुम लोग 'धम्मपद'के इन वचनोंको नैतिक प्रश्नोत्तरीके रूपमें स्वीकार करो। वास्तवमें इनका भाव बहुत अधिक गभीर और सच्चा है, क्योंकि सभी यथार्थ आध्यात्मिक शिक्षाओंका उद्देश्य उस नैतिकताकी शिक्षा देना नहीं होता जिसकी कल्पना लोग अपने मनके द्वारा करते हैं।

यही बात अशुद्धि शब्दके बारेमें भी कही जा सकती है। नैतिक दृष्टिसे "शुद्ध" शब्दको जिस रूपमें समझा जाता है वही भाव उस शब्दको किसी सच्ची आध्यात्मिक शिक्षामें नहीं दिया जाता; और विशेषकर बौद्ध धर्मकी दृष्टिसे शुद्धिका अर्थ है अज्ञानका अभाव, जैसा कि मैं पिछली बार तुम्हें बता चुकी हूं, और अज्ञानका मतलब है आंतरिक विधानकी, सत्ताके सत्यकी उपेक्षा। और सत्यनिष्ठाका अर्थ है मिथ्याको ही सत्य न मान बैठना, परिवर्तनशील और क्षणिक बाह्य रूपको ही सत्ताका आंतरिक और यथार्थ स्थायी रूप न स्वीकार करना।

अतएव, हम कह सकते हैं कि जो लोग आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करनेकी साधना करना चाहते हैं उनके लिये अति आवश्यक कार्य है आत्म-संयम और आत्म-प्रभुत्व, संतुलन तथा निष्काम-भावको प्राप्त करना, सत्ताके आंतरिक सत्य एवं उसकी अत्माभिव्यक्तिके नियमोंको खोज निकालना।

अपने प्रति और अपने लक्ष्यके प्रति सच्चा होना, अव्यवस्थित आवेगोंके द्वारा परिचालित न होना, परिवर्तनशील बाह्य रूपोंको ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्‌वस्तु न मान बैठना आदि वे गुण हैं जो अध्यात्म पथपर प्रगति करनेकी इच्छा रखनेवाले मनुष्यमें अवश्य होने चाहिये।

१५-११-१९५७

असारे सारमतिनो सारे चासारदस्सिनो ।
ते सारं नाधिगच्छन्ति मिच्छासङ्कप्पगोचरा ॥११॥

जो असारके सार समझते हैं और सारको असारके रूपमें देखते हैं, वे कभी सार (सत्य) को नहीं प्राप्त कर सकते, क्योंकि वे मिथ्या संकल्पोंपर अपनी दृष्टि रखते हैं (अर्थात्, झूठी कामनाओं, झूठी समझका अनुसरण करते हैं)।

यहां एक टिप्पणी जोड़ी जा सकती है। क्योंकि, यदि कोई असत्यको सत्य और सत्यको असत्य माननेमें ही संतुष्ट हो तो उसके लिये न्यायतः ही चुनाव करना बड़ा आसान हो जायगा: किसी कारणवश या कहींसे आनेवाली किसी सहायतासे जब उसे मालूम हो जायगा कि वास्तवमें क्या सत्य है और क्या असत्य तो वह सत्यको ले लेगा और असत्यको छोड़ देगा। परंतु, दुर्भाग्यवश, मनुष्य अपनी भूलोंसे प्यार करता है, मनुष्यकी सत्तामें कहीं पर जो कुछ सत्य है उसे स्वीकार करनेकी अनिच्छा विद्यमान होती है।

मेरा अनुभव इसी प्रकारका है: जब कभी तुम सच्चाईके साथ सत्यको जाननेकी इच्छा करते हो तो तुम उसे जान ही जाते हो। सदा ही कोई चीज होती है जो तुम्हें भूल दिखा देती है और सत्यको स्वीकार करनेमें तुम्हारी सहायता करती है। और यदि तुम ध्यानसे देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि चूंकि तुम भूलको ही पसंद करते हो इसलिये सत्यको नहीं ढूंढ पाते।

छोटे-छोटे ब्योरेकी बातोंमें, अत्यंत छोटी-छोटी चीजोंमें भी (जीवनकी बड़ी-बड़ी बातोंकी, जो बड़े-बड़े निर्णय तुम्हें करने हैं उनकी तो बात ही क्या!), सबसे छोटी बातोंमें भी, सत्यको जाननेकी अभीप्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सच्चा बननेकी इच्छा पूरी तरहसे सच्ची होती है, तो सूचनाएं हमेशा आती हैं। और बौद्ध साधना-पद्धतिका ठीक-ठीक अनुसरण कर यदि तुम अपने अंदर अपनी सत्ताकी प्रवृत्तिका कारण खोजो, तो तुम सर्वदा यही पाओगे कि भूलपर आग्रह करनेका कारण है तुम्हारी कामना। चूंकि तुम्हारे अंदर पक्षपात है, एक विशेष ढंगसे अनुभव करनेकी, एक विशेष ढंगसे काम करनेकी, एक विशेष ढंगसे विचार करनेकी इच्छा है, इसीलिये तुम भूल करते हो। इसका कारण यह नहीं है कि तुम सिर्फ सत्यकी अवज्ञा करते हो। तुम इसे ठीक-ठीक इसलिये नहीं जानते कि तुम कहते तो हो, "ओह, मैं सत्य चाहता हूं," पर कहते हो एकदम अस्पष्ट, सामान्य, अनिश्चित रूपमें। वास्तवमें, तुम यदि ब्योरेवार देखो, प्रत्येक छोटे-छोटे ब्योरेको देखो और उसपर अपनी अंगुली रखो तो तुम्हें पता लगेगा कि तुम न देखनेके लिये ठीक शुतुर्मुर्गकी तरह आंख बंद कर लेते हो ताकि तुम देख न सको। तुम पीछेकी ओर न देखनेके लिये कुछ अनिश्चित, अस्पष्ट वस्तु, कोई पर्दा डाल देते हो।

जब कभी तुम्हारे अंदर सचाई होती है तब तुम देखते हो कि सहायता, पथप्रदर्शन, कृपा-शक्ति सर्वदा तुम्हें उत्तर देनेके लिये मौजूद है और तुम फिर दीर्घकालतक अपने-आपको धोखा नहीं देते।

प्रगति करनेकी अभीप्सामें, सत्य पानेके संकल्पमें, वास्तवमें शुद्ध — आध्यात्मिक जीवनमें जिसे शुद्ध समझा जाता है — बननेकी आवश्यकता महसूस करनेमें जो सच्चाई है यही सच्चाई सब प्रकारकी उन्नति करनेकी चाभी है। इसके होने पर तुम जान जाते हो और तुम कर सकते हो।

हमारी सत्तामें सदा ही एक अंग, एक कोई चीज ऐसी होती है जो अपने-आपको धोखा देना पसंद करती है, अन्यथा ज्योति सर्वदा विद्यमान है, सर्वदा पथ दिखानेके लिये प्रस्तुत है, पर तुम न देखनेके लिये अपनी आंखें बंद कर लेते हो।

२२-११-१९५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीके स्फुट वचन

जो एकाग्रतासे काम करता है उसके लिये कुछ भी असंभव नहीं है।

*

किसी व्यक्तिको यह अधिकार नहीं है कि दूसरेसे अपने जैसा सोचनेके लिये आग्रह करे। हर एकको दूसरोंके विचार धीरजके साथ सह लेने चाहिये।

*

जीवनमें कौन-सा क्षण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है? वर्तमान, क्योंकि भूतकाल बीत चुका है और भविष्य अभी आया ही नहीं।

*

भूतकालको दूर, पीछे छोड़कर हम ज्योतिर्मय भविष्यकी ओर दौड़ें।

*

प्रभो, वर दे कि हमारे अंदर कोई चीज तेरे काममें बाधा न दे।

*

बुरा विचार चोरसे भी ज्यादा खतरनाक है।

*

संत कभी अकेला नहीं होता। वह अपने अंदर सभी वस्तुओंके स्वामी, भगवान्, को लिये रहता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१४५०१

सोसायटी समाचार

अहमदाबाद जिलेकी शताब्दी समितिने विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयोंमें निबंध-लेखनकी प्रतियोगिता करवायी। महाविद्यालयोंके लिये विषय थे : 'माताजी और श्रीअरविंदका जीवन और कार्य' तथा 'माताजी और शिक्षा'। विद्यालयोंके लिये विषय थे : 'श्रीअरविंद', 'माताजी' तथा 'श्रीअरविंदाश्रम'।

श्रीपेवडी (कर्णाटक) में हमारी सोसायटीके केंद्रने शारीरिक शिक्षा, मौन प्रार्थनाके लिये व्यवस्था की है। माताजी और श्रीअरविंदके साहित्यका अध्ययन करनेके लिये अध्यापकोंका सत्संग भी होता है।

बीजापुरकी शाखाने श्री माधव पंडितके पांच भाषण करवाये और उनके हाथसे "माताजीका प्रकाश" नामक पुस्तकके कन्नड़ संस्करणका ग्रंथविमोचन करवाया।

गुजरातके सभी केंद्रों और शाखाओंका सम्मिलित सातवां अधिवेशन ३० सितंबरको बड़ौदामें हुआ जिसमें केंद्रों और शाखाओंके विकासके बारेमें विचार किया गया।

पुरुलियाके केंद्रने स्थानीय विद्यालयोंके सभी बच्चोंको 'आदर्श बालक' की प्रतियां बांटीं। स्थानीय रोटरीकी सहायतासे विद्यार्थियोंके स्वास्थ्य-सुधारके लिये भी काम किया जा रहा है।

दिल्ली केंद्रमें डा० कर्णसिंहकी अध्यक्षतामें एक सभा हुई जिसमें सर्वश्री भाटिया तथा जोशीने भाग लिया।

इंदौरमें श्रीमती विद्यावती कोकिलने 'सावित्री'पर १९ भाषण दिये। उन्होंने **उज्जैन, जबलपुर, पन्ना** आदिका भी दौरा किया।

अगरतल्लामें माताजी और शिक्षा, माताजी और भारत, धरतीपर अतिमानवकी अभिव्यक्ति — इन तीन विषयोंपर निबंध पढ़े गये। समारोहका उद्घाटन भारतके शिक्षा-मंत्री श्री चंदरने किया।

भड़ूच जिलेमें श्रीनाथालाल दवेने शेराके मणिभाई पटेलके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for Ind
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

१५ गांवोंका दौरा किया और वहांके लोगोंको श्रीअरविंदका संदेसा दिया। बड़ोदामें अक्तूबरके महीनेमें सर्वश्री ईश्वर भाई पटेल, शिवा भाई अमीन और महेश्वरके भाषण हुए। महेश्वरजीने बंबई विश्व-विद्यालय और भारतीय विद्याभवनमें भी भाषण दिये और मथुरा रतलाम, उज्जैन आदिका भी दौरा किया।

अक्तूबरमें **बंबईमें** आश्रमकी बनी चीजों और प्रकाशनोंकी एक प्रदर्शनी हुई। बहुत-सी चीजें तुरंत बिक गयीं।

सिंगापुरमें सितंबरके महीनेमें दसवां पुस्तक मेला लगा था जिसमें श्रीअरविंद सोसायटीने भी भाग लिया। हाथसे बना कागज, आश्रम-की अगरबत्ती, तथा यहांके प्रकाशनोंका प्रदर्शन हुआ।

नये प्रकाशन :

श्रीअरविंदकी पुस्तक 'एसेज ऑन गीता' पर आधारित डा० महेश्वरकी पुस्तक **भगवद्गीता इन द लाइट ऑफ श्रीअरविंद**। मूल्य केवल २५.००।

नैक्स्ट फ्यूचर ८.००।

ग्लिम्प्सेज आफ मदर्स लाईफ २५.००।

सोसायटीके नये केंद्र :

श्रीअरविंद योग सेंटर,
द्वारा प्रोफेसर गौरीश पांड्या,
१६–२१, आद्यपाक निवास,
गुजरात विद्यापीठ,
अहमदाबाद ३८००१४ (गुजरात)

श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर,
नन्दलाल रतिस हाऊस,
विलासनगर,
अमरावती ४४४६०
जिला अमरावती (महाराष्ट्र).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar